राधास्वामी सहाय

सार बचन राधास्वामी

नज़्म यानी छंद बंद

पहला भाग

* *

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

* *

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

सार बचन राधास्वामी
नज़्म यानी छंद बंद

पहला भाग

जिसको कि
परम पुरुष पूरन धनी स्वामी जी महाराज ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

बीसवीं बार) सन् 2018 (1500 प्रतियाँ

(विशेष द्वि-शताब्दी संस्करण)
3 सितंबर 2018

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

पहली बार	सन् 1884	2000 प्रतियाँ
उन्नीसवीं बार	सन् 2001	10000 प्रतियाँ

बीसवीं बार)	सन् 2018	(1500 प्रतियाँ

(विशेष द्वि-शताब्दी संस्करण)

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912

मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

राधास्वामी सहाय

सूचीपत्र सार बचन छंद बंद पहला भाग

शब्द की टेक			सफ़ा

राधास्वामी सहाय

सूचीपत्र बचनों का

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

।। भूमिका।।

(१) हुज़ूर राधास्वामी साहेब ने यह बानी अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाई। अव्वल इरादा हुज़ूर साहेब[1] का वास्ते बनाने बानी के न था, पर कोई कोई सतसंगी और सतसंगिनों ने बहुत हठ करके अर्ज़ की तब उनकी अर्ज़ को क़बूल फ़रमाया।।

(२) हुज़ूर साहेब शहर आगरा मुहल्ला पन्नीगली में सम्बत १८७५ भादों महीने की शुरू की अष्टमी के दिन वक़्त साढ़े बारह बजे रात के प्रगट हुए और अँगरेज़ी हिसाब से अगस्त का महीना सन १८१८ ई. थी, और ६-७ बरस की उमर से सब से ऊँचे परमार्थ का समझाना और बुझाना ख़ास ख़ास लोगों को मर्द और औरत से शुरू किया।।

(३) हुज़ूर साहेब का कोई गुरू नहीं था और न किसी से उन्हों ने परमार्थ का उपदेश लिया, बल्कि आपही अपने वालिदैन को और जो साधू कि उनकी पहिचान वाले मकान पर आते थे उन को हर तरह से परमार्थ के समझाने में कोशिश करते रहे।।

(४) क़रीब पंद्रह बरस के अपने मकान के एक कोठे में जो अन्दरून दूसरे कोठे के था बैठकर अभ्यास सुरत शब्द जोग का करते रहे, यहाँ तक कि अकसर औक़ात दो दो तीन

---

१ - हुज़ूर महाराज, स्वामीजी महाराज को हुज़ूर साहेब कहा करते थे और यह भूमिका हुज़ूर महाराज की लिखाई हुई है।

तीन रोज़ तक बाहर नहीं निकलते थे और न इस अरसे में हाजात ज़रूरी की तरफ़ तवज्जह होती थी।

(५) सम्वत १९१७ बसंत पंचमी के दिन मुताबिक़ जनवरी सन १८६१ ई. के, मुवाफ़िक़ अर्ज़ी और प्रार्थना बाज़े सतसंगी और सतसंगिनों के जो ज़ियादे एक बरस से वास्ते जारी फ़र्माने आम सतसंग के हठ करके ख़िदमत में अर्ज़ कर रहे थे, अपने मकान पर बयान संत मत और उस का उपदेश परमार्थी लोगों को फ़र्माना शुरू किया और यह सतसंग १७ बरस तक बराबर रात दिन जारी रहा। इस अरसे में क़रीब तीन हज़ार मर्द व औरत ने बहुत से क़ौम हिन्दू हर मुल्क के और थोड़े मुसलमान और जैनी और सरावगी और कोई कोई ईसाई ने हुज़ूर साहेब से उपदेश संत मत याने राधास्वामी पंथ का लिया। इन में से बहुतेरे गृहस्थी थे और क़रीब दो तीन सौ साधू होंगे। बाज़े २ जिन्हों ने अभ्यास शौक़ के साथ किया चन्द बार वास्ते दर्शन और इज़हार अपने हाल और दरियाफ़्त करने हालत और बारीकियों और गुप्त भेद मत मज़कूर के आये और अपने अभ्यास की हालत में ताक़त और क़ुदरत और बुज़ुर्गी हुज़ूर साहेब की और अंतर दया जो उन पर फ़र्माई देख कर दिल और जान से मोतक़िद हुए और निहायत प्रीत और प्रतीत चरनों में करने लगे और बाज़े जो दुनिया के भोगों में फँस गये और उन से अभ्यास अच्छी तरह नहीं बना वह फिर दोबारा हाज़िर नहीं हुए। अब आगरे में एक सौ मर्द व औरत इस अभ्यास में लगे हुए हैं और इन में से क़रीब चालीस साधू हैं। यह साधू लोग साबिक़ से भेष

लेकर तलाश में परमार्थ के निकले थे और आगरे में पहुँच कर महिमा और सिफ़त हुज़ूर साहेब की सुनकर चरनों में हाज़िर हुए और भेद लेकर अभ्यास में लग गये और जब उनको कुछ कुछ रस अभ्यास का मिलने लगा तब अपना क़याम आगरे में रक्खा और अब यह साधू राधास्वामी बाग़ में जो शहर से बफ़ासला तीन मील के वाक़ै है, और शहर में जो मकान हुज़ूर साहेब का है, वहाँ चन्द गृहस्थी मर्द व औरत रहते हैं और अभ्यास कर रहे हैं।।

(६) राधास्वामी मत को संत मत भी कहते हैं। पिछले वक़्तों में यह मत निहायत गुप्त रहा और जो कि इसका अभ्यास शुरू में प्राणायाम के साथ किया जाता था इस सबब से बहुत कम लोग इससे वाक़िफ़ थे और न किसी से अभ्यास बन सकता था क्योंकि प्राणायाम करने में संजम और परहेज़ सख़्त दरकार हैं और ख़तरे भी बहुत हैं। और इस सबब से यह काम इस क़दर मुश्किल था कि कोई इस में क़दम नहीं रख सकता था। अब हुज़ूर राधास्वामी साहेब ने ऐसी सहज जुगत और आसान तरीक़ा सुरत शब्द जोग का अपनी दया से प्रगट किया है कि जो कोई सच्चा शौक़ रखता होवे तो वह आसानी से उसका अभ्यास कर सकता है ख़्वाह वह मर्द होवे या औरत, ख़्वाह वह जवान होवे या बूढ़ा।।

(७) यह जुक्ति कि जो हुज़ूर साहेब ने अब जारी फ़रमाई है, किसी ने पिछले वक़्तों में इस आसानी के साथ नहीं जारी की और यही सबब है कि अन्तरमुख अभ्यास सब मतों में जो आज कल दुनिया में जारी हैं, गुप्त और पोशीदा हो गया और

सब मतों के लोग बाहरमुखी पूजा और धर्म और कर्म में लग गये और सच्चे मालिक की पहिचान और उसके मिलने की जुगत और उसके रास्ते और मंज़िलों के भेद से नावाक़िफ़ रह गये।।

(८) राधास्वामी मत में तीन चीज़ दरकार हैं - एक गुरू और दूसरा नाम और तीसरा संग और यही तीन चीज़ें वसीला उद्धार याने नजात की हैं। अव्वल गुरू पूरा और सच्चा चाहिये याने संत सतगुरू, बंसावली गुरुओं से काम नहीं निकल सकता। दूसरे नाम भी सब से ऊँचा और सच्चा और पूरा और असली याने ज़ाती चाहिये मय भेद नामी याने मुसम्मा के, कृत्रिम याने सिफ़ाती नामों से काम नहीं बनेगा। तीसरे सतसंग भी सच्चा चाहिये और उसकी दो क़िस्म हैं - एक सतसंग अंतरी और दूसरा सतसंग बाहरी। अंतरी सतसंग यह है कि जब अभ्यासी अपनी सुरत यानी जीवात्मा या रूह को अंतर में चढ़ाकर सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों में लगावे या उस तरफ़ को मुतवज्जह करे और दूसरा यह कि जब इस को दर्शन और संग सतपुरुषों का जो कि सच्चे और पूरे संत और साध हैं नसीब होवे और यह उनके बचन सुने और दर्शन करे और जो सेवा बन सके, करे। इन दोनों क़िस्म के सतसंग से कोई दिनों में हालत बदलती हुई साफ़ मालूम होगी।।

(९) और जो और काम परमार्थी क़िस्म के हैं मिस्ल तीर्थ और बर्त और मंदिर और मूरत और पोथियों का पाठ और जप और सुमिरन सिफ़ाती नाम का, इन कामों को करने से

ज़रा भी हालत नही बदलती क्योंकि इन कामों में निज मन और जीवात्मा याने रूह जिस को संत सुरत कहते हैं, शामिल नहीं होते और इसी सबब से इन कामों का असर ज़ाहिर नहीं होता। अलबत्ते ज़ाहिरी आनंद और अहंकार वग़ैरह दिल में आ जाता है।।

(१०) सुरत याने जीवात्मा या रूह जो ख़ास सत्तपुरुष राधास्वामी की अंस है, इस जिस्म में एक बड़ा जौहर कि जिस की ताक़त से कुल बदन और मन और इन्द्रियाँ वग़ैरह अपना अपना काम देती हैं, सो संतों ने इसी जौहर को छाँट कर उस के असल भंडार और ख़ज़ाने की तरफ़ मुतवज्जह किया और जब इस की सच्ची तवज्जह उधर को हुई तब आहिस्ता २ इसकी हालत भी बदलती जाती है और दुनिया और उस के पदारथ रोज़ बरोज़ नज़र में ओछे और हक़ीर दिखलाई देते हैं। इस जौहर लतीफ़ का असल मुक़ाम क़याम याने ठहराव का पिंड याने जिस्म में आँखों के पीछे है और वहाँ से यह तमाम देह में फैला है और सब आज़ाओं[1] को ताक़त दे रहा है और इस का भंडार और ख़ज़ाना आदि शब्द यानी आदि नाद है।।

(११) मालूम होवे कि आदि शब्द कुल का कर्त्ता और स्वामी है और आदि सुरत याने उसके अव्वल ज़हूर का नाम राधा है। इन्हीं का नाम सुरत और शब्द है और जब इन की धार नीचे आई तब इसी आदि शब्द से, और शब्द, और आदि सुरत से, और सुरत, और शब्द से सुरत, और सुरत से शब्द,

१ - अंग अंग ।

बराबर प्रगट होते आये और अपने अपने मुक़ाम पर क़ायम हुए।।

(१२) शब्द की महिमा हर एक मत में है, मगर शब्द का भेद किसी मत के ग्रन्थ या पोथियों में नहीं लिखा है, इसी सबब से लोग इससे नावाक़िफ़ रह गये। अब हुज़ूर राधास्वामी साहेब ने तफ़सील शब्दों की और उन का भेद और बुज़ुर्गी का हाल खोल कर साफ़ २ इस बानी में लिखा है।।

(१३) ख़ुलासा भेद शब्द का नीचे लिखा जाता है :- कुल की आदि राधास्वामी यानी कुल मालिक, यहाँ शब्द निहायत गुप्त है और उस की उपमा याने नमूना इस रचना में कहीं नहीं है। इसी शब्द से सत्तपुरुष प्रगट हुए।।

शब्द पहिला—सत्तपुरुष का शब्द जिस को सत्तनाम और सत्त शब्द भी कहते हैं और जिसकी सत्त क़ुदरत से सोहं पुरुष और पारब्रह्म और ब्रह्म और ब्रह्म माया प्रगट हुए।।

दूसरा—सोहं पुरुष का शब्द।।

तीसरा—पारब्रह्म का शब्द जिस की मदद से तीन लोक की रचना ठहरी हुई है।।

चौथा—ब्रह्म शब्द जो कि प्रणव है जिस से सूक्ष्म याने ब्रह्मांडी वेद और ईश्वरी माया प्रगट हुई।।

पाँचवाँ—माया और ब्रह्म का शब्द जिससे तिरलोकी की रचना का मसाला प्रगट हुआ और आकाशी वेद ज़ाहिर हुए।।

माया शब्द के नीचे बैराट पुरुष का शब्द और जीव और मन का शब्द प्रगट हुआ।।

(१४) इस वक़्त में जो कोई शब्द के अभ्यास का ज़िकर भी करते हैं तो सिवाय नीचे के शब्द के, ऊँचे शब्दों की उनको ख़बर भी नहीं है और बाज़े बैराटी शब्द को ही कर्ता शब्द मानते हैं और कोई २ माया और ब्रह्म के मिले हुए शब्द का सिर्फ़ ज़िकर करते हैं मगर उस की महिमा और सिफ़त और उस के स्थान और अभ्यास की जुगत से जिससे वह प्राप्त होवे ना-वाक़िफ़ हैं। इन सब शब्दों का हाल इस पोथी में तफ़सीलवार लिखा हुआ है।।

(१५) तरीक़ा राधास्वामी याने संत पंथ का भक्ती मारग का है याने सच्चे और पूरे मालिक के चरनों में प्रेम और प्रीत प्रतीत करना। इस को उपासना और तरीक़त भी कहते हैं। इस मारग में या तो संत सतगुरु और साध गुरू की महिमा है और या उनके असली शब्द स्वरूप की महिमा है।।

संत सतगुरु उनको कहते हैं कि जो सत्तपुरुष और राधास्वामी के मुक़ाम पर पहुँचे।।

और साध गुरू उनको कहते हैं जो ब्रह्म और पारब्रह्म के मुक़ाम पर पहुँचे। और जो यहाँ तक नहीं पहुँचे उनको साध और सतसंगी कहा जाता है। इन दोनों यानी संत और साध का असली स्वरूप शब्द स्वरूप है और ज़ाहिरी स्वरूप नर स्वरूप यानी इन्सानी ख़िरक़ा है, जो कि वे लोगों के समझाने और बुझाने और उपकार और उद्धार के लिये धर कर संसार में प्रगट होते हैं। जब यह मालूम हुआ कि यह पूरे संत या पूरे साध हैं तो फिर उन में और सत्तपुरुष या पारब्रह्म में भेद नहीं माना जाता है। इस वास्ते जब २ पूरे संत या पूरे

साध प्रगट होते हैं तो उनके चरन सेवक उनकी महिमा सत्तपुरुष या पारब्रह्म के बराबर करते हैं और बाहर में उनकी पूजा और सेवा और आरती वग़ैरह उसी तौर से बजा लाते हैं जैसे कि मालिक की करना चाहिये। और इस ज़ाहिरी स्वरूप की सेवा और दर्शन और बचन और उनके चरनों में प्रेम और प्रीत करने से और जो जुगत वे बतलावें उसके अभ्यास करने से सुरत याने जीवात्मा मन और माया के जाल से अलहदा होकर आकाश में और उसके परे चढ़ती है और अंतर के स्वरूप याने शब्द में पहुँचती है जब सच्चा और पूरा उद्धार जीव का होता है।।

(१६) जब तक कि पूरे संत या पूरे साध न मिलें तब तक खोजी को मुनासिब है कि उनकी तलाश में रहे और जो कोई उनका सतसंगी याने सेवक मिल जावे कि जिसने उनके दर्शन और सेवा बख़ूबी करी है और उनसे भेद शब्द मारग का हासिल करके अभ्यास किया है और कर रहा है तो उससे प्रीत करे, और भेद मारग और मंज़िल का और जुगत उसकी प्राप्ती की याने तरीक़ अभ्यास का दरियाफ़्त करके उस की कमाई शुरू करे और सच्चा इष्ट राधास्वामी के चरनों में जो कुल के मालिक हैं और जहाँ के पहुँचने का इरादा हर एक परमार्थी को मज़बूत करना चाहिये बाँध कर, अपना काम करना शुरू करे। जो प्रीत और प्रतीत सच्ची और शौक़ सच्चा और पक्का होगा, तो ज़रूर कुल मालिक आप किसी न किसी वक़्त पर, चाहे जिस स्वरूप से दर्शन देकर इस जीव का काम अपनी दया और कृपा से बनावेंगे।।

(१७) राधास्वामी नाम कुल मालिक ने अपना आप प्रगट किया है और जब कि हुज़ूर साहेब के चरन सेवकों को कुछ दिन अभ्यास और सतसंग करने से कुछ २ उनकी भारी क़ुदरत और गति मालूम हुई और कुछ उन्हों ने अपनी कृपा से थोड़ी अपनी पहिचान बख़्शी तब से उन को उसी नाम से जिस मुक़ाम याने राधास्वामी पद से कि वे आये थे, पुकारना शुरू किया और वे अपनी मौज से इस कलियुग में जीवों पर निहायत दया करके संत स्वरूप औतार धारन करके प्रगट हुए।।

संत मत में भी वही क़ायदा जारी है, जो और तरीक़त यानी उपासना वालों के मत में जारी है और वह यह है कि सतगुरु पूरे याने मुरशिद कामिल में और मालिक कुल में भेद नहीं करते और इसी सबब से उन को उसी नाम से पुकारते हैं जो कि असली नाम उस मुक़ाम याने पद का है जहाँ से कि वे आये हैं। राधास्वामी नाम, सुरत और शब्द की एक सिफ़त है, जैसे समुन्दर और उसकी लहर, शब्द और उसकी धुन, प्रेमी और प्रीतम। इन सब का मतलब एक ही है।।

(१८) इस मत के मानने वालों और सुरत शब्द के अभ्यास करने वालों को चंद रोज़ में आप उनके अन्तर में मालूम हो जावेगा कि यह क्या भारी नियामत और दुर्लभ पदारथ उनको मिला है। जिस क़दर दिन दिन उनकी हालत मोक्ष और उद्धार की होती जावेगी कि उसको वे आप देख लेंगे और सब मतों के सिद्धांत और मुक़ाम की और उनकी गति की

आप ख़बर हो जावेगी कि कौन मत कहाँ से निकला है और कहाँ तक उसकी रसाई और पहुँच है।।

(१९) यह मत और इसका अभ्यास ख़ास कर उन लोगों के वास्ते है, जिनको सच्चे मालिक के मिलने की चाह है और जिनको अपने जीव के कल्यान और उद्धार का दिल से फ़िकर है। और जो लोग कि दुनिया के सामान और नामवरी और मान और बड़ाई और इल्म याने विद्या को पसन्द करते हैं और परमार्थ को अपना रोज़गार मुक़र्रर करते हैं उनके वास्ते यह उपदेश नहीं है और न उनको यह कलाम पसन्द आवेगा बल्कि जहाँ तक मुमकिन होगा, वह इस पर तान करेंगे और ग़लत और फ़िज़ूल ठहरावेंगे और सबब इसका यह है कि इस कलाम को सुनकर उनका मन घबरा जाता है कि इसको मानने से उनकी दुनिया और देह के मज़े बिलकुल जाते रहेंगे और रोज़गार में फ़र्क़ आ जावेगा। इस वास्ते वे जहाँ तक बन सकेगा ऐसी कोशिश करेंगे कि यह मत जारी न होवे ताकि जिन जीवों को उन्हों ने ग़फ़लत में डाल रक्खा है और तरह बतरह की पूजाओं में भरमा रक्खा है और उन से अपने रोज़गार और आमदनी की सूरत पैदा कर रक्खी है, वे उनके ग़ोल और हुक्म-बरदारी से अलहदा न हो जावें और उनकी पूजा और आमदनी में ख़लल न पड़े।।

।। फ़क़त ।।

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय
सार बचन छंद बंद
।। पहला भाग ।।

।। सोरठा।।

राधास्वामी नाम
जो गावे सोई तरे।
कल[1] कलेश सब नाश
सुख पावे सब दुख हरे।। १ ।।
ऐसा नाम अपार
कोई भेद न जानई।
जो जाने सो पार
बहुर[2] न जग में जन्मई।। २ ।।
राधास्वामी गायकर
जनम सुफल करले।
यही नाम निज नाम है
मन अपने धरले।। ३ ।।

---

१ - काल। २ - फिर।

बैठक स्वामी[१] अद्भुती
राधा[२] निरख निहार।
और न कोई लख सके
शोभा अगम अपार।। ४ ।।
गुप्त रूप जहँ धारिया
राधास्वामी नाम।
बिना मेहर[३] नहिं पावई
जहाँ कोई बिसराम।। ५ ।।

।। मंगला चरन।।

करूँ बंदगी राधास्वामी आगे।
जिन परताप जीव बहु जागे।। १ ।।
बारम्बार करूँ परनाम।
सतगुरु पदम[४] धाम सतनाम।। २ ।।
आदि अनादि जुगादि अनाम।
संत स्वरूप छोड़ निज धाम।। ३ ।।
आये भवजल नाव लगाई।
हम से जीवन लिया चढ़ाई।। ४ ।।
शब्द दृढ़ाया सुरत बताई।
करम भरम से लिया बचाई।। ५ ।।

१ - मालिक कुल, आदि शब्द। २ - आदि सुरत। ३ - दया।
४ - सेत कँवल।

।। दोहा।।

कोट कोट करूँ बंदना,
अरब खरब दंडौत।
राधास्वामी मिल गये,
खुला भक्ति का सोत[१]।। ६ ।।

।। चौपाई।।

भक्ति सुनाई सब से न्यारी[२]।
बेद कतेब[३] न ताहि बिचारी।। ७ ।।
सत्तपुरुष चौथे पद बासा।
संतन का वहाँ सदा बिलासा।। ८ ।।
सो घर दरसाया गुरु पूरे।
बीन बजे जहँ अचरज तूरे[४]।। ९ ।।
आगे अलख पुरुष दरबारा।
देखा जाय सुरत से सारा[५]।।१० ।।
तिस पर अगम लोक इक न्यारा।
संत सुरत कोइ करत बिहारा।।११ ।।
तहाँ से दरसे अटल[६] अटारी[७]।
अदभुत राधास्वामी महल सँवारी।।१२ ।।
सुरत हुई अति कर मगनानी।
पुरुष अनामी जाय समानी।।१३ ।।

* * * * *

१ भंडार। २ पृथक। ३ मज़हबी किताबें। ४ आवाज़ एक तरह के बाजे की। ५ तत्व बस्तु। ६ जो कभी नाश न हो। ७ सब से ऊपर का मकान

।। संदेस।।

।। बचन पहला।।

संदेस[१] - प्रकट होना परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी का संत सतगुरु रूप धार कर वास्ते उद्धार जीवों के ।।

सुनावना अधिकारी को इस संदेस का कि परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी जीवों को महा दुखी और भर्म में भूला हुआ देख कर आप उनके उद्धार के निमित्त[२] संत सतगुरु रूप धारण करके प्रगट हुए और अति दया करके भेद अपने निज अस्थान का और जुक्ति उसके प्राप्ती की सुरत शब्द के मारग[३] से उपदेश करते हैं। जीवों को चाहिये कि उनके चरण कँवल में प्रेम प्रीत करें ।

इस मारग की कमाई से मन बस में आवेगा और सिवाय इसके दूसरा उपाव मन के निश्चल और निर्मल करके चढ़ाने

१ - ख़बर। २ - वास्ते। ३ - रास्ते।

का आकाश के परे इस कलयुग में निश्चय करके नहीं है। जितने मत संसार में प्रवृत्त[1] हैं उन सब का सिद्धांत[2] संतों की पहिली मंज़िल[3], निहायत दूसरी मंज़िल तक ख़तम[4] हो जाता है। जो सुरत शब्द का अभ्यास बिधि पूर्वक बन आवे तो मन और सुरत निरमल होकर और शब्द को पकड़ के आकाश के परे जो घट घट में ब्यापक है चढ़ेंगे और नौद्वार अथवा पिंड देश को छोड़ कर ब्रह्मांड याने त्रिकुटी में पहुँचेंगे और वहाँ से सुरत मन से अलग होकर आगे चलेगी और सुन्न और महासुन्न के बिलास देखती हुई और सत्त लोक और अलख लोक और अगम लोक में दर्शन सत्तपुरुष और अलख पुरुष और अगम पुरुष का करती हुई राधास्वामी के निज देश में प्राप्त होगी। इसी अस्थान से आदि में सुरत उतरी थी और त्रिलोकी में आकर काल के

१ - जारी। २ - आख़िर। ३ - स्थान। ४ - पूरा।

जाल में फँस गई थी सो उसी अस्थान पर फिर जा पहुँचेगी।।

सुरत शब्द मारगी[१] को यह सब स्थान यानी बिश्नु लोक और शिव लोक और ब्रह्म लोक और शक्ति लोक और कृष्ण लोक और राम लोक और ब्रह्म और पारब्रह्म पद और जैनियों का निरबान पद और ईसाइयों का मुक़ाम ख़ुदा और रूहुल क़ुद्स[२] और मुसलमानों के आलम[३] मलकूत[४] और जबरूत[५] और लाहूत[६] सुन्न के नीचे नीचे रास्ते में पड़ेंगे। यह सब लीला देखती हुई सुरत संतों के प्रताप से अपने निज देश को प्राप्त होगी।

* * * * *

१ - अभ्यासी। २ - पवित्र आत्मा। ३ - देश। ४ - स्वप्न देश। ५ - सुषुप्ति। ६ - तुरिया।

।। पहिला शब्द।।

।। आरती।।

चलो री सखी मिल आरत गावें।
ऋतु बसंत आये पुरुष पुराने।। १ ।।
अलख अगम का भेद सुनावें।
राधास्वामी नाम धरावें।। २ ।।
सुरत शब्द की रेल चलावें।
जीव चढ़ाय अगमपुर धावें।। ३ ।।
सतसंग धारा नितहि बहावें।
राधास्वामी छिन छिन गावें।। ४ ।।
उमँग उमँग हिय भेंट चढ़ावें।
काल जाल दुख दूर बहावें।। ५ ।।
ऐसे समरथ पुरुष अपारा।
दृष्टि जोड़ रहुँ दर्श अधारा।। ६ ।।
पल पल खटकत बिरह करारी[१]।
जस हूलत[२] कोइ सेल[३] कटारी।। ७ ।।
बिन देखे दीदार[४] न मानूँ।
जग संसार सभी बिष जानूँ।। ८ ।।
अमृत कुंड रूप राधास्वामी।
अचऊँ[५] छिन २ तब मन मानी।। ९ ।।

१ - तीव्र तेज़। २ - छेदता है। ३ - बरछा। ४ - दरशन।
५ - पान करूँ, पिऊँ।

बिन राधास्वामी मोहिं कछु न सुहावे।
चार लोक मेरे काम न आवे।।१०।।
ज्ञान ध्यान और जोग बैरागा।
तुच्छ[१] समझ मैंने इनको त्यागा।।११ ।।
मैं तो चकोर चन्द राधास्वामी।
नहिं भावे सतनाम अनामी।।१२ ।।
बिन जल मछली चैन न पावे।
कँवल बिना अल[२] क्यों ठहरावे।।१३ ।।
स्वाँति बिना जैसे पपिहा तरसे।
सुत बियोग माता नहिं सरसे[३]।।१४ ।।
अस अस हाल भया अब मेरा।
का से बरनूँ कोई न हेरा[४]।।१५ ।।
दान देयँ तो दें राधास्वामी।
और न कोइ ऐसा अन्तरजामी।।१६ ।।
ऐसी भक्ति होय इकरंगी।
काटे बंधन मन बहुरंगी।।१७ ।।
राधास्वामी २ नित गुन गाऊँ।
चरन सरन पर हिया उमगाऊँ।।१८ ।।
कहाँ लग बरनूँ मेहर अपारा।
दिन दिन होवत मौज[५] नियारा।।१९ ।।

१ - ओछा। २ - भँवरा। ३ - मगन होती है। ४ - पहिचानता।
५ - दया की धार।

जत्त जीव कहा[1] समझे लीला।
देख देख हंसन चित सीला[2]। २० ।।
अब के दाव पड़ा मोरा सजनी।
जब आयो राधास्वामी की सरनी।। २१ ।।
खुल गये भक्ति प्रेम भंडारा।
कोटिन जीव का होय उधारा।।२२ ।।
चहुँ दिश धूम पड़ी अब भारी।
काल नगर मानो[3] देहैं उजाड़ी।।२३ ।।
स्वामी दयाल मौज ऐसी धारी।
दीन होय तिस लेहैं उबारी।।२४ ।।
मैं किंकर उन चरनन दासा।
सब जीवन को देउँ दिलासा[4]।।२५ ।।
बाँध सुरत चरनन में राखो।
अगम अपार अमी रस चाखो।।२६ ।।
हंस सभा कहा बरनूँ सोभा।
होवत जहाँ शब्दन की बरषा।।२७ ।।
चमकत बिजली गर्ज अकाशा।
और कहा कहुँ अजब तमाशा।।२८ ।।
बंकनाल के नाले छूटे।
सुखमन नदियाँ भरम पुल टूटे।।२९ ।।

१ - क्या। २ - चित्त की शांति। ३ - जैसे। ४ - भरोसा।

त्रिकुटी घाट बैठ मल धोई।
मानसरोवर दुरमत खोई।।३० ।।
हंस रूप होय सुरत समानी।
शब्द अगम धुन अंतर जानी।।३१ ।।
महा सुन्न के ऊपर गाजी[1]।
राधास्वामी हो गये राज़ी।।३२ ।।
भँवरगुफा की खिड़की खोली।
सत्तपुरुष की सुन लई बोली।।३३ ।।
हंस सभी अगवानी धाये।
अलख लोक से लेवन आये।।३४ ।।
सुरत सिरोमन पहुँची धाई।
अलख पुरुष का दर्शन पाई।।३५ ।।
नाना बिधि जहाँ बजत बधाई।
हंस सभी मिल आरत लाई।।३६ ।।
अगम लोक जाय झंडा[2] गाड़ा।
अगम पुरुष का भेद उघाड़ा[3]।।३७ ।।
वहाँ का मरम न कोई आखा[4]।
बिरले संत गुप्त कर भाखा।।३८ ।।
जीव दया अब अति कर आई।
राधास्वामी खुलकर गाई।।३९ ।।

१ - ऊँची आवाज़ से बोली। २ - पताका। ३ - प्रकट किया।
४ - कहा।

मानो रे मानो जीव अभागी।
राधास्वामी करि हैं सभागी।।४०।।
धाओ दौड़ो पकड़ो चरना।
जैसे बने तैसे आओ सरना।।४१।।
फिर औसर नहिं पाओ रे ऐसा।
अब कारज करो जैसा रे तैसा।।४२।।
छोड़ो कर्म भर्म पाखंडा।
सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मंडा।।४३।।
जब होवे हिये सुरत अखंडा।
पहुँचे सत्त लोक सचखंडा।।४४।।
वहाँ से अलख लोक को धावे।
अगम लोक में जाय समावे।।४५।।
अगम पुरुष का दरशन करई।
अद्भुत रूप सुरत जब धरई।।४६।।
हंसा पाँति जोड़ जहाँ बैठे।
झुंड[1] झुंड जहाँ रहें इकट्ठे।।४७।।
अरबन खरबन भान उजारा।
कहा कहुँ सोभा भूम अपारा।।४८।।
कँवलन क्यारी चहुँ दिश लागी।
झालर मोती झुमझुम[2] आगी।।४९।।

१ - समूह। २ - लटकती हुई।

राग रंग धुन अति झनकारा।
अमी सरोवर[१] भरे हैं अपारा।।५०।।
हीरे लाल रतन की धरती।
चाँद सुरज की चादर तनती[२]।।५१।।
जहाँ राधास्वामी का तख़्त[३] बिराजे।
हंस मंडली अद्‌भुत राजे।।५२।।
धूम धाम नित होत सवाई[४]।
आनँद मंगल दिन प्रति गाई।।५३।।
ऐसा देश रचा राधास्वामी।
निज भक्तन को करें बिसरामी।।५४।।

।। दूसरा शब्द।।

राधास्वामी धरा नर रूप जक्त में।
गुरु होय जीव चिताये।। १ ।।
जिन जिन माना बचन समझ के।
तिनको संग लगाये।। २ ।।
कर सतसँग सार रस पाया।
पी पी तृप्त अघाये[५]।। ३ ।।
गुरु सँग प्रीत करी उन ऐसी।
जस चकोर चंदाये।। ४ ।।

१ - ताल। २ - फैली हुई। ३ - सिंघासन। ४ - अधिक।
५ - तृप्त हो गये।

गुरु बिन कल नहिं पड़त घड़ी इक।
दम दम मन अकुलाये[1]।। ५ ।।
जब गुरु दर्शन मिलें भाग से।
मगन होत जस बछड़ा गाये।। ६ ।।
ऐसी प्रीत लगी जिन गुरुमुख।
सो सो गुरु अपनाये।। ७ ।।
तन की लगन भोग इन्द्री के।
छिन में सब बिसराये[2]।। ८ ।।
गुरु की मूरत बसी हिये में।
आठ पहर गुरु संग रहाये।। ९ ।।
अस गुरु भक्ति करी जिन पूरी।
ते ते नाम समाये।। १० ।।
स्वाँति बूँद जस रटत[3] पपीहा।
अस धुन नाम लगाये।। ११ ।।
नाम प्रताप सुरत अब जागी।
तब घट शब्द सुनाये।। १२ ।।
शब्द पाय गुरु शब्द समानी।
सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये।। १३ ।।
अलख शब्द और अगम शब्द ले।
निज पद राधास्वामी आये।। १४ ।।

१ - घबराये। २ - भूले। ३ - सुमिरता है।

पूरा घर पूरी गत पाई।
अब कुछ आगे कहा न जाये।।१५ ।।

।। बचन दूसरा ।।

सिफ़त राधास्वामी नाम की

।। सिफ़त पहिली ।।

।। सोरठा।।

राधास्वामी नाम, सिफ़त[1] करूँ इस नाम की।
सुनो कान दे आन[2], भिन्न[3] २ बर्णन करूँ।।१।।
पाँच अक्षर आये हिंदी में।
ज़बाँ[4] फ़ारसी अक्षर दस में।। २ ।।
पाँच शब्द का भेद बतावें।
दस मुक़ाम को ले पहुँचावें।। ३ ।।

।। सिफ़त दूसरी ।।

एक सिफ़त यह बर्ण[5] बताई।
सिफ़त दूसरी खुल कर गाई।। १ ।।
राधा धुन का नाम सुनाऊँ।
स्वामी शब्द भेद बतलाऊँ।। २ ।।
धुन और शब्द एक कर जानो।
जल तरंग सम भेद न मानो।। ३ ।।

१ - महिमा। २ - आकर के। ३ - जुदा। ४ - भाषा।
५ - बयान करके।

।। सिफ़त तीसरी ।।

सिफ़त तीसरी करूँ बखाना।
सुनो चित्त से देकर काना।। १ ।।
राधा प्रीत लगावनहारी[1]।
स्वामी प्रीतम नाम कहा री।। २ ।।
यह भी सिफ़त बताय दई री।
राधास्वामी सुरत शब्द गाया री।। ३ ।।

।। सिफ़त चौथी।।

राधा आदि सुरत का नाम।
स्वामी आदि शब्द निज धाम।। १ ।।
सुरत शब्द और राधास्वामी।
दोनों नाम एक कर जानी।। २ ।।
सुरत शब्द सँग करै बिलास।
यों राधा स्वामी ढिंग[2] बास।। ३ ।।
राधा स्वामी दो कर जान।
होयँ एक सत लोक ठिकान।। ४ ।।

* * * * *

१ - लगाने वाली। २ - पास।

।। बचन तीसरा ।।

महिमा परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की जोकि संत सतगुरु रूप धारन करके वास्ते उद्धार जीवों के जगत में प्रकट हुए और बर्णन प्रेम प्रीत उनके चरण कँवल में

।। सोरठा।।

राधास्वामी नाम, जो गावे सोई तरे।
कल कलेश सब नाश,
सुख पावे सब दुख हरे।।१।।
ऐसा नाम अपार, कोई भेद न जानई।
जो जाने सो पार, बहुर न जग में जन्मई।।२।।

।। शब्द पहिला।।

अकह अपार अगाध अनामी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। १ ।।
हैरत[1] रूप अथाह दवामी[2]।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।। २ ।।
अगम रूप धर आये अगामी[3]।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। ३ ।।

१ - अचरज। २ - हमेशा क़ायम रहनेवाला, चिरस्थाई।
३ - जहाँ किसी का गम याने पहुँच न हो।

अलख धाम के फिर हुए धामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी। ४ ।।
सत्तलोक में हुए सत नामी।
वह मेरे प्यारे राधास्वामी।। ५ ।।
भँवरगुफा बैठे अन्तरजामी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। ६ ।।
महासुन्न पर बैठक ठानी[1]।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।। ७ ।।
सुन में अक्षर[2] रूप मुक़ामी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। ८ ।।
गगन मँडल ओंकार अकामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९ ।।
रूप निरंजन धारा श्यामी[3]।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। १० ।।
मन के घाट हुए अब कामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।। ११ ।।
इन्द्री घाट बिकार घटामी[4]।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। १२ ।।
अस्थूल रूप धर जक्त जगामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।। १३ ।।

१ - मुक़र्रर किया। २ - अविनाशी। ३ - श्याम रंग। ४ - दूर किया।

त्रिगुन रूप जग रचा रचामी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।१४ ।।
अललपच्छ[1] सम फिर उलटामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।१५ ।।
पहुँचे फिर निज धाम अनामी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।१६ ।।
फिर हुए जस थे प्रथम अनामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।१७ ।।
महिमा उनकी कस कह गामी[2]।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।१८ ।।
बार बार मैं करूँ नमामी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।१९ ।।
जोगी ज्ञानी मर्म न जानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।। २०।।
ब्रह्मा विष्णु महेश भुलानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।२१ ।।
गौर[3] सवित्री लछमी न जानी।
गति मेरे प्यारे राधास्वामी।।२२ ।।

१ - एक अकाशी पंछी जो अंडे से निकलते ही आसमान को लौट जाता है याने ज़मीन तक नहीं आता। २ - गाऊँ। ३ - पारबती।

शेष गनेश कुरम[1] अज्ञानी।
जस मेरे प्यारे राधास्वामी।।२३ ।।
ऋषि मुनि नारदादि भटकानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।२४ ।।
सनकादिक पित्रादि न जानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।२५ ।।
देवी देव रहे पछतानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।२६ ।।
ईश्वर परमेश्वर भरमानी।
क्या मेरे प्यारे राधास्वामी।।२७ ।।
बेद कतेब पुराण नदानी[2]।
मत मेरे प्यारे राधास्वामी।।२८ ।।
चाँद सुरज तारा गगनानी।
जाने न मेरे प्यारे राधास्वामी।।२९ ।।
अल्ला ख़ुदा रसूल[3] न मानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।३० ।।
इन भी भेद नहीं पहिचानी।
जस मेरे प्यारे राधास्वामी।। ३१ ।।
गंगा जमुना सार न जानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।३२ ।।

१ - ओंकार। २ - नहीं जाना। ३ - पैग़म्बर।

तीरथ बरत जगत लिपटानी।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।३३ ।।
तीन लोक सब काल चबानी[१]।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।३४ ।।
कोइ न परखे तुम्हरी बानी।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।३५ ।।
महिमा कहाँ लग बर्न बखानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।३६ ।।
दर्शन रस ले रहूँ अघानी[२]।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।३७ ।।
चरन सरन में रहुँ लिपटानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।३८ ।।
दर्श नैन रस रहुँ तृप्तानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।। ३९।।
बचन सुना दइ अगम निशानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।। ४०।।
सुरत शब्द मारग दरसानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।४१ ।।
भेद पाय मैं रहूँ समानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।४२ ।।

१ - खायगा। २ - तृप्त।

होय न कुछ कभि मेरी हानी[1]।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।४३ ।।
मैं नारी तुम पुरुष सुजानी।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।४४ ।।
बिरह भाव में हुई दिवानी[2]।
देख मेरे प्यारे राधास्वामी।।४५ ।।
जम जगात[3] कुछ लगे न लगानी।
बल मेरे प्यारे राधास्वामी।।४६ ।।
कलमल दाग़ धुले व धुलानी।
पाये मेरे प्यारे राधास्वामी।।४७ ।।
जन्म जन्म रही धोख धुखानी[4]।
क्या मेरे प्यारे राधास्वामी।।४८ ।।
अब मेरा भाग जगा जग जानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।४९ ।।
काम क्रोध नहिं लोभ लुभानी।
गये मेरे प्यारे राधास्वामी।। ५०।।
जाल ज़बर अब सभी कटानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।५१ ।।
धाम मिला जहाँ अचरज बानी।
दिया मेरे प्यारे राधास्वामी।।५२ ।।

१ - नुक़सान। २ - मस्त। ३ - कर, महसूल। ४ - धोखा खाया।

संतन साथ हुई संतानी।
जो मेरे प्यारे राधास्वामी। ५३ ।।
बारम्बार करूँ परनामी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।५४ ।।
धाम आपना भला दुरानी[1]।
तुम मेरे प्यारे राधास्वामी।।५५ ।।
तुम्हरी गति कुछ अजब कहानी।
सुनी मेरे प्यारे राधास्वामी।।५६ ।।
मैं रही निस दिन नाम दिवानी।
तुम्हरे मेरे प्यारे राधास्वामी।।५७ ।।
काल मार तुम दूर हटानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।५८ ।।
मैं बल जाऊँ चरन क़ुरबानी[2]।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।५९ ।।
गावत गुन तुम अति हरखानी।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी।। ६० ।।
देख रूप तुम रहुँ मगनानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।। ६१ ।।
मैं चकोर तुम चंद समानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।६२ ।।

१ - छिपाया। २ - बलिदान करना।

मैं बिरहन तुम दर्श घुमानी[1]।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।६३ ।।
मैं पल पल तुम दर्श दिवानी[2]।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।६४ ।।
तुम्हरे बचन मद झूम झुमामी[3]।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।६५ ।।
तुम स्वाँती मैं सीप निमानी[4]।
यों मेरे प्यारे राधास्वामी।।६६ ।।
तुम्हरी गति मति गोप[5] छिपानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।६७ ।।
तुमही सब बिधि लीला ठानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।६८ ।।
ज्यों पपिहा स्वाँती तरसानी।
मैं रहुँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।६९ ।।
तुम चुम्बक मैं लोह कठिनानी।
खिंच रहुँ मेरे प्यारे राधास्वामी।। ७० ।।
मैं मृगनी तुम नाद समानी।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।७१ ।।
मैं मछली तुम हुए मेरे पानी।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।७२ ।।

१ - मतवाली। २ - मस्त। ३ - मतवाली हुई। ४ - दीन। ५ - गुप्त।

राम न जाना कृष्ण न जानी।
तुम को मेरे प्यारे राधास्वामी।।७३ ।।
सीता रुकमिन और पटरानी[१]।
सुने न मेरे प्यारे राधास्वामी।।७४ ।।
ईसा मूसा मरियम[२] मानी।
चूके मेरे प्यारे राधास्वामी।।७५ ।।
कुलकर[३] और मुरादेवी[४] रानी।
पाये न मेरे प्यारे राधास्वामी।।७६ ।।
क़ुतुब पैग़म्बर ग़ौस[५] रबानी[५]।
मिले न मेरे प्यारे राधास्वामी।।७७ ।।
हिंदू मुसलमान क्या जानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।।७८ ।।
ध्रू प्रहलाद न मरम पिछानी।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी।।७९ ।।
नहिं धरती नहिं वहाँ असमानी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८० ।।
पवन न अग्नी और नहिं पानी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८१ ।।

१ - महारानी। २ - ईसा की माँ। ३ - जैनियों के देवता।
४ - जैनियों की आदि माता। ५ - फ़कीर, मुसलमानों के महात्मा।

तीनों गुन महा तत्त न जानी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८२ ।।
नहिं आतम परमातम धामी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८३ ।।
सुन्न और महा सुन्न अलगानी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८४ ।।
भँवरगुफा सतलोक निचानी।
ऊँचे मेरे प्यारे राधास्वामी।।८५ ।।
अलख लोक और अगम ठिकानी।
तिस परे मेरे प्यारे राधास्वामी।।८६ ।।
और न कोइ रहे नाम निशानी[१]।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८७ ।।
महिमा वहाँ की तुले न तुलानी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८८ ।।
षट शास्तर नहिं आदि पुरानी।
जहाँ मेरे प्यारे राधास्वामी।।८९ ।।
तीन लोक नहिं चौथे धामी।
जहाँ बसें मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९० ।।
पंडित भेष न शेख़ पिछानी।
सो मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९१ ।।

१ - रेखा।

ऐसे चरन पर हुई मस्तानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९२ ।।
कामादिक सब दीन लुटानी।
तब मिले मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९३ ।।
हुई सफ़ाई गगन चढ़ानी।
तब लिये मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९४ ।।
पंथ चली गई अधर ठिकानी।
मिल गये मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९५ ।।
अति बिलास आनँद हुलसानी[1]।
मिल गये मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९६ ।।
जहाँ तहाँ बज्र कपाट खुलानी।
देखे मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९७ ।।
सतजुग त्रेता द्वाप[2] बितानी।
कलि प्रगटे प्यारे राधास्वामी।। ९८ ।।
खोज दिया और किया अपनामी।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी।। ९९ ।।
तिमर[3] हटाया रैन बिहानी[4]।
भानु रूप प्यारे राधास्वामी।।१०० ।।
भानु अनन्त उगे[5] घट आनी।
ऐसे मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०१ ।।

१ - ख़ुश हुआ। २ - द्वापर। ३ - अँधेरा। ४ - बीती। ५ - उदय हुए।

कोइ गति मति उन जाने न जानी।
जस मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०२।।
अंग अंग में प्रेम रँगानी।
बसे मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०३।।
चरन न भूले देह भुलानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०४।।
मम हिरदे तुम रहो लुकानी[1]।
हे मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०५।।
जुग[2] नहिं छूटै रहूँ जुगानी।
बर दो मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०६।।
कलि सराप तुम दूर बहानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०७।।
जस कमोदिनी[3] चंद्र दिखानी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०८।।
गुरु स्वरूप आये राधास्वामी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।१०९।।

।। दूसरा शब्द।।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गुन गाऊँ उनका सार।। १ ।।

१ - गुप्त। २ - जोड़ा। ३ - कोई का फूल।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मुख देखूँ नैन निहार।। २ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
करूँ सरवन बचन अधार।। ३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सब सेवा करूँ सम्हार।। ४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
नित हाज़िर खड़ी दरबार।। ५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुई दासी चरन निहार।। ६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लइ सरना अब की बार।। ७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
उन कीन्ही दया अपार।। ८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सब छूट गया संसार।। ९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
फिर त्यागा कुल परिवार।।१० ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लज्जा जग दई निवार[1]।। ११।।

१ - निकाल दी।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मैं पकड़ी उनकी लार[1]।।१२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
कामादिक दिये निकार।।१३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मल धोये सबही झाड़[2]।।१४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
ईरषा दई चित्त से डार।।१५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मान मद भागे बड़े गँवार।।१६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सफ़ाई होगई हिये मँझार।।१७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
घट आई उलटी धार।।१८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मैं छोड़े अब नौ द्वार।।१९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
फिर हुई वार से पार।।२० ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
नभ[3] आई मन को मार।। २१।।

१ - संग। २ - सब। ३ - चिदाकाश।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
तिल देखूँ अजब बहार।।२२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
जहाँ झिल मिल जोत उजार।।२३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
पचरंगी गुल[1] गुलज़ार[2]।।२४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
यह लीला लखी नियार[3]।।२५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
कंज[4] में करती आज बिहार।।२६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
चली आगे को पग धार।।२७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
चढ़ खोला बंक दुआर।।२८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
त्रिकुटी में देख बहार।।२९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुन्न चढ़ आई दसवें द्वार।।३० ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
महासुन खेली खेल अपार।।३१ ।।

१ - फूल। २ - फुलवारी, बाग़ीचा। ३ - जुदा, न्यारी।
४ - सहसदल कँवल।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गुफा में सुनी एक झनकार। ३२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
अमर पद पहुँची खोल किवाड़।।३३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
बीन की सुनी जहाँ धधकार।।३४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
दयाल सँग पाया काल बिडार[1]।।३५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
शब्द का चढ़ गया आज ख़ुमार[2]।।३६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
अलख में पहुँची लगन सुधार।।३७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
अगम का पाया अब भंडार।।३८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
राधास्वामी देखा मैं दीदार।।३९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिटा मेरे घट का सबही खार[3]।।४०।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लगी मेरी नौका आन किनार।।४१ ।।

१ - दूर करके। २ - नशा। ३ - मैल, कड़वाई।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
उतर गया जनम जनम का भार।।४२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की
ममत और माया डाली मार।।४३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिटाया कर्म भर्म ग़ुब्बार[1]।।४४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिले अब मेरे निज दिलदार[2]।।४५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुई मैं उनके गल की हार।।४६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
बिरोधी बैठे सबही हार।।४७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लिया अब ऐसा अगम बिचार।।४८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
बहूँ नहिं कबही भौ की धार।।४९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
रहूँ मैं निस दिन अब हुशियार।।५० ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
तिमर भी नासा हुआ उजियार।। ५१।।

१ - अंधकार। २ - प्रीतम।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुई अब छिन छिन शुकरगुज़ार[1] ।।५२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
डारिया उन पर तन मन वार। ।५३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
दिया औघट[2] से घाट उतार।।५४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
किया राधास्वामी यह सिंगार।।५५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुई मैं अब उन नाम अधार।।५६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गई मैं अपने निज घरबार।।५७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लगी मैं रूप निहार निहार।।५८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुआ मैं[3] सेवा संग पियार।।५९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिली निज बस्ती छुटा उजाड़[4] ।।६० ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुन्न में खेलूँ शब्द सम्हार।। ६१।।

१ - धन्य धन्य। २ - उलटा घाट। ३ - मोहिं। ४ - जंगल।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार।।६२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
जलाऊँ सभी काल का जार[1]।।६३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
जगत का घटा सभी बिस्तार।।६४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लगी अब सूरत तज अहंकार।।६५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
लोभ भी मारा बड़ा लबार[2]।।६६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मोह भी भागा अजब चमार।।६७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
काम पर पड़ी बहुत धिरकार।।६८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
काल दल जीता जीती नार[3]।।६९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
देखती घट में अब गुलज़ार[4]।।७० ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
काट अब डारा सब जंजार।। ७१।।

१ - जाल। २ - झूँठा। ३ - माया। ४ - फुलवार।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुनूँ मैं तन में राग धमार[1]।।७२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुरत अब हुई बहुत सरशार[2]।।७३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मूल गह[3] छोड़ दई सब डार।।७४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
चढ़न को आगे हूँ तैयार।।७५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सिंह[4] भी भागा देख सियार[5]।।७६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
शब्द की बाँधी कमर कटार।।७७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गुरू ने दीन्ही अस तलवार।।७८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सूरमा[6] सुरत चढ़ी ललकार[7]।।७९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
करम दल[8] भागा सुनत पुकार।।८० ।।

१ - राग का नाम। २ - मस्त। ३ - पकड़ कर। ४ - काल।
५ - जीव। ६ - सूर बीर। ७ - पुकार। ८ - फ़ौज।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
भरम भी भागा बाजी तार[1] ।। ८१ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
दूर हुइ मन से जम की कार[2] ।। ८२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गई अब सूरत गगन मँझार ।। ८३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
चाँदनी घट में खिली अगार[3] ।। ८४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुरत अस चढ़ती बारम्बार ।। ८५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
खोलिया सुन का बज्र किवाड़ ।। ८६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुई अब हलकी उतरा भार ।। ८७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुनी धुन घट में रारंकार ।। ८८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
अमी जल भरा हुई पनिहार[4] ।। ८९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
बंद सब टूटे हुआ छुटकार ।। ९० ।।

१ - शब्द। २ - करतूत। ३ - प्रकाशवान। ४ - पानी भरनेवाली।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिला अस मौसम[1] सदा बहार।। ९१।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
ख़िज़ाँ[2] का काँटा दिया निकार।। ९२।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गुरु ने लीन्हा गोद बिठार।। ९३।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सुनाई पहिले धुन ओंकार।।९४।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
करूँ मैं सेवा इक इक न्यार।।९५।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
छुटाई गुरु ने जग बेगार।।९६।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिला अब प्रेम भक्ति औज़ार[3]।।९७।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
दिया सब घट का कूड़ा टार।।९८।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
चली अब सुरत शब्द की लार।।९९।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
दिया मैं तन मन अपना वार।।१००।।

१ - ऋतु। २ - पतझड़। ३ - हथियार।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गुफा चढ़ सुनी बीन झनकार।।१०१ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की
किया मैं अलख अगम को पार।।१०२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
दिया राधास्वामी पार उतार।।१०३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हुई मैं उन पर अब बलिहार।।१०४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
नाम रस पाया किया अहार।।१०५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सब अटक मिटा आचार।।१०६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
भोग सब हो गये अब बीमार।।१०७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
करूँ नहिं उनका कुछ तीमार[1]।।१०८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
भँवर मन बैठा सुन गुंजार।।१०९ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
अगम सुख पाया नहीं शुमार[2]।।११० ।।

१ - ख़ातिरदारी, ग़मख़ारी। २ - गिनती।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मौन होय बैठी तज गुफ़्तार[1] ।।१११ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिला मोहिं आज सार का सार[2] ।।११२ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
सोई है सब का सत करतार।।११३ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
रहूँ मैं उसको सदा चितार[3] ।।११४ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
हंस जहाँ बैठे बहुत क़तार[4] ।।११५ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
आनँद अब मिला मोहिं बिसियार[5] ।।११६ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
किया मैं सब से आज किनार[6] ।।११७ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
करूँ मैं गुरु सँग बहुत पियार।।११८ ।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
मिले राधास्वामी अति दातार।।११९ ।।

१ - बोलना। २ - ख़ुलासा, जौहऱ। ३ - याद रखना। ४ - पंक्ती।
५ - अधिक। ६ - जुदा।

मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गही मैं सरना आज तुम्हार।।१२०।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
बोझ मैं डाला सभी उतार।।१२१।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
तीन तज पाया मैं पद चार।।१२२।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
छुटाया मुझ से खेल असार[१]।।१२३।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
किया मैं मन का आज शिकार।।१२४।।
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी की।
गई मैं राधास्वामी की सरकार।।१२५।।

।। शब्द तीसरा।।

राधास्वामी नाम सुनाया राधास्वामी।
राधास्वामी रूप दिखाया राधास्वामी।।१।।
राधास्वामी धाम लखाया राधास्वामी।
राधास्वामी खेल खिलाया राधास्वामी।।२।।
राधास्वामी मेल मिलाया राधास्वामी।
राधास्वामी पंथ चलाया राधास्वामी।।३।।

१ - असत्त, झूठा।

राधास्वामी सेव कराई राधास्वामी।
राधास्वामी भेव[1] जनाई राधास्वामी।।४ ।।
राधास्वामी मौज चलाई राधास्वामी।
राधास्वामी सिफ़त[2] कहाई राधास्वामी।।५ ।।
राधास्वामी गुन मैं गाऊँ राधास्वामी।
राधास्वामी महिमा सुनाऊँ राधास्वामी।।६ ।।
राधास्वामी आरत बनाई राधास्वामी।
राधास्वामी जोत जगाई राधास्वामी।।७ ।।
राधास्वामी मर्म लखावें राधास्वामी।
राधास्वामी भेद सुनावें राधास्वामी।।८ ।।
राधास्वामी सुरत शब्द राधास्वामी।
राधास्वामी धुनन बुलाई राधास्वामी।। ९ ।।
राधास्वामी संग कराया राधास्वामी।
राधास्वामी रंग चढ़ाया राधास्वामी।।१० ।।
राधास्वामी बूझ[3] बुझाई राधास्वामी।
राधास्वामी सूझ[4] सुझाई राधास्वामी।। ११।।
राधास्वामी भान[5] किरन राधास्वामी।
राधास्वामी सिंध बुंद राधास्वामी।।१२।।
राधास्वामी चन्द कला राधास्वामी।
राधास्वामी गगन गिरा[6] राधास्वामी।।१३।।

१ - भेद। २ - महिमा। ३ - समझ। ४ - निर्णय। ५ - सूरज।
६ - बानी, शब्द।

राधास्वामी धरनी नीर राधास्वामी।
राधास्वामी अगिन पवन राधास्वामी।।१४ ।।
राधास्वामी तीन[१] चार[२] राधास्वामी।
राधास्वामी एक[३] दोय[४] राधास्वामी।।१५ ।।
राधास्वामी सात[५] बीस[६] राधास्वामी।
राधास्वामी सहस[७] दसम[८] राधास्वामी।। १६ ।।
राधास्वामी कंज श्याम[९] राधास्वामी।
राधास्वामी सेत सुन्न राधास्वामी।। १७ ।।
राधास्वामी ओंग ररँग राधास्वामी।
राधास्वामी सोहँग सत्त राधास्वामी।। १८ ।।
राधास्वामी अलख अगम राधास्वामी।
राधास्वामी आप हुए राधास्वामी।। १९ ।।
राधास्वामी महिमा कहें राधास्वामी।
राधास्वामी अस्तुत करें राधास्वामी।। २० ।।
राधास्वामी सार लखावें राधास्वामी।
राधास्वामी प्यार करावें राधास्वामी।। २१।।
राधास्वामी चरन पुजावें राधास्वामी।
राधास्वामी पाट[१०] खुलावें राधास्वामी।। २२।।

१ - तीन गुन। २ - चार अंतःकरन। ३ - सत्तपुरुष राधास्वामी। ४ - ब्रह्म माया। ५ - सात द्वारे। ६ - दस इन्द्री और उनके दस देवता। ७ - सहस दल कँवल। ८ - दसवाँ द्वार। ९ - तीसरा तिल। १० - परदा।

राधास्वामी शब्द बतावें राधास्वामी।
राधास्वामी देस बुझावें राधास्वामी।।२३ ।।
राधास्वामी गुप्त प्रकाशें राधास्वामी।
राधास्वामी तेज निहारें राधास्वामी।।२४ ।।
राधास्वामी सम देखें राधास्वामी।
राधास्वामी गम[१] खोलें राधास्वामी।।२५ ।।
राधास्वामी गाऊँ ध्याऊँ राधास्वामी।
राधास्वामी पुर्ष अर्श[२] राधास्वामी।।२६ ।।
राधास्वामी गीत नाद राधास्वामी।
राधास्वामी गान गवाया राधास्वामी।।२७ ।।
राधास्वामी छान[३] छनाई राधास्वामी।
राधास्वामी प्रीत लगाई राधास्वामी।।२८ ।।
राधास्वामी मथन मथाई राधास्वामी।
राधास्वामी आद अंत राधास्वामी।।२९ ।।
राधास्वामी मद्ध बिराजें राधास्वामी।
राधास्वामी जुक्त जतन राधास्वामी।।३० ।।
राधास्वामी रतन लाल राधास्वामी।
राधास्वामी दयाल कृपाल राधास्वामी।। ३१ ।।
राधास्वामी आन[४] मनाई राधास्वामी।
राधास्वामी आन जगाई राधास्वामी।।३२ ।।

१ - भेद। २ - चैतन्य आकाश। ३ - निर्णय। ४ - हुकम।

राधास्वामी पीव[1] पिता राधास्वामी।
राधास्वामी गुरू संत राधास्वामी।।३३ ।।
राधास्वामी अजर अमर राधास्वामी।
राधास्वामी कुरम[2] शेष[3] राधास्वामी।।३४ ।।
राधास्वामी चेत मिलो राधास्वामी।
राधास्वामी खेत जिताया राधास्वामी।।३५ ।।
राधास्वामी भक्ति सिखाई राधास्वामी।
राधास्वामी भाव बढ़ाया राधास्वामी।।३६ ।।
राधास्वामी सुमिर सुमिर राधास्वामी।
राधास्वामी लगन लगाई राधास्वामी।।३७ ।।
राधास्वामी तोल तुलावें राधास्वामी।
राधास्वामी मोल अमोल राधास्वामी।।३८ ।।
राधास्वामी नेम प्रेम राधास्वामी।
राधास्वामी धरम करम राधास्वामी।।३९ ।।
राधास्वामी जुक्त जोग राधास्वामी।
राधास्वामी भुक्त भोग राधास्वामी।।४०।।
राधास्वामी रैन दिवस राधास्वामी।
राधास्वामी निमख[4] जाम[5] राधास्वामी।।४१ ।।
राधास्वामी धूप छाँव राधास्वामी।
राधास्वामी सूर[6] सोम[7] राधास्वामी।।४२।।

१ - पति। २ - ब्रह्म। ३ - पारब्रह्म। ४ - पल। ५ - पहर।
६ - सूरज। ७ - चाँद।

राधास्वामी जाप मौन राधास्वामी।
राधास्वामी नैन हृदय राधास्वामी।।४३।।
राधास्वामी अंतर बाहर राधास्वामी।
राधास्वामी प्रोक्ष[1] प्रत्यक्ष[2] राधास्वामी।।४४।।
राधास्वामी अधर धरनि राधास्वामी।
राधास्वामी ब्याप ब्यापक राधास्वामी।।४५।।
राधास्वामी दात दाता राधास्वामी।
राधास्वामी करन कारन राधास्वामी।।४६।।
राधास्वामी तरन तारन राधास्वामी।
राधास्वामी सृष्ट सृष्टा राधास्वामी।।४७।।
राधास्वामी दृष्ट दृष्टा राधास्वामी।
राधास्वामी ब्रत तीरथ राधास्वामी।।४८।।
राधास्वामी बेद कतेब राधास्वामी।
राधास्वामी गाय गवाओ राधास्वामी।।४९।।
राधास्वामी पूज पुजाओ राधास्वामी।
राधास्वामी अपर अपार राधास्वामी।।५०।।
राधास्वामी अधर अधार राधास्वामी।
राधास्वामी अगम अगाध राधास्वामी।।५१।।
राधास्वामी परम अगार राधास्वामी।
राधास्वामी कँवल भँवर राधास्वामी।।५२।।

१ - गुप्त। २ - प्रगट।

राधास्वामी उधर इधर राधास्वामी।
राधास्वामी अघड़ सुघड़ राधास्वामी।।५३ ।।
राधास्वामी डाल मूल राधास्वामी।
राधास्वामी गाऊँ सब गाओ राधास्वामी।।५४ ।।

।। शब्द चौथा।।

राधास्वामी आय प्रगट हुए जब से।
राधास्वामी नाम सुनावें तब से।। १ ।।
राधास्वामी नाम जपूँ मैं मन से।
राधास्वामी दरस मिला अब तन से।। २ ।।
राधास्वामी दरस करूँ नैनन से।
राधास्वामी बचन सुनूँ सरवन से।। ३ ।।
राधास्वामी कहत रहूँ हियरे से।
राधास्वामी सुनत रहूँ जियरे से।। ४ ।।
राधास्वामी नाम धरूँ प्रानन से।
राधास्वामी नाम गहूँ इन्द्रिन से।। ५ ।।
राधास्वामी राह चलूँ पाँवन[1] से।
राधास्वामी सेव करूँ दोउ कर से।। ६ ।।
राधास्वामी संग करूँ सब धर[2] से।
राधास्वामी पास बसूँ अति डर से।। ७ ।।

१ - पैरों। २ - देह।

राधास्वामी गाय रही मैं उमँग से।
राधास्वामी ध्याय रही कोइ दिन से।। ८ ।।
राधास्वामी रटन लगी दम दम से।
राधास्वामी याद बढ़ी छिन छिन से।। ९ ।।
बिसरत नहिं राधास्वामी जिगर[१] से।
बिछड़त नहिं राधास्वामी पलक से।।१० ।।
राधास्वामी रूप देख दोउ तिल से।
राधास्वामी प्रीत लगी मेरे दिल से।।११ ।।
राधास्वामी बोले इक दिन मुझ से।
राधास्वामी पर बल गई[२] उस दिन से।।१२ ।।
राधास्वामी महिमा क्या कहूँ किस से।
राधास्वामी सरन छुड़ावत जम से।।१३ ।।
राधास्वामी अलग किया भरमन से।
राधास्वामी लिया छुटा करमन से।।१४ ।।
राधास्वामी लिया लगा चरनन से।
राधास्वामी आये देश अगम से।।१५ ।।
राधास्वामी हंस किया मोहिं नर से।
राधास्वामी दान दिया निज घर से।।१६ ।।
राधास्वामी भेद सुनाया धुर से।
राधास्वामी मोहिं छुड़ाया हम से।।१७ ।।

१ - कलेजा। २ - बलिहार हुई।

राधास्वामी अपना किया जक्त से।
राधास्वामी निपट[1] बचाया छल से।।१८ ।।
राधास्वामी पार किया भौजल से।
प्रेम लगा राधास्वामी गुरु से।।१९ ।।
मैं चकोर राधास्वामी चन्द से।
मैं कँवला राधास्वामी भान से।। २०।।
मैं कोकिल राधास्वामी अंब[2] से।
मैं भौंरा राधास्वामी कँवल से।।२१ ।।
मैं दिनकर[3] राधास्वामी गगन से।
मैं फनधर[4] राधास्वामी मनि से।।२२ ।।
मैं बाली राधास्वामी मात से।
मैं कुमार राधास्वामी तात[5] से।।२३ ।।
मैं दरदी राधास्वामी शांति से।
मैं चकवी राधास्वामी क्रांति[6] से।।२४ ।।
मैं घायल राधास्वामी बिरह से।
मैं मायल[7] राधास्वामी तरह[8] से।।२५ ।।
राधास्वामी शब्द लखाया जुक्ति से।
राधास्वामी नाम कमाया भक्ति से।।२६ ।।

१ - बिलकुल। २ - आम का दरख़्त। ३ - सूरज। ४ - साँप।
५ - पिता। ६ - सूरज का प्रकाश। ७ - मोहित।
८ - छबि, अंदाज़।

मैं प्यारी राधास्वामी प्यार से।
मै मीना राधास्वामी धार से।।२७ ।।
मैं अंडा राधास्वामी कुरम[१] से।
मैं तरंग राधास्वामी सिन्ध से।।२८ ।।
मैं गगरी राधास्वामी नीर से।
मैं कमान[२] राधास्वामी तीर से।।२९ ।।
मैं भई बन राधास्वामी सिंघ से।
मैं हुई तन राधास्वामी जान से।।३० ।।
मैं बृक्षा राधास्वामी सुफल से।
मैं साखा राधास्वामी फूल से।।३१ ।।
मैं दीपक राधास्वामी जोत से।
मैं समुँदर राधास्वामी सोत से।।३२ ।।
मैं धरनी राधास्वामी मेघ से।
मैं सूरा राधास्वामी तेग़[३] से।।३३ ।।
मैं देही राधास्वामी नैन से।
मैं रसना राधास्वामी बैन से।।३४ ।।
मैं लोहा राधास्वामी नाव से।
मैं निरधन राधास्वामी साव[४] से।।३५ ।।

१ - कछुआ जो पानी में रहता है। २ - धनुष। ३ - तलवार।
४ - साहूकार, धनवान।

मैं सीपी राधास्वामी स्वाँति से।
मैं मोहित राधास्वामी भाँति से।।३६ ।।
मैं जीती राधास्वामी दाँव[१] से।
मैं तिरपत राधास्वामी भाव से।।३७ ।।
मैं ब्यंजन राधास्वामी नोन से।
मैं अंकुर राधास्वामी पौन से।।३८ ।।
मैं तारा राधास्वामी ब्योम[२] से।
मैं कमुदन[३] राधास्वामी सोम[४] से।। ३९।।
राधास्वामी मेहर चली मैं घट से।
राधास्वामी चरन पकड़ मेरी हठ से।। ४०।।
राधास्वामी मोहिं हटाया कपट से।
राधास्वामी पार किया तिल पट से।।४१ ।।
राधास्वामी बंक चढ़ाया झट से।
राधास्वामी घाट मिला औघट से।।४२ ।।
राधास्वामी द्वार खुलाया त्रिकुट से।
राधास्वामी हन्स किया सर तट[५] से।।४३ ।।
चढ़ी महासुन राधास्वामी बल से।
राधास्वामी शुद्ध किया कलमल से।।४४ ।।

१ - बाज़ी। २ - आकाश। ३ - कोई का फूल। ४ - चाँद।
५ - मानसरोवर तीर।

राधास्वामी आज मिलाया सोहँग से।
सत्तलोक आई राधास्वामी सँग से।।४५ ।।
राधास्वामी अलख लखाया मौज से।
राधास्वामी अगम दिखाया चौज[१] से।।४६ ।।
राधास्वामी रूप लखा सूरत से।
लगा प्रेम राधास्वामी मूरत से।।४७ ।।
मिली जाय राधास्वामी चरन से।
हुआ उद्धार राधास्वामी सरन से।।४८ ।।
राधास्वामी धाम गई मैं धज[२] से।
राधास्वामी मोहिं सिंगारी सज से।।४९ ।।
राधास्वामी अंग लगाया उमँग से।
राधास्वामी भेद मिला सतसँग से।। ५० ।।
पार हुई राधास्वामी लगन से।
राधास्वामी आज हटाया मलन[३] से।।५१ ।।
उपमा राधास्वामी कहूँ कौन से।
राधास्वामी काढ़ा सभी जोन से।।५२ ।।
राधास्वामी पाये बहुत कठिन से।
मिल गये राधास्वामी बड़े जतन से।।५३ ।।
पिऊँ अमी राधास्वामी धुन से।
जाय रलूँ[४] राधास्वामी सुन से।।५४ ।।

* * * * *

१ - बिलास। २ - शान, सिंगार। ३ - मलीनता। ४ - एक रस होऊँ।

।। शब्द पाँचवाँ।।

राधास्वामी लिया अपनाय सखी री।
शोभा अद्भुत आज लखी री।। १ ।।
राधास्वामी बचन अगाध सुने री।
राधास्वामी नाम अराध गुने[1] री।। २ ।।
राधास्वामी अगम अनाम लखे री।
राधास्वामी गति कस बुद्धि भखे[2] री।। ३ ।।
राधास्वामी चरन स्पर्श करे री।
राधास्वामी हिरदे माहिं धरे री।। ४ ।।
राधास्वामी सँग भौजाल भने[3] री।
राधास्वामी संगत काल हने[4] री।। ५ ।।
राधास्वामी काढ़ लिया जग से री।
राधास्वामी हन्स किया खग[5] से री।। ६ ।।
राधास्वामी अजब सँदेस दिया री।
राधास्वामी कहत अँदेस[6] गया री।। ७ ।।
राधास्वामी गोद बिठाया मुझे री।
राधास्वामी लेहैं उबार तुझे री।। ८ ।।
राधास्वामी शाम सुबह रट ले री।
राधास्वामी आठ जाम भज ले री।। ९ ।।

१ - सुमिरन। २ - कहे। ३ - काटे। ४ - नाश किया।
५ - काग। ६ - सन्शय।

राधास्वामी पल पल हिये बसे री।
राधास्वामी मेहर जताऊँ किसे री।। १० ।।
राधास्वामी संग न कोई करे री।
राधास्वामी रंग न कोई धरे री।। ११ ।।
राधास्वामी जिस पर मेहर करें री।
राधास्वामी उसको पकड़ धरें री।। १२ ।।
राधास्वामी मेहर बिना क्या गत री।
कस समझे राधास्वामी मत री।। १३ ।।
राधास्वामी चौथा लोक कहें री।
राधास्वामी अलख अलोक भनें[१] री।। १४ ।।
राधास्वामी अगम सुगम कर दें री।
राधास्वामी धाम जाय फिर ले री।। १५ ।।
राधास्वामी मिले भाग से अब री।
राधास्वामी पकड़ अभी फिर कब री।। १६ ।।
राधास्वामी लाग बढ़ा छिन छिन री।
राधास्वामी तेज देख दिन दिन री।। १७ ।।
राधास्वामी देह धरी आ जग री।
राधास्वामी काल हटावें ठग री।। १८ ।।
तू राधास्वामी सरन मत तज री।
तू राधास्वामी चरन नित भज री।। १९ ।।

१ - कहें।

राधास्वामी नाम कटें सब अघ[१] री।
राधास्वामी काया मथ ली सगरी[२]।। २०।।
राधास्वामी शब्द रूप तू सुन री।
राधास्वामी सुरत साथ ले धुन री।।२१ ।।
राधास्वामी संग मारले मन री।
राधास्वामी काटें नागिन[३] फन री।।२२ ।।
राधास्वामी से गुरु फिर न मिलें री।
राधास्वामी छोड़ें न जिसे गहें री।।२३ ।।
राधास्वामी महिमा कौन कहे री।
बेद थके और शेष रहे री।।२४ ।।
राधास्वामी गुप्त प्रगट हुए अब री।
राधास्वामी भेद दिया मोहिं सब री।।२५ ।।
राधास्वामी चमन[४] दिखाया घट री।
राधास्वामी खोल दिये सब पट री।।२६ ।।
राधास्वामी कला[५] खिलाई नट[६] री।
राधास्वामी गगन चढ़ाया झट[७] री।।२७ ।।
राधास्वामी संग गई सुन तट री।
राधास्वामी रंग लिया जग हट री।।२८ ।।

---

१ - पाप। २ - कुल, सब। ३ - माया। ४ - फुलवार। ५ - बाज़ी।
६ - मन। ७ - जल्दी।

राधास्वामी भरी आज स्त्रुत गगरी।
राधास्वामी अजब दिखाई नगरी।।२९ ।।
राधास्वामी संग रही मैं पग[१] री।
राधास्वामी दमक[२] लखी मैं सगरी।।३० ।।
राधास्वामी मिले भाग उठा जग री।
अमर हुई राधास्वामी सँग लग री।।३१ ।।
राधास्वामी सरन प्रीत हुई जिगरी।
राधास्वामी अजब सुनाई धुन किंगरी।।३२ ।।
राधास्वामी किया मोहिं अपना री।
राधास्वामी दिया मिटा खपना[३] री।।३३ ।।
राधास्वामी जगत किया सुपना री।
राधास्वामी दूर किया तपना री।।३४ ।।
राधास्वामी नाम सदा जपना री।
राधास्वामी दरस आज तकना री।।३५ ।।
राधास्वामी भेद न काहु कहना री।
राधास्वामी बिन जग बिच बहना री।।३६ ।।
राधास्वामी दिया शब्द गहना[४] री।
राधास्वामी चंद नहीं गहना[५] री।।३७ ।।
राधास्वामी संग न दुख सहना री।
राधास्वामी संग सुखी रहना री।।३८ ।।

१ - मिलना। २ - चमक। ३ - बिरथा मेहनत करना।
४ - ज़ेवर। ५ - ग्रहण।

राधास्वामी परम बिलास दिया री।
राधास्वामी भौजल पार किया री।। ३९।।
राधास्वामी कर्म भर्म काटे री।
राधास्वामी चरन जभी चाटे री।।४०।।
राधास्वामी आरत नित्त करूँ री।
राधास्वामी कहें सो चित्त धरूँ री।।४१ ।।
राधास्वामी प्रेम जगाय रहूँ री।
राधास्वामी राधास्वामी नित्त भजूँ री।।४२ ।।
राधास्वामी कहना मान चली री।
राधास्वामी ध्यान अब जाय मिली री।।४३ ।।
राधास्वामी सीत[1] मिला मोहिं जब री।
राधास्वामी शुद्ध किया मोहिं तब री।।४४ ।।
राधास्वामी गुन कस गाऊँ अली[2] री।
राधास्वामी गगन दिखाई गली री।।४५ ।।
राधास्वामी कमर बँधाई भली री।
राधास्वामी धुन में जाय पिली री।।४६ ।।
राधास्वामी सब बिधि काज किया री।
राधास्वामी अचरज साज[3] दिया री।।४७ ।।
राधास्वामी आसन अधर धरा री।
राधास्वामी दर्शन वहीं करा री।।४८ ।।

१ - परशादी। २ - सखी। ३ - सामान।

राधास्वामी सोभा अजब बनी री।
राधास्वामी छबि पर दृष्टि तनी[१] री।।४९।।
राधास्वामी जीव उद्धार करें री।
राधास्वामी संत औतार धरें री।।५०।।
राधास्वामी मत कुछ अजब चला री।
राधास्वामी भेद अब दिया भला री।।५१।।
राधास्वामी गिनें न ब्रह्मज्ञान री।
राधास्वामी थापें न जोग ध्यान री।।५२।।
राधास्वामी मानें न राम कृश्न री।
राधास्वामी मानें न ब्रह्मा बिश्नु री।।५३।।
राधास्वामी पूजें न शिव गनेश री।
राधास्वामी पूजें न गौर शेष री।।५४।।
राधास्वामी मानें न कर्म धर्म री।
राधास्वामी जप तप जानें भर्म री।।५५।।
राधास्वामी मानें न तीर्थ बर्त री।
राधास्वामी मानें न शास्त्र स्मृत री।।५६।।
राधास्वामी मानें न सूर चंद री।
राधास्वामी मानें न गंग जमन री।।५७।।
राधास्वामी काटें पिछली टेक री।
राधास्वामी भर्म न राखें एक री।।५८।।

१ - खिंची।

राधास्वामी बुत[१] पूजा न धार री।
राधास्वामी पित्र पूजा न कार री।।५९।।
राधास्वामी कहें गुरु भक्ति साध री।
राधास्वामी भजन बतावें नाद[२] री।।६०।।
राधास्वामी सतसँग करो कहें री।
राधास्वामी वक़्त गुरु थरपें री।।६१।।
राधास्वामी जात न पाँत रखें री।
राधास्वामी हिंदू न तुर्क गहें री।।६२।।
राधास्वामी बर्न आश्रम न गायें री।
राधास्वामी मिथ्या भर्म सुनायें री।।६३।।
राधास्वामी भक्ती बर्न बतायें री।
राधास्वामी गुरु की भक्ति दृढ़ायें री।।६४।।
राधास्वामी बेद कतेब उड़ायें री।
राधास्वामी मुरशिद[३] क़ौल[४] ठहरायें री।।६५।।
राधास्वामी मुरशिद ख़ुदा दिखायें री।
राधास्वामी पीर[५] परस्ती[६] सिखायेंरी।।६६।।
राधास्वामी रोज़ा नमाज़ उठायें री।
राधास्वामी मसजिद बाँग छुड़ायें री।।६७।।
राधास्वामी काबा न हज्ज[७] करायें री।
राधास्वामी क़ुराँ न वज़ीफ़ा[८] पढ़ायेंरी।।६८।।

१ - मूर्ती। २ - शब्द। ३ - गुरु। ४ - बचन। ५ - गुरु। ६ - पूजा। ७ - जात्रा। ८ - जाप।

राधास्वामी दिल पर क़ाबू दिलायें री।
राधास्वामी नफ़्स अमारा[1] गिरायें री।।६९ ।।
राधास्वामी रूह[2] असमान चढ़ायें री।
राधास्वामी घट में अर्श[3] दिखायें री।। ७०।।
राधास्वामी रूह मेराज[4] दिलायें री।
राधास्वामी तन में ख़ुदा मिलायें री।।७१ ।।
राधास्वामी फ़क़र[5] को बड़ा बतायें री।
राधास्वामी कहत रसूल[6] न पायें री।।७२ ।।
राधास्वामी सात मुक़ाम लखायें री।
राधास्वामी फ़क़र मरातिब[7] गायें री।।७३ ।।
राधास्वामी शग़ल[8] अवाज़ करायें री।
राधास्वामी रूह को सौत[9] सुनायें री।।७४ ।।
राधास्वामी सुरत और शब्द मथें री।
राधास्वामी रूह को सौत कथें री।।७५ ।।
राधास्वामी अनहद नाद कहें री।
राधास्वामी सौत सरमदी[10] गहें री।।७६ ।।
राधास्वामी आद धाम से आये री।
राधास्वामी सब से ऊँच धाये री।।७७ ।।

१ - मलीन मन। २ - सुरत। ३ - चैतन्य आकाश। ४ - चढ़ाई।
५ - संत गती। ६ - पैग़म्बर। ७ - दरजे। ८ - अभ्यास।
९ - शब्द। १० - आवाज़ अनहद।

राधास्वामी की है प्रथम मँज़िल री।
सो सब मत सिद्धान्त समझ री।।७८ ।।
राधास्वामी पहिली मँज़िल कही री।
सब मत का सिद्धान्त वही री।।७९ ।।
राधास्वामी मत अब बहुत बड़ा री।
राधास्वामी मत यह जान पड़ा री।। ८० ।।
राधास्वामी सात मँज़िल[१] बरने री।
राधास्वामी भिन भिन कहें निरने री।।८१ ।।
राधास्वामी गति सब भाँति बड़ी री।
राधास्वामी चरनन सुरत अड़ी री।।८२ ।।
राधास्वामी हैरत धाम रहें री।
राधास्वामी अचरज नाम कहें री।।८३ ।।
राधास्वामी चुंबक मैं लोहा री।
राधास्वामी रूप निरख मोहा री।।८४ ।।
राधास्वामी भृंगी मैं कीड़ा री।
राधास्वामी सकल हरी पीड़ा री।।८५ ।।
राधास्वामी पहुँचे दूर देश री।
राधास्वामी अपना दिया सँदेस री।।८६ ।।
राधास्वामी कँवला मैं भँवरा री।
राधास्वामी दरस देख सँवरा[२] री।।८७ ।।

१ - स्थान। २ - सँवारा गया।

राधास्वामी कहें सोई करना री।
राधास्वामी चरन सीस धरना री।।८८ ।।
राधास्वामी उपमा कौन करे री।
राधास्वामी सरन जीव उधरे री।।८९ ।।
राधास्वामी मूरत देख जिऊँ री।
राधास्वामी अमृत नाम पिऊँ री।। ९० ।।
राधास्वामी सँग घट खोज करूँ री।
राधास्वामी सँग पट मौज लहूँ री।। ९१ ।।
राधास्वामी सँग अब सुरत भरूँ री।
राधास्वामी सँग धुन शब्द सुनूँ री।। ९२ ।।
राधास्वामी सँग तिल तोड़ चलूँ री।
राधास्वामी सँग नभ फोड़ मिलूँ री।। ९३ ।।
राधास्वामी सँग फिर जोत लखूँ री।
राधास्वामी सँग सुन भेद तकूँ री।।९४ ।।
राधास्वामी सँग नल बंक धसूँ री।
राधास्वामी सँग चढ़ गगन हँसूँ री।। ९५ ।।
राधास्वामी सँग दस द्वार गहूँ री।
राधास्वामी सँग महासुन्न चढूँ री।। ९६ ।।
राधास्वामी सँग मैं गुफा रहूँ री।
राधास्वामी सँग सतनाम लगूँ री।। ९७ ।।

राधास्वामी सँग मैं अलख लखूँ री।
राधास्वामी सँग अब अगम भखूँरी।।९८।।
राधास्वामी राधास्वामी रंग रँगूँ री।
राधास्वामी राधास्वामी धाम बसूँरी।।९९।।
राधास्वामी कहें सो कार करूँ री।
राधास्वामी २ पकड़ धरूँ री।।१००।।
राधास्वामी लीला ताक तकूँ री।
राधास्वामी महल अब जाय पकूँ री।।१०१।।
राधास्वामी सोभा अजब कहूँ री।
राधास्वामी आगे खड़ी रहूँ री।।१०२।।
राधास्वामी तख़्त बिराज रहे री।
राधास्वामी सख़्त बिकार दहे री।।१०३।।
राधास्वामी जीव निवाज़[1] रहे री।
राधास्वामी पीव हमार भये री।।१०४।।
राधास्वामी अति कर द्याल हुए री।
राधास्वामी दया जम काल मुए[2] री।।१०५।।
राधास्वामी अब मोहिं अमर किया री।
राधास्वामी पद मोहिं अजर दिया री।।१०६।।
राधास्वामी गुन गाऊँ नित नित री।
राधास्वामी मात हुए और पित री।।१०७।।

१ - दया करने वाले। २ - मरे।

राधास्वामी सब से अलग किया री।
राधास्वामी सब बल तोड़ दिया री।।१०८।।

।। बचन चौथा ।।

महिमा दर्शन परम पुरुष पूरन धनी
राधास्वामी की और बर्नन दशा
प्रेम और आनन्द की
उसकी प्राप्ती में

।। शब्द पहिला ।।

देव री सखी मोहिं उमँग बधाई।
अब मेरे आनँद उर[1] न समाई।। १ ।।
छिन छिन हरखूँ पल पल निरखूँ।
छबि राधास्वामी मो से कही न जाई।। २ ।।
आरत थाली लीन सजाई।
प्रेम सहित रस भर भर गाई।। ३ ।।
चरन सरन गुरु लाग बढ़ाई।
अधिक बिलास रहा मन छाई।। ४ ।।
कहा कहूँ यह घड़ी सुहाई।
सुरत हंसनी गई है लुभाई।। ५ ।।
शब्द गुरु धुन गगन सुनाई।
अमी धार धुर से चल आई।। ६ ।।

१ - हिरदय।

रोम रोम और अँग अँग न्हाई।
बरन बिनोद[१] कहूँ कस भाई।। ७ ।।
लिख लिख कर कुछ सैन जनाई।
जानेंगे मेरे जो गुरु भाई।। ८ ।।
राधास्वामी कहत बनाई।
चार लोक में फिरी है दुहाई[२]।। ९ ।।
सत्तनाम धुन बीन बजाई।
काल बली अति मुरछा खाई।। १० ।।
अलख अगम दोउ मेहर कराई।
राधास्वामी २ दरस दिखाई।। ११ ।।

।। शब्द दूसरा ।।

आज बधावा[३] राधास्वामी गाऊँ।
चरन कँवल गुरु प्रेम बढ़ाऊँ।। १ ।।
हरख अधिक अब हिये समाऊँ।
राधास्वामी रूप चित्त में लाऊँ।। २ ।।
आज दिवस मेरा भाग अनोखा[४]।
दरशन राधास्वामी मन को पोखा[५]।। ३ ।।
सतगुरु पूरे अंग लगाया।
राधास्वामी अचरज खेल दिखाया।। ४ ।।

१ - आनन्द। २ - हुक्म। ३ - आनन्द गीत। ४ - अचरज।
५ - शान्त किया

बाजत घट में अनहद तूरा।
राधास्वामी राधास्वामी खुला ज़हूरा।। ५ ।।
जगा भाग मेरा अति गंभीरा।
राधास्वामी नाम कहत मन धीरा।। ६ ।।
खुल गये बज्र किवाड़ अर्श[1] के।
दर्शन पाये राधास्वामी पुर्ष के।। ७ ।।
सोभा अधिक कहाँ लग भाखूँ।
राधास्वामी मूरत नैनन ताकूँ।। ८ ।।
दरस अधार जिऊँ छिन छिन में।
राधास्वामी गुन गाऊँ पल पल में।। ९ ।।
गुन गावत मन होत हुलासा।
राधास्वामी चरन बँधी मम आसा।। १० ।।
मीन मगन जस जल के माहीं।
राधास्वामी सरन छुटत अब नाहीं।। ११ ।।
केल[2] करूँ नित उनके संगा।
राधास्वामी किये भरम सब भंगा[3]।। १२ ।।
निरमल होय चरन लिपटानी।
राधास्वामी गति अति अगम बखानी।। १३ ।।
आनँद मंगल अब रहा छाई।
राधास्वामी आगे गाऊँ बधाई।। १४ ।।

१ - चेतन्य आकाश। २ - कलोल। ३ - दूर।

अजब बधावा राधास्वामी गाया।
उलट पलट राधास्वामी रिझाया।।१५ ।।

।। शब्द तीसरा ।।

आज मेरे धूम भई है भारी।
कहूँ क्या राधास्वामी रूप निहारी।। १ ।।
घाट अब हो गया सुखमन[1] जारी।
आरती राधास्वामी करूँ सँवारी।। २ ।।
प्रेम रँग भीज गई स्रुत सारी।
निरत[2] सँग राधास्वामी कीन पुकारी।। ३ ।।
हुई जाय सुन में शब्द अधारी।
चरन में राधास्वामी माथ धरा री।। ४ ।।
कहूँ क्या आरत गावत न्यारी।
लगी मोहिं राधास्वामी धुन अब प्यारी।। ५ ।।
अगम गत कैसे कोइ बिचारी।
रीत कुछ राधास्वामी अचरज धारी।। ६ ।।
छोड़ अब तन मन चढ़त अटारी।
जहाँ राधास्वामी तख़्त बिछा री।। ७ ।।
टहल में रहती निस दिन ठाढ़ी।
अमी रस राधास्वामी दीन अहारी।। ८ ।।

१ - मध्य की धार। २ - सुरत का निरनय करने वाला अंग।

बड़ा अब भाग अपार जगा री।
तेज राधास्वामी बहुत बढ़ा री।। ९ ।।
कौन यह पावे घट उजियारी।
दई राधास्वामी लाभ अपारी।। १०।।
धुनन की होत सदा झनकारी।
कीन राधास्वामी मोहिं अपना री।। ११ ।।
इड़ा तज पिंगला खोज करा री।
सिखर चढ़ राधास्वामी घोर सुनारी।।१२ ।।
सोहँग में बंसी आन पुकारी।
अजब गत राधास्वामी देखी न्यारी।।१३ ।।
काल पुनि हारा कर्म कटा री।
लगी ऐसी राधास्वामी नाम कटारी[1]।।१४ ।।
सत्त सर गई सुरत पनिहारी[2]।
भरी राधास्वामी गगरी भारी।।१५ ।।
हन्सनी हो गई हन्सन प्यारी।
पिया अब राधास्वामी नाम सुधा[3] री।।१६ ।।
कहत मैं महिमा राधास्वामी हारी।
करी मैं आरत राधास्वामी सारी।।१७ ।।

* * * * *

१ - हथियार। २ - पानी भरने वाली। ३ - अमृत।

।। शब्द चौथा।।

जुगनियाँ[1] चढ़ी गगन के पार।
सुनी राधास्वामी धूम अपार।। १ ।।
लगनियाँ[2] मगन हुई दस द्वार।
दगनियाँ[3] मारी राधास्वामी झाड़।। २ ।।
सुँघनियाँ[4] सूँघत मलय[5] निहार।
नाम राधास्वामी पाया सार।। ३ ।।
सुजनियाँ लखी शब्द की धार।
राधास्वामी गावत राग मलार।। ४ ।।
बैरागिन भैलो सुरत हमार।
चरन राधास्वामी मोर अधार।। ५ ।।
सुहागिन चली नाम की लार।
लई राधास्वामी सेज सँवार।। ६ ।।
पिया घर पहुँची मौज निहार।
हुई राधास्वामी के बलिहार।। ७ ।।
जाय जहँ देखी लीला सार।
राधास्वामी चरन पखार पखार।। ८ ।।
गई और झाँकी खिड़की पार।
राधास्वामी रूप किया दीदार।। ९ ।।

१ - जोग करने वाली, मिलने वाली। २ - लगने वाली यानी प्रेमी सुरत। ३ - धोखा देने वाली यानी माया। ४ - सूँघने वाली सुरत। ५ - मलयागिर, चंदन।

दृष्टि अब उलटी करत जुहार[१]।
राधास्वामी परसे तज हंकार।।१०।।
गये अब मन के सभी बिकार।
दई अस राधास्वामी दृष्टी डार।।११ ।।
कामना रही न अब संसार।
राधास्वामी दीन्हा संसय टार।।१२ ।।
जुक्ति से डारा मन को मार।
चलाई राधास्वामी पैनी[२] धार।।१३ ।।
मिरगनी[३] भागी बन से हार।
राधास्वामी छोड़ा बान सम्हार।।१४ ।।
कहूँ क्या देखी अजब बहार।
दिखाया राधास्वामी इक गुल्ज़ार[४]।।१५ ।।
शब्द गुल[५] खिल गये वार और पार।
लगा राधास्वामी से अब प्यार।।१६ ।।
घोर जहाँ अनहद उठत अपार।
सुरत राधास्वामी दई सुधार।।१७ ।।

।।शब्द पाँचवाँ।।

राधास्वामी का दरस मैं आज करूँगी।
पल पल छिन छिन पार रहूँगी।।१ ।।

१ - दंडवत। २ - तेज़। ३ - माया। ४ - चमन, बागीचा। ५ - फूल।

जगत जाल से बहुत बचूँगी।
कर्म काल को मार धरूँगी। २ ।।
सुरत चढ़ाय असमान भरूँगी।
गगन मँडल की सैर करूँगी।। ३ ।।
धुन धधकार अनंत सुनूँगी।
शब्द अमी रस अगम पिऊँगी।। ४ ।।
पुष्ट होय गुरु चरन गहूँगी।
सुखमन संग बिलास करूँगी।। ५ ।।
बंक नाल में सहज धसूँगी।
त्रिकुटी जा मैं ओंग गहूँगी।। ६ ।।
सुन्न महासुन पार सजूँगी।
भँवरगुफा सतलोक रहूँगी।। ७ ।।
अलख अगम धुन नित्त भजूँगी।
राधास्वामी चरन स्पर्श करूँगी।। ८ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

देखत रही री दरस गुरु पूरे।
चाखत रही री प्रेम रस मूरे।। १ ।।
सोभा सतगुरु बरनी न जाई।
बाजत घट में अनहद तूरे।। २ ।।
बुंद चढ़ी तज पिंड असारा।
पहुँची जाय सिन्ध सत नूरे।। ३ ।।

गरजत गगन बिरह उठ जागी।
मन कायर अब होवत सूरे।। ४ ।।
चरन कँवल गुरु हिरदे धारी।
करत तमोगुन दम दम चूरे।। ५ ।।
कृपा दृष्टि सतगुरु अब धारी।
काल चक्र डारत अब तोड़े।। ६ ।।
समुँद सोत धस सुरत समानी।
मान सरोवर दरसत हूरे[1]।। ७ ।।
सुरत चढ़ाय गई सत नामा।
पहुँची राधास्वामी चरन हज़ूरे।। ८ ।।

।। शब्द सातवाँ।।

गुरु के दरस पर मैं बलिहारी।
गुरु के चरन मेरे प्रान अधारी।। १ ।।
गुरु के बचन मेरे हिये सिंगारी।
गुरु सरूप दिन रैन सम्हारी।। २ ।।
गुरु का सँग कर छिन छिन प्यारी।
गुरु का रँग ले नैन निहारी।। ३ ।।
गुरु के धाम पर सुरत लगा री।
नील सिखर[2] चढ़ श्याम तका री।। ४ ।।

१ - अप्सरा। २ - नाम मुक़ाम।

सेत सूर जहँ नूर लखा री।
शब्द अनाहद तूर बजा री।। ५ ।।
मुरली धमक और बीन सुना री।
अद्भुत रस अचरज सुख भारी।। ६ ।।
बिरले संत यह भेद पुकारी।
तू भी सरन पड़ उन की जा री।। ७ ।।
ज्यों मीना जल धार समा री।
ज्यों चकोर चन्दा निरखा री।। ८ ।।
अस पिरीत सतगुरु सँग ला री।
कर प्रतीत घट होत उजारी।। ९ ।।
भाग बिना क्या करे बिचारी।
यह भी भाग गुरू से पा री।। १०।।
राधास्वामी कही जुक्ति यह सारी[१]।
उन के चरन से प्रेम लगा री।। ११ ।।

।। शब्द आठवाँ ।।

गुरु का दरस तू देख री।
तिल आसन डार।। १ ।।
शब्द गुरू नित सुनो री।
मिल बासन[२] जार।। २ ।।

१ - सार और.खुलासा। २ - बासना।

गुरु रूप सोहावन अति लगे।
घट भान उजार।। ३ ।।
कँवल खिलत सुख पावई।
भौंरा कर प्यार।। ४ ।।
गुरु ज्ञान न पाया हे सखी।
जिन घट अँधियार।। ५ ।।
पूरा सतगुरु ना मिला।
भरमत भौ जार[१]।। ६ ।।
मैं तो सतगुरु पाइया।
जाऊँ बलिहार।। ७ ।।
ज्यों चकोर चन्दा गहे।
रहूँ रूप निहार।। ८ ।।
सतगुरु शब्द सरूप हैं।
रहें अर्श मँझार।। ९ ।।
तू भी सुरत सरूप है।
रहो गुरु की लार।। १०।।
नैनन में गुरु रूप है।
तू नैन उघार[२]।। ११।।
सरवन में गुरु शब्द है।
सुन गगन पुकार।।१२ ।।

१ - जाल। २ - खोल

राधास्वामी कह रहे।
यह मारग सार।।१३ ।।
जो जो मानें भाग से।
सो उतरें पार।।१४ ।।

।। बचन पाँचवाँ ।।

वर्णन भेद मारग और शोभा सत्तलोक की और महिमा निज स्वरूप और निज स्थान परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की।।

।। शब्द पहिला ।।

आरत गावै सेवक तेरा।
संसय भरम ने चित को घेरा।।१ ।।
अब स्वामी किरपा करो ऐसी।
संसय जड़ सब जायँ बिनासी।।२ ।।
निरसंसय चित शब्द समाई।
दसवें द्वार रहे ठहराई।।३ ।।
आगे महासुन्न मैदाना।
मौज होय तो करे पयाना[१]।।४ ।।
आगे भँवरगुफा की खिड़की।
सोहँग धुन जहाँ निस दिन खड़की[२]।।५ ।।

१ - चलना। २ -आवाज़ हुई।

तहाँ जाय कर आनँद पाऊँ।
आगे को फिर सुरत चढ़ाऊँ।। ६ ।।
सत्तनाम सतशब्द ठिकाना।
चौथा पद सोइ संत बखाना।। ७ ।।
हन्सन सोभा कही न जाई।
खोड़स[1] चंद्र सूर छबि छाई।। ८ ।।
अद्‌भुत रूप पुरुष कहा बरनूँ।
कोटि सूर चन्दा इक रोमूँ।। ९ ।।
दीपन सोभा अजब सँवारी।
हन्स हन्स प्रति[2] दीप निरारी[3]।। १० ।।
अमी कुंड जहाँ भर रहे भारी।
पुरुष दरस का करें अहारी।। ११ ।।
नित नित लीला नई जहाँ की।
महिमा कहँ लग बरनूँ वहाँ की।। १२ ।।
अलख लोक तिस आगे थापा।
गई सुरत तहाँ तज कर आपा।। १३ ।।
अलख पुरुष सोभा कहा गाई।
अरब कोटि शशि सूर लजाई।। १४ ।।
सुरत रूप वहाँ ऐसा पाई।
कोटि भान छबि ऐसी गाई।। १५ ।।

१ - सोलह। २ - वास्ते। ३ - न्यारे।

सुरत चली आगे पग धारा।
अगम लोक को जाय निहारा।।१६ ।।
अगम पुरुष की सोभा न्यारी।
कोटिन खरब सूर उजियारी।।१७ ।।
आगे ता के पुरुष अनामी।
ता को अकह अपार बखानी।।१८ ।।
संत बिना वहाँ और न जाई।
संतन निज घर वह ठहराई।।१९ ।।
हे स्वामी यह बिनती हमारी।
भेद दिया तुम अति से भारी।।२० ।।
पहुँचूँ कैसे सो भी गाओ।
मन मेरे को बहुत उमाओ[१]।।२१ ।।
सुरत शब्द की राह बताई।
दया बिना नहिं पहुँचे भाई।।२२ ।।
संसय भरम न राखो कोई।
धीरे धीरे सुरत समोई[२]।।२३ ।।
शब्द खोज तुम निस दिन राखो।
बार बार स्वामी यह भाखो।।२४ ।।
अब आरत पूरन कह गाई।
संत मता सब दिया लखाई।।२५ ।।

१ - उमगाओ। २ - प्रवेश या लीन करना।

।। शब्द दूसरा ।।

आज आरती इक कहूँ भारी।
सुमिरन राधास्वामी करूँ अधारी।। १ ।।
तिल का थाल जोत हुई बाती।
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आती।। २ ।।
रूप अनूप हिये में लाती।
दरशन राधास्वामी निज कर पाती।। ३ ।।
मैं चकवी सतगुरु हुए चकवा।
रैन भई तो हुआ बिछोहा[1]।। ४ ।।
मैं अज्ञान रैन बस पड़ी।
वार रही और धीर न धरी।। ५ ।।
सतगुरु पार बसेरा कीन्हा।
क्योंकर मिलूँ राह नहिं चीन्हा।। ६ ।।
तड़पूँ छिन छिन पिय के बियोग।
कस पाऊँ अब पिय संजोग।। ७ ।।
अति आतुर[2] घबराय पुकारी।
तब स्वामी मेरी कीन सम्हारी।। ८ ।।
रात बिताई हुआ बिहाना।
घट के भीतर भान उगाना[3]।। ९ ।।

१ - बियोग। २ - तड़पती। ३ - उदय हुआ।

चक[1] के वार पड़ी थी थोथी[2]।
गुरु चक पार सुनाई पोथी[3]।। १० ।।
गुरु से मिली खोल कर पाट।
घाट बाट घट बाँधा ठाट।। ११ ।।
लोहा ज्यों चुम्बक सँग मिली।
सुरत शब्द से जाकर रली।। १२ ।।
सुरत दृष्टि कर द्वारा झाँका।
तोड़ा जाय सुई का नाका[4]।। १३ ।।
भीतर धस जो लीला देखी।
बरनूँ कैसे बात अगम की।। १४ ।।
अंतरजामी सतगुरु जाने।
और भेदी पुनि आप पहिचाने।। १५ ।।
श्याम सेत के मद्ध समानी।
घंटा संख सुनी धुन बानी।। १६ ।।
सूर चाँद दोऊ दिस देखे।
सुखमन गगना तारे पेखे।। १७ ।।
आगे धसी बंक की नाल।
अवगत काल बिछाया जाल।। १८ ।।
आगे पहुँची त्रिकुटी द्वार।
लाल रूप जहँ धुन ओंकार।। १९ ।।

१ - चक्षु, आँख। २ - बेकाम। ३ - आकाशबानी, शब्द। ४ - मुख।

सुन्न में गई महल दस माहिं।
हंसन साथ मानसर न्हाहि।। २०।।
सेत सेत वह सुन्न दिखाई।
चन्द्र चाँदनी चौक लखाई।।२१ ।।
सिखर चढ़ी पच्छिम के द्वार।
महासुन्न के हो गई पार।।२२ ।।
भँवरगुफा का ताक़ उघारा।
सोहँग मुरली सुनी पुकारा।।२३ ।।
चौक परे सत लोक समानी।
सत्तपुरुष धुन बीन बखानी।।२४ ।।
कोटिन सूर[1] लगे इक रोम।
कोटि कोटि जहँ ऊगे सोम[2]।।२५ ।।
सत्तपुरुष की आयस[3] पाय।
अलख लोक में पहुँची धाय।।२६ ।।
अरब सूर शशि[4] जहाँ लजायँ।
ऐसी सोभा देखी आय।।२७ ।।
वहँ से आज्ञा लेकर चली।
अगम पुरुष से जाकर मिली।।२८ ।।
खरबन चन्द्र सूर उजियारा।
और कहूँ क्या अगम पसारा।।२९ ।।

१ - सूरज। २ - चाँद। ३ - आज्ञा। ४ - चन्द्रमा।

वहाँ से भी फिर आगे बढ़ी।
सुरत निरत निज पद में धरी।। ३० ।।
निज पद है वह राधास्वामी।
फिर फिर कहूँ मैं राधास्वामी।। ३१ ।।

।। सोरठा।।

क्योंकर करूँ बखान
महिमा मैं उस धाम की।
नील नील शशि भान
इक इक कँगुरे[1] लग रहे।। ३२ ।।
पदमन[2] मणी जड़ी महलन में।
सोभा वहँ की कहूँ क्योंकर मैं।। ३३ ।।
संख और महासंख शशि भान।
गिर्द सिंघासन देखे आन।।३४ ।।
जस सरूप राधास्वामी धारा।
सोभा वा की अकह अपारा।।३५ ।।
क्या दृष्टान्त देउँ मैं सही।
गिनती भी बाक़ी नहिं रही।। ३६ ।।
यह आरत मैं बढ़की कही।
कस बरनूँ अब मीरी[3] भई।।३७ ।।

* * * * *

१ - कंगूरा। २ - अनेक पदम(संख्या विशेष)। ३ - अव्वल नम्बर।

।। शब्द तीसरा।।

नगरिया झाँक रही मैं न्यारी।
गुरू ने मोहिं दीन्ही अचरज तारी[1]।। १ ।।
सुनी मैं अनहद धुन झनकारी।
रूप अब निरखा अद्‌भुत भारी।। २ ।।
कहूँ क्या गुरु की मेहर करारी[2]।
हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी[3]।। ३ ।।
छोड़ कर देस पराया आई।
महल में राधास्वामी आन बसाई।। ४ ।।
भेद यह दीन्हा मोहिं मेरे भाई।
कहूँ कस महिमा उनकी गाई।। ५ ।।
सरन अब राधास्वामी दृढ़ कर पाई।
छोट मुख क्योंकर करूँ बड़ाई।। ६ ।।
भाग मेरा जागा शब्द सुहाई।
नाम रस पाया करूँ कमाई।। ७ ।।
सुरत हुई निरमल सुखमन पाई।
चली और नभ पर करी चढ़ाई।। ८ ।।
नैन दोउ फेरे जोत दिखाई।
सहसदल कँवल मध्य धस आई।। ९ ।।

१ - कुन्जी। २ - तेज़। ३ - प्यारी।

श्याम तज सेत रूप दरसाई।
बंक चढ़ त्रिकुटी आन समाई।।१०।।
ओंग धुन गरज भली समझाई।
सूर जहँ लाल लाल दिखलाई।।११ ।।
सुन्न चल मानसरोवर न्हाई।
ररँग धुन किंगरी ख़ूब सुनाई।।१२ ।।
हन्स होय आगे पन्थ चलाई।
महासुन सूरत अजब सजाई।।१३ ।।
धमक सुन भँवरगुफा ढिंग[1] आई।
बाँसरी सोहँग संग बजाई।।१४ ।।
वहाँ से सचखँड पहुँची धाई।
पुरुष का रूप अनोखा पाई।।१५ ।।
बीन धुन सुनकर बहुत रिझाई।
मेहर हुइ भारी कहा न जाई।।१६ ।।
गुरु मोहिं दीन्हा अलख लखाई।
अगम का परदा खोला जाई।।१७ ।।
वहाँ से राधास्वामी धाम दिखाई।
गई और चरन सरन लिपटाई।।१८ ।।
आरती अद्भुत लीन सजाई।
बंगला अचरज रूप बनाई।।१९ ।।

१ - पास।

बैठ कर राधास्वामी छबि दिखलाई।
उमँग और प्रेम रहा मेरा छाई।।२० ।।
सखी सब मिल कर देत बधाई।
आज मेरा जन्म सुफल हुआ भाई।।२१।।
ब्रह्म और माया दोऊ लजाई।
काल और कर्म रहे मुरझाई।।२२ ।।
जोग और ज्ञान थके पछताई।
कहूँ क्या कोई मर्म न पाई।।२३ ।।
संत मत ठीक यही ठहराई।
सुरत और शब्द राह दरसाई।।२४ ।।
बेद नहिं पावे संत बड़ाई।
कही अब राधास्वामी यह गति गाई।।२५ ।।

।। शब्द चौथा।।

गुरु मता अनोखा दरसा।
मन सुरत शब्द जाय परसा।। १ ।।
लीला घट देखी भारी।
हुइ सुरत गगन पनिहारी।। २ ।।
अमृत रस भर भर पीया।
तन मन सब सीतल हूआ।। ३ ।।
चोरी अब चोरन त्यागी।
घर उनके अगनी लागी।। ४ ।।

साहू अब घट में जागे।
पहरा दे शब्द अनुरागे।। ५ ।।
गुन गावत मन हुलसाया।
धुन धावत अधर चढ़ाया।। ६ ।।
जगमग हुइ जोत उजियारी।
घट खिल गइ कँवल कियारी।। ७ ।।
सुन्दर की खिड़की खोली।
सुखमन में धुन नित बोली।। ८ ।।
चढ़ि बंक किवाड़ी खोली।
त्रिकुटी जा हुई अमोली।। ९ ।।
ज्यों फेरत पान तमोली।
यों धुन घट सूरत रोली[१]।। १० ।।
क्या महिमा गुरु पद गाऊँ।
छिन छिन में उमँग बढ़ाऊँ।। ११ ।।
सुर नर मुनि गति नहिं जानी।
यह अचरज अकथ कहानी।। १२ ।।
सुन में जा शब्द समानी।
अद्‌भुत धुन किंगरी छानी।। १३ ।।
गइ महासुन्न के नाके।
गुरु दया अचंभा[२] ताके।। १४ ।।

१ - छाँटा। २ - अचरज।

फिर भँवरगुफा लगी डोरी।
सोहँग जा सूरत जोड़ी।।१५ ।।
सतगुरु पद सत कर जाना।
गति मति क्या कहूँ बखाना।।१६ ।।
शशि सूर अनेकन पाँती।
देखे और आगे जाती।।१७ ।।
लख अलख अगम दरसाना।
मिला राधास्वामी नाम निशाना।।१८ ।।
यह अजब परम पद पाया।
अब तक कोइ भेद न गाया।।१९ ।।
नहिं बेद कतेब सुनाया।
जोगी नहिं ज्ञानी धाया।।२० ।।
यह बस्तु अमोलक पाई।
कोइ बिरले संत बताई।।२१।।
मेरे राधास्वामी परम दयाला।
जिन कीन्हा मोहिं निहाला।।२२ ।।
मैं आरत उनकी करता।
तन मन दोउ चरनन धरता।।२३ ।।
मैं हर दम यही पुकारूँ।
मत अगम अगाध सम्हारूँ।।२४ ।।

मेरा भाग उदय हो आया।
राधास्वामी चरन धियाया।।२५ ।।
जग स्वाद लगा सब फीका।
राधास्वामी नाम मैं सीखा।।२६ ।।
गति मति मेरी उल्टी पल्टी।
गुरु कर दइ सूरत सुल्टी[१]।।२७ ।।
मेरा काज हुआ सब पूरा।
मैं राधास्वामी चरनन धूरा।।२८ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

सुख समूह[२] अंतर घट छाया।
आरत सामाँ[३] आन सजाया।। १ ।।
आनँद हर्ष अधिक हिये आया।
गुरु चरनन में चित्त समाया।। २ ।।
दर्शन कर गुरु महिमा गाया।
छबि अनूप नैनन में लाया।। ३ ।।
प्रेम सूर निज गगन उगाया।
भर्म तिमर सब दूर बहाया।। ४ ।।
जगे भाग धुन अनहद पाया।
अंतर सुखमन तीरथ न्हाया।। ५ ।।

१ - सीधी। २ - बहुत। ३ - सामान, पदारथ।

सहस कँवल तिल उलट फिराया।
मन को छोड़ सुरत सँग धाया।। ६ ।।
जोत निरंजन रूप दिखाया।
अति हुलास कुछ कहा न जाया।। ७ ।।
घंटा नाद और संख सुनाया।
चाँद सूर तारा दरसाया।। ८ ।।
बंकनाल का द्वार खुलाया।
त्रिकुटी चढ़ गुरु शब्द मिलाया।। ९ ।।
सूरज मंडल बेद पढ़ाया।
अर्ध मात्रा मूल जनाया।। १०।।
सुन्न शिखर धुन ररँग जगाया।
माया काल दोऊ सुलवाया[1]।। ११ ।।
सेत चंद्रमा फूल खिलाया।
मानसरोवर अमी पिलाया।। १२ ।।
हंसन साथ मिलाप बढ़ाया।
किंगरी साराँगी धूम मचाया।। १३ ।।
महासुन्न धुन गुप्त लखाया।
महाकाल बल छीन कराया।। १४ ।।
भँवर गुफा अमृत बरसाया।
सोहँग बंसी नाद बजाया।। १५ ।।

१ - निद्रित किया।

चढ़ी सुरत सतपुरुष गजाया[1]।
सच्च खंड जा तख़्त बिछाया।।१६ ।।
पुरुष मेहर दुरबीन दिलाया।
अलख रूप सोभा परखाया।।१७ ।।
अगम पुरुष फिर अमी चुवाया।
राधास्वामी भेद बताया।।१८ ।।
भक्त धाम येही ठहराया।
आरत कर राधास्वामी रिझाया।।१९ ।।
फल अपार दुख दूर गँवाया।
रसक रसक रस शब्द रसाया।।२० ।।
जन्म जन्म के कर्म नसाया।
काल दाव अब ख़ूब चुकाया।।२१ ।।
राधास्वामी चरनन माथ नवाया।
राधास्वामी मूरत हिये बसाया।।२२ ।।
तज बिकार मन को समझाया।
नाम पकड़ अब काम हटाया।।२३।।
सील छिमा दृढ़ थान जमाया।
मन बिहंग को अधर उड़ाया।।२४ ।।
गुरु भृग्ङी यह कीट चिताया।
राधास्वामी चरन निपट लिपटाया।।२५ ।।

१ - ऊँची आवाज़ से बुलाया।

।। बचन छठवाँ।।

आरती परम पुरुष पूरन धनी
राधास्वामी के चरण कँवल में

अब सतगुरु की आरत गाऊँ।
कथ कथ आरत बहुत सुनाऊँ।। १ ।।
आरत बानी आगे भनी[१]।
बिबिध भाँत की आरत बनी।। २ ।।
राधास्वामी करत बखाना।
सतसंगी सुनें देकर काना।। ३ ।।

।। शब्द पहिला।।

हे राधा तुम गति अति भारी।
हे स्वामी तुम धाम अपारी।
राधास्वामी दोउ मोहिं गोद बिठारी।। १ ।।
राधा चरन गहे मैं आ री।
स्वामी सरन हुई गति न्यारी।
राधास्वामी की हुइ मैं प्यारी।। २ ।।
राधा अंतर दया बिचारी।
स्वामी परघट किया उबारी।
राधास्वामी मिलकर मोहिं सँवारी।। ३ ।।

१ - कही।

राधा पल पल नाम रटा री।
स्वामी तिल तिल रूप निहारी।
राधास्वामी मुझ को किया अपना री। ४ ।।
राधा गुन क्या कहूँ पुकारी।
स्वामी महिमा अकह अपारी।
राधास्वामी अब मोहिं लीन सुधारी।। ५ ।।
राधा दरस कठिन गहिरा री।
स्वामी बचन सुनत मोहा री।
राधास्वामी अब के लिया उबारी।। ६ ।।
राधा बल मन हार गया री।
स्वामी बल मैं गगन चढ़ा री।
राधास्वामी कीन्ही मेहर करारी[1]।। ७ ।।
राधा आरत करूँ सिंगारी।
स्वामी संग आरती धारी।
राधास्वामी आरत करन बिचारी।। ८ ।।
राधा चरन सिंघासन धारी।
स्वामी चरन सम्हार पखारी[2]।
राधास्वामी चरन अब मिला अधारी।। ९ ।।

१ - तेज़। २ - धोया।

राधा दृष्टि दया कर डारी।
स्वामी मेहर करी अब न्यारी।
राधास्वामी कीन मोर उपकारी।।१० ।।
राधा गल अब हार चढ़ा री।
स्वामी सीतल तिलक लगा री।
राधास्वामी पूजन आज करा री।।११ ।।
राधा आगे भोग धरा री।
स्वामी सन्मुख थाल भरा री।
राधास्वामी दोनों मान लिया री।।१२ ।।
राधा अमर चीर पहिना री।
स्वामी अजर बस्त्र तन धारी।
राधास्वामी सोभा अगम अपारी।।१३ ।।
राधा आरत अब हुइ भारी।
स्वामी चित में हर्ष बढ़ा री।
राधास्वामी चरनन आन पड़ा री।।१४ ।।
राधा दिया परशाद दया री।
स्वामी मेहर करी कुछ न्यारी।
राधास्वामी पर मैं जाऊँ बलिहारी।।१५ ।।
परथम आरत राधा धारी।
फिर आरत मैं स्वामी सम्हारी।
राधास्वामी आरत कर लइ सारी।।१६ ।।

राधा अपना धाम दिया री।
स्वामी चरनन माहिं लिया री।
राधास्वामी दोनों पार किया री।।१७ ।।

।। शब्द दूसरा।।

राधास्वामी मेरे सिंध गंभीर।
कोइ थाह न पावत बीर।। १ ।।
रतनन के भरे भंडार।
जहाँ लाल अमोलक सार।। २ ।।
सुर्त मीन करे जहाँ केल[1]।
कल काल धरे जहाँ पेल।। ३ ।।
घट प्रेम धार अब उमँगी।
रस सार पिये कोइ संगी।। ४ ।।
तिल उलट चली सुर्त प्यारी।
देखी वहाँ जोत उजारी।। ५ ।।
दल द्वार खोल कर पैठी[2]।
नल पार अविद्या ऐंठी[3]।। ६ ।।
माया का चक्र हटाया।
ब्रह्म दरस सहज में पाया।। ७ ।।
धुन अनहद सार बजाया।
सुन भीतर शब्द जगाया।। ८ ।।

१ - आनंद। २ - घुसी। ३ - अकड़ गई, मुरझा गई।

गुरु पर अब तन मन वारूँ।
गुन गावत कभी न हारूँ।। ९ ।।
क्या महिमा गुरु पद गाऊँ।
मैं नित नित बल बल जाऊँ।। १० ।।
गुरु मूरत रिदे[1] छिपाऊँ।
मन अंदर द्वार खुलाऊँ।। ११ ।।
गुरु संग लिये मोहिं जावें।
सत रूप अधर दरसावें।। १२ ।।
कँवलन के बाग़ दिखावें।
हंसन सँग केल करावें।। १३ ।।
वह आनंद कहत न जाई।
सुर्त भीज रही छबि छाई।। १४ ।।
अमृत रस झड़ी लगाई।
छिन छिन पर धार चुवाई।। १५ ।।
मन ग़ोता[2] खावत भारी।
सुर्त जागी मिटी अँधियारी।। १६ ।।
कोइ सज्जन प्रेम बिलासी।
देखत और खेलत पासी।। १७ ।।
गुरु बचन सुनत मैं हाँसी।
हुइ राधास्वामी चरन निवासी।। १८ ।।

१ - हृदय। २ - डुबकी लगाना।

दम दम में प्रेम बढ़ाती।
गुरु मूरत अजब दिखाती।।१९ ।।
मैं नैन परान गँवाती।
तन मन की सुध बिसराती।।२० ।।
गुरु मूरत अधिक सुहाती।
ज्यों चन्द्र चकोर समाती।।२१ ।।
राधास्वामी मौज दिखाई।
मैं चरन धूर होय धाई।।२२ ।।

।। शब्द तीसरा।।

आज दिवस सखि मंगल खानी।
मैं राधास्वामी सँग आरत ठानी।। १ ।।
तन मन थाल बिरह कर जोती।
सुरत निरत धुन माल[1] परोती[2]।। २ ।।
गगन शिखर चढ़ अचरज देखूँ।
हंसन साथ महासुन पेखूँ[3]।। ३ ।।
चरन गहूँ अब राधास्वामी के।
आरत गाऊँ प्यारे जिय के।। ४ ।।
छिन छिन निरखूँ छबि राधास्वामी।
तन मन अरपूँ दुख हर नामी।। ५ ।।

१ - माला। २ - गुथती। ३ - देखूँ।

छिन छिन निरखूँ छबि प्रीतम की।
तन मन अरपूँ दुख हर हिये की।। ६ ।।
कहाँ लग बरनूँ चोट बिरह की।
कोई न जाने साल[१] जिगर की।। ७ ।।
बिरह अगिन तन मन मेरा फूँका।
झाल उठी जग दीन्हा लूका।। ८ ।।
बिन राधास्वामी मोहिं कौन सम्हारे।
लोक चार मेरे ज़रा न अधारे।। ९ ।।
मैं भइ देही तुम भये स्वाँसा।
तुम बिन नहिं जीवन की आसा।। १० ।।
तुम भये मेघा मैं भई मोरा।
तुम्हारे दरस मैं करती शोरा।। ११ ।।
मैं बुलबुल तुम गुल की क्यारी।
मैं क़ुमरी[२] तुम सर्व[३] अपारी।। १२ ।।
तुम चंदा मैं रैन अँधियारी।
तुम से सोभा भई हमारी।। १३ ।।
प्रेम सिन्ध जब लहर उठाई।
भरम कोट सब दीन बहाई।। १४ ।।
काम क्रोध की बस्ती उजड़ी।
आसा मनसा तन से बिछड़ी।। १५ ।।

१ - चोट का दुख। २ - एक कबूतर की क़िस्म की चिड़िया।
३ - एक तरह का दरख़्त।

लोभ मोह सब दूर निकारी।
बिषय बासना घट से टारी।।१६ ।।
राज बिबेक हुआ अब भारी।
सुख पाया तन रैयत[१] सारी।।१७ ।।
मैं दासी सतगुरु चरनन की।
किये हैं मनोरथ पूरन अबकी।।१८ ।।
कहाँ लग बरनूँ महिमा उनकी।
ख़बर पड़ी अब अनहद धुन की।।१९ ।।
सुरत चढ़ी पहुँची ब्रह्मंडा।
छोड़ गई यह ख़ाकी पिंडा।।२० ।।
गगन मँडल जाय बैठक पाई।
सुन्न महल में धधक चढ़ाई।।२१ ।।
द्वार दसम का पाया मरमा।
दूर किये सब कंटक करमा।।२२ ।।
कर्म काट निज घर को चाली।
माया ठगनी दूर निकाली।।२३ ।।
महासुन्न का खेल दिखाना।
क्या कहुँ वहाँ का हाल पुराना।।२४ ।।
सिंघ नाग जहाँ चौकी लाये।
बिन सतगुरु कोइ पार न पाये।।२५ ।।

१ - प्रजा।

अंध घोर तिस आगे भारी।
शब्द गुरु तहाँ कीन उजारी।। २६।।
झँझरी पार झरोखा देखा।
संतन जा का बरना लेखा।। २७।।
दायें बाट गइ दीप अचिंता।
बाईं दिसा जहाँ सहज बसंता।। २८।।
मध्य होय सूरत चढ़ी आगे।
भँवर गुफा जहाँ सोहँग जागे।। २९ ।।
सोहँग से जाय भेंटा कीन्हा।
सत्तनाम धुन ता पर चीन्हा।। ३० ।।
अलख पुरुष की धुन सुन पाई।
तहाँ से अगम पुरुष को धाई।। ३१ ।।
अगम लोक जाया डेरा डाला।
अब पाई पूरी टकसाला।। ३२ ।।
अब रहा आगे एक अनामी।
कहा कहूँ वह अकह कहानी।। ३३ ।।
अब आरत पूरन भइ मेरी।
दया करो स्वामी मैं बल तेरी।। ३४ ।।

।। शब्द चौथा।।

आज साज कर आरत लाई।
प्रेम नगर बिच फिरी है दुहाई।। १ ।।

बिरह बिथा के लुट गये डेरे।
मिल गये राधास्वामी बिछड़े मेरे ।। २ ।।
हिरदा थाल सुरत की बाती।
शब्द जोत मैं नित्त जगाती ।। ३ ।।
आरत फेरूँ सन्मुख ठाढ़ी।
प्रीत उमँग मेरी छिन छिन बाढ़ी ।। ४ ।।
तन नगरी बिच बजत ढँढोरा।
भागे चोर ज़ोर भया थोड़ा ।। ५ ।।
सील छिमा आया थाना गाड़ा।
काम क्रोध पर पड़ गया धाड़ा[1] ।। ६ ।।
स्वामी मेहर करी अब भारी।
मैं भी उन चरनन बलिहारी ।। ७ ।।
अब तो सरन पड़ी राधास्वामी।
राखो सँग सदा अंतरजामी ।। ८ ।।
मेरे और न कोई दूजा।
मेरे निस दिन तुम्हरी पूजा ।। ९ ।।
तुम बिन और न कोई जानूँ।
छिन छिन मन में तुम को मानूँ ।। १० ।।
मैं मछली तुम नीर अपारा।
केल करूँ मैं तुम्हरी लारा ।। ११ ।।

१ - आफ़त।

मैं पपिहा तुम स्वाँति के बादल।
सुख पाये दुख गये हैं रसातल[1]।।१२ ।।
तुम चंदा मैं कमोदन हीनी।
तुम्हरी लगन मैं निस दिन भीनी[2]।।१३ ।।
मैं धरनी तुम गगन बिराजे।
कैसे मिलूँ मैं तुम सँग आजे।।१४ ।।
सुरत निरत से चढ़ कर धाऊँ।
कभी न छोड़ूँ अस लिपटाऊँ।।१५ ।।
मैं गुरबर्ती राधास्वामी के चरन की।
लाज रखो मेरी काल से अब की।।१६ ।।
तुम्हरे बल से भइ हूँ निचिंती।
अब मन में नहिं संका धरती।।१७ ।।
सूर किया स्वामी खेत जिताया।
मार लिया मैं ने मन और माया।।१८ ।।
ख़ाक मिला सब कपट ख़ज़ाना।
भाग गया दल मोह पुराना।।१९ ।।
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीन्हा।
सुन्न शिखर पर डंका दीन्हा।। २०।।
सिंध महासुन बीच में आया।
सतगुरु कृपा ने दीन तराया।।२१ ।।

१ - नीचे। २ - भींजी हुई।

भँवरगुफा के महल बिराजी।
सत्तलोक चढ़ अचरज गाजी।।२२ ।।
अलख लोक में सूरत साजी।
अगम लोक को छिन में भाजी[1]।।२३ ।।
पोहप[2] सिंहासन क्या कहूँ महिमा।
जहाँ राधास्वामी ने धारे चरना।।२४ ।।
उन चरनन पर जाय लिपटानी।
आगे अकह की क्या कहूँ बानी।।२५ ।।
अब आरत मैं कीन्ही पूरी।
भाषा भेद अगम गम मूरी।।२६ ।।
राधास्वामी की चरन धूर धर।
आय गई अपने मैं निज घर।।२७ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

यह आरत दासी रची
प्रेम सिंध की धार।
धारा उमँगी प्रेम की
जा का वार न पार।। १ ।।

१ - भागी। २ - फूल।

सन्मुख ठाड़ी होय कर
बिनती करूँ पुकार।
भागहीन मैं क्यों हुई
स्वामी तुम दरबार।। २ ।।
तुम से दाता कोइ नहीं
सब को लीन्हा तार।
मुझ अपराधिन हीन की
अभी न आई बार।। ३ ।।
मैं तड़पी तुम दरस को
जैसे चंद चकोर।
सीप चहै जिम[1] स्वाँति को
मोर चहै घन घोर।। ४ ।।

।। चौपाई।।

तुम दीपक मैं भइ हूँ पतंगा।
भस्म किया मन तुम्हरे संगा।। ५ ।।
तुम भृङी मैं कीट अधीना।
मिल गये राधास्वामी अति परबीना।। ६ ।।
तुम चंदन मैं भइ हुँ भुवंगन[2]।
सीतल भइ लग तुम्हरे चरनन।। ७ ।।

१ - जैसे। २ - सर्प।

तुम समुद्र मैं लहर तुम्हारी।
तुम से उठ फिर तुमहिं सम्हारी। ८ ।।
तुम सूरज मैं किरनी आई।
तुम से निकसी तुमहिं समाई।। ९ ।।
तुम मोती मैं भी भइ धागा।
संग तुम्हारा कभी न त्यागा।। १०।।
अब तो कृपा करो राधास्वामी।
तुम हो घट घट अंतरजामी।। ११ ।।
तुम चंदा मैं कला तुम्हारी।
घाट बाढ़ तुम्हरो आधारी।।१२ ।।
मैं बाली तुम पित और माता।
तुम्हरी गोद खेलूँ दिन राता।।१३ ।।
नैन थाल और दृष्टी जोती।
पलकन छड़ी खड़ी कर लेती।।१४ ।।
प्रेम नीर का घी अब डारूँ।
आरत तुम्हरे सन्मुख वारूँ।।१५ ।।
घंटा संख नाद धुन गाजा।
बीन बाँसरी अचरज बाजा।।१६ ।।
ताल मृदंग किंगरी धधकी।
ढोल पखावज छिन छिन खड़की।।१७ ।।

सहस धार अमृत की बरषा।
गगन मँडल फिरे जैसे चरख़ा।।१८ ।।
घुमँड घुमँड होवै बलिहारी।
आरत सोभा अब भइ भारी।।१९ ।।
समा बँधा कुछ कहा न जाई।
सतसंगी मिल आरत गाई।। २०।।
हीरे लाल नौछावर[1] होई।
माणिक मोती लड़ियाँ पोई।। २१ ।।
फल और फूल जहाँ अति राजें।
राधास्वामी जहाँ बिराजें।।२२ ।।
मगन हुआ अब तन मन मेरा।
राधास्वामी छिन छिन हेरा[2]।।२३ ।।
आरत कीन्ही अब मैं पूरी।
देओ परशाद अमी रस मूरी[3]।।२४ ।।
प्रेम धजा अब गगन फहराई।
धुन धधकार अगम से आई।।२५ ।।

* * * * *

१ - वार दिया। २ - देखा। ३ - मूल।

।। शब्द छठवाँ।।

आनँद मंगल आज
साज सब आरत लाई।
राधास्वामी हुए हैं दयाल
काल डर दूर बहाई।। १ ।।
सुखमन थाल सजाय
बंक की खोल किवाड़ी।
चन्द्र कटोरी आन
भान की जोत सँवारी।। २ ।।
सुरत निरत की छड़ी
अमी का भोग धराई।
सेत चँदरवा तान[1]
सेत की तान[2] सुनाई।। ३ ।।
कर्म रेख मिट गई
सुन्न में बजी बधाई।
स्वामी किरपा करी
रूप अद्भुत दरसाई।। ४ ।।
सत्तनाम धुन अगम
हिये बिच आन समाई।

१ - खैंचकर। २ - राग।

काया नगर मँझार
पुरुष की फिरी दुहाई।। ५ ।।
छोड़ कुटुँब और तोड़ जक्त से
पोढ़[1] परम पद पाई।
राधास्वामी राधास्वामी
निस दिन रटना लाई।। ६ ।।
प्रेम मगन मन हुआ
कहा अब कछू न जाई।
सतसंगी मिल आरत गावें
तन मन सुध बिसराई।। ७ ।।
स्वामी किरपा करी
सुरत अब लीन जगाई।
शब्द अगम का भेद
दीन सतगुरु दरसाई।। ८ ।।
उमँग उमँग कर उमँग उमँग कर
आरत गाई।
पंच शब्द धुन पंच शब्द धुन
पूरन आई।। ९ ।।

* * * * *

१ - मज़बूत।

॥ शब्द सातवाँ॥

करूँ आरती राधास्वामी
तन मन सुरत लगाय।
थाल बना सत शब्द का
अलख जोत फहराय॥ १ ॥
हंस सभी आरत करें
सन्मुख दर्शन पाय।
राधास्वामी दया कर
दीन्हा अगम लखाय॥ २ ॥
अनहद धुन घंटा बजे
संख बजे मिरदंग।
ओंकार मंडल बँधा
मेघनाद गरजंत॥ ३ ॥
सुन्न मँडल धुन साराँगी
किंगरी बजे अनूप।
कोट भान छबि रोम इक
ऐसा पुरुष स्वरूप॥ ४ ॥
कँवलन की क्यारी बनी
भँवर करें गुंजार।

सेत सिंघासन बैठ कर
देखें पुरुष सम्हार।। ५ ।।
बीन बाँसरी मधुर धुन
बाजें पुरुष हज़ूर।
सुन सुन हंसा मगन होयँ
पियें अमी रस मूर।। ६ ।।
रंग महल सतपुरुष का
सोभा अगम अपार।
हंस जहाँ आनंद करें
देखें बिमल बहार।। ७ ।।
अब आरत पूरन भई
मन पाया बिसराम।
राधास्वामी चरन पर
कोट कोट परनाम।। ८ ।।

।। शब्द आठवाँ।।

सुरत सखी आज करत आरती।
शब्द गुरु मन अपने धारती।।१ ।।
निरत दीप का किया उजाला।
रोई माया झुर गया काला।।२ ।।

बिरत[1] बिबेक थाल लिया हाथा।
मद और मोह झुकाया माथा। ३ ।।
दीन ग़रीबी आन समाई।
कुटिल कपट अब दूर बहाई।। ४ ।।
प्रेम भक्ति की जोत जगाई।
लेकर सन्मुख स्वामी आई।। ५ ।।
फेरत आरत घेरत मन को।
टेरत[2] राधास्वामी चली धुन घन को।। ६ ।।
घोर उठा घट भीतर भारी।
उमँगा हिरदा चोट करारी।। ७ ।।
जिगर फटा दिल टुकड़े हुआ।
तब राधास्वामी का दर्शन लिया।। ८ ।।
ऐसे कठिन स्वामी दर्शन पाये।
कर्म भर्म सब दूर नसाये।। ९ ।।
प्रेम भक्ति की धारा छूटी।
काम क्रोध की गठरी लूटी।। १० ।।
मान मनी की मटकी फूटी।
जक्त बासना सबही छूटी।। ११ ।।
तत्त पाँच परकिर्त पचीसा।
गुन तीनों धर पटको सीसा।। १२ ।।

१ - वृत्ती। २ - पुकारती हुई।

सुरत छूट चढ़ी गगन मँडल को।
घेर लिया जाय काल मँडल को।।१३ ।।
जीत लिया गढ़ सुन्न मँडल को।
धार लिया मन अगम मँडल को।।१४ ।।
मैं लोहा पारस राधास्वामी।
पारस परस गई निज धामी।।१५ ।।
मैं भुवंग[1] तुम हो मणि मेरे।
तेज तुम्हारे सुक्ख घनेरे।।१६ ।।
मैं कँवला तुम सूर प्रकाशी।
दरस तुम्हारे पाऊँ हुलासी।।१७ ।।
मैं सरवर तुम कँवल अनूपा।
सोभा पाऊँ मैं तुम्हरे रूपा।।१८ ।।
तुम सरवर मैं भइ हूँ हंसला[2]।
मोती चुगूँ और देखूँ लीला।।१९ ।।
मैं प्यासी तुम अमृत धारा।
मैं भूखी तुम्हरा अगम भँडारा।।२० ।।
अगम आरती ऐसी गाई।
बिरह भाव की धार बहाई।।२१ ।।
कूड़ा करकट[3] सभी जलाया।
महल आपना साफ़ कराया।।२२ ।।

१ - सर्प। २ - हंस। ३ - कूड़ा।

मुझसी बिरहन और न कोई।
मैं सब अपनी गति मति खोई।।२३ ।।
घर फूँका और लीन्हा लूका[1]।
तीन लोक को छिन में थूका।।२४ ।।
सत्तलोक का पाया कूका[2]।
अब कीन्हा मैंने काल का टूका[3] ।।२५ ।।
पाया सतगुरु चरन निवासा।
होत सदा अब बिमल बिलासा।।२६ ।।
महिमा ता की कही न जाई।
गूँगे[4] का गुड़ हो गया भाई।।२७ ।।

।। शब्द नवाँ।।

भर भर प्रेम आरती गाऊँ।
नई उमँग अब चित्त समाऊँ।। १ ।।
भक्ति सिंध अति लहर उठाई।
प्रीत रीत मोती उपजाई।। २ ।।
सुरत चमेली घट में खिलाई।
निरत रँगीली संग मिलाई।। ३ ।।
शब्द गुरु गल हार पिन्हाया।
गगन मँडल धुन अजब सुनाया।। ४ ।।

१ - पलीता, जिस से आग लगाई जावे। २ - आवाज़।
३ - टुकड़ा। ४ - जो बोल न सके, मूक।

पीत सेत और लाल बखाना।
हरा श्याम पचरंगी बाना।। ५ ।।
पाँच रंग फुलवार खिलानी।
देख देख दृष्टी हरषानी।। ६ ।।
जोत जगी हिये भया उजाला।
श्याम निरख फिर सेत सम्हाला।। ७ ।।
अनहद बानी सुनी गगन में।
मगन हुई सुर्त पहुँची धुन में।। ८ ।।
घंटा संख सूर दिस[1] छाँटा।
बंक नाल का खोला घाटा।। ९ ।।
आरत एक करी त्रिकुटी में।
गुरु स्वरूप निरखा अब घट में।। १० ।।
दूसर आरत सतगुरु कीन्ही।
सत्तलोक गइ सुरत प्रबीनी।। ११ ।।
तीसर आरत राधास्वामी।
निजकर करी देख निज धामी।। १२ ।।
महिमा उनकी क्योंकर गाऊँ।
चरन सरन में निस दिन धाऊँ।। १३ ।।
राधास्वामी धाम दिखाई।
अद्भुत सोभा कही न जाई।। १४ ।।

१ - सूरज की दिशा यानी दाहिनी तरफ़।

राधास्वामी पुरुष अपारा।
कहूँ कहा कुछ अजब बहारा।।१५ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

सुरत आज लगी चरन गुरु धाय।
श्याम तज सेत ग्राम ठहराय।। १ ।।
देख निज नाली बंक समाय।
तिर्कुटी चढ़ कर पहुँची आय।। २ ।।
हिये बिच पंकज अजब खिलाय।
सेत पद धजा अगम फहराय।। ३ ।।
हंस जहाँ बाजे रहे बजाय।
गुरू अस लीला दई दिखाय।। ४ ।।
रागनी नइ नइ नित्त सुनाय।
भेद सब अक्षर[1] दीन बताय।। ५ ।।
घाट निःअक्षर[2] पाया जाय।
गुफा में धुन इक सुनी बनाय।। ६ ।।
पदम सत निरखा भरम नसाय।
बीन धुन पाई सुरत लगाय।। ७ ।।
अलख और अगम रहा दरसाय।
परे तिस राधास्वामी धाम मिलाय।। ८ ।।

१ - सुन्न। २ - महासुन्न।

जहाँ अब आरत साज सजाय।
लिये मैं राधास्वामी ख़ूब रिझाय।। ९ ।।
कहूँ क्या महिमा बरनी न जाय।
सुरत मेरी छिन छिन रही मुसकाय[1] ।। १० ।।
राधास्वामी लीला कहूँ छिपाय।
लिया मोहिं अपने अंग लगाय।। ११ ।।
आरती पूरी कीन्ही आय।
कहूँ क्या अस्तुत राधास्वामी गाय।। १२ ।।
परम पद पाया काल भजाय[2]।
बेद भी रहा बहुत शरमाय।। १३ ।।
भेद यह मिला न अब तक काय।
दया कर राधास्वामी दिया जनाय।। १४ ।।
करूँ अब आरत उनकी गाय।
सुरत मेरी राधास्वामी लीन जगाय।। १५ ।।
जोग और ज्ञान रहे मुरझाय।
संत कोइ बिरले दिया सुझाय।। १६ ।।
राधास्वामी अचरज खेल दिखाय।
चरन में राधास्वामी गई समाय।। १७ ।।

* * * * *

१ - हँसती हुई। २ - दूर करके।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

चरन गुरु हिरदे धार रही।।टेक।।
भौ की धार कठिन अति भारी।
सो अब उलट बही।। १ ।।
गुरु बिन कौन सम्हारे मन को।
सुरत उमँग अब शब्द गही।। २ ।।
कोटिन जन्म भरमते बीते।
काहू मेरी आन न बाँह गही।। ३ ।।
अब के सतगुरु मिले दया कर।
शब्द भेद उन सार दई।। ४ ।।
नौ को छोड़ द्वार दस लागी।
अक्षर मथ नौनीत[1] लई।। ५ ।।
नौका पार चली अब गुरु बल।
अगम पदारथ लीन सही।। ६ ।।
क्या क्या कहूँ कहन गति नाहीं।
सुरत शब्द मिल एक हुई।। ७ ।।
रहन गहन की बात नियारी।
संत बिना कोइ नाहिं कही।। ८ ।।
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न लख।
भँवर गुफा पर ठाट ठई[2]।। ९ ।।

१ - मक्खन। २ - मुक़ाम किया।

सत्त नाम सत धाम निरख धुर।
अलख अगम गति पाय गई।।१०।।
सुरत निरत सँग चली अगाड़ी।
राधास्वामी २ चरन मई।।११।।
अब आरत सिंगार सुधारी।
प्रेम उमँग भी बहुत चही।।१२।।
काल कला सब दूर बिडारी।
द्याल सरन अब आन लई।।१३।।
पचरँग बाना[1] पहन[2] बिराजे।
सोभा धारी आज नई।।१४।।
जीव काज निज भवन छोड़ कर।
जमा दूध फिर होत दही।।१५।।
मथ मथ माखन काढ़ निकारा।
बिरले गुरुमुख चाख चखी।।१६।।
राधास्वामी दीन अवाज़ा।
चढ़ो अधर निज धाम पई।।१७।।

।। शब्द बारहवाँ।।

अपने स्वामी की मैं करत आरती।
कुल कुटुंब सब अपना तारती।।१।।

१ - बस्तर। २ - पहिर कर।

काल कर्म सिर धौल[1] मारती।
ममता चादर छिन में फाड़ती। २ ।।
हँस हँस स्वामी हिये में धारती।
रोग दोष सब छिन में जारती।। ३ ।।
थाल सजाया उमँग प्रेम का।
दीपक बाला दरस नेम का।। ४ ।।
भोग धराया भाव भक्ति का।
राग सुनाया ध्यान जुक्ति का।। ५ ।।
दृष्टि जोड़ कर दर्शन करती।
नैनन में ज्यों पुतली धरती।। ६ ।।
छबि स्वामी की बड़ी चहीती[2]।
मैं दरबारी स्वामी दर की।। ७ ।।
लौ लगाय चरनन में रहती।
लउआ[3] नाम मैं अपना धरती।। ८ ।।
श्याम कंज में त्यागा येही।
सेत पदम में सूरत देई।। ९ ।।
सुरत चढ़ाय गई आकाशा।
खिल खिल देखूँ बिमल तमाशा।। १० ।।
राधास्वामी चरन निहारूँ।
तन मन अपना उन पर वारूँ।। ११ ।।

१ - थप्पड़। २ - प्यारी। ३ - जो लव लगावे।

आरत पूरन भइ है हमारी।
पहुँच गई सतगुरु दरबारी।।१२ ।।

।। शब्द तेरहवाँ।।

आरत गावे दरसो[१] अपनी।
छिन छिन राधास्वामी २ रटनी।। १ ।।
थाल इल्म[२] का जोत अमल[३] की।
पढ़ २ आयो राधास्वामी की सरनी।। २ ।।
क़लम लगन और प्रेम दवाता।
लिख २ राधास्वामी हिये बिच गाता।। ३ ।।
पढ़ी पारसी पढ़ी अँगरेज़ी।
हुई मेहर बुध पाई तेज़ी।। ४ ।।
देखा सब जग झूठ पसारा।
पाया नाम राधास्वामी का सारा।। ५ ।।
सुरत चढ़ी खुला शब्द अपारा।
कुमत हरी और मन को गारा[४]।। ६ ।।
प्रेम बदरिया घुमड़न[५] लागी।
बरस बरस धुन अनहद जागी।। ७ ।।
चाँद सुरज दोउ गये छिपाई।
सुखमन नदी उमँड कर आई।। ८ ।।

१ - जिसको दरशन की इच्छा है। २ - विद्या। ३ - अभ्यास।
४ - गला दिया। ५ - छा जाना।

खुला द्वार फूटा घट गगना।
सुन्न शिखर देखत मन मगना। ९ ।।
बाल अवस्था खेल कूद की।
खेल दिखाया साँचा अबकी।। १० ।।
दया हुई अब स्वामी भारी।
आरत पूरन हुई हमारी।। ११ ।।

।। शब्द चौदहवाँ ।।

एक आरती कहूँ बनाई।
राधास्वामी हुए सहाई।। १ ।।
शांति थाल और सत मत जोती।
समता सील धरे जहँ मोती।। २ ।।
रतनन माल परोई भाई।
गल में स्वामी आन चढ़ाई।। ३ ।।
हीरे लाल थाल भर लाई।
माणिक पन्ना भेंट धराई।। ४ ।।
गहने कपड़े बहु पहिनाई।
चोवा चंदन अंग लगाई।। ५ ।।
अस अस सब सिंगार बनाई।
कँवल देख ज्यों मधुकर[1] आई।। ६ ।।

१ - भँवरा।

स्वामी सन्मुख ठाढ़ी भई।
आरत थाली कर में लई।। ७ ।।
आरत कर कर अति हरखाई।
राग रागनी नइ नइ गाई।। ८ ।।
बाजे बजें गगन के द्वार।
उमँग बढ़ी सुन सुन झनकार।। ९ ।।
अग्नि पवन और जल भंडार।
तीनों पाये छोड़े वार।। १० ।।
इनके पार सुरत जब भई।
चाँद सूर तज सुखमन गही।। ११ ।।
जोत निहारत मन हुलसाना।
रूप निरंजन अलख पहिचाना।। १२ ।।
घंटा नाद सुनी और पहुँची।
संख नाद फिर सूरत खैंची।। १३ ।।
यहाँ से हटी बंक पट खोला।
त्रिकुटी जाय ओंग धुन तोला।। १४ ।।
गरज गरज आकाश पुकारी।
आव सुरत मैं तुम पर वारी।। १५ ।।
लीला देखत चली अगाड़ी।
सुन्न सरोवर कँवलन बाड़ी[1]।। १६ ।।

१ - बग़ीचा।

हंसन साथ महा सुख पाई।
महासुन्न में जाय समाई।।१७ ।।
भँवरगुफा गइ सोहं पास।
मुरली धुन सुन करे बिलास।।१८ ।।
यहाँ से चढ़ पहुँची सतपुर में।
सतगुरु पूरे मिले अधर में।।१९ ।।
नाना[1] धुन सुन बीन बजाई।
सत्तपुरुष दुरबीन लखाई।।२० ।।
द्वारे धस गई अलख लोक में।
अगम लोक फल पाया छिन में।। २१ ।।
राधास्वामी पद दरसाना।
क्या कहुँ महिमा अजब ठिकाना।।२२ ।।
कहना था सो अब कह चुकी।
आरत पूरन अब मैं करी।।२३ ।।
राधास्वामी हुए दयाल।
दे परशादी किया निहाल[2]।।२४ ।।
हीरे लाल[3] निछावर करती।
तन मन धन तो तुच्छ समझती।।२५ ।।

* * * * *

१ - अनेक तरह की। २ - परिपूर्ण। ३ - सुन्न और त्रिकुटी के शब्द।

।। शब्द पंद्रहवाँ ।।

आरत करूँ आज सतगुरु की।
तन मन भेंट चढ़ाऊँ अबकी।। १ ।।
ममता छोड़ूँ मैं अब सब की।
प्रीत करूँ राधास्वामी चरनन की।। २ ।।
सुमिरन नाम नेम से करूँ।
प्रेम सहित अनहद धुन सुनूँ।। ३ ।।
सुन सुन धुन फिर आगे चढ़ूँ।
सहसकँवल दल बानी पढ़ूँ।। ४ ।।
श्याम सेत तक आगे चलूँ।
बंकनाल के भीतर धसूँ।। ५ ।।
वहाँ से त्रिकुटी धाम सम्हारूँ।
ओंग ओंग सँग बहुत पुकारूँ।। ६ ।।
ररंकार धुन सरवर तीर।
हंसन की जहाँ देखी भीड़।। ७ ।।
सेत सेत पद जहाँ गंभीर।
सुरत निरत धस धारी धीर।। ८ ।।
जन्म जन्म की काटी पीड़।
छान करी जहाँ नीर और छीर।। ९ ।।
आतम अक्षर निरख निहारी।
महासुन्न की करी तयारी।। १०।।

अंध घोर जहाँ अति कर भारी।
सतगुरु बल से पार सिधारी।।११ ।।
भँवरगुफा पहुँची इक छिन में।
बंसी की धुन पड़ी श्रवन में।।१२ ।।
सोहं सोहं सुनी पुकार।
हंसन रूप देख उजियार।।१३ ।।
वहाँ से चली अमर पद आई।
सत्तनाम धुन बीन सुनाई।।१४ ।।
अलख अगम का नाका[1] लिया।
जहाँ अमी रस अद्‌भुत पिया।।१५ ।।
आगे को फिर सूरत धाई।
राधास्वामी धाम समाई।।१६ ।।
अभेद आरती करी बनाई।
भेद तासु कोइ संत जनाई।।१७ ।।
नहिं वहाँ थाल न दीपक बाती।
सदा आरती बहु बिधि गाती।।१८ ।।
चरन सेव चरनामृत पीती।
उमँग सहित परशादी लेती।।१९ ।।
छिन २ राधास्वामी रूप निहारूँ।
पल पल राधास्वामी हिरदे धारूँ।।२० ।।

१ - हद्द, सीमा।

सुरत शब्द सँग आई जाग।
राधास्वामी मिले बड़े मेरे भाग।। २१ ।।

।। शब्द सोलहवाँ ।।

राधास्वामी दया प्रेम घट आया।
बंधन छूटे भर्म गँवाया।। १ ।।
सीतल शब्द जोत लख पाई।
गगन मँडल में सुरत समाई।। २ ।।
उमगा हिरदा सुध बिसराई।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाई।। ३ ।।
अब रक्षा मेरि तुम्हरे हाथा।
चरन तुम्हार मोर रहे माथा।। ४ ।।
सुमिरन नाम करूँ निस[1] बासर[2]।
शब्द जोग का पाया औसर।। ५ ।।
देखत रहूँ रूप गुरु प्यारा।
काम बाम[3] को धर धर मारा।। ६ ।।
आरत करूँ प्रेम रँग पूरी।
पास रहूँ गुरु के तज दूरी।। ७ ।।
प्रेम उमँग धारा घट बढ़ती।
सुरत निरत नित ऊँचे चढ़ती।। ८ ।।

१ - रात। २ - दिन। ३ - माया।

भूल भरम धोखा सब भागा।
राधास्वामी चरन बढ़ा अनुरागा।। १ ।।

।। शब्द सत्रहवाँ ।।

प्रेम प्रीत घट धार।
आरती राधास्वामी कीजै।। १ ।।
मन माधो[1] तन बास।
सुरत चरनन में दीजै।। २ ।।
थाल उमँग और जोत बिरह।
घट परघट कीजै।। ३ ।।
सतगुरु होयँ दयाल।
दान फिर शब्द मिलीजै।। ४ ।।
शब्द शब्द चढ़ गगन।
सुन्न में अमृत पीजै।। ५ ।।
मान सरोवर बास।
हंस सँग खेल खिलीजै।। ६ ।।
कँवल द्वार धस जाय।
सेत पद आस धरीजै।। ७ ।।
महासुन्न का घाट।
दया सतगुरु से लीजै।। ८ ।।

१ - माया के पीछे दौड़नेवाला।

भँवर गुफा धुन बाँसरी।
आश्चर्य्य सुनीजै।। ९ ।।
सत्तनाम धुन बीन।
ताहि में सूरत दीजै।। १०।।
अलख अगम दरबार।
देख घट प्रेम भरीजै।। ११ ।।
सुरत सोहागिन हुई।
काल बल सब ही छीजै।। १२ ।।
धोखा सब ही मिटा।
पुरुष सँग छिन छिन रीझै।। १३ ।।
संत कृपा जब होय।
सुरत अपने घर सीझै।। १४ ।।
सतसँग करो बनाय।
अमी का छींटा लीजै।। १५ ।।
राधास्वामी नाम।
हिये में आन धरीजै।। १६ ।।
रोम रोम मन मगन।
आरती पूरन कीजै।। १७ ।।

* * * * *

।। शब्द अठारहवाँ ।।

तिल भीतर दिल जोड़।
कँवल[1] में आसन करिये।। १ ।।
दृष्टि उलट असमान।
जोत फुलवारी खिलिये।। २ ।।
बाजे शब्द अनाहदी।
घट मंगल भरिये।। ३ ।।
सुरत शिखर चढ़ गई।
बंक में छिन छिन धरिये।। ४ ।।
कँवल तिरकुटी पाय।
भँवर मन कारज सरिये।। ५ ।।
ररंकार धुन सुनी।
काल दल मार गिरैये।। ६ ।।
संत कृपा अब हुई।
घाट घट सब ही खुलिये।। ७ ।।
यह मारग निज पीव का।
बिन भाग न मिलिये।। ८ ।।
कौतुक[2] क़ुदरत धार।
प्रेम का खेल खिलैये।। ९ ।।

१ - सहसदल कँवल। २ - खेल या करतूत।

घट पट लीला देख।
अमी रस धार बहैये।।१०।।
निज भक्तन के काज।
पंथ यह नया चलैये।।११ ।।
बेद न जाने भेद।
कर्म बस योंही बहिये।।१२ ।।
यह मारग निज संत का।
सतसँग से पैये।।१३ ।।
सतगुरु की कर आरती।
उन बहुत रिझैये।।१४ ।।
राधास्वामी दया से।
पूरन पद पैये।।१५ ।।

।। शब्द उन्नीसवाँ ।।

उमँग आज हुई हिये में भारी।
सरन में राधास्वामी जाय पुकारी।। १ ।।
करूँ अब आरत बिबिध प्रकारी।
होय जो मेहर अपार तुम्हारी।। २ ।।
वहीं राधास्वामी दृष्टि निहारी।
कहा कर आरत लेकर थारी।। ३ ।।

सुरत से निरखो तिल कर यारी[1]।
खोल यह खिड़की पार सिधारी।। ४ ।।
गई नभ अंदर जोत लखा री।
देख कर तारा शब्द सुना री।। ५ ।।
बंक चढ़ त्रिकुटी आन पुकारी।
सुन्न में अक्षर धुन धर धारी।। ६ ।।
महासुन पहुँची खोल किवाड़ी।
भँवर का राग सुना अति भारी।। ७ ।।
सत्त पद आई अमर अटारी[2]।
अलख और अगम जाय परसा री।। ८ ।।
कही यह आरत राधास्वामी सारी।
करे कोइ सज्जन सुरत सम्हारी।। ९ ।।
प्रेम की धारा बही नियारी।
शब्द घट पाया सुरत करारी।। १० ।।
नाम रँग लाया अजब बहारी।
मगन होय बैठी काज सँवारी।। ११ ।।
संत बिन सब ही पच पच हारी।
मिला नहिं भेद रहे सब वारी[3]।। १२ ।।
दई राधास्वामी बस्तु अपारी।
मेहर अब होगइ मुझ पर न्यारी।। १३ ।।

* * * * *

१ - प्रीत। २ - महल। ३ - इस पार, माया की हद्द में।

।। शब्द बीसवाँ।।

सुरत आज चली आरती धार।
गुरुन पै चली आरती धार।। १ ।।
नाना बिधि के भूषण पहिने।
कर अपना सिंगार।। २ ।।
मन के मोती चित की चुन्नी।
बिरह नथनिया डार।। ३ ।।
नेह[१] नौगरी[२] चेतन चुटकी[२]।
बिछुवा[२] पहिर बिचार।। ४ ।।
पाँच मुंदरा[३] मुंदरी[२] पहिरी।
हिरदे हार सँवार।। ५ ।।
करनफूल[२] करुणा गुरु पाई।
पहुँची गुरु दरबार।। ६ ।।
छन्न[२] पछेली[२] छान ज्ञान की।
नौनग[२] तज नौ द्वार।। ७ ।।
पाँच तत्त पचलड़ी[२] बनाई।
सीसफूल[२] लख गगन मँझार।। ८ ।।
बैना[२] बैन[४] सुने अनहद के।
अधर चंद्र[२] का खोला द्वार।। ९ ।।

१ - स्नेह, प्रीत। २ - नाम गहने का। ३ - चाचरी, भूचरी, खेचरी, अगोचरी, उनमुनी। ४ - बानी, आवाज़।

जुगनी[1] जुग बाँधा सतगुरु से।
चली आरसी[1] पार।।१०।।
अनवट[1] बाट[2] खुली अंदर में।
मंदिर जोत निहार।।११ ।।
झूमर[1] अमर नगीना[1] देखा।
झूमी झुमके[1] डार।।१२ ।।
सुमिरन नाम गुलूबँद[1] डाला।
हँसली[1] सील सम्हार।।१३ ।।
मोह तोड़ तोड़ा[1] गल डारा।
सतलड़[1] हुई सत्त की लार[3]।।१४ ।।
घुँघरू[1] झाँझ[1] बजे घट भीतर।
सोभा पायज़ेब[1] उजियार।।१५ ।।
बाँक[1] बंक के द्वार समानी।
टीका टेक अधार।।१६ ।।
तिल के छल्ले[1] पिलकर[4] पहिरे।
कड़े[1] कड़क[5] धुन सार।।१७ ।।
चंपाकली[1] कँवल की कलियाँ।
दल पर अजब बहार।।१८ ।।
चौकी[1] चौक निहार सुन्न का।
चमक दामिनी पार।।१९ ।।

१ - नाम गहने का। २ - रास्ता। ३ - संग। ४ - धस कर।
५ - ज़ोर से आवाज़ करती हुई।

मन इन्द्री बस छब्बा[1] पहिना।
लटकन[1] लटक सम्हार।।२० ।।
बेसर[1] सरवर सुरत लगाई।
हंसन साथ किया जाय प्यार।।२१ ।।
महासुन्न चढ़ भँवर गुफा पर।
भँवरकली[1] मुरली झनकार।।२२ ।।
सुन २ धुन सतलोक सिधारी।
मिली पुरुष से नार सुनार[2]।।२३ ।।
सत्तपुरुष सँग आरत कीन्ही।
हाथ लिया सत सोहं थार।।२४ ।।
कोट चंद्रमा सूर करोड़ों।
जोत जगाई अधिक सुधार।।२५ ।।
पूरन पद पूरन परशादी।
दइ राधास्वामी निरख निहार।।२६ ।।
हीरे लाल निछावर[3] कीन्हे।
उमँग बढ़ी जा का वार न पार।।२७ ।।

।। शब्द इक्कीसवाँ।।

गुरुमुख प्यारा गुरु अधारा।
आरत धारा री।।१ ।।

१ - नाम गहने का। २ - उत्तम स्त्री। ३ - अर्पण्।

चरन निहारा सरन सम्हारा।
शब्द सिंगारा री।। २ ।।
राग निकारा बिरह पुकारा।
सुरत सँवारा री।। ३ ।।
काल बिडारा[1] मन को मारा।
इन्द्री जारा री।। ४ ।।
गगन सिधारा नाम सिहारा[2]।
सुन्न मँझारा री।। ५ ।।
रूप अपारा नैन उघाड़ा।
देख पसारा री।। ६ ।।
खोल किवाड़ा पाट उघाड़ा[3]।
श्याम दुआरा री।। ७ ।।
कर दीदारा सेत अखाड़ा।
कर्म पछाड़ा री।। ८ ।।
निरमल धारा अगम अगारा[4]।
अमी अहारा री।। ९ ।।
चौक अपारा अजब बहारा।
कीन बिहारा री।। १०।।
धुन धधकारा छाँटी सारा।
गुरु दरबारा री।। ११ ।।

१ - दूर किया। २ - परखा, देखा। ३ - खोला। ४ - रोशन, अबिनाशी।

मनुआँ हारा लीन किनारा।
शब्द कटारा[1] री।।१२।।
गुरु दुलारा नाम चितारा।
सूर करारा री।।१३।।
धुन ओंकारा सूर अकारा[2]।
बजत चिकारा[3] री।।१४।।
तुम दीनदयारा फाँसी टारा।
कर उपकारा री।।१५।।
मैं नीच निकारा अति नाकारा।
औगुन भारा री।।१६।।
तन अहंकारा काम लबारा।
पड़ा उजाड़ा री।।१७।।
लोभ गँवारा मोह बिजारा[4]।
कुछ न बिचारा री।।१८।।
हुआ तुम्हारा सब से न्यारा।
सीस चरन पर डारा री।।१९।।
चाह चमारा नहिं आचारा[5]।
तौभी पार उतारा री।।२०।।
सहसकँवल दल त्रिकुटी चढ़ चल।
खोला दसवाँ द्वारा री।।२१।।

१ - नाम हथियार। २ - आकार। ३ - एक तरह का बाजा।
४ - साँड़, बैल। ५ - शुद्ध।

सुन्न परे महासुन्न अँधारा[१]।
देखा भँवर उजारा री।।२२ ।।
गुफा परे सतपुरुष हमारा।
पाया अब पद चारा री।।२३ ।।
अलख अगम को जाकर निरखा।
तन मन उन पर वारा री।।२४ ।।
सुरत निरत दोउ चले अगाड़ी।
धाम मिला निज सारा री।।२५ ।।
आरत कर कर प्रेम बढ़ाऊँ।
धृग धृग सब संसारा री।।२६ ।।
राधास्वामी सतगुरु पाये।
उन पर मैं बलिहारा री।।२७ ।।
कहा कहूँ कुछ कहत न आवे।
मैं अब उन की लारा[२] री।।२८ ।।

।। शब्द बाईसवाँ।।

जीव चिताय रहे राधास्वामी।
सतपुर निज पुर अगम अधामी।। १ ।।
भाग उदय उन जीवन भारी।
राधास्वामी जिन घर चरन पधारी।। २ ।।

१ - अँधेरा। २ - साथ।

कौन कहे महिमा इस औसर।
हारे ब्रह्मा बिश्नु महेशर।। ३ ।।
इक इक जीव काज किया अपना।
गुरु आरत कर हुए अति मगना।। ४ ।।
गुरु सँग हंस फ़ौज चल आई।
कर सन्मान हार पहिनाई।। ५ ।।
भोजन बस्त्र देख सब हरखे।
अति कर प्रीत भाव इन परखे।। ६ ।।
हुए प्रसन्न सतगुरु अबिनाशी।
दिया दान किया सतपुर बासी।। ७ ।।
अन धन और सन्तान भोग रस।
जक्त भोग और मिला जोग रस।। ८ ।।
पर किरपा सतगुरु अस रहई।
मोह न ब्यापे जग नहिं फँसई[1]।। ९ ।।
रहे सुरत निरमल गुरु साथा।
शब्द मिले रहे चरनन माथा।। १०।।
अपनी दया से गुरु दियो दाना।
सेवक तो कुछ माँग न जाना।। ११ ।।
दया करें जब सतगुरु अपनी।
बिना माँग करवावें करनी।। १२ ।।

१ - बन्धन में पड़े।

नाम अनाम पदारथ न्यारा।
सो सतगुरु दीन्हा कर प्यारा।।१३ ।।
अब देवे को कुछ न रहाई।
सतगुरु ही तेरे हुए भाई।।१४ ।।
राधास्वामी कहा बनाई।
सदा रहे सतनाम सहाई।।१५ ।।

।। बचन सातवाँ।।

बिनती और प्रार्थना परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी के चरन कँवल में

।। शब्द पहिला।।

करूँ बेनती दोउ कर जोरी।
अर्ज़[1] सुनो राधास्वामी मोरी।। १ ।।
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता।
सब जीवन के पितु और माता।। २ ।।
दया धार अपना कर लीजे।
काल जाल से न्यारा कीजे।। ३ ।।
सतजुग त्रेता द्वापर बीता।
काहु न जानी शब्द की रीता।। ४ ।।
कलजुग में स्वामी दया बिचारी।
परघट करके शब्द पुकारी।। ५ ।।

१ - प्रार्थना।

जीव काज स्वामी जग में आये।
भौसागर से पार लगाये।। ६ ।।
तीन[1] छोड़ चौथा[2] पद दीन्हा।
सत्तनाम सतगुरु गत चीन्हा।। ७ ।।
जगमग जोत होत उजियारा।
गगन सोत[3] पर चंद्र निहारा।। ८ ।।
सेत सिंघासन छत्र बिराजै।
अनहद शब्द ग़ैब[4] धुन गाजै।। ९ ।।
क्षर अक्षर निःअक्षर पारा।
बिनती करै जहाँ दास तुम्हारा।। १० ।।
लोक अलोक पाऊँ सुख धामा।
चरन सरन दीजै बिसरामा।। ११ ।।

।। शब्द दूसरा।।

रोम रोम मेरे तुम अधार।
रग रग मेरी करत पुकार।।
अंग अंग मेरा करे गुहार[5]।
बंद बंद से करूँ जुहार[6]।।
हे राधास्वामी अधम उधार।
मैं किंकर तुम दीनदयार।। १ ।।

१ - त्रिलोकी। २ - सत्तलोक। ३ - भंडार। ४ - गुप्त।
५ - पुकार। ६ - बंदगी।

इन्द्री मन मेरे भरे बिकार।
तन भी बँधा जक्त की लार।।
मैं सब बिधि बहता भौ धार।
तुम ही पार उतारनहार।।
हे राधास्वामी सुख भंडार।
मैं अति दीन फँसा संसार।। २ ।।
काढ़ि निकारो मोहिं दातार।
दात तुम्हारी अगम अपार।।
दयासिंध जीवन आधार।
तुम बिन कोइ न सम्हारनहार।।
हे राधास्वामी सरन तुम्हार।
गही आन मैं नीच नकार।। ३ ।।
सदा रहूँ तुम चरन अधार।
कभी न बिछड़ूँ यही पुकार।।
निस दिन राखूँ हिये सम्हार।
चरन तुम्हार मोर आधार।।
हे राधास्वामी अपर अपार।
मोहिं दिखाओ निज दरबार।। ४ ।।
मम करनी कहिं करो बिचार।
तो मैं ठहरन जोग न द्वार।।

तुम गंभीर धीर जग पार।
मैं डूबत हूँ भौजल वार।।
हे राधास्वामी लगाओ किनार।
तुम खेवटिया सब से न्यार।। ५ ।।
चोर चुग़ल बरतूँ अहंकार।
कपट कुटिलता बड़ा लबार।।
काम क्रोध और मोह पियार।
क्या क्या बरनूँ भरा बिकार।।
हे राधास्वामी छिमा सम्हार।
लीजै मुझको अभी उबार।। ६ ।।
तुम महिमा का वार न पार।
शेष गनेश रहे सब हार।।
माया ब्रह्म नहीं औतार।
कर न सके बहे काली धार।।
हे राधास्वामी सब के पार।
इन सब के तुमहीं आधार।। ७ ।।
मैं तुम चरन जाउँ बलिहार।
देख न सकूँ रूप उजियार।।
तेज पुंज तुम अगम अपार।
चाँद सूर की जहाँ न शुमार[1]।।

१ - गिनती।

हे राधास्वामी तुम दीदार।
बिना मेहर को करे अधार।। ८ ।।
राधास्वामी २ नाम तुम्हार।
यही मेरा कुल और यही परिवार।।
राधास्वामी राधास्वामी बारंबार।
कहत रहूँ और रहुँ हुशियार।।
हे राधास्वामी मर्म तुम्हार।
तुम्हरी दया से पाऊँ सार।। ९ ।।
गुरु स्वरूप धर लिया औतार।
जीव उबारन आये संसार।।
नर स्वरूप धर किया उपकार।
तुम सतगुरु मेरे परम उदार।।
हे राधास्वामी शब्द दुवार।
खोल दिया तुम बज्र किवाड़।।१० ।।
लीला तुम्हरी अजब बहार।
कह न सके कोई वार न पार।।
जिसे दिखाओ सो देखनहार।
तुम बिन कोई न परखनहार।।
हे राधास्वामी गुरू हमार।
तुम बिन कौन करे निरवार।।११ ।।

* * * * *

।। शब्द तीसरा ।।

करूँ बेनती राधास्वामी आज।
काज करो और राखो लाज।। १ ।।
मैं किंकर तुम चरन नमामी।
पाऊँ अगमपुर और अनामी।। २ ।।
कहँ लग बिनती कहकर गाऊँ।
तुम्हरि सरन स्वामी मैं बल जाऊँ।। ३ ।।
बिनती करनी भी नहिं जानूँ।
तुम्हरे चरन को पल पल मानूँ।। ४ ।।
तुम बिन और न दूजा कोई।
सेवक मुझ सा और न होई।। ५ ।।
मैं जंगी तुम हो राधास्वामी।
जोड़ मिलाया तुम अंतरजामी।। ६ ।।

।। शब्द चौथा ।।

स्वामी सुनो हमारी बिनती।
मैं करूँ तुम्हारी बिनती।। १ ।।
मेरे औगुन मत करो गिनती।
मैं तन मन अपना हनती।। २ ।।
मैं किंकर कुटिल कुपंथी।
मैं हीन करूँ अति चिंती।। ३ ।।

महिमा अगम तुम्हारी सुनती।
तुम दयाल दाता निज संती।। ४ ।।
नित कुमति जाल उरझंती[1]।
तुम समरथ पुरुष महा मतवंती।। ५ ।।
मैं बिरह अगिन बिच रहूँ जलंती।
क्योंकर भौसागर पार परंती।। ६ ।।
मेरी सुरत करो सतवंती।
तुम चरन सरन की रहुँ दृढ़वंती।। ७ ।।
सब कर्म धर्म ज्यों दाल दलंती।
मुझे करो भक्त कुलवंती।। ८ ।।
रोग सोग दुख रहूँ सहंती।
दूर करो ऐसी मान महंती[2]।। ९ ।।

।। बचन आठवाँ।।

महिमा सतगुरु स्वरूप राधास्वामी की

।। शब्द पहिला।।

गुरू गुरू मैं हिरदे धरती।
गुरु आरत की सामाँ करती।। १ ।।
गुरु मेरे पूरण पुरुष बिधाता।
तिन चरनन पर मन मेरा राता।। २ ।।

१ - फँसती। २ - बड़ाई।

गुरु हैं अगम अपार अनामी।
गुरु बिन दूसर और न जानी। ३ ।।
नहिं ब्रह्मा नहिं बिश्नु महेशा।
नहिं ईश्वर परमेश्वर शेषा।। ४ ।।
राम कृष्ण नहिं दस औतारी।
व्यास बशिष्ट न आदि कुमारी[1]।। ५ ।।
ऋषि मुनि देवी देव न कोई।
तीरथ बर्त धर्म नहिं होई।। ६ ।।
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी।
जनक सनक सन्यास बिचारी।। ७ ।।
आतम परमातम नहिं मानूँ।
अक्षर निःअक्षर नहिं जानूँ।। ८ ।।
सत्तनाम जानूँ न अनामी।
लिख गिरंथ सब करत बखानी।। ९ ।।
सबको करूँ प्रनाम जोड़ कर।
पर कोई नहिं सतगुरु सम सर[2]।। १० ।।
सतगुरु कृपा सभन को जाना।
बिन सतगुरु कैसे पहिचाना।। ११ ।।
सतगुरु भेद दिया इक इक का।
तब जाना इन सब का ठेका।। १२ ।।

१ - आद्या। २ - बराबर।

सतगुरु सब का भेद बखानें।
अब किस को गुरु से बढ़ जानें।।१३ ।।
गुरु ने सब का पद दरसाई।
जस जस जिन की गति तस गाई।।१४ ।।
ताते सतगुरु सब के करता।
सतगुरु ही हैं सब के हरता।।१५ ।।
याते सतगुरु का पद भारी।
सतगुरु सम नहिं कोइ बिचारी।।१६ ।।
जब जिव सरन गुरु की आवे।
कर्म धर्म और भर्म नसावे।।१७ ।।
जो गुरु मारग देहिं लखाई।
सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई।।१८ ।।
गुरु आज्ञा से जो शिष करई।
वह करतूत भक्ति फल देई।।१९ ।।
ताते पिरथम गुरु को खोजो।
शब्द बतावें सो गुरु सोधो[1]।। २०।।
अस गुरु सम कोइ और न आना।
गुरू मिले फिर कहा कमाना।।२१ ।।
या ते मो मत निश्चय येही।
गुरु बिन दूसर और न सेई।।२२ ।।

१ - छाँट करो।

जाके हिरदे गुरु परतीती।
काल कर्म वा से नहिं जीती।।२३ ।।
सब के सिर पर उस का डंका।
काहू की उस के नहिं संका।।२४ ।।
बड़े बड़े उधरें उस संगा।
गुरुमुख है इन सब से चंगा।।२५ ।।
गुरुमुख की गति सब से भारी।
गुरुमुख कोटिन जीव उबारी।।२६ ।।
कहँ लग महिमा गुरुमुख गाऊँ।
कोई न जाने किस समझाऊँ।।२७ ।।
जग में पड़ा काल का घेरा।
जीव करें चौरासी फेरा।।२८ ।।
जो चौरासी छूटन चावें।
तो गुरुमुख सेवा चित लावें।।२९ ।।
और काम सब देहिं बहाई।
शब्द गुरु की करे कमाई।। ३०।।
कोटिन जन्म रहे कोइ काशी।
बेद पाठ और तीरथ बासी।। ३१ ।।
जप तप संजम बहु बिधि करई।
भेष बनावे बिद्या पढ़ई।।३२ ।।

पिछलों की जो धारें टेका[1]।
जिनको कभी आँख नहिं देखा।।३३ ।।
पोथिन में सुनी उनकी महिमा।
टेक बाँध मन सब का भरमा।।३४ ।।
अब इन को जो कोइ समझावे।
टेक छोड़ते जिव सा जावे।।३५ ।।
कोई शिव और कोई बिष्नु की।
कोई राम और कोई कृष्न की।।३६ ।।
कोइ देबी कोइ गंगा जमना।
कोइ मूरत कोइ चारों धामा[2]।।३७ ।।
कोइ मथुरा कोइ टेक मुरारी।
मदनमोहन कोइ कुंजबिहारी।।३८ ।।
कोइ गोकुल कोइ बलभाचारी।
कोइ कंठी माला गल धारी।।३९ ।।
कोइ अचार कोइ संध्या तर्पन।
गया गायत्री करें समर्पन।।४० ।।
कोइ गीता कोइ भागवत पढ़ते।
कथा पुरान नेम से सुनते।।४१ ।।
क्या दादू क्या नानकपंथी।
क्या कबीर क्या पलटू संती।।४२।।

१ - पक्ष। २ - चार तीरथ के स्थान, याने बद्रीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ और रामेश्वर।

सब मिल करते पिछली टेका।
वक़्त गुरू का खोज न नेका[1]।।४३।।
बिन गुरु वक़्त भक्ति नहिं पावे।
बिना भक्ति सतलोक न जावे।।४४।।
यह कहना उन जीवन कारन।
जिन के बिरह अनुराग की धारन।।४५।।
बिषई संसारी और रागी।
इन को टेक न चहिये त्यागी।।४६।।
इन को टेक सहारा भारी।
टेक बिना कुछ नाहिं अधारी।।४७।।
उन को नहिं उपदेश हमारा।
उन को जक्त कामना मारा।।४८।।
कोइ कुटुम्ब कोइ धन आधीना।
कोइ कोइ मान प्रतिष्ठा लीना।।४९।।
मारे डर के टेक न छोड़ें।
वक़्त गुरु में मन नहिं जोड़ें।।५०।।
जो अनुरागी बिरही भाई।
भक्ति गुरू की उन प्रति गाई।।५१।।
वक़्त गुरू जब लग नहिं मिलई।
अनुरागी का काज न सरई।।५२।।

१ - कुछ।

पिरथम सीढ़ी भक्ति गुरु की।
दूसर सीढ़ी सुरत नाम की।।५३ ।।
जब लग गुरु भक्ति नहिं पूरी।
मन मनसा यह होयँ न चूरी।।५४ ।।
मन चूरे बिन सुरत न निर्मल।
कैसे चढ़े और लगे शब्द चल।।५५ ।।
गुरु भक्ती अस कैसे आवै।
सतसँग कर गुरु सेवा धावे।।५६ ।।
गुरु को पल पल माहिं रिझावे।
गुरु प्रसन्नता नित कमावे।।५७ ।।
गुरु जब इसको प्यारे होईं।
गुरु को प्यारा जब यह होई।।५८ ।।
पूरन दया गुरु जब करईं।
भक्ति पदारथ जबही मिलई।।५९ ।।
यह भी जोग मेहर से होगा।
दया मेहर बिन जानो धोखा।।६० ।।

।। दोहा।।

क्या हिंदू क्या मुसलमान, क्या ईसाई जैन।
गुरु भक्ती पूरन बिना, कोइ न पावै चैन॥६१ ॥

पिरथम सीढ़ी है गुरु भक्ती।
गुरु भक्ती बिन काज न रत्ती।।६२ ।।

और उपाय अनेकन करते।
गुरु भक्ती को मुख्य न रखते।।६३ ।।
यही कसर है सब के मत में।
सिद्धांत न पावें ओछे चित में।।६४ ।।

।। दोहा।।

गुरु भक्ती दृढ़ के करो,
पीछे और उपाय।
बिन गुरु भक्ती मोह जग,
कभी न काटा जाय।।६५ ।।
मोटे बंधन जगत के,
गुरु भक्ती से काट।
झीने[1] बंधन चित्त के,
कटें नाम परताप।।६६ ।।
मोटे जब लग जायँ नहिं,
झीने कैसे जायँ।
ताते सबको चाहिये,
नित गुरु भक्ति कमायँ।।६७ ।।
एक जन्म गुरु भक्ति कर,
जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद,
चौथे में निज धाम।।६८ ।।

१ - सूक्ष्म।

अब आरत गुरु करूँ सँवारा।
काया थाल मन दीपक बारा।।६९ ।।
भक्ति जोग और भोग अनुरागा।
दृष्टि जोड़ चित चरनन लागा।।७० ।।
यों आरत अब करी बनाई।
सतगुरु पूरे रहें सहाई।।७१ ।।

।। शब्द दूसरा।।

गुरु मिले परम पद दानी।
क्या गति मति उनकी करूँ बखानी।। १ ।।
मैं अजान महिमा नहिं जानी।
बिना मेहर क्योंकर पहिचानी।। २ ।।
गति अति गोप[1] न जाने बेदा।
ज्ञान जोग कर मिले न भेदा।। ३ ।।
पद उनका इन से रहे दूरी।
यह तो थक रहे काल हज़ूरी।। ४ ।।
वह दयाल पद अगम अपारा।
तीन सुन्न आगे रहा न्यारा।। ५ ।।
संत बिना कोइ भेद न जाने।
उस घर से वह आय बखानें।। ६ ।।
मैं भी उन चरनन कर दासा।
भइ[2] परतीत बँधी पद आसा।। ७ ।।

१ - गुप्त। २ - हुई।

सुरत शब्द मारग मोहिं दीन्हा।
किरपा कर अपना कर लीन्हा।। ८ ।।
नित अभ्यास करूँ मैं येही।
इक दिन पाऊँ शब्द बिदेही।। ९ ।।
सतगुरु मेरे परम दयाला।
करूँ आरती होउँ निहाला।। १० ।।
आतम थाल परमातम जोती।
सत्तनाम पद पोया मोती।। ११ ।।
भाव भक्ति से आरत कीनी।
पद सतगुरु जल में भइ मीनी।। १२ ।।
यह आरत अब पूरन भई।
आगे कुछ कहनी नहिं रही।। १३ ।।

।। शब्द तीसरा।।

गुरु प्रीत बढ़ी चितवन में।
सुर्त खैंच धरी चरनन में।। १ ।।
मेरी दृष्टि हरी दरशन में।
अब प्रेम बढ़ा छिन छिन में।। २ ।।
सतगुरु पर जाउँ बलिहारी।
सतगुरु मेरी सुद्ध सम्हारी।। ३ ।।
लीन्हा मोहिं भुजा पसारी।
दीन्ही मोहिं भक्ति करारी।। ४ ।।

आरत अब उनकी करहूँ।
तन मन धन सभी अरपहूँ।। ५ ।।
बिन गुरु कोइ और न मानूँ।
बिन नाम ठौर नहिं जानूँ।। ६ ।।
गुरु करें होयगा सोई।
गुरु बिन कोइ और न होई।। ७ ।।
गुरु करता सब जग कारज।
गुरु ही सब जीव अचारज।। ८ ।।
गुरु तो मेरे प्रान अधारा।
गुरु ही मेरा करें उधारा।। ९ ।।
गुरु सम कोइ और न प्यारा।
गुरु ही मोहिं लेयँ सुधारा।। १० ।।
मेरे हिरदे गुरुहि बिराजें।
जम काल लजावत भाजें।। ११ ।।
छाया घट गुरु परतापा।
रद्द[1] बलाय दूर त्रिय तापा[2]।। १२ ।।
आरत गुरु कर कर भींजूँ।
उमँग बढ़ाय प्रेम धुर खींचूँ।। १३ ।।
मीना सम लइ गुरु सरना।
अब रहा न मोहिं कुछ करना।। १४ ।।

१ - नाश। २ - तीन ताप यानी आधि, ब्याधि, उपाधि।

राधास्वामी गुरु हम पाये।
पी चरन अंबु तृप्ताये।।१५ ।।

।। शब्द चौथा।।

आज मेरे आनँद होत अपार।
आरती गावत हूँ गुरु सार।। १ ।।
किया मैं अचरज प्रेम सिंगार।
बिराजे सतगुरु बस्तर धार।। २ ।।
दरस उन करूँ सम्हार सम्हार।
गाऊँ गुन उनका बारंबार।। ३ ।।
आओ री सखिओ जुड़ मिल झाड़।
गाओ और दरशन करो निहार।। ४ ।।
गुरू मेरे बैठे पलँग सँवार।
आज मेरा जागा भाग अपार।। ५ ।।
रही मैं गुरु के सनमुख ठाड़[१]।
करूँ मैं उन चरनन आधार।। ६ ।।
चाहूँ नहिं दूसर से उपकार।
गुरू की बाँधी टेक सम्हार।। ७ ।।
गुरू पर डारूँ तन मन वार।
बचन पर उनके रहुँ हुशियार।। ८ ।।

१ - खड़ी।

कर्म सब दीन्हे गुरु ने जार।
उतारा नौका दे भौ पार।। ९ ।।
सुरत को शब्द सुनाई धार।
गगन चढ़ पहुँची घर करतार।। १०।।
पिंड को छोड़ा चढ़ी मुनार[१]।
हुई अति निरमल छुटा ग़ुबार।। ११ ।।
नाम की सुनी जाय धधकार।
बाँसरी सुनी नई झनकार।।१२ ।।
सुरत और निरत लगाया तार।
गई अब चौथे पद के पार।।१३ ।।
मिला राधास्वामी का दीदार।
करूँ अब निस दिन उन दरबार।।१४ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

आरत सतगुरु की अब करहूँ।
छिन छिन सुरत शब्द में धरहूँ।। १ ।।
आरत सामाँ सजूँ बनाई।
थाल सुचेती[२] कर में लाई।। २ ।।
जोत सुजानी लीन जगाई।
रूप सुदर्शन घट में पाई।। ३ ।।

१ - चोटी। २ - हुशियारी।

सतसंगी सब मीत सुमीता।
घट परताप बढ़ा मन जीता।। ४ ।।
भक्ति भाव सँग भोग लगाऊँ।
अमी सिंध जल अमृत लाऊँ।। ५ ।।
बैठ सिंहासन सतगुरु गाजे।
जोत निरंजन दोनों लाजे।। ६ ।।
अब आरत सनमुख मैं फेरी।
कृपा दृष्टि से सतगुरु हेरी।। ७ ।।
कहाँ लग महिमा उनकी गाऊँ।
बार बार चरनन बल जाऊँ।। ८ ।।
मैं अति दीन हीन आधीनी।
वे दयाल किरपाल क़दीमी[1]।। ९ ।।
सुरत शब्द मारग दिया पूरा।
घट में बजने लगा तँबूरा।। १०।।
नौबत छिन छिन झड़ने लागी।
सुरत निरत चढ़ चढ़ अब जागी।। ११ ।।
घाट त्रिबेनी किये अस्नाना।
सुन्न मँडल चित जाय समाना।। १२ ।।
आरत सब बिधि पूरी धारी।
राधास्वामी किरपा कीन्ही भारी।। १३ ।।

* * * * *

१ - प्राचीन।

।। शब्द छठवाँ ।।

गुरू की आरत ठानूँगी[1]।
गुरू की सरन सम्हारूँगी।। १ ।।
गुरू की महिमा गाऊँगी।
गुरू के चरन पखारूँगी।। २ ।।
गुरू पर मनुआ वारूँगी[2]।
गुरू सँग सदही[3] धारूँगी।। ३ ।।
काल को छिन छिन टारूँगी।
कर्म को तुर्त पछाड़ूँगी।। ४ ।।
ध्यान गुरु हिरदे लाऊँगी।
रूप रस छिन छिन पाऊँगी।। ५ ।।
बचन सुन नित्त कमाऊँगी।
सुरत फिर गगन चढ़ाऊँगी।। ६ ।।
सुन्न चढ़ शब्द जगाऊँगी।
नाद दस द्वार बजाऊँगी।। ७ ।।
सत्त पद जाय समाऊँगी।
उलट फिर जग में आऊँगी।। ८ ।।
कुटुँब को अपने लाऊँगी।
गुरू के चरन लगाऊँगी।। ९ ।।

१ - निश्चय करके करूँगी। २ - अर्पण करूँगी। ३ - हमेशा।

प्रीत की रीत सिखाऊँगी।
आरती बहुत कराऊँगी।। १० ।।
पित्र पुरखा तराऊँगी।
गया की धूर उड़ाऊँगी।। ११ ।।
भर्म सबही मिटाऊँगी।
भटक सबही छुड़ाऊँगी।। १२ ।।
बुद्धि निरमल कराऊँगी।
संत मत अब दृढ़ाऊँगी।। १३ ।।
सुरत नैनन जमाऊँगी।
सहसदलकँवल आऊँगी।। १४ ।।
जोत दर्शन दिखाऊँगी।
शब्द में जा समाऊँगी।। १५ ।।
बंक द्वारा खुलाऊँगी।
तिरकुटी जा बिठाऊँगी।। १६ ।।
मानसर चढ़ अन्हाऊँगी।
साराँगी धुन सुनाऊँगी।। १७ ।।
महासुन पार पाऊँगी।
गुफा धुन सर[1] लगाऊँगी।। १८ ।।
सोहं बंसी सुनाऊँगी।
ग़ैब[2] धुन भेद गाऊँगी।। १९ ।।

१ - तीर। २ - गुप्त।

सत्त की राह धाऊँगी।
नाम पद फिर जनाऊँगी।।२० ।।
दूर दुरबीन लगाऊँगी।
अलख को जा लखाऊँगी।।२१ ।।
अगम गढ़ चढ़ दिखाऊँगी।
भेद वहाँ का छिपाऊँगी।।२२ ।।
आरती अब सजाऊँगी।
प्रेम अपना बढ़ाऊँगी।।२३ ।।
सुरत जोती चिताऊँगी।
थाल भक्ती धराऊँगी।।२४ ।।
आरती राधास्वामी गाऊँगी।
परम पद आज पाऊँगी।।२५ ।।

।। शब्द सातवाँ।।

गुरु आरत बिधि दीन बताई।
मोह नींद से लिया जगाई।। १ ।।
शब्द अनाहद पता जनाई।
सुरत इधर से उधर लगाई।। २ ।।
दृष्टि खुली और छबि दिखलाई।
मगन होय कर निज घर आई।। ३ ।।
मानसरोवर थाल बनाया।
जोत चंद्रमा दीप धराया।। ४ ।।

लगन लाग से आरत साजी।
नाद अनाहद घट में बाजी।। ५ ।।
मन बैरी से जीती बाज़ी।
सुमत समाई दुरमत भाजी[1]।। ६ ।।
गुरु चरनन पर मैं बलि जाऊँ।
उनकी दया से सत पद पाऊँ।। ७ ।।
डोर लगी और चढ़ी गगन को।
उमँगा मन राधास्वामी कहन को।। ८ ।।

।। शब्द आठवाँ।।

गुरु चरनन पर जाउँ बलिहार।
जिन घट जोत दिखाई सार।। १ ।।
गया तिमिर आया परकाश।
गुरु सँग करता परम बिलास।। २ ।।
गुरु बिन और न जानूँ कोई।
कर्म भर्म दुबिधा सब खोई।। ३ ।।
ऐसे गुरु के चरन निहारूँ।
तन मन धन सबही तज डारूँ।। ४ ।।
क्या गुरु महिमा करूँ बनाई।
रात दिवस रहुँ सुरत लगाई।। ५ ।।

१ - भागी।

गुरु शोभा भूषण नित गढ़ता।
सुरत हथौड़ी मन अहरन[१] धरता।। ६ ।।
चित्त कुठाली[२] मोह गलाता।
बिरह अगिन मुख नाल फुँकाता।। ७ ।।
प्रेम जंतरी तार खिंचाता।
सुरत निरत के पेच दिलाता।। ८ ।।
गढ़ तोड़ा[३] गल हार पिन्हाता।
गुरु छबि देख मगन होय जाता।। ९ ।।
बाज़ूबंद[३] प्रीत गढ़वाता।
मन परतीत कड़े[३] पहिनाता।। १० ।।
नाम रतन हीरा जड़वाता।
अंग अँगूठी[३] गुरु पहिनाता।। ११ ।।
राधास्वामी दीन दयाल।
करूँ आरती चित्त सम्हाल।। १२ ।।

।। शब्द नवाँ।।

गुइयाँ री गुरु समझ सुनावें।
प्रेम भरी सखियाँ मिल गावें।। १ ।।
अगम देश का पता जनावें।
सुरत शब्द मारग दरसावें।। २ ।।

१ - जिस पर गहना वग़ैरह हथौड़ी से गढ़ा जाता है।
२ - चाँदी सोना गलाने का बर्तन, घरिया। ३ नाम गहने का।

जिनके बिरह प्रेम अनुरागा।
सो सुन सुन कर लगन बढ़ावें। ३ ।।
सतगुरु प्यार नाम रस पीवें।
अधर जाय निज भाग जगावें।। ४ ।।
कौन कहे महिमा अब उनकी।
जिनको सतगुरु चरन लगावें।। ५ ।।
घट का भेद अनाहद बानी।
सुन्न मँडल का शब्द सुनावें।। ६ ।।
जोगी जती नाथ सब थाके।
सो पद अपने दास लखावें।। ७ ।।
सत्तनाम सतधाम पिया का।
सुरत निरत कर ले दरसावें।। ८ ।।
अलख अगम का फोड़ निशाना।
अकह अनामी सैन[1] जनावें।। ९ ।।
यह अभेद गत कोइ न जाने।
बिरले संत कोइ मर्म पिछानें।। १० ।।
सो पद मिला सहज में हम को।
किस आगे हम बर्ण बखानें।। ११ ।।
अब आरत यह करी समापत।
राधास्वामी सदा धियावें।। १२ ।।

* * * * *

१ - इशारा।

।। शब्द दसवाँ।।

प्रेमी सुनो प्रेम की बात।।टेक।।
सेवा करो प्रेम से गुरु की।
और दर्शन पर बल बल जात।। १ ।।
बचन पियारे गुरु के ऐसे।
जस माता सुत तोतरि बात।। २ ।।
जस कामी को कामिन प्यारी।
अस गुरुमुख को गुरु का गात[1]।। ३ ।।
खाते पीते चलते फिरते।
सोवत जागत बिसर न जात।। ४ ।।
खटकत[2] रहे भाल ज्यों हियरे।
दर्दी के ज्यों दर्द समात।। ५ ।।
ऐसी लगन गुरू सँग जाकी।
वह गुरुमुख परमारथ पात।। ६ ।।
जब लग गुरु प्यारे नहिं ऐसे।
तब लग हिरसी जानो जात।। ७ ।।
मनमुख फिरे किसी का नाहीं।
कहो क्योंकर परमारथ पात।। ८ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
अब सतगुरु का पकड़ो हाथ।। ९ ।।

* * * * *

१ - शरीर। २ - चुभता।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

गुरु मेरे जान पिरान
शब्द का दीन्हा दाना।
शब्द मेरा आधार
शब्द का मर्म पिछाना।। १ ।।
क्या गुन गाऊँ शब्द
शब्द का अगम ठिकाना।
बिना शब्द सब जीव
धुंध में फिरें भरमाना।। २ ।।
जल पषान पूजत रहें
रहें कागज़ अटकाना।
मन मत ठोकर खाय
गये चौरासी खाना।। ३ ।।
बहु बिधि बिपता जीव को
बिन शब्द सुनाना।
सतगुरु की सेवा बिना
नहिं लगे ठिकाना।। ४ ।।
शब्द भेद बिन सतगुरु
क्या कहें अजाना।
मन इन्द्री बस में नहीं
तो काल चबाना।। ५ ।।

राधास्वामी सरन ले
सब भाँति बचाना।
मेहर दया छिन में करें
दें अगम ख़ज़ाना।। ६ ।।

।। शब्द बारहवाँ।।

गुरु चरन बसे अब मन में।
मैं सेऊँ दम दम तन में।। १ ।।
फिर प्रीत लगी घट धुन में।
चढ़ पहुँची पहिली सुन में।। २ ।।
अब सील छिमा मन छाई।
गइ तपन काम दुखदाई।। ३ ।।
फिर क्रोध लोभ भी भागे।
अहंकार मोह सब त्यागे।। ४ ।।
धुन पाँच शब्द घट जागी।
मन हुआ सहज बैरागी।। ५ ।।
गुरु किरपा सूर उगाना।
अब हुआ जक्त बेगाना।। ६ ।।
घट बैठी तारी लाई।
बाहर की किरिया दूर बहाई।। ७ ।।

गुरु अद्‌भुत सुख दिखलाया।
क्या महिमा जाय न गाया।। ८ ।।
जग जीव अभागी सारे।
नर देही योंही हारे।। ९ ।।
क्यों गुरु से प्रीत न करते।
क्यों जम के किंकर रहते।। १० ।।
मैं किस से कहूँ सुनाई।
फिर अपना मन समझाई।। ११ ।।
तू गुरु मत दृढ़ कर भाई।
अब छोड़ो तात[1] पराई।। १२ ।।
चल रह तू त्रिकुटी घाटी।
चढ़ सुन्न शिखर की बाटी[2]।। १३ ।।
महासुन्न की तोड़ो टाटी[3]।
जा भँवरगुफा की हाटी[4]।। १४ ।।
फिर सत्तपुरुष घर पाया।
धुन बीना जाय बजाया।। १५ ।।
सुनी अलख अगम की बतियाँ[5]।
शशि सूर खरब जहाँ थकियाँ[6]।। १६ ।।
पिया परसे राधास्वामी।
कुछ कहूँ न पुरुष अनामी।। १७ ।।

१ - चिंता। २ - रस्ता। ३ - परदा। ४ - बाज़ार।
५ - आवाज़। ६ - लज्जित।

मेरी आरत सब से न्यारी।
कोई समझेगी पिया प्यारी।।१८ ।।
यह भेद अथाह बखाना।
बिन संत न कोई जाना।।१९ ।।
करमी जिव जग के अंधे।
सब फँसे काल के फंदे।।२० ।।
उनसे नहिं कहना चहिये।
मत गूढ़ छिपाये रहिये।।२१ ।।
सुर्त शब्द कमाई करना।
सुमिरन में तन मन देना।।२२ ।।
गुरु दर्शन बहुत निरखना।
धुन अनहद नित्त परखना।।२३ ।।
सतसँग की चाहत रखना।
जब डौल[1] बने तब करना।।२४ ।।
उपदेश किया यह टीका।
राधास्वामी नाम मैं सीखा।।२५ ।।

।। शब्द तेरहवाँ।।

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे।
कर्म जगात[2] चुकाय।। १ ।।

१ - मौक़ा, सावकाश। २ - महसूल, कर।

भूल भरम में सब जग पचता।
अचरज बात न काहु सुहाय।। २ ।।
भागहीन सब जग माया बस।
यह निरमल गति कोइ न पाय।। ३ ।।
जिन पर दया आदि करता की।
सो यह अमृत पीवन चाहि।। ४ ।।
कहाँ लग महिमा कहुँ इस गति की।
बिरले गुरुमुख चीन्हत ताहि।। ५ ।।
बिन गुरु चरन और नहिं भावे।
इस आनँद में रहे समाय।। ६ ।।
दर्शन करत पिंड सुध भूली।
फिर घर बाहर सुधि क्या आय।। ७ ।।
ऐसी सुरत प्रेम रँग भीनी।
तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय।। ८ ।।
जोग बैराग ज्ञान सब रूखे।
यह रस उन में दीखे न ताय।। ९ ।।
बड़ भागी कोइ बिरला प्रेमी।
तिन यह न्यामत[१] मिली अधिकाय।। १० ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
यह आरत कोइ गुरुमुख गाय।। ११ ।।

* * * * *

१ - उत्तम पदार्थ।

।। शब्द चौदहवाँ।।

गुरु सरन आज मैं पाई।
मेरे आनँद अधिक बधाई।। १ ।।
गुरु कृपासिंध मैं पाये।
मेरे घर दर बजत बधाये।। २ ।।
गुरु परम पुरुष सुख दाता।
उन चरन मोर मन राता।। ३ ।।
गुरु भक्ति करूँ दिन राती।
मन चित से अति गुन गाती।। ४ ।।
गुरु दर्शन सुरत लगाऊँ।
मन अंतर प्रेम बढ़ाऊँ।। ५ ।।
गुरु मूरत नैनन ताकूँ।
शशि भान कोटि छबि झाँकूँ।। ६ ।।
गुरु सम अब कोइ न दिखाई।
मैं फेरूँ यही दुहाई।। ७ ।।
गुरु चरन पकड़ मेरे भाई।
क्यों भरमै नर तन पाई।। ८ ।।
अब जन्म सुफल कर अपना।
गुरु प्रेम करो जग सुपना।। ९ ।।

जग रैन अँधेरी भारी।
गुरु मूरत चंद्र उगा री।। १०।।
सीतलता हिरदे आई।
गुरु बचन चाँदनी छाई।। ११ ।।
गुरु से कोइ बड़ा न मेरे।
सब पड़े काल के घेरे।। १२ ।।
गुरुमुख कोइ सतगुरु हेरे[१]।
मनमुख सब काल के चेरे।। १३ ।।
गुरु महिमा मुख से कहते।
अंतर में प्रीत न धरते।। १४ ।।
भरमों में भटके फिरते।
गुरु पद में चित्त न धरते।। १५ ।।
वह जीव अभागी जानूँ।
मैं गुरु बिन और न मानूँ।। १६।।
अब आरत गुरु की करता।
राधास्वामी चरन पकड़ता।। १७ ।।

।। शब्द पन्द्रहवाँ।।

गुरु चरन धूर कर अंजन।
हिये नैन खुलें मन मंजन।। १ ।।

१ - खोजे।

घट तिमिर[1] अनादी नाशन।
गुरु रूप भान परकाशन।। २ ।।
मेरे हिरदे प्रेम बढ़ावन।
पल पल में उमँग समावन।। ३ ।।
सुर्त चढ़े गगन गुरु पावन[2]।
सतगुरु पद शब्द सुनावन।। ४ ।।
सो सतगुरु जग माहिं बिराजन।
जग जीव अचेत चितावन।। ५ ।।
क्या महिमा सतगुरु गावन।
जिव अधम नीच किये पावन[3]।। ६ ।।
मन माया ज़ोर चलावन।
ठोकर दे दूर करावन।। ७ ।।
दासन का दास दसावन[4]।
सेवा पर तन मन वारन।। ८ ।।
मैं किंकर कुटिल अपावन[5]।
गुरु गोद लिया और किया अपनावन।। ९ ।।
यह मानुष जन्म जितावन।
गुरु रूप लखा मन भावन।। १० ।।

१ - अँधेरा। २ - पावे। ३ - पवित्र। ४ - कहलाया(बोली पंजाबी)।
५ - अपवित्र।

यह आरत दोना[1] गावन।
राधास्वामी किया बखानन।। ११।।

।। शब्द सोलहवाँ।।

मैं कौन कुमति उरझाना[2]।
गुरु दरस छोड़ घर जाना।। १ ।।
अब कौन जतन अस करिये।
गुरु चरन चित्त में धरिये।। २ ।।
यह बचन कहाँ मैं पाऊँ।
मन खेती बीज जमाऊँ।। ३ ।।
निस दिन रहे चित्त उदासी।
क्यों छोड़ूँ चरन बिलासी।। ४ ।।
नर देह न बारम्बारी।
क्यों भौजल डूबे आ री।। ५ ।।
सतगुरु सँग कभी न छोड़ूँ।
मन तन से नाता तोड़ूँ।। ६ ।।
गुरु बल से करम निकारूँ।
सतसँग से काल पछाड़ूँ।। ७ ।।
जो मेहर करें गुरु मुझ पर।
यह बात बने अति दुस्तर[3]।। ८ ।।

१ - जिसकी आरती है उसका नाम। २ - फँसा। ३ - कठिन।

मेरे मन में चाहत येही।
गुरु चरन न छोड़ूँ कबही।। ९ ।।
गुरु से कोइ अधिक न राखा।
पुनि संत बेद अस भाषा।। १०।।
गुरु महिमा सबहिन गाई।
मैं दीन अधीन जनाई।।११ ।।
मेरी लाग लगी गुरु चरनन।
नख सोभा क्या करुँ बरनन।।१२ ।।
कोटिन रबि चन्द्र लजाई।
उस नख की गति नहिं पाई।।१३ ।।
यह तिमिर बाहरी खोवें।
वह अंतर मोती पोवें।।१४ ।।
हिरदे में सदा उजारी।
गुरु नख पर जाउँ बलिहारी।।१५ ।।
अब आरत उनकी करता।
मन चरन कँवल में धरता।। १६।।
स्रुत फेरो सतगुरु मेरी।
घर जाउँ करूँ फिर फेरी[1]।।१७ ।।
राधास्वामी काटो बेड़ी।
यह बिनती सुनिये मेरी।।१८ ।।

१ - लौट कर आऊँ।

मैं दासन दास तुम्हारा।
तुम बचन मोर निस्तारा।।१९ ।।

।। शब्द सत्रहवाँ।।

काल ने जक्त अजब भरमाया।
मैं क्या क्या करूँ बखान।। १ ।।
जो साधन थे पिछले जुग के।
सो कलजुग में किये प्रमान।। २ ।।
मूरख प्रानी मन सैलानी।
सो अटके जल और पषान।। ३ ।।
बुद्धिमान अभिमानी जो नर।
बिद्या नारि के हुए ग़ुलाम।। ४ ।।
बाक़ी जीव बीच के जितने।
ना मूरख ना अति बुधिमान।। ५ ।।
जप तप ब्रत संजम बहु धोखे।
पंच अग्नि में जले निदान।। ६ ।।
देखो चरित्र काल करता के।
कोई सिर कोई पैर रुँधान[१]।। ७ ।।
भटक भटक भटकाया सब जग।
कोइ न लगाया ठौर ठिकान।। ८ ।।

१ - खूँदा।

ऐसी हालत देख जगत की।
संत सतगुरु प्रगटे आन।। ९ ।।
गुरु सेवा और नाम महातम।
सतसँग सतगुरु किया बखान।। १० ।।
साधन तीन सार उन बरने।
और साधन सब थोथे मान।। ११ ।।
बेद शास्त्र और स्मृत पुराना।
पढ़ना इनका बिरथा जान।। १२ ।।
पंडित भेष पेट के मारे।
वे संतन पर करते तान।। १३ ।।
हित कर संत उन्हें समझावें।
वे मानी नहिं मानें आन।। १४ ।।
उनके चाह मान और धन की।
परमारथ से ख़ाली जान।। १५ ।।
वे चौरासी चक्कर मारें।
फिर फिर गिरते चारों खान।। १६ ।।
पिछले जुग की बिद्या पढ़ते।
कोई न्याय बेदान्त बखान।। १७ ।।
ना साधन अधिकार न परखें।
पढ़ने का करते अभिमान।। १८ ।।

इस जुग की बिद्या नहिं पढ़ते।
ताते उलटे गिरे निदान।।१९ ।।
दीन ग़रीबी मत इस जुग का।
और गुरु भक्ती कर परमान।।२० ।।
ताते निरमल निश्चल चित होय।
गगन चढ़ाओ शब्द निशान।।२१ ।।
सुरत शब्द मारग अंतरमुख।
पाँच शब्द का गहो ठिकान।।२२ ।।
शब्द शब्द पौड़ी[1] पै चढ़ कर।
पहुँचो सच्चखंड सतनाम।।२३ ।।
ताते पहिले गुरु को ध्याओ।
और काम सब पीछे जान।।२४ ।।
गुरु की मूरत हृदे बसाओ।
चंद्र चकोर प्रीत घट आन।।२५ ।।
जब लग ऐसी प्रीत न होवे।
तब लग साधन यही बखान।।२६ ।।
गुरु भक्ती जब पूरन हो ले।
तब सुर्त चढ़े अधर असमान।।२७ ।।
गुरु भक्ती बिन शब्द में पचते।
सो भी मानुष मूरख जान।।२८ ।।

१ - सीढ़ी, मंज़िल।

शब्द खुलेगा गुरू मेहर से।
खैंचें सुरत गुरू बलवान।।२९ ।।
गुरुमुखता बिन सुरत न चढ़ती।
फूटे गगन न पावे नाम।।३० ।।
गुरुमुखता है मूल सबन की।
और साधन सब शाखा जान।।३१ ।।
माता को जस पुत्र पियारा।
और कामी को कामिन जान।।३२ ।।
मछली को जस नीर अधारा।
चात्रिक[१] को जस स्वाँति समान।।३३ ।।
ऐसा गुरु प्यारा जब होगा।
तब कुछ आगे पंथ चलान।।३४ ।।
कहना था सो सब कह दीन्हा।
अब तू चाहे मान न मान।।३५ ।।
यह आरत गुरुमुख की गाई।
गुरुमुख होय सो करे प्रमान।।३६ ।।
राधास्वामी भक्ति बताई।
गुरु की भक्ति करो यह जान।।३७ ।।
और भक्ति सब दूर बहाओ।
क्यों पड़ते चौरासी खान।।३८ ।।

१ - पपीहा।

गुरु भक्ती सम और न कोई।
राधास्वामी किया बखान।।३१।।
गुरु का ध्यान करो तुम निस दिन।
गुरु का शब्द सुनो नित कान।।४०।।
नैन श्रवण और हिरदा तीनों।
शीश महल सम निरमल जान।।४१।।
राधास्वामी ज़ोर देय कर।
गुरु भक्ती को कहैं प्रमान।।४२।।

।। बचन नवाँ।।

महिमा शब्द स्वरूप सतगुरु की

।। शब्द पहला।।

धन्य धन्य धन धन्य पियारे।
क्या कहुँ महिमा शब्द की।। १ ।।
जो परचे हैं शब्द से।
सो जानें महिमा शब्द की।। २ ।।
छिन छिन रक्षा हो रही।
क्या उपमा कहुँ मैं शब्द की।। ३ ।।
बिन शब्द फिरें भरमातियाँ।
नहिं जानी गति मति शब्द की।। ४ ।।
जिन गुरु पाया शब्द का।
और प्रीति करी जिन शब्द की।। ५ ।।

बड़ भागी वह जीव हैं।
　　जो करें कमाई शब्द की।। ६ ।।
बिना शब्द मन बस नहीं।
　　तुम सुरत करो अब शब्द की।। ७ ।।
वह क्यों आये इस जक्त में।
　　जिन मिली न पूँजी शब्द की।। ८ ।।
धुन घट में हर दम हो रही।
　　क्यों सुने न बानी शब्द की।। ९ ।।
तू बैठ अकेला ध्यान धर।
　　तो मिले निशानी शब्द की।। १० ।।
तज आलस निद्रा काहिली[1]।
　　तू लगन लगा ले शब्द की।। ११ ।।
पाँच शब्द घट में बजें।
　　यह निरनय करले शब्द की।। १२ ।।
गुरु ज्ञान बताया शब्द का।
　　तू होजा ध्यानी शब्द की।। १३ ।।
मैं शब्द शब्द बहुतक कहा।
　　कोई न माने शब्द की।। १४ ।।
जन्म अकारथ खो दिया।
　　जो चढ़े न घाटी शब्द की।। १५ ।।

१ - सुस्ती।

राधास्वामी कह कह चुप हुए।
बिन भाग न धारा शब्द की।।१६ ।।

।। शब्द दूसरा।।

शब्द ने रची त्रिलोकी सारी।
शब्द से माया फैली भारी।। १ ।।
शब्द ने अंड ब्रह्मंड रचा री।
शब्द से सात दीप नौखंड बना री।। २ ।।
शब्द ने गुन तीनों और परजा धारी।
शब्द से धरनि अकाश खड़ा री।। ३ ।।
शब्द ने जीव और ब्रह्म किया री।
शब्द से चाँद और सूर भया री।। ४ ।।
शब्द ने सुन महासुन्न सँवारी।
शब्द ने चौथा लोक करा री।। ५ ।।
शब्द ही घट घट करे पुकारी।
शब्द फिर अलख अगम से न्यारी।। ६ ।।
शब्द से ख़ाली कोइ न रहा री।
शब्द सब ठौर ठिकान भरा री।। ७ ।।
शब्द की महिमा क्या कहुँ गा री।
शब्द को जैसे बने तैसे पा री।। ८ ।।

गुरू अब कहते हेला[1] मारी।
शब्द बिन कोइ न करे उपकारी।। ९ ।।
शब्द में सुरत लगा कर यारी।
शब्द ही चेतन करे उजारी।।१० ।।
शब्द की करनी करो सदा री।
शब्द बिन ख़ुदी[2] न जाय तुम्हारी।।११ ।।
शब्द का शग़ल[3] करो मन मारी।
शब्द से काल कर्म सब हारी।।१२ ।।
शब्द में सुरत लगा सुन प्यारी।
शब्द बिन होय न कभी उबारी।।१३ ।।
शब्द तेरे तन में बोल रहा री।
सुरत से सुन सुन करो बिचारी।।१४ ।।
सुरत को गगन शिखर लेजा री।
धुनों की होत जहाँ झनकारी।।१५ ।।
शब्द की बिरह लगे जो कारी[4]।
सभी रस लगें तोहि फिर खारी।।१६ ।।
शब्द को निजकर कोइ न सुना री।
भोगते फिरें जन्म मरना री।।१७ ।।
शब्द का मारग संत निकारी।
संत बिन कोई न मर्म लखा री।।१८ ।।

१ - पुकार कर। २ - अहंकार। ३ - अभ्यास। ४ - गहरी।

शब्द बिन होगी बहुत ख़ुवारी[1]।
शब्द ही पकड़ो क्यों झख मारी[2]।।१९ ।।
सुरत को बाँध लगा दे तारी।
भेद यह राधास्वामी खोल कहा री।।२० ।।

।। शब्द तीसरा।।

सब की आदि शब्द को जान।
अंत सभी का शब्द पिछान।। १ ।।
तीन लोक और चौथा लोक।
शब्द रचे यह सबही थोक[3]।। २ ।।
शब्द सुरत दोउ धार समान।
पुरुष अनामी के यह प्रान।। ३ ।।
चेतनता सब इन की मान।
शब्द बिना कोइ और न आन।। ४ ।।
शब्द गुप्त तब हुआ अनाम।
शब्द प्रघट तब धरिया नाम।। ५ ।।
नाम अनाम शब्द परमान।
शब्द बिना होय सब की हान।। ६ ।।
जस अग्नी तद रूप पषान।
तस तदरूपी शब्द अनाम।। ७ ।।

१ - खराबी। २ - वृथा मेहनत करना। ३ - हिस्सा।

शब्दहि कारन शब्दहि काज।
शब्द रचाया सगला साज।। ८ ।।
शब्दहि अगम अलख फिर शब्द।
शब्दहि सत्तनाम सत शब्द।। ९ ।।
शब्द निःअक्षर अक्षर शब्द।
सोहं शब्द ररं भी शब्द।। १० ।।
ओअं शब्द निरंजन शब्द।
ब्रह्म शब्द और माया शब्द।। ११ ।।
शब्दहि जीव सीव[1] भी शब्द।
शब्द से सुरत सुरत से शब्द।। १२ ।।
ओत पोत[2] यों शब्दहि शब्द।
ऊँच नीच दोउ शब्दहि शब्द।। १३ ।।
शब्दहि सेवक शब्दहि स्वामी।
शब्दहि घट घट अंतरजामी।। १४ ।।
शब्द न मरे अमर भी शब्द।
शब्द न जरे अजर भी शब्द।। १५ ।।
शब्द गुरू और शब्दहि दास।
शब्द बिना झूँठी सब आस।। १६ ।।
शब्द न बिनसे बिनसे काया।
शब्द बिना कुछ हाथ न आया।। १७ ।।

१ - ईश्वर, जिसकी सेवा करता है। २ - उलट पलट।

शब्द कहा सब संतन सार।
शब्द बिना कैसे निरबार।।१८ ।।
शब्द गहीर शब्द गंभीर।
शब्द बिना पद मिले न थीर।।१९ ।।
शब्द बिना कोइ होय न धीर।
शब्द बिना झूँठी तदबीर।।२० ।।
शब्द तुड़ावे सब ज़ंजीर।
शब्द मिटावे तन मन पीर।।२१ ।।
शब्दहि मछली शब्दहि नीर।
शब्द बखानें सत्त कबीर।।२२ ।।
शब्द बतावें नानक पीर[१]।
शब्द लखावें तुलसी धीर।।२३ ।।
शब्दहि बस्तर शब्दहि चीर।
शब्दहि माखन शब्दहि हीर[२]।।२४ ।।
शब्द मिले तू खोज शरीर।
शब्द बसे नभ त्रिकुटी तीर।।२५ ।।
शब्द बिना सब जीव असीर[३]।
शब्द मिले कोइ मिले फ़क़ीर।।२६ ।।
शब्दहि बम[४] शब्दहि ज़ीर[५]।
शब्द बिना सब मथते नीर।।२७ ।।

१ - गुरू। २ - सारांश। ३ - क़ैदी। ४ - बाँयाँ, टीप। ५ - दाँयाँ, खरज।

शब्द पकड़ सब तेरी सीर[1]।
शब्द गहे जो वही अमीर।।२८ ।।
शब्द शाह और शब्द वज़ीर।
राधास्वामी कहें समझ मेरे बीर।।२९ ।।

।। शब्द चौथा।।

गुरु की दया ले शब्द सम्हार।
गुरु के संग कर शब्द अधार।। १ ।।
शब्द लगावे तुझ को पार।
बिना शब्द चौरासी धार।। २ ।।
शब्द कमाई करनी सार।
शब्द चढ़ावे दसवें द्वार।। ३ ।।
शब्द गुरू सँग करले प्यार।
और कर्म सब त्यागो झाड़।। ४ ।।
शब्द बिना नहिं खेवन हार।
शब्दहि करता सबकी सार।। ५ ।।
शब्द शब्द का भेद नियार।
सो गुरु तुझ से कहें सम्हार।। ६ ।।
तू तो सुरत जमा नभ द्वार।
शब्द मिले छूटे जंजार।। ७ ।।

१ - ज़मीन जिस पर कर नहीं लगता।

शब्द करे अब जग से पार।
शब्द माहिं तुम रहो हुशियार।। ८ ।।
शब्दहि शब्द करो निरवार।
शब्द बिना कोइ बचे न यार।। ९ ।।
शब्द हटावे सब अहंकार।
शब्द छुड़ावे सभी बिकार।। १० ।।
शब्द बिना कुछ और न सार।
मैं तोहि कहूँ पुकार पुकार।। ११ ।।
शब्द लगो मत बैठो हार।
शब्द नाव चढ़ पहुँचो पार।। १२ ।।
शब्द किया जिस घट उजियार।
धन वे जन जिन शब्द अधार।। १३ ।।
तू भी सुन चढ़ शब्द पुकार।
शब्द होय फिर गल का हार।। १४ ।।
शब्द पकड़ और सब तज डार।
बिना शब्द नहिं होत उधार।। १५ ।।
शब्द भेद तू जान गँवार।
क्यों भरमे तू मन की लार।। १६ ।।
सुरत खैंच तक तिल का द्वार।
दहिनी दिशा शब्द की धार।। १७ ।।

बाँईं दिशा काल का जार।
ताहि छोड़ कर सुरत सम्हार।।१८ ।।
घंटा संख सुनो कर प्यार।
तिस के आगे धुन ओंकार।।१९ ।।
सुन्न माहिं सुन ररंकार।
भँवरगुफा मुरली झनकार।।२० ।।
सत्तलोक धुन बीन सम्हार।
अलख अगम धुन कहूँ न पुकार।। २१ ।।
राधास्वामी भेद सुनाया झाड़।
पकड़ धरो अब हिये मँझार।।२२ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

शब्द बिना सारा जग अंधा।
काटे कौन मोह का फंदा।। १ ।।
शब्द बिना बिरथा सब धंधा[1]।
शब्द बिना जिव बंधन बंधा।। २ ।।
शब्दहि सूर शब्दहि चंदा।
शब्द बिना जिव रहता गंदा[2]।। ३ ।।
शब्द बिना सबही मतिमंदा।
शब्दहि नासिह[3] शब्दहि पंदा[4]।। ४ ।।

१ - कारज। २ - मैला। ३ - उपदेशक। ४ - उपदेश।

शब्द कमावे मिले अनंदा।
शब्द बिना सबही की निंदा।। ५ ।।
ताते शब्दहि शब्द कमाओ।
शब्द बिना कोइ और न ध्याओ।। ६ ।।
शब्द भेद तुम गुरू से पाओ।
शब्द माहिं फिर जाय समाओ।। ७ ।।
शब्द अधर में करे उजारा।
शब्द नगर तुम झाँको द्वारा।। ८ ।।
शब्द रहे सबही से न्यारा।
शब्द करे सब जीव गुज़ारा[1]।। ९ ।।
शब्द जानियो सब का सारा।
शब्द मानियो होय उबारा।। १० ।।
शब्द कमाई कर हे मीत।
शब्द प्रताप काल को जीत।। ११ ।।
शब्द घाट तू घट में देख।
शब्दहि शब्द पीव को पेख।। १२ ।।
शब्द कर्म की रेख कटावे।
शब्द शब्द से जाय मिलावे।। १३ ।।
शब्द बिना सब झूठा ज्ञान।
शब्द बिना सब थोथा ध्यान।। १४ ।।

१ - निर्वाह।

शब्द छोड़ मत अरे अजान।
राधास्वामी कहें बखान।।१५ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

शब्द की करो कमाई दम दम।
शब्द सा और न कोई हमदम[1]।। १ ।।
शब्द को सुनो बंद कर सरवन।
शब्द की गहो जाय धुन झमझम।। २ ।।
शब्द तेरी दूर करे सब हमहम[2]।
शब्द को पाय गहो वहाँ समसम।। ३ ।।
देखियो जोत उजाला चमचम।
रहो फिर धुन में छिन छिन रमरम।। ४ ।।
भोग सब त्यागे हुआ मन उपसम[3]।
सुनी अब चढ़ कर धुन जहाँ घमघम।। ५ ।।
कहें गुरु रह तू उसमें जम जम।
बहुर सुन पाई इक धुन बमबम।। ६ ।।
सुरत फिर चढ़ी वहाँ से धमधम।
सुन्न में पहुँची लइ धुन छमछम।। ७ ।।
और भी सुनी एक धुन खमखम।
कहूँ क्या महिमा शब्द अगम गम।। ८ ।।

१ - मित्र। २ - अहंकार। ३ - उपराम।

करूँ मैं जितनी ही सब कम कम।
खोल कस कहूँ बात यह मुबहम[1]।। ९ ।।
सुरत को मिली अधर की गम गम।
पिया सँग बैठी करत परम रम।। १०।।
मिटा सब घट का अबही तम तम।
बरसने लागीं झड़ियाँ रिमझिम।। ११ ।।
तेज अब फैला घट में इम इम[2]।
अमीरस चुआ चुए ज्यों शबनम[3]।। १२ ।।
हुआ मन सभी जतन से बरहम[4]।
सुरत के लागी अब धुन मरहम।। १३ ।।
गुरू पर तन मन करूँ समरपन।
कहें अस राधास्वामी बचन दमादम[5]।। १४ ।।

।। शब्द सातवाँ।।

शब्द सँग बाँध सुरत का ठाट।
बहे मत जग का चौड़ा फाट।। १ ।।
शब्द बिन मिले न घर की बाट।
शब्द का परखो घट में घाट।। २ ।।
शब्द सँग बाँधो ऐसा ठाट।
बहुर तुम सोवो बिछाये खाट।। ३ ।।

१ - गुप्त। २ - ज्यों ज्यों। ३ - ओस। ४ - नाख़ुश, बरख़िलाफ़।
५ - बारम्बार।

गगन चढ़ शब्द अमी रस चाट।
शब्द बिन और न सूधी बाट।। ४ ।।
शब्द सँग भरलो मन का माट[१]।
शब्द ही करे करम का काट।। ५ ।।
शब्द बिन हो गई बारह बाट[२]।
शब्द सँग जग से रही उचाट।। ६ ।।
शब्द ही खोले बज्र कपाट।
शब्द सँग झाँका चौक सपाट[३]।। ७ ।।
शब्द की करो सदा तुम छाँट।
शब्द रस पीवो और दो बाँट।। ८ ।।
काल की ठोको फिर तुम टाँट[४]।
शब्द सँग रहे न कोई आँट[५]।। ९ ।।
राधास्वामी कहते मार कुटाँट[६]।
शब्दहि खोलै घट की साँट[७]।। १०।।

।। शब्द आठवाँ।।

सुरत अब शब्द माहिं नित भरना।
करो यह काम और नहिं करना।। १ ।।
गगन में देखो कँवल चमकना।
दृष्टि पर देखो जोत दमकना।। २ ।।

१ - कलसी, घड़ा। २ - ख़राब। ३ - बराबर। ४ - सिर।
५ - बिगाड़। ६ - पुकार कर। ७ - गाँठ।

सुरत मन वहाँ से अधर उलटना।
घाट सुखमन का खोल पलटना।। ३ ।।
इड़ा तज पिंगला घाटी चढ़ना।
तान कर सूरत आगे बढ़ना।। ४ ।।
पकड़ धुन जाय धुनी से लगना।
मान मद त्याग भर्म सब तजना।। ५ ।।
गुमठ[1] का खेल अजायब तकना।
ओं धुन पाई सुनी गरजना।। ६ ।।
सुन्न में पहुँची सरवर तटना[2]।
हंस होय निस दिन मोती चुगना।। ७ ।।
सुरत को मिला धाम यह अपना।
मगन होय बैठी अब नहिं हटना।। ८ ।।
अमी रस वहाँ का नितही चखना।
मौज राधास्वामी यही निरखना।। ९ ।।

।। शब्द नवाँ।।

धुन सुन कर मन समझाई।।टेक ।।
कोट जतन से यह नहिं माने।
धुन सुन कर मन समझाई।। १ ।।
जोगी जुक्त कमावें अपनी।
ज्ञानी ज्ञान कराई।। २ ।।

१ - गुम्बज़। २ - किनारा।

तपसी तप कर थाक रहे हैं।
जती रहे जत लाई।। ३ ।।
ध्यानी ध्यान मानसी लावें।
वह भी धक्का खाई।। ४ ।।
पंडित पढ़ पढ़ बेद बखानें।
बिद्या बल सब जाई।। ५ ।।
बुद्धि चतुरता काम न आवे।
आलिम[1] रहे पछताई।। ६ ।।
और अमल[2] का दख़ल नहीं है।
अमल शब्द लौ लाई।। ७ ।।
गुरू मिले जब धुन का भेदी।
शिष्य बिरह धर आई।। ८ ।।
सुरत शब्द की होय कमाई।
तब मन कुछ ठहराई।। ९ ।।
हिर्स[3] हवस से हाथ न आवे।
तन मन देव चढ़ाई।। १० ।।
बुल्हवसी[4] और कपटी जन को।
नेक न धुन पतियाई।। ११ ।।
यह धुन है धुर लोक अधर की।
कोइ पकड़ें संत सिपाही।। १२ ।।

१ - बिद्यावान। २ - अभ्यास। ३ - जो देखा देखी ख़ाहिश पैदा हो। ४ - हिर्सी।

मन को मार करें असवारी।
गगन कोट वह लेयँ घिराई।।१३ ।।
खाई सुन्न पार मैदाना।
महासुन्न नाका परमाना[1]।।१४ ।।
भँवरगुफा का फाटक तोड़ा।
शीश महल सतगुरु दिखलाई।।१५ ।।
अद्‌भुत लीला अजब वहाँ की।
किरन किरन सूरज दरसाई।।१६ ।।
सूरज सूरज जोत निरारी।
चंद्र चंद्र कोटिन छबि छाई।।१७ ।।
घट अकाश औघट[2] परकाशा।
लख अकाश कोटिन परसाई।।१८ ।।
यह लीला कुछ अजब पेच की।
उलट पलट कोइ गुरुमुख पाई।।१९ ।।
कहाँ लग बरनूँ भेद अगाधा।
जो कोइ लावे सुन्न समाधा।।२० ।।
समझ बूझ गूँगे गुड़ खाई।
अकथ अकह की बात निराली।
क्योंकर कहूँ बनाई।।२१ ।।

१ - हद्द। २ - उल्टा।

राधास्वामी राज़[1] छिपे को।
परघट कर सरसाई[2]।।२२ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

अनहद बाजे बजे गगन में।
सुन सुन मगन होत अब मन में।। १ ।।
गुरू सुनावें यह धुन तन में।
सुरत लगा तू भी अब घन में।। २ ।।
मार सिंह को चढ़ी इस बन में।
शब्द मिला अब जुगन जुगन में।। ३ ।।
सुरत लगाई उसी लगन में।
धुन जागी अब रगन रगन में।। ४ ।।
सुन सुन शब्द गई सुन धुन में।
दूर किये सब भूत और जिन मैं।। ५ ।।
सुरत न आवे अब कभी इन में।
शब्द मिला गुरु दिया अपन में।। ६ ।।
शब्द प्रताप मिटाई तपन मैं।
जाग उठी जग देख सुपन मैं।। ७ ।।
शब्द सुनूँ नित इसी भवन[3] में।
छिन छिन पकड़ूँ यही जतन मैं।। ८ ।।

१ - भेद। २ - दिखाया। ३ - घर अथवा घट।

अंतर पाऊँ शब्द रतन मैं।
शब्द शब्द सँग करूँ गवन[1] मैं।। ९ ।।
शब्द गहूँ अब मार मदन[2] मैं।
राधास्वामी कहैं पुकार सबन में।। १० ।।

।। बचन दसवाँ।।

निर्णय शब्द अथवा नाम का

।। शब्द पहिला।।

।। रेख़ता।।

नाम निर्णय करूँ भाई।
दुधा बिधि भेद बतलाई।। १ ।।
बर्ण धुनआत्मक गाऊँ।
दोऊ का भेद दरसाऊँ।। २ ।।
बर्ण कहु चाहे कहु अक्षर।
जो बोला जाय रसना कर।। ३ ।।
लिखन और पढ़न में आया।
उसे बर्णात्मक गाया।। ४ ।।
लखायक है यही धुन का।
बिना गुरु फल नहीं किनका[3]।। ५ ।।
मिलें गुरु नाम धुन भेदी।
सुरत धुन धुनी सँग बेधी[4]।। ६ ।।

१ - चलना। २ - काम। ३ - बहुत कम। ४ - प्रवेश करना।

एकता नाम और नामी।
करावें जो मिलें स्वामी। ७ ।।
नाम बर्णात्मक गाया।
नामी धुनआत्मक पाया।। ८ ।।
बर्ण से सुरत मन माँजो।
बहुर चढ़ गगन धुन साधो।। ९ ।।
धुनी धुन एक कर जानो।
सुरत से शब्द पहिचानो।। १० ।।
शब्द और सुरत भये एका।
नाम धुनआत्मक देखा।। ११ ।।
गुरू बिन और बिना करनी।
मिले कस कहो यह रहनी।। १२ ।।
चाह अनुराग जिस होई।
भाग बड़ गुरुमुखी सोई।। १३ ।।
नाम नामी दोऊ गाया।
अभेदी भेद समझाया।। १४ ।।
गुरू की मौज में सब कुछ।
जिसे चाहें करें गुरुमुख।। १५ ।।
गुरूमुख होय तन धन से।
करे फिर प्रीत निज मन से।। १६ ।।

लगे तब जाय सुन धुन से।
गये तब तीन गुन तन से।।१७ ।।
बर्ण धुन भेद दोउ बरना।
वाच[1] और लक्ष[2] इन कहना।।१८ ।।
वाच बर्णात्मक जानो।
लक्ष धुन धुनी पहिचानो।।१९ ।।
बर्ण में भेष जग भूला।
मर्म धुन संत कोइ तोला।।२० ।।
बर्ण जप जप पचें भेषी।
मिले कुछ फल नहीं नेकी[3]।।२१ ।।
भेद धुन का नहीं पाया।
नाम फल हाथ नहिं आया।।२२ ।।
जपें नित सहस और लाखा।
खुले नहिं नेक उन आँखा।।२३ ।।
तिमिर संसार नहिं जावे।
मोह मद काम भरमावे।।२४ ।।
धुनी धुन भेद नहिं चीन्हा।
सुरत और शब्द नहिं लीन्हा।।२५ ।।
मिला नहिं गुरू धुन भेदी।
लखावे धुन मिटे खेदी[4]।।२६ ।।

१ - प्रकट। २ - गुप्त। ३ - ज़रा। ४ - दुःख।

काल ने बुद्धि उन छेदी।
मुफ़्त नर देह उन दे दी।।२७ ।।
दया कर संत गोहरावें।
ज़रा नहिं चित्त में लावें।।२८ ।।
पाँच धुन भेद बतलावें।
सुरत की राह दिखलावें।।२९ ।।
धुनों के नाम दरसावें।
रूप अस्थान कह गावें।। ३० ।।
सुरत का जोग लखवावें।
जीव नहिं कहन उन मानें।। ३१ ।।
सुरत ले गगन चढ़वावें।
पिंड में सार बतलावें।।३२ ।।
चढ़े ब्रह्मंड तब परखे।
सहसदल मध्य कुछ निरखे।।३३ ।।
बंक चढ़ तिरकुटी धावे।
सुन्न दस द्वार गति पावे।।३४ ।।
महासुन जाय हरखानी।
भँवर में जा सुनी बानी।।३५ ।।
अमर पद मूल जा देखा।
बीन धुन का मिला लेखा।।३६ ।।

अलख और अगम भी पेखा।
नाम का मूल अब देखा।।३७ ।।
कहूँ क्या खोल राधास्वामी।
सैन यह समझ परमानी।।३८ ।।

।। शब्द दूसरा।।

नाम रस चखा गुरू सँग सार।
काम रस छोड़ा देख असार।। १ ।।
नाम रँग रँगी सुरत मन मार।
क्रोध को जारा छिमा सम्हार।। २ ।।
नाम का मिला आज भंडार।
लोभ को टाला जान कँगार[१]।। ३ ।।
नाम गति पाई चढ़ आकाश।
मोह तम गया देख परकाश।। ४ ।।
नाम धन पाया गगन निहार।
मगन होय बैठी तज अहंकार।। ५ ।।
नाम धुन सुनी सुन्न दस द्वार।
नाम पद मिला महासुन पार।। ६ ।।
सुरत लिया भँवरगुफा आधार।
सोहं और बंसी सुनी पुकार।। ७ ।।

१ - निरधन।

पद चौथे चली नाम की लार।
अलख में गई नाम को धार॥ ८ ॥
अगम में पहुँची नाम सम्हार।
मिला राधास्वामी नाम अगार[1]॥ ९ ॥
करो अब सतसँग जग को जार।
होय घट भीतर नाम उजार॥ १० ॥
मान मद बैठे दोनों हार।
नाम पद हुई सुरत गल हार॥ ११ ॥
भेद यह गावें संत पुकार।
भेष नहिं मानें बड़े गँवार॥ १२ ॥
रहे पंडित और जोगी वार।
ज्ञान कर ज्ञानी मानी हार॥ १३ ॥
संत कोइ पहुँचे अगम निहार।
तोड़िया जिन २ तिल का द्वार॥ १४ ॥
नाम पद बरने देख बिचार।
रहा नहिं धोखा खोला झाड़[2]॥ १५ ॥
नाम का परदा दिया उघाड़।
कहूँ मैं तुम से कर अति प्यार॥ १६ ॥
मिलें कोइ सतगुरु परम उदार।
करो यह करनी तुम निरवार॥ १७ ॥

१ - सब के आगे। २ - कुल।

पाओ तब नाम कुल्ल करतार।
बाँध कर चढ़ो सुरत का तार।।१८ ।।
मीन मति[1] चढ़ गइ उलटी धार।
मकर[2] गति पकड़ा अपना तार।।१९ ।।
काल अब थका पुकार पुकार।
शरम कर बैठी माया नार।।२० ।।
सुरत अब पाया निज घरबार।
मिले राधास्वामी पुरुष अपार।। २१।।

।। बचन ग्यारहवाँ।।

सतसंग महिमा और भेद सतनाम का

।। शब्द पहिला।।

कहाँ लग कहूँ कुटिलता मन की।
कान न माने गुरु के बचन की।। १ ।।
प्रेम गया और भक्ति छिपानी।
बैर ईर्षा की खुली खानी।। २ ।।
माया लाई छलबल अपना।
काल दिया कलमल का ढकना।। ३ ।।
ज्ञान बुद्धि बल सतसँग भाई।
छिमा मौज गुरु गई हिराई[3]।। ४ ।।

१ - समान, मानिन्द। २ - मकड़ी। ३ - जाती रही।

देखो अचरज कहा न जाई।
कलजुग का परभाव दिखाई।। ५ ।।
हैं गुरुबहिन और गुरु भाई।
तिन में निस दिन होत लड़ाई।। ६ ।।
काल दाव[1] अपना यों खेला।
सतसंग में आय कीन्हो मेला।। ७ ।।
सेवा में घुस पैठ कराई।
और तरह कोइ घात न पाई।। ८ ।।
सेवा में अस कीन्हा पेचा।
मन को सब के धर धर खैंचा।। ९ ।।
गुरु ताड़ें सतसंगी झीखें[2]।
काल लगाई ऐसी लीकें[3]।।१० ।।
गुरु समझावें सीख न मानें।
मन मत अपनी फिर फिर ठानें।। ११ ।।
गुरु को देवें दोष लगाई।
फिर फिर चौरासी भरमाई।।१२ ।।
इतने दिन सतसँग जो कीया।
कुछ भी असर न उसका हूआ।।१३ ।।
सतगुरु से अब करूँ पुकारा।
काल मार मन लेव सुधारा।।१४ ।।

१ - पेंच। २ - दुखित होना। ३ - दाग़।

तुम से काल ज़बर नहिं होई।
काटो फंदा जम का सोई।।१५ ।।
तुम्हरे चरन प्रीत होय गाढ़ी।
सतसँगियन मन शुधता बाढ़ी।।१६ ।।
हिल मिल कर सब करें अनंदा।
द्रोह घात[1] का काटो फंदा।।१७ ।।
सतसंगी सब मिल कर चालें।
प्रीत परस्पर पल पल पालें।।१८ ।।
यही हुकुम अब सब को कीना।
जो नहिं माने सो काल अधीना।।१९ ।।
जो कोइ माने हुकुम हमारा।
पहुँचे वह सतगुरु दरबारा।। २०।।
बुद्धि आपनी लेव सम्हारी।
बचन गुरु यह मन में धारी।।२१ ।।
जिन के मन को काल सम्हारा।
सो नहिं माने बचन हमारा।।२२ ।।
अब मन में चिन्ता मत राखो।
सत्तनाम अब छिन छिन भाखो।।२३ ।।
दीन हीन जानो अपने को।
निपट नीच मानो अपने को।।२४ ।।

१ - शत्रुता और बैर।

अब अहंकार करो क्या किस से।
मौत धार दम दम में बरसे।।२५ ।।
जैसे जग में महा भिखारी।
दीन ग़रीबी उन सब धारी।।२६ ।।
कोई उसको कुछ कह लेवे।
मन को अपने ज़रा न देवे।।२७ ।।
तुम सतसँग कर क्या फल पाया।
उनका सा भी मन न बनाया।।२८ ।।
अब ऐसा तुम्हें करना चहिये।
अपने मन आधीनी धरिये।।२९ ।।
हाहा खाओ[1] चरन पखालो[2]।
आपस में तुम हिल मिल चालो।। ३० ।।
जो कोइ जिस से रूठे भाई।
सोई तिसको लेय मनाई।।३१ ।।
हाथ जोड़ बहु बिनती करे।
करे ख़ुशामद चरनन पड़े।।३२ ।।
इतने पर जो माने नाहीं।
गुनहगार सतगुरु का भाई।।३३ ।।
जलन ईर्षा जिस घट आई।
वह दुख कैसे जाय नसाई।।३४ ।।

१ - दीनता के साथ छिमा माँगना। २ - धोवो।

कर बिबेक मन को समझावे।
या सतगुरु की दया समावे।।३५ ।।
सतगुरु दया बिना नहिं होई।
बिन बिबेक नहिं जावे खोई।।३६ ।।
जो सतगुरु निज दया बिचारें।
तब यह दुरमत मन से टारें।।३७ ।।
जो कोइ दीन कपट से होई।
ता का रोग कहो कस जाई।।३८ ।।
कपटी को ऐसा अब चाही।
करे सफ़ाई कपट नसाई।।३९ ।।
जो बल उसका पेश न जावे।
तौ सतगुरु से बिनती लावे।।४०।।
खोले कपट न राखे परदा।
गुरु से खोले रख रख सरधा।।४१ ।।
अपने औगुन उन से भाखे।
बार बार बिनती कर आखे।।४२ ।।
हे स्वामी मेरी कपट निकारो।
मैं बलहीन मोहिं तुम तारो।।४३ ।।
तुम्हरी दया होय जब भारी।
घट से निकसे कपट हमारी।।४४ ।।

और उपाय न इसका कोई।
बिना दया कोइ जुक्ति न होई।।४५ ।।
मन कपटी घट घट में पैठा।
सब जीवन का पकड़ा फेंटा[1]।।४६ ।।
कर सतसँग भौ भाव बसावे।
गुरु की दया कपट नस जावे।।४७ ।।
जो गुरु आगे कपट न खोलै।
निष्कपटी अपने को बोलै।।४८ ।।
दोहरा कपट लिये है सोई।
उसका जतन कभी नहीं होई।।४९ ।।
वह सतसँग के लायक़ नाहीं।
वह असाध रोगी जग माहीं।।५० ।।
पर जो सतगुरु समरथ पावे।
और चरनन पर सीस नवावे।।५१ ।।
पड़ा रहे सतसँग के माहीं।
धीरे धीरे तौ छुट जाई।।५२ ।।
सतसँग जल जो कोई पावे।
सब मैलाई कट कट जावे।।५३ ।।
सतसँग महिमा कहा बखानूँ।
अस सम जतन और नहिं मानूँ।।५४ ।।

१ - कमरबंद।

कलजुग ख़ास जतन कोइ नाहीं।
बिन सतसँग संत नहिं गाई।।५५ ।।
कर्म धर्म तप पूजा दाना।
इस करनी से नित बढ़े माना।।५६ ।।
और ज्यों की त्यों होय न आवे।
तौ फल उलटा उसका पावे।।५७ ।।
याते संतन काढ़ि निकारी।
सतसँग की महिमा कहि भारी।।५८ ।।

।। दोहा।।

सतसँग किसको कहत हैं,
सो भी तुम सुन लेव।
सत्तनाम सतपुरुष का,
जहाँ कीर्तन होय।।५९ ।।

चौथा पद सतखंड कहावे।
महासुन्न के पार रहावे।।६० ।।
महासुन्न वह संतन भाषी।
अक्षर से वह आगे ताकी।।६१ ।।
वह अक्षर है बेद को मूला।
ज्यों का त्यों ताहि बेद न तोला।।६२ ।।
नेत नेत वाही को कहता।
आगे की गत फिर कस लेता।।६३ ।।

बेद कतेब थके दोउ यहँ ही।
अक्षर सुन के वार रहाई।।६४ ।।
आगे का इन मर्म न जाना।
संतन ने यह करी बखाना।।६५ ।।
जोगेश्वर बेदांती भाई।
यह भी रहे अक्षर लख[१] माहीं।।६६ ।।
सत्तनाम संतन जो भाखा।
सत्तलोक संतन जहाँ आखा।।६७ ।।
सो इन सब से आगे होई।
बुद्धि से एक कहो मत कोई।।६८ ।।
संतन साफ़ साफ़ कह डाला।
मत बेदांत काल कर जाला।।६९ ।।

।। दोहा।।

काल मता बेदांत का,
संतन कहा बनाय।
सत्तनाम सतपुरुष का,
भेद रहा अलगाय।।७० ।।
कुल्ल मते संसार के
सभी काल के जान।
सत्तनाम सतपुरुष मत,
यह दयाल पहिचान।।७१ ।।

१ - लक्ष स्वरूप ।

सत्तनाम का भेद सुनाऊँ।
वा की आद अंत दरसाऊँ।।७२।।
तब नहिं रचा अंड ब्रह्मंडा।
तीन लोक और नहिं नौखंडा।।७३।।
नहिं तब ब्रह्म नहीं तब आतम।
नहिं तब पारब्रह्म परमातम।।७४।।
नहिं तब देवी नहिं तब देवा।
सुर नर मुनि कोइ रचे न सेवा।।७५।।
काल और महाकाल नहिं दोई।
सुन्न और महासुन्न नहिं होई।।७६।।
धरती गगन न बेद पुराना।
कोइ सिद्धांत बेदांत न जाना।।७७।।
कहाँ लग कहूँ खोल कर भाई।
किंचित रचना नहिं प्रगटाई।।७८।।
तब रहे आप अनाम अमाया।
अपने में रहे आप समाया।।७९।।
मौज उठी इक धुन भइ भारी।
सत्तनाम सत शब्द पुकारी।।८०।।
सच्च खंड इस धुन से रचिया।
जहाँ लग मंडल धुन का बँधिया।।८१।।

हंस रचे और दीप रचाये।
सोलह सुत[1] परघट होय आये।।८२ ।।
सत्तलोक यों रचन रचानी।
सत्तनाम महिमा निज ठानी।।८३ ।।
जुग केते याही बिधि बीते।
सत्तनाम रस सब मिल पीते।।८४ ।।
सत्य सत्य वहाँ रचा पसारा।
फिर नीचे का किया बिस्तारा।।८५ ।।
एक धार वहाँ से चल आई।
धार दूसरी आन समाई।।८६ ।।
सुन्न मंडल कीन्हा निज थाना।
पुरुष प्रकिर्ति रचा अस्थाना।।८७ ।।
जोत निरंजन संतन गाया।
माया ब्रह्म वही ठहराया।।८८ ।।
शिव शक्ती इस ही को कहते।
केते जुग याही को बीते।।८९ ।।
ब्रह्म सृष्टि रचना इन ठानी।
यह भी भेद न काहू जानी।। ९०।।
ब्रह्म हुआ जब इनसे न्यारा।
सत्तनाम का ध्यान सम्हारा।। ९१ ।।

१ - सोलह कला।

माया ने फिर रचना ठानी।
तीन पुत्र लीन्हे उतपानी।।९२ ।।
नर सृष्टी इन से भइ भारी।
बेद रचे और कर्म पसारी।।९३ ।।
कर्म कांड में सब मन दीना।
सुर नर मुनि भये काल अधीना।।९४ ।।
ज्ञानी जोगी पच पच हारे।
कर्म भर्म से हुए न न्यारे।।९५ ।।
सत्तपुरुष का भेद न जाना।
बेद मते का बंधन ठाना।।९६ ।।
संत मता इन से बहु दूरी।
यह क्यों जानें वह पद मूरी[1]।।९७ ।।
याते संत संग अब कीजै।
और संग सब परिहर[2] दीजै।।९८ ।।
सतसँग याका नाम कहावे।
मिलें संत तब यह घर पावे।।९९ ।।
सत्तनाम धुन अब कहुँ खोली।
बीन बाँसरी धुन जहँ बोली।।१००।।
काल नगर जहँ अनहद बाजा।
बाँईं दिसा यह धुन उन साजा।।१०१।।

१ - मूल। २ - त्याग।

संतन की धुन इनसे न्यारी।
पावेगा कोइ चढ़ पद चारी।।१०२।।
छाँट छूँट कर मैं सब गाई।
संत मता सब दिया लखाई।।१०३।।
कहने में कुछ कसर न राखी।
खुले दृष्टि तब देखे आँखी।।१०४।।
संत मेहर से कोइ कोइ पावे।
बिना संत कुछ हाथ न आवे।।१०५।।

।। दोहा।।

संत कही यह छानकर,
मूरख माने नाहिं।
बिना प्रीत परतीत के,
कैसे पावे ठाहिं।।१०६।।
संतन से कर प्रीत अब
दृढ़कर चित्त लगाय।
कर्म भर्म सब छोड़कर,
सूरत शब्द समाय।।१०७।।
राधास्वामी गाय कर,
जन्म सुफल करले।
यही नाम निज नाम है,
मन अपने धरले।।१०८।।

भेद नाम का जब तू पावे।
सतसँग में स्वामी के आवे।।१०९।।

।। बचन बारहवाँ।।
बर्णन महातम भक्ती का

।। शब्द पहिला।।

भक्ति महातम सुन मेरे भाई।
सब संतन ने किया बखान।। १ ।।
यही मता गुरुमत पहिचानो।
और मते सब झूठ भुलान।। २ ।।
बिना भक्ति थोथे सब मानो।
छिलका है मींगी[1] की हान।। ३ ।।
ताते भक्ती दृढ़ कर पकड़ो।
और सयानप[2] तजो निदान।। ४ ।।
भक्ती इश्क़ प्रेम यह तीनों।
नाम भेद है रूप समान।। ५ ।।
भक्ति भाव यह गुरुमत जानो।
और मते सब मनमत ठान।। ६ ।।
प्रेम रूप आतम परमातम।
भक्ति रूप सतनाम बखान।। ७ ।।

१ - मग़्ज़। २ - चतुराई।

भक्ती और भगवंत एक हैं।
प्रेम रूप तू सतगुरु जान।। ८ ।।
प्रेम रूप तेरा भी भाई।
सब जीवन को योंही मान।। ९ ।।
एक भेद यामें पहिचानो।
कहीं बुंद कहिं लहर समान।। १० ।।
कहीं सिंध सम करे प्रकाशा।
कहीं सोत और पोत कहान।। ११ ।।
कहिं इच्छा परबल होय बैठी।
कहीं हुई माया बलवान।। १२ ।।
एक ठिकाने माया थोड़ी।
सिंध प्रताप शुद्ध हुइ आन।। १३ ।।
सोत पोत में माया नाहीं।
वहाँ प्रेमही प्रेम रहान।। १४ ।।
वह भंडार प्रेम का भारी।
जाका आदि न अंत दिखान।। १५ ।।
बिना संत पहुँचे नहिं कोई।
सतगुरु संत किया अस्थान।। १६ ।।
प्रेम भक्ति की ऐसी महिमा।
ग्रहण करो यह अमृत खान[1]।। १७ ।।

१ - भंडार।

ताते पहिले करो भक्ति गुरु।
पीछे पाओ नाम निशान।।१८ ।।
आरत कर कर गुरू रिझाओ।
पाओ उन से प्रेम निधान[१]।।१९ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
मिला तुझे अब भक्ती दान।। २०।।

।। शब्द दूसरा।।

जक्त भाव भय लज्जा छोड़ो।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। १ ।।
जाति बरन भय लज्जा त्यागो।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। २ ।।
शत्रु मित्र डर दूर हटाओ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ३ ।।
मात पिता डर छोड़ गँवाओ।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ४ ।।
जोरू लड़के मत डर इन से।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ५ ।।
भाई भतीजों का डर मत कर।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ६ ।।

१ - ख़ज़ाना।

सास ससुर डर मन से छोड़ो।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ७ ।।
बहू जमाई इन का डर तज।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ८ ।।
यार आशना[1] सब डर छोड़ो।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। ९ ।।
नातेदार कुटुम्बी जितने।
इनका डर तज कर भक्ती।। १० ।।
भक्ति अंग में जब तू बरते।
छोड़ झिझक[2] इन कर भक्ती।। ११ ।।
जो मूरख हैं मर्म न जानें।
इनका डर क्या कर भक्ती।। १२ ।।
इनका डर कुछ मत कर मन में।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।। १३ ।।
भेष भेष को देख लजावे।
सो भी कच्चा कर भक्ती।। १४ ।।
जब लग सब से निडर न होवे।
तब लग कच्चा कर भक्ती।। १५ ।।
ज़िल्लत[3] इज़्ज़त[4] जो कुछ होवे।
मौज बिचारो कर भक्ती।। १६ ।।

१ - दोस्त। २ - डर और लज्जा। ३ - निरादर। ४ - आदर।

गुरु का बल हिरदे धर अपने।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।।१७ ।।
यह बिगाड़ कुछ करें न तेरा।
क्यों झिझके तू कर भक्ती।।१८ ।।
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होता।
सुन प्यारे तू कर भक्ती।।१९ ।।
तू कच्चा यह करे कचाई।
और कहूँ क्या कर भक्ती।। २०।।
करते करते पक्का होगा।
और उपाव न कर भक्ती।।२१ ।।
कच्ची से पक्की होय इक दिन।
छोड़ कपट तू कर भक्ती।।२२ ।।
कपट भक्ति कुछ काम न आवे।
सच्ची कच्ची कर भक्ती।।२३ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
जैसी बने तैसी कर भक्ती।।२४ ।।

।। शब्द तीसरा।।

धोखा मत खाना जग आय पियारे।
धोखा मत खाना जग आय।। १ ।।
कोई मीत न जानो अपना।
सब ठग बैठे फाँसी लाय।। २ ।।

जब सच्चा होय चले डगर गुरु।
तबही चौंकैं रोकैं आय।। ३ ।।
ऊँच नीच कहैं बचन तोख[१] के।
मन को तेरे दें भरमाय।। ४ ।।
इनसे रहना समझ बूझ कर।
हैं यह बैरी हित दिखलाय।। ५ ।।
तेरी हानि लाभ नहिं सोचें।
अपने स्वारथ रहें लिपटाय।। ६ ।।
तू भी चतुरा गुरु का प्यारा।
उन सँग रहु गुरु चरन समाय।। ७ ।।
उनको भी इस भाँति भलाई।
तेरी भक्ती न थकती जाय।। ८ ।।
जो बेमुख गुरु भक्ति नाम से।
कोई तरह क़ाबू नहिं पाय।। ९ ।।
तौ जुक्ती से दीन बिधी से।
छोड़ चलो सँग दोष न ताय[२]।। १०।।
जो सन्मुख गुरु भक्ति नाम से।
होयँ कदाचित मेल मिलाय।। ११ ।।
राधास्वामी कहत बनाई।
बहुर बहुर तू भक्ति कमाय।। १२ ।।

१ - तान। २ - उसमें।

भक्ति न छूटे कोई जुक्ति से।
नहिं तो बहु बिध रहो पछताय।।१३ ।।

।। बचन तेरहवाँ।।

पहिचान पूरे गुरू की और सच्चे परमार्थी की

।। शब्द पहिला।।

गुरू सोई जो शब्द सनेही।
शब्द बिना दूसर नहिं सेई[1]।। १ ।।
शब्द कमावे सो गुरु पूरा।
उन चरनन की हो जा धूरा।। २ ।।
और पहिचान करो मत कोई।
लक्ष[2] अलक्ष[3] न देखो सोई।। ३ ।।
शब्द भेद लेकर तुम उन से।
शब्द कमाओ तुम तन मन से।। ४ ।।

।। सार उपदेश।।

पहिचान परमार्थी की

।। सोरठा।।

अनुरागी जो जीव, तिन प्रति अब ऐसी कहूँ।
सुनो कान दे चीत, बचन कहूँ बिस्तार कर।।४।।

१ - सेवन करना। २ - लक्षण, पूरा। ३ - बेलक्षण, अधूरा।

बिषयन से जो होय उदासा।
परमारथ की जा मन आसा।। ६ ।।
धन संतान प्रीत नहिं जा के।
जक्त पदारथ चाह न ता के।। ७ ।।
तन इन्द्री आशक्त न होई।
नींद भूख आलस जिन खोई।। ८ ।।
बिरह बान जिन हिरदे लागा।
खोजत फिरे साध गुरु जागा।। ९ ।।
साध फ़क़ीर मिले जो कोई।
सेवा करे करे दिलजोई[1]।। १०।।
भेष धार पाखंडी होई।
साधू जान करे हित सोई।। ११ ।।
भेष नेष्ठा[2] नित प्रति धारे।
ले परशादी चरन पखारे।। १२ ।।
ऐसी करनी जा की देखें।
आप आय सतगुरु तिस मेलें।। १३ ।।
सतगुरु बचन सुने जब काना।
उमँगे हिरदा प्रेम समाना।। १४ ।।
सतगुरु से जब प्रीत लगावे।
दया मेहर उनकी कुछ पावे।। १५ ।।

१ - ख़ातिरदारी। २ - धारना।

॥ बिधि दर्शन की॥

नित प्रति दर्शन परसन करे।
रूप अनूप चित्त में धरे॥१६ ॥
चरनामृत परशादी लेवे।
मान मनी तज तन मन देवे॥१७ ॥

॥ बिधि सेवा की॥

सेवा कर तन मन धन अरपे।
सत्तपुरुष सम सतगुरु थरपे[१]॥१८ ॥

॥ प्रथम तन की सेवा॥

आरत सेवा नित ही करे।
काम क्रोध मद चित से हरे॥१९ ॥
चरन दबावे पंखा फेरे।
चक्की पीसे पानी भरे॥२० ॥
मोरी धो झाड़ू को धावे।
खोद खदाना मिट्‌टी लावे॥२१ ॥
हाथ धुला दातन करवावे।
काट पेड़ से दातन लावे॥२२ ॥
बटना मल अशनान करावे।
अंग पोंछा धोती पहिनावे॥२३ ॥

१ - माने।

धोती धोय अँगोछा धोवे।
कंघा करे बाल बल खोवे।।२४ ।।
बस्त्र पहिनावे तिलक लगावे।
करे रसोई भोग धरावे।।२५ ।।
जल अचवावे हुक़्का भरे।
पलँग बिछावे बिनती करे।।२६ ।।
पीकदान ले पीक करावे।
फिर सब पीक आप पी जावे।।२७ ।।
नाना बिधि की सेवा करे।
नीच ऊँच जो जो आ पड़े।।२८ ।।
कोई टहल में आर[१] न लावे।
जो गुरु कहें सो कार कमावे।।२९ ।।

।। दूसरे धन की सेवा।।

धन की सेवा यह है भाई।
गुरु सेवा में ख़र्च कराई।। ३० ।।
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का।
उन पै धन है भक्ति नाम का।। ३१ ।।
पर तेरा उपकार करावें।
भूखे प्यासे को दिलवावें।।३२ ।।

१ - शर्म।

उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे।
जो उनको परसन्न करावे।।३३ ।।
उनका ख़ुश होना है भारी।
सत्तपुरुष निज किरपा धारी।।३४ ।।

।। तीसरे मन और बुद्धि की सेवा।।

दर्शन करे बचन पुनि सुने।
फिर सुन सुन नित मन में गुने।।३५ ।।
गुन गुन छाँट लेय उन सारा।
सार धार तिस करे अहारा।।३६ ।।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई।
जग भौ लाज अब गई नसाई।।३७ ।।
गुरु भक्ती जानो इश्क़ गुरू का।
मन में धसा सुरत में पक्का।।३८ ।।
पक पक घट में गाड़ा थाना।
थान गाड़ अब हुआ दिवाना।।३९ ।।
गुरु का रूप लगे अस प्यारा।
कामिन पति मीना जल धारा।।४०।।
सतसँग करना ऐसा चहिये।
सतसँग का फल येही सही है।।४१ ।।

।। दोहा।।

जब सतगुरु परसन्न होय,
देयँ नाम का दान।
दीन होय हिरदे धरे,
करे नाम पहिचान।।४२ ।।

।। चौथे सुरत और निरत[1] की
सेवा याने अंतर अभ्यास।।

अंतरमुख बैठे एकान्त।
अभ्यास करे पावे मन शान्त।।४३ ।।
दो दल उलट गगन को धावे।
मगन होय और नाद बजावे।।४४ ।।
जोत देख फिर देखे सूर।
चंद्र निहारे पावे नूर[2]।।४५ ।।
सत्तलोक पहुँचे और बसे।
सुन सुन धुन तब सूरत हँसे।।४६ ।।
तब सतगुरु की जानी महिमा।
जिन प्रताप बाजी धुन बीना।।४७ ।।
अलख अगम और मिला अनामी।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी।।४८ ।।

* * * * *

१ - निर्णय करने वाली शक्ति। २ - प्रकाश।

।। शब्द दूसरा।।

घर आग लगावे सखी।
सोइ सीतल समुँद समावे।। १ ।।
जड़ चेतन की गाँठ खुलानी।
बुन्दा सिंध मिलावे।। २ ।।
सुरत शब्द की क्यारी सींचे।
फल और फूल खिलावे।। ३ ।।
गगन मँडल का ताला खोले।
लाल जवाहिर[१] पावे।। ४ ।।
सुन्न शिखर का मन्दिर झाँके।
अद्भुत रूप दिखावे।। ५ ।।
मानसरोवर निरमल धारा।
ता बिच पैठ अन्हावे।। ६ ।।
हंसन साथ हाथ फल लेवे।
धृग धृग जक्त सुनावे।। ७ ।।
महासुन्न का नाका तोड़े।
भँवरगुफा ढिंग जावे।। ८ ।।
सत्तनाम पद परस[२] पुराना।
अलख अगम को धावे।। ९ ।।

१ - रतन। २ - स्पर्श करके।

राधास्वामी सतगुरु पावे।
तब घर अपने आवे।। १० ।।

।। शब्द तीसरा।।

गुरु चेला ब्योहार जगत में।
झूठा बर्त रहा।। १ ।।
का से कहूँ खोज नहिं काहू।
धोखे धार बहा।। २ ।।
गुरु तो लोभ प्रतिष्ठा चाहत।
शिष स्वारथ सँग आन बँधा।। ३ ।।
सच्चा मारग सुरत शब्द का।
सो अब गुप्त भया।। ४ ।।
गुरु चेला पाखंडी कपटी।
चौरासी में दोउ गया।। ५ ।।
शब्द सरूपी शब्द अभ्यासी।
अस गुरु मिले तो पार हुआ।। ६ ।।
सुरतवन्त अनुरागी सच्चा।
ऐसा चेला नाम कहा।। ७ ।।
गुरु भी दुर्लभ चेला दुर्लभ।
कहीं मौज से मेल मिला।। ८ ।।
शब्द सुरत बिन जो गुरु होई।
ता को छोड़ो पाप कटा।। ९ ।।

राधास्वामी यों कह गाई।
बूझ बचन तब काज सरा।। १० ।।

।। शब्द चौथा।।

सतगुरु खोजो री प्यारी।
जगत में दुर्लभ रतन यही।। १ ।।
जिन पर मेहर दया सतगुरु की।
उन को दरस दई।। २ ।।
दरस पाय सतलोक सिधारी।
सत्तनाम पद कीन सही।। ३ ।।
सही नाम पाया सतगुरु से।
बिन सतगुरु सब जीव बही।। ४ ।।
जीव पड़े चौरासी भरमें।
खान पान मद मान लई।। ५ ।।
मान मनी का रोग पसरिया[1]।
बड़े बने जिन मार सही।। ६ ।।
छोटा रहे चित्त से अंतर।
शब्द माहिं तब सुरत गई।। ७ ।।
शब्द बिना सारा जग अंधा।
बिन सतगुरु सब भर्म मई।। ८ ।।

१ - फैला।

शब्द भेद और शब्द कमाई।
जिन जिन कीन्ही सार लई।। ९ ।।
शब्द रता सतगुरु पहिचानो।
हम यह पूरा पता दई।। १०।।
खोलो आँख निकटही देखो।
अब क्या खोलूँ खोल कही।। ११ ।।
आगे भाग तुम्हारा प्यारी।
नहिं परखो तो जून[1] रही।।१२ ।।
कहना था सोई कह डाला।
राधास्वामी ख़ूब कही।।१३ ।।

।। बचन चौदहवाँ।।

चितावनी भाग पहिला

।। शब्द पहिला।।

धुन से सुरत भइ न्यारी रे।
मन से बँधी कर यारी रे।। १ ।।
भौजाल फँसी झख मारी रे।
घर छूटा फिरे उजाड़ी रे।। २ ।।
गुरु ज्ञान नहीं चित धारी रे।
बिष भोगे बिषय बिकारी रे।। ३ ।।

१ - योनि।

सिर भार उठावत भारी रे।
जम दंड सहे सरकारी[1] रे।। ४ ।।
दुख बिपता बहुत सहारी रे।
अब सतगुरु कहत पुकारी रे।। ५ ।।
सुन मान बचन मेरा प्यारी रे।
घट उलटो लख उजियारी रे।। ६ ।।
शब्दा रस पियो अपारी रे।
चढ़ खोलो गगन किवाड़ी रे।। ७ ।।
गुरु बिन नहिं और अधारी रे।
राधास्वामी काज सुधारी रे।। ८ ।।

।। शब्द दूसरा।।

सुरत तू कौन कहाँ से आई।।टेक।।
जगत जाल यह मन रच राखा।
क्यों या में भरमाई।। १ ।।
पुरुष अंस तू सतपुर बासी।
फाँसी काल लगाई।। २ ।।
सतगुरु दया साध की संगत।
उलट चलो घर पाई।। ३ ।।
अनहद शब्द सुनो घट भीतर।
राधास्वामी कहत बुझाई।। ४ ।।

* * * * *

१ - काल का।

।। शब्द तीसरा ।।

झँझरिया झाँको बिरह उमगाय ।।टेक ।।
मन इन्द्री घर बास बिगाना ।
या में रहो अलसाय ।। १ ।।
पूरे सतगुरु मर्म लखावें ।
भर्म देव छुटकाय ।। २ ।।
अब के दाव पड़ा तेरा सजनी ।
फिर औसर नहिं पाय ।। ३ ।।
तिल को पेल तेल अब काढ़ो ।
लो घट जोत जगाय ।। ४ ।।
राधास्वामी कहा बुझाई ।
एक ठिकाना गाय ।। ५ ।।

।। शब्द चौथा ।।

करो री कोइ सतसँग आज बनाय ।।टेक ।।
नर देही तुम दुर्लभ पाई ।
अस औसर फिर मिले न आय ।। १ ।।
तिरिया सुत धन धाम बड़ाई ।
यह सुख फिर दुख मूल दिखाय ।। २ ।।
या से बचो गहो गुरु सरना ।
सतसँग में तुम बैठो जाय ।। ३ ।।

यह सब खेल रैन का सुपना।
मैं तुम को अब दिया जगाय।। ४ ।।
झूठी काया झूठी माया।
झूठा मन जो रहा लुभाय।। ५ ।।
सतसँग सच्चा सतगुरु सच्चा।
नाम सचाई क्या कहुँ गाय।। ६ ।।
मान बचन मेरा तू सजनी।
जन्म मरन तेरा छुट जाय।। ७ ।।
नभ चढ़ चलो शब्द में पेलो।
राधास्वामी कहत बुझाय।। ८ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

सुरत तू क्यों न सुने धुन नाम।।टेक ।।
भूल भुलइयाँ आन फँसानी,
क्या समझा आराम।
भला तू समझ चेत चल धाम।। १ ।।
मन इंद्री सँग भोग बिलासा।
यह जमराय बिछाया दाम।। २ ।।
इन से निकर भाग अब प्यारी।
सतगुरु मर्म लखावें ताम[१]।। ३ ।।

१ - तमाम।

अबकी बार पड़ो गुरु सरना।
फिर न बने अस काम।। ४ ।।
यहाँ तो चार दिवस रहे बासा।
फिर भटको चौरासी ग्राम।। ५ ।।
ता ते बचन हमारा मानो।
तजो मोह और काम।। ६ ।।
मन बौरा[१] यह कहा न माने।
लगा भोग रस खाम[२]।। ७ ।।
जीव निबल क्या करे बिचारा।
जब लग राधास्वामी करें न सहाम[३]।। ८ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

जाग चल सूरत सोई बहुत।
काहे को पूँजी अपनी खोत।। १ ।।
पकड़ ले सतगुरु की तू ओट।
नाम गह दूर करो सब खोट[४]।। २ ।।
काल अब मारे छिन छिन चोट।
शब्द सँग डार[५] कर्म की पोट।। ३ ।।
मैल मन क्यों नहिं अब तू धोत।
शब्द सँग सूरत क्यों नहिं पोत[६]।। ४ ।।

१ - पागल। २ - लिपट। ३ - सहायता। ४ - कसर। ५ - फेंक दे।
६ - गूँथता, परोता।

निरख ले घट में अद्‌भुत जोत।
खोलिया राधास्वामी भक्ती सोत।। ५ ।।

॥ शब्द सातवाँ॥

हित कर कहता सुन सुर्त बात।
ग़ोता मत खा मूरख साथ।। १ ।।
काम सँग बहती दिन और रात।
मिला तोहि भटक भटक यह गात[1]।। २ ।।
लगा ले नौका सतगुरु घाट।
मिटा ले प्यारी जम की घात।। ३ ।।
छोड़ दे मन से सब उत्पात।
रखो नहिं मन में जात और पाँत।। ४ ।।
बिघ्न यह भारी बुधि भरमात।
कहूँ क्या कौन सुने मेरी तात[2]।। ५ ।।
करें कोइ सतगुरु तोहि निज दात।
नाम का भेद लखा धुन पात।। ६ ।।
कहें यह राधास्वामी अचरज बात।
मिले जब सतसँग सरन समात।। ७ ।।

॥ शब्द आठवाँ॥

हे सहेली अब गुरु के मारग चलना।
मन मारग छिन छिन तजना।। १ ।।

१ - शरीर। २ - प्यारा।

कामादिक भोग बिसरना।
धुन सुन कर नभ पर चढ़ना।। २ ।।
जग भट्ठी में क्यों जलना।
मद मान मोह नहिं पचना।। ३ ।।
धीरे धीरे नाम रसायन[1] जरना।
भौजल से यों ही तरना।। ४ ।।
राधास्वामी बचन पकड़ना।
फिर जम से काहे को डरना।। ५ ।।

।। शब्द नवाँ।।

क्यों फिरत भुलानी जक्त में।
दिन चार बसेरा।। १ ।।
स्वारथ के संगी सभी।
जिन तुझ को घेरा।। २ ।।
मात पिता सुत इस्तरी।
कोइ संग न हेरा।। ३ ।।
बिन गुरु सतगुरु कौन है।
जो करे निबेड़ा[2]।। ४ ।।
नाम बिना सब जीव।
करें चौरासी फेरा।। ५ ।।

१ - कीमिया। २ - छुटकारा।

मन दुलहा गगना चढ़े।
सज सूरत सेहरा।। ६ ।।
धुन दुलहिन को पाय कर।
बसे जाय त्रिकुटी देहरा[१]।। ७ ।।
राधास्वामी ध्यान धर।
तू साँझ सबेरा।। ८ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

सुरत तू दुखी रहे हम जानी।।टेक।।
जा दिन से तुम शब्द बिसारा।
मन सँग यारी ठानी।। १ ।।
मन मूरख तन साथ बँधानी।
इन्द्री स्वाद लुभानी।। २ ।।
कुल परिवार सभी दुखदाई।
इन सँग रहत भुलानी।। ३ ।।
तू चेतन यह जड़ सब मिथ्या।
क्योंकर मेल मिलानी।। ४ ।।
ताते चेत चलो यह औसर।
नहिं भरमो तुम खानी।। ५ ।।
सतसँग करो सत्त पद खोजो।
सतगुरु प्रीत समानी।। ६ ।।

१ - डेरा।

नाम रतन गुरु देयँ बुझाई।
उलट चढ़ो असमानी।। ७ ।।
इतना काम करो तुम अब के।
फिर आगे की सतगुरु जानी।। ८ ।।
राधास्वामी कहन सम्हारो।
दुख छूटे सुख मिले निशानी।। ९ ।।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

सुरत तू कौन कुमति उरझानी।।टेक ।।
मन के साथ फिरे भरमानी।
गुरु की सुने न बानी।। १ ।।
कनिक कामिनी लागी प्यारी।
रैन दिवस इन सँग लिपटानी।। २ ।।
मोह जाल यह काल बिछाया।
दाना डाला जीव फँसानी।। ३ ।।
तू अनजान पड़ी लालच में।
बहुत होय तेरी हानी।। ४ ।।
मैं समझाय कहूँ अब तो से।
गुरु बिन कौन बचानी।। ५ ।।
गुरु से प्रीति करो जग जारो।
तन मन दशा भुलानी।। ६ ।।

नाम रसायन गुरु से पावो।
छूटे सब हैरानी।। ७ ।।
फिर तू चढ़े गगन के नाके।
तन से होय अलगानी।। ८ ।।
जम की घात बचा ले प्यारी।
राधास्वामी कहत बखानी।। ९ ।।

।। शब्द बारहवाँ।।

जग में घोर अँधेरा भारी।
तन में तम का भंडारा।। १ ।।
स्वप्न जाग्रत दोनों देखी।
भूल भुलइयाँ धर मारा।। २ ।।
जीव अजान भया परदेसी।
देस बिसर गया निज सारा।। ३ ।।
फिरे भटकता खान खान में।
जोनि जोनि बिच झख मारा।। ४ ।।
दम दम दुखी कष्ट बहु भोगे।
सुने कौन अब बहु हारा।। ५ ।।
करे पुकार कारगर[1] नाहीं।
पड़े नर्क में जम धारा।। ६ ।।

१ - असरदार।

भटक भटक नर देही पाई।
इन्द्री मन मिल यहाँ मारा।। ७ ।।
सतगुरु संत कहें बहुतेरा।
राह बतावें दस द्वारा।। ८ ।।
बचन न माने कहन न पकड़े।
फिर फिर भरमें नौ वारा।। ९ ।।
फोकट[1] धर्म पकड़ कर जूझे।
बूझे न शब्द जुगत पारा।। १० ।।
पानी मथे हाथ कुछ नाहीं।
क्षीर[2] मथन आलस भारा।। ११ ।।
जीव अभाग कहूँ मैं क्या क्या।
बाहर भरमे भौजारा।। १२ ।।
अंतरमुख जो शब्द कमाई।
ता में मन को नहिं गारा[3]।। १३ ।।
वेद शास्त्र स्मृत और पुराना।
पढ़ पढ़ सब पंडित हारा।। १४ ।।
बिन सतगुरु और बिना शब्द सुर्त।
कोई न उतरे भौ पारा।। १५ ।।
यही बात भाषी मैं चुनकर।
अब तो मानो गुरु प्यारा।। १६ ।।

१ - ख़ाली। २ - दूध। ३ - गलाया।

राधास्वामी कहा बुझाई।
सुरत चढ़ाओ नभ द्वारा।।१७ ।।

।। शब्द तेरहवाँ।।

चल री सुरत अब गुरु के देश।
जहाँ न काया कर्म कलेश।। १ ।।
तन मन इन्द्री यह परदेश।
छोड़ो भेष[1] भवन का लेश[2]।। २ ।।
सुनो कान से गुरु संदेश।
सुरत शब्द ले धाओ शेष[3]।। ३ ।।
ब्रह्मा बिष्णु न गौर गनेश।
जहाँ न नारद सारद शेष।। ४ ।।
संत सुरत जहाँ किया प्रवेश।
सतगुरु दया मिला वह देश।। ५ ।।
काल कर्म की गई न पेश।
तोड़े दाँत और काटे नेश[4]।। ६ ।।
सतगुरु को अब करूँ अदेश[5]।
राधास्वामी पूरे धनी धनेश।। ७ ।।

* * * * *

१ - सरूप। २ - पिंड की प्रीत। ३ - अंत पद।
४ - डंक। ५ - बन्दगी।

।। बचन पंद्रहवाँ।।

चितावनी भाग दूसरा

।। शब्द पहिला।।

चेत चलो यह सब जंजाल।
काम न आवे कुछ धन माल।। १ ।।
गुरु चरन गहो लो नाम सम्हाल।
सतसँग करो धरो अब ख़्याल।। २ ।।
काम क्रोध सँग मन पामाल[1]।
भर्म भुलाना कर्मन नाल[2]।। ३ ।।
कहा कहूँ यह मन का हाल।
रोग सोग सँग होत बेहाल।। ४ ।।
जीव गिरासे जम और काल।
देखत जग में यह दुख साल[3]।। ५ ।।
तौभी चेत न पकड़े ढाल।
छिन छिन मारे काल कराल।। ६ ।।
राधास्वामी गुरु जब होयँ दयाल।
चरन सरन दे करें निहाल।। ७ ।।

।। शब्द दूसरा।।

लाज जग काज बिगाड़ा री।
मोह जग फंदा डारा री।। १ ।।

१ - लतखूंदन। २ - संग(पंजाबी बोली)। ३ - तकलीफ़।

कुटुँब की यारी ख़्वारी[1] री।
काल सँग ब्याही क्वारी री।। २ ।।
कर्म ने फाँसी डारी री।
करे जम हाँसी भारी री।। ३ ।।
मरन की सुद्ध बिसारी री।
देह अब लागी प्यारी री।। ४ ।।
मान में खप[2] गइ सारी री।
पोट[3] सिर भारी धारी री।। ५ ।।
जीत कर बाज़ी हारी री।
चाह जग की नहिं मारी री।। ६ ।।
राधास्वामी कहत पुकारी री।
करो कोइ जतन बिचारी री।। ७ ।।
गुरू सँग करो सुधारी री।
नाम रस पियो अपारी री।। ८ ।।

।। शब्द तीसरा।।

मत देख पराये औगुन।
क्यों पाप बढ़ावे दिन दिन।। १ ।।
पर[4] जीव सतावे खिन खिन।
छोड़ अपने औगुन गिन गिन।। २ ।।

१ - ख़राबी। २ - समा गई। ३ - बोझ। ४ - पराया।

मक्खी सम मत कर भिनभिन।
नहिं खावे चोट तू छिन छिन।। ३ ।।
देखा कर सब के तू गुन।
सुख मिले बहुत तोहि पुन पुन।। ४ ।।
मैं कहूँ तोहि अब गुन गुन[१]।
तू मान बचन मेरा सुन सुन।। ५ ।।
गति गाई मैं यह हंसन।
यों बर्ण सुनाई संतन।। ६ ।।
अब कान धरो इन बचनन।
नहिं रोवोगे सिर धुन धुन।। ७ ।।
यह बात कही मैं चुन चुन।
कर राधास्वामी चरन अस्पर्सन।। ८ ।।

।। शब्द चौथा।।

मुसाफ़िर रहना तुम हुशियार।
ठगों ने आन बिछाया जाल।। १ ।।
अकेले मत जाना इस राह।
गुरू बिन नहिं होगा निरबाह।। २ ।।
जमा सब लेंगे तेरी छीन।
करेंगे तुझ को अपना दीन।। ३ ।।

१ - बिचार कर।

ठगों ने रोका सब संसार।
गुरू बिन पड़ गइ सब पर धाड़[1]।। ४ ।।
मान लो कहना मेरा यार।
संग इन तजना पकड़ किनार।। ५ ।।
गुरू बिन और न कोइ रखवार।
कहूँ मैं तुम से बारम्बार।। ६ ।।
होयगी मंज़िल तेरी पार।
गुरू से करले दृढ़ कर प्यार।। ७ ।।
गुरू के चरन पकड़ यह सार।
इन्द्री भोग भुलावत झाड़।। ८ ।।
यही हैं ठगिया करत ठगार।
कहें राधास्वामी तोहि पुकार।। ९ ।।
सरन में आ जा लेउँ सम्हार।
नाम सँग होजा होत उधार।। १०।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

मित्र तेरा कोई नहीं सँगियन में।
पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में।। १ ।।
चेत कर प्रीत करो सतसँग में।
गुरू फिर रँग दें नाम अरँग में।। २ ।।

१ - लूट, डाका।

धन संपत तेरे काम न आवे।
छोड़ चलो यह छिन में।। ३ ।।
आगे रैन अँधेरी भारी।
काज करो कुछ दिन में।। ४ ।।
यह देही फिर हाथ न आवे।
फिरो चौरासी बन में।। ५ ।।
गुरु सेवा कर गुरू रिझाओ।
आओ तुम इस ढँग में।। ६ ।।
गुरु बिन तेरा और न कोई।
धार बचन यह मन में।। ७ ।।
जक्त जाल में फँसो न भाई।
निस दिन रहो भजन में।। ८ ।।
साध गुरू का कहना मानो।
रहो उदास जगत में।। ९ ।।
छल बल छोड़ो और चतुराई।
क्यों तुम पड़ो कुगति में।। १० ।।
सुमिरन करो गुरू को सेवो।
चल रहो आज गगन में।। ११ ।।
कल की ख़बर काल फिर लेगा।
वहँ तुम जलो अगिन में।। १२ ।।

अबही समझ देर मत करियो।
ना जानूँ क्या होय इस पन[1] में।।१३ ।।
यों समझाय कहें राधास्वामी।
मानो एक बचन में।।१४ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

मौत से डरत रहो दिन रात।।टेक ।।
इक दिन भारी भीड़ पड़ेगी।
जम खूँदेंगे धर धर लात।। १ ।।
वा दिन की तुम याद बिसारी।
अब भोगन में रहो भुलात।। २ ।।
इक दिन काठी[2] बने तुम्हारी।
चार कहरवा[3] लादे जात।। ३ ।।
भाईबंद कुटुँब परिवारा।
सो सब पीछे भागे जात।। ४ ।।
आगे मरघट जाय उतारा।
तिरिया रोए बिखेरे लाट[4]।। ५ ।।
वहाँ जमपुर में नर्क निवासा।
यहाँ अग्नी में फूँके जात।। ६ ।।
दोनों दीन बिगाड़े अपने।
अब नहिं सुनता सतगुरु बात।। ७ ।।

१ - अवस्था,उमर। २ - जिस पर मुरदे को ले जाते हैं।
३ - काठी उठाने वाले लोग। ४ - बाल खोले हुए।

वा दिन बहु पछतावा होगा।
अब तुम करते अपनी घात।। ८ ।।
ज्वानी गई बृद्धता आई।
अब कै दिन का इन का साथ।। ९ ।।
चेत करो मानो यह कहना।
गुरु के चरन झुकाओ माथ।। १० ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
अब तुमको बहु बिधि समझात।। ११ ।।

।। शब्द सातवाँ।।

बँधे तुम गाढ़े बंधन आन।।टेक।।
पहिले बंधन पड़ा देह का।
दूसर तिरिया जान।। १ ।।
तीसर बंधन पुत्र बिचारो।
चौथा नाती मान।। २ ।।
नाती के कहिं नाती होवे।
फिर कहो कौन ठिकान।। ३ ।।
धन संपति और हाट हवेली[1]।
यह बंधन क्या करूँ बखान।। ४ ।।
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी।
बाँध लिया अब बहु बिधि तान।। ५ ।।

१ - मकान।

कैसे छूटन होय तुम्हारा।
गहरे खूँटे गड़े निदान।। ६ ।।
मरे बिना तुम छूटो नाहीं।
जीते जी तुम सुनो न कान।। ७ ।।
जगत लाज और कुल मरजादा।
यह बंधन सब ऊपर ठान।। ८ ।।
लीक पुरानी कभी न छोड़ो।
जो छोड़ो तो जग की हान।। ९ ।।
क्या क्या कहूँ बिपत मैं तुम्हरी।
भटको जोनी भूत मसान।। १० ।।
तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा।
क्योंकर पावो नाम निशान।। ११ ।।
बेड़ी तौक़[1] हथकड़ी बाँधे।
काल कोठरी कष्ट समान।। १२ ।।
काल दुष्ट तुम बहु बिधि बाँधा।
तुम ख़ुश होके रहो ग़लतान[2]।। १३ ।।
ऐसे मूरख दुख सुख जाना।
क्या कहूँ अजब सुजान।। १४ ।।
शरम करो कुछ लज्जा ठानो।
नहिं जमपुर का भोगो डान[3]।। १५ ।।

१ - गले का बंधन। २ - डूबे हुए, भूले हुए। ३ - दंड, दुःख।

राधास्वामी सरन गहो अब।
तौ कुछ पाओ उनसे दान।।१६ ।।

।। शब्द आठवाँ।।

चेत चल जगत से बौरे।
कपट तज गहो गुरू सरना।। १ ।।
फिरे ग़ाफ़िल तू मदमाता।
अंत सिर पीट कर मरना।। २ ।।
लगे नहिं हाथ कुछ तेरे।
कुटुँब के साथ क्यों पिलना[१]।। ३ ।।
चार दिन के सँगाती यह।
बटाऊ[२] फिर नहीं मिलना।। ४ ।।
रहो हुशियार जग ठग से।
बचा पूँजी कमर कसना।। ५ ।।
मुसाफ़िर हो गुरू सँग लो।
नाम शमशेर[३] कर गहना।। ६ ।।
सुरत को तान गगना में।
पकड़ धुन बान घट रहना।। ७ ।।
काल की घात से बच कर।
गहो राधास्वामी के चरना।। ८ ।।

* * * * *

१ - पचना। २ - मुसाफ़िर। ३ - तलवार।

।। शब्द नवाँ।।

तजो मन यह दुख सुख का धाम।
लगो तुम चढ़कर अब सतनाम।। १ ।।
दिना चार तन संग बसेरा।
फिर छूटे यह ग्राम।। २ ।।
धन दारा सुत नाती कहियन[1]।
यह नहिं आवें काम।। ३ ।।
स्वाँस दुधारा नितही जारी।
इक दिन ख़ाली चाम।। ४ ।।
मशक समान जान यह देही।
बहती आठों जाम।। ५ ।।
तू अचेत ग़ाफ़िल हो रहता।
सुने न मूल कलाम[2]।। ६ ।।
माया नारि पड़ी तेरे पीछे।
क्यों नहिं छोड़त काम।। ७ ।।
बिन गुरु दया छुटो नहिं या से।
भजो गुरू का नाम।। ८ ।।
गुरु का ध्यान धरो हिरदे में।
मन को राखो थाम।। ९ ।।

१ - कहावें। २ - शब्द।

वे दयाल तेरी दया बिचारें।
दम दम करें सहाम[१]।। १० ।।
छोड़ भोग क्यों रोग बिसावे[२]।
या में नहिं आराम।। ११ ।।
गुरु का कहना मान पियारे।
तौ पावे बिसराम।। १२ ।।
दुख तेरा सब दूर करेंगे।
देंगे अचल मुक़ाम।। १३ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
खोज करो निज नाम।। १४ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

देखो सब जग जात बहा।।टेक ।।
देख देख मैं गति या जग की।
बार बार यों बर्न कहा।। १ ।।
चारों जुग चौरासी भोगी।
अति दुख पाया नर्क रहा।। २ ।।
जन्म जन्म दुख पावत बीते।
इक छिन कहीं न चैन लहा।। ३ ।।
पाप पुन्य बस बिपता भोगी।
नहिं सतगुरु का चरन गहा।। ४ ।।

१ - सहायता। २ - ख़रीदना।

अब यह देह मिली किरपा से।
करो भक्ति जो कर्म दहा।। ५ ।।
अबकी चूक माफ़ नहिं होगी।
नाना बिधि के कष्ट सहा।। ६ ।।
ग़फ़लत[१] छोड़ भुलाओ जग को।
नाम अमल[२] अब घोट पिया।। ७ ।।
मन से डरो करो गुरु सेवा।
राधास्वामी भेद दिया।। ८ ।।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

कोइ मानो रे कहन हमारी।।टेक ।।
जो जो कहूँ सुनो चित देकर।
गौं[३] की कहूँ तुम्हारी।। १ ।।
जग के बीच बँधे तुम ऐसे।
जैसे सुवना[४] नलनी[५] धारी।। २ ।।
मरकट[६] सम तुम हुए अनाड़ी।
मुट्‌ठी दीन फँसा री।। ३ ।।
और मीना[७] जिव्हा रस माती[८]।
काँटा जिगर छिदा री।। ४ ।।
गज[९] सम मूरख हुए इस बन[१०] में।
झूठी हथनी देख बँधा री।। ५ ।।

१ - भूल। २ - नशा, अभ्यास। ३ - मतलब। ४ - तोता।
५ - पकड़ने की कल। ६ - बंदर। ७ - मछली।
८ - मस्त। ९ - हाथी। १० - संसार।

क्या क्या कहूँ काल अन्याई।
बहु बिधि तुम को फाँस लिया री।। ६ ।।
तुम अनजान मर्म नहिं जाना।
छल बल कर इन फाँस लिया री।। ७ ।।
छूटन की बिधि नेक न मानो।
क्योंकर छूटन होय तुम्हारी।। ८ ।।
सतगुरु संत हुए उपकारी।
उन का संग करो न सम्हारी।। ९ ।।
वह दयाल अस जुगत लखावें।
कर दें तुम छुटकारी।। १० ।।
पाँच तत्त गुन तीन ज़ेवरी[1]।
काटें पल पल बंधन भारी।। ११ ।।
उन की संगत करो भर्म तज।
पाओ तुम गति न्यारी।। १२ ।।
जक्त जाल सब धोखा जानो।
मन मूरख सँग कीन्ही यारी।। १३ ।।
इस का संग तजो तुम छिन छिन।
नहिं यह लेगा जान तुम्हारी।। १४ ।।
अपने घर से दूर पड़ोगे।
चौरासी के धक्के खा री।। १५ ।।

१ - रस्सी।

बड़ी कुगति में जाय पड़ोगे।
वहाँ से तुम को कौन निकारी।।१६ ।।
ता ते अबही कहना मानो।
राधास्वामी कहत बिचारी।।१७ ।।

।। शब्द बारहवाँ।।

अटक तू क्यों रहा जग में।
भटक में क्या मिले भाई।। १ ।।
खटक तू धार अब मन में।
खोज सतसंग में जाई।। २ ।।
बिरह की आग जब भड़के।
दूर कर जक्त की काई।। ३ ।।
लगा लो लगन सतगुरु से।
मिले फिर शब्द लौ लाई।। ४ ।।
छुटेगा जन्म और मरना।
अमर पद जाय तू पाई।। ५ ।।
भाग तेरा जगे सोता।
नाम और धाम मिल जाई।। ६ ।।
कहूँ क्या काल जग मारा।
जीव सब घेर भरमाई।। ७ ।।
नहीं कोइ मौत से डरता।
ख़ौफ़ जम का नहीं लाई।। ८ ।।

पड़े सब मोह की फाँसी।
लोभ ने मार धर खाई।। ९ ।।
चेत कहो होय अब कैसे।
गुरू के संग नहिं धाई।। १०।।
काम और क्रोध बिच बिच में।
जीव से भाड़[1] झोंकवाई।। ११ ।।
गुरू बिन कोई नहीं अपना।
जाल यह कौन तुड़वाई।।१२ ।।
कुटुँब परिवार मतलब का।
बिना धन पास नहिं आई।।१३ ।।
कहाँ लग कहूँ इस मन को।
उन्हीं से मास नुचवाई।।१४ ।।
गुरू और साध कहें बहु बिधि।
कहन उनकी न पतियाई।।१५ ।।
मेहर बिन क्या कोई माने।
कही राधास्वामी यह गाई।।१६ ।।

।। शब्द तेरहवाँ।।

मिली नर देह यह तुम को।
बनाओ काज कुछ अपना।। १ ।।

१ - भट्ठी।

पचो मत आय इस जग में।
जानियो रैन का सुपना।। २ ।।
देह और ग्रेह[1] सब झूठा।
भर्म में काहे को खपना।। ३ ।।
जीव सब लोभ में भूले।
काल से कोइ नहीं बचना।। ४ ।।
तृष्णा अग्नि जग जारा।
पड़ा सब जीव को तपना।। ५ ।।
नहीं कोइ राह बचने की।
जलें सब नर्क की अगिना।। ६ ।।
जलेंगे आग में निस दिन।
बहुर भोगें जनम मरना।। ७ ।।
भटकते वे फिरें खानी।
नहीं कुछ ठीक उन लगना।। ८ ।।
कहूँ क्या दुक्ख वह भोगें।
कहन में आ नहीं सकना।। ९ ।।
दया कर संत और सतगुरु।
बतावें नाम का जपना।।१० ।।
न माने जुक्ति यह उनकी।
सुरत और शब्द का गहना।। ११ ।।

१ - घर।

बिना सतगुरु बिना करनी।
छुटे नहिं खान का फिरना।।१२ ।।
कहाँ लग मैं कहूँ उनको।
कोई नहिं मानता कहना।।१३ ।।
हुए मनमुख फिरें दुख में।
बचन गुरु का नहीं माना।।१४ ।।
पुजावें आप को जग में।
गुरू की सेव नहिं करना।।१५ ।।
फ़िकर नहिं जीव का अपने।
पड़ेगा नर्क में फुकना।।१६ ।।
समझ का धार लो मन में।
कहें राधास्वामी निज बचना।।१७ ।।

।। शब्द चौदहवाँ।।

यहाँ तुम समझ सोच कर चलना।।टेक ।।
यह तो राह बड़ी अति टेढ़ी।
मन के साथ न पड़ना।। १ ।।
भौजल धार बहे अति गहरी।
बिन गुरु कैसे पार उतरना।। २ ।।
गुरु से प्रीत करो तुम ऐसी।
जस कामी कामिन सँग धरना।। ३ ।।

संग करो चेटक[1] चित राखो।
मन से गुरु के चरन पकड़ना।। ४ ।।
छल बल कपट छोड़ कर बरतो।
गुरु के बचन समझना।। ५ ।।
डरते रहो काल के भय से।
ख़बर नहीं कब मरना।। ६ ।।
स्वाँसो स्वाँस होश कर बौरे।
पल पल नाम सुमिरना।। ७ ।।
यहाँ की ग़फ़लत बहुत सतावे।
फिर आगे कुछ नहिं बन पड़ना।। ८ ।।
जो कुछ बने सो अभी बनाओ।
फिर का कुछ न भरोसा धरना।। ९ ।।
जग सुख की कुछ चाह न राखो।
दुख में इसके दुखी न रहना।। १० ।।
दुख की घड़ी ग़नीमत[2] जानो।
नाम गुरू का छिन छिन भजना।। ११ ।।
सुख में ग़ाफ़िल[3] रहत सदा नर।
मन तरंग में दम दम बहना।। १२ ।।
ता ते चेत करो सतसंगत।
दुख सुख नदिया पार उतरना।। १३ ।।

१ - खटक। २ - अच्छी, उत्तम। ३ - भूला हुआ।

अपना रूप लखो घट भीतर।
फिर आगे को सूरत भरना।।१४ ।।
राधास्वामी कहें बुझाई।
शब्द गुरू से जाकर मिलना।।१५ ।।

।। शब्द पंद्रहवाँ।।

मन रे क्यों गुमान अब करना।।टेक ।।
तन तो तेरा ख़ाक मिलेगा।
चौरासी जा पड़ना।। १ ।।
दीन ग़रीबी चित में धरना।
काम क्रोध से बचना।। २ ।।
प्रीत प्रतीत गुरू की करना।
नाम रसायन घट में जरना[1]।। ३ ।।
मन मलीन के कहे न चलना।
गुरु का बचन हिये बिच रखना।। ४ ।।
यह मतिमंद गहे नहिं सरना।
लोभ बढ़ाय उद्र को भरना।। ५ ।।
तुम मानो मत इसका कहना।
इसके संग जक्त बिच गिरना।। ६ ।।
इस मूरख को समझ पकड़ना।
गुरु के चरन कभी न बिसरना।। ७ ।।

१ - बनाना।

गुरु का रूप नैन में धरना।
सुरत शब्द से नभ पर चढ़ना।। ८ ।।
राधास्वामी नाम सुमिरना।
जो वह कहें चित्त में धरना।। ९ ।।

।। शब्द सोलहवाँ।।

जोड़ो री कोइ सुरत नाम से।।टेक ।।
यह तन धन कुछ काम न आवे।
पड़े लड़ाई जाम[1] से।। १ ।।
अब तो समय मिला अति सुन्दर।
सीतल हो बच घाम से।। २ ।।
सुमिरन कर सेवा कर सतगुरु।
मनहि हटाओ काम से।। ३ ।।
मन इन्द्री कुछ बस कर राखो।
पियो घूँट गुरु जाम[2] से।। ४ ।।
लगे ठिकाना मिले मुक़ामा।
छूटो मन के दाम[3] से।। ५ ।।
भजन करो छोड़ो सब आलस।
निकर चलो कलि ग्राम से।। ६ ।।
दम दम करो बेनती गुरु से।
वही निकारें तन[4] चाम से।। ७ ।।

१ - जमराज। २ - प्याला। ३ - जाल। ४ - शरीर, देह।

और उपाव न ऐसा कोई।
रटन करो सुबह शाम से।। ८ ।।
प्रीत लाय नित करो साध सँग।
हट रहो जग के ख़ासो आम से।। ९ ।।
राधास्वामी कहें सुनाई।
लगो जाय सत नाम से।।१० ।।

।। शब्द सत्रहवाँ।।

जक्त से चेतन किस बिधि होय।
मोह ने बाँध लिया अब मोहिं।। १ ।।
बेड़ियाँ भारी पड़ती जायँ।
फाँसियाँ करड़ी लागी आयँ।। २ ।।
जाल अब चौड़े बिछ गये आय।
चाट अब सुख की कुछ कुछ पाय।। ३ ।।
दुक्ख अब पीछे होगा आय।
ख़बर नहिं उसकी कौन बताय।। ४ ।।
पड़ेगी भारी इक दिन भीड़।
सहेगा नाना बिधि की पीड़।। ५ ।।
करेगा पछतावा जब बहुत।
अभी तो सुनता नहिं दिन खोत।। ६ ।।
याद नहिं लाता अपनी मौत।
रात दिन ग़फ़लत में पड़ा सोत।। ७ ।।

कहे में मन के चलता बहुत।
भरे है दिन भर जग का पोत[1]।। ८ ।।
रात को सोता खाट बिछाय।
होश नहिं कल को क्या हो जाय।। ९ ।।
काल ने मारा कर कर ज़ेर[2]।
कर्म ने खूँदा[3] धर धर पैर।।१० ।।
तमोगुन छाय गया घट माहिं।
ख़बर सब भूल गया यहँ आय।। ११ ।।
संत और सतगुरु रहे चिताय।
बचन उन मन में नहीं समाय।।१२ ।।
भजन और सुमिरन दिया बिसराय।
प्रीत भी उन चरनन नहिं लाय।।१३ ।।
कहो कस छूटे जम की घात।
भोग और सोग लगे दिन रात।।१४ ।।
गुरू बिन कौन छुड़ावे ताय।
हुआ यह क़ैदी बहु बिधि आय।।१५ ।।
बिना सतसंग और बिन नाम।
न पावे कबही अपना धाम।।१६ ।।
कही राधास्वामी यह गति गाय।
सरन ले संत की तू जाय।।१७ ।।

* * * * *

१ - कर, लगान। २ - नीचे। ३ - कुचला।

।। शब्द अठारहवाँ।।

कुमतिया बैरन पीछे पड़ी।
मैं कैसे हटाऊँ जान।। १ ।।
सतगुरु बचन न माने कबही।
उन सँग धरे गुमान[1]।। २ ।।
काम क्रोध की सनी बुद्धि से।
परखा चाहे उन का ज्ञान।। ३ ।।
सेवा करे न सरधा लावे।
उलट करावे उन से मान।। ४ ।।
अपनी गति हालत नहिं बूझे।
कैसे लगे ठिकान।। ५ ।।
लोभ मोह की सूखी नदियाँ।
तामें निस दिन रहे भरमान।। ६ ।।
संत मता कहो कैसे बूझे।
अपनी मति के दे परमान।। ७ ।।
तिन से संत मौन होय बैठे।
सो जिव करते अपनी हान।। ८ ।।
कुमति अधीन हुए सब प्रानी।
क्या क्या उन का करूँ बखान।। ९ ।।

१ - अभिमान।

जिन पर मेहर पड़े आ सरना।
वह पावें सतगुरु पहिचान।।१० ।।
अपनी उक्ति[1] चतुरता छोड़ें।
अपने को जानें अनजान।। ११ ।।
तब सतगुरु परसन्न होय कर।
देवें पता निशान।। १२ ।।
कुमति हटाय छुड़ावें पीछा।
सुरत लगावें शब्द धियान।। १३ ।।
बिना शब्द उद्धार न होगा।
सब संतन यह किया बखान।।१४ ।।
सोई गावें राधास्वामी।
जो कोइ माने सोई सुजान।।१५ ।।

।। शब्द उन्नीसवाँ।।

सोता मन कस जागे भाई।
सो उपाव मैं करूँ बखान।। १ ।।
तीरथ करे बर्त भी राखे।
बिद्या पढ़ के हुए सुजान।। २ ।।
जप तप संजम बहु बिधि धारे।
मौनी हुए निदान।। ३ ।।

१ - अक़्ल, ख़याल।

अस उपाव हम बहुतक कीन्हे।
तौभी यह मन जगा न आन।। ४ ।।
खोजत खोजत सतगुरु पाये।
उन यह जुक्ति कही परमान।। ५ ।।
सतसँग करो संत को सेवो।
तन मन करो क़ुरबान[१]।। ६ ।।
सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़।
चेत लगाओ अपना ध्यान।। ७ ।।
जागत जागत अब मन जागा।
झूठा लगा जहान।। ८ ।।
मन की मदद मिली सूरत को।
दोनों अपने महल समान।। ९ ।।
बिना शब्द यह मन नहिं जागे।
करो चाहे कोई अनेक बिधान[२]।। १० ।।
यही उपाव छाँट कर गाया।
और उपाव न कर परमान।। ११ ।।
बिरथा बैस[३] बितावें अपनी।
लगे न कभी ठिकान।। १२ ।।
संत बिना सब भटके डोलें।
बिना संत नहिं शब्द पिछान।। १३ ।।

१ - बलिदान। २ - बिधि। ३ - उमर।

शब्द शब्द मैं शब्दहि गाऊँ।
तू भी सुरत लगा दे तान।।१४ ।।
घर पावे चौरासी छूटे।
जन्म मरन की होवे हान।।१५ ।।
राधास्वामी कहें बुझाई।
बिना संत सब भटके खान।।१६ ।।

।। शब्द बीसवाँ।।

खोज री पिय को निज घट में।।टेक ।।
जो तुम पिय से मिलना चाहो।
तो भटको मत जग में।। १ ।।
तीरथ बर्त कर्म आचारा।
यह अटकावें मग[1] में।। २ ।।
जब लग सतगुरु मिलें न पूरे।
पड़े रहोगे अघ[2] में।। ३ ।।
नाम सुधा रस कभी न पाओ।
भरमो जोनी खग[3] में।। ४ ।।
पंडित क़ाज़ी भेष शेख़ सब।
अटक रहे डग डग में।। ५ ।।
इन के संग पिया नहिं मिलना।
पिया मिलै कोइ साध समग[4] में।। ६ ।।

१ - रास्ता। २ - पाप। ३ - पंछी। ४ - संग।

यह तो भूले बिषय बास में।
भर्म धसे इनकी रग रग में।। ७ ।।
बिना संत कोइ भेद न पावे।
वे तोहि कहें अलग में।। ८ ।।
जब लग संत मिलें नहिं तुम को।
खाय ठगौरी तू इन ठग में।। ९ ।।
राधास्वामी सरन गहो तो।
रलो जोति जगमग में।।१० ।।

।। शब्द इक्कीसवाँ।।

गुरु कहें पुकार पुकार।
समझ मन कर लो सुमिरनियाँ।। १ ।।
स्वाँसो स्वाँस घटे तेरी पूँजी।
चली जाय यह उमरनियाँ।। २ ।।
वक़्त मिला यह तख़्तनशीनी[1]।
छोड़ बान[2] अब घुरबिनियाँ[3]।। ३ ।।
यह मारग अब गुरू बतावें।
पकड़ गहो तुम उर[4] धुनियाँ।। ४ ।।
शब्द संग तुम सुरत लगाओ।
रहो नित्त गुरु मुजरनियाँ[5]।। ५ ।।

१ - राजगद्दी पर बैठने का। २ - आदत। ३ - मुरगी जो घूरा चुगती है। ४ - अंतरी। ५ - हाज़िर।

दया लेव तुम हर दम उन की।
सरन पड़ो उन चरननियाँ।। ६ ।।
वह तो भेद बतावें घट का।
पकड़ शब्द भौ तरननियाँ।। ७ ।।
लागी लगन बहुर नहिं सूझे।
सुरत अजर में जरननियाँ[1]।। ८ ।।
जिन जिन संग करा गुरु पूरे।
छुटा जन्म और मरननियाँ।। ९ ।।
जगत जार तज सार समझ तू।
मिटे चौरासी भरमनियाँ।।१० ।।
सतसँग करो प्रीत घट धारो।
देख रूप चढ़ दर्पनियाँ[2]।।११ ।।
गगन गिरा[3] परखो धुन बानी।
यही कमाई करननियाँ।।१२ ।।
पहुँचो जाय अधर में प्यारी।
गाँठ खुले तब तन मनियाँ।।१३ ।।
या जग में कोइ सुखी न देखो।
गहो गुरू के बचननियाँ।।१४ ।।
दुख के जाल फँसे सब मूरख।
तू क्यों उन सँग फँसननियाँ।।१५ ।।

१ - पकाना। २ - आईना। ३ - बानी।

मैं तू मोर तोर सब त्यागो।
गहो राधास्वामी सरननियाँ।।१६ ।।

।। बचन सोलहवाँ।।

चितावनी भाग तीसरा

उपदेश सतगुरु भक्ति का

।। शब्द पहिला।।

यह तन दुर्लभ तुम ने पाया।
कोटि जन्म भटका जब खाया।।१ ।।
अब या को बिरथा मत खोवो।
चेतो छिन छिन भक्ति कमावो।।२ ।।
भक्ति करो तो गुरु की करना।
मारग शब्द गुरू से लेना।।३ ।।
शब्द मारगी गुरू न होवे।
तो झूठी गुरुवाई लेवे।।४ ।।
गुरू सोई जो शब्द सनेही।
शब्द बिना दूसर नहिं सेई।।५ ।।
शब्द कहा मैं गगन शिखर का।
शब्द कहा मैं सुन्न शहर का।।६ ।।
शब्द कहा मैं भँवर डगर का।
शब्द कहा मैं अगम नगर का।।७ ।।

गुरु पहिचान ख़ूब मैं गाई।
धोखा या में कुछ न रहाई।। ८ ।।
शब्द कमावे सो गुरु पूरा।
उन चरनन की होजा धूरा।। ९ ।।
और पहिचान करो मत कोई।
लक्ष[१] अलक्ष[२] न देखो सोई।।१० ।।
शब्द भेद लेकर तुम उनसे।
शब्द कमावो तुम तन मन से।।११ ।।
अपने जीव की कुछ दया पालो।
चौरासी का फेर बचा लो।।१२ ।।
नहिं नर्कन में अति दुख पइहो।
अग्नि कुंड में छिन छिन दहिहो[३]।।१३ ।।
यह सुख चार दिनों का भाई।
फिर दुख सदा होय दुखदाई।।१४ ।।
बार बार मैं कहूँ चिताई।
दया तुम्हारी मोहिं सताई[४]।।१५ ।।
मेरे मन करुना अस आई।
चेतो तुम गुरु होयँ सहाई।।१६ ।।
बिन गुरु और न पूजो कोई।
दर्शन कर गुरु पद नित सेई।।१७ ।।

१ - गुन, लच्छन। २ - औगुन, कुलच्छन। ३ - जलना।
४ - दुख देती है।

गुरु पूजा में सब की पूजा।
जस समुद्र सब नदी समाजा।।१८ ।।
देवी देवा ईश महेशा।
सूरज शेष और गौर गनेशा।।१९ ।।
ब्रह्म और पारब्रह्म सतनामा।
तीन लोक और चौथा धामा।।२० ।।
गुरु सेवा में सब की सेवा।
रंचक[1] भर्म न मानो भेवा[2]।।२१ ।।
ता ते बार बार समझाऊँ।
गुरु की भक्ती छिन छिन गाऊँ।।२२ ।।
गुरुमुख होय गुरु आज्ञा बरते।
गुरु बरती इक छिन में तरते।।२३ ।।
गुरु महिमा मैं कहाँ लग गाऊँ।
गुरु समान कोइ और न पाऊँ।।२४ ।।
गुरु अस्तुत है सब मत माहीं।
गुरु से बेमुख ठौर[3] न पाहीं।।२५ ।।
भोग बिलास हुकूमत जग की।
धन और हाकिम के बस रहती।।२६ ।।
हाकिम सेवा तुम कस करते।
धन और मान बड़ाई लेते।।२७ ।।

१ - कुछ भी। २ - भेद। ३ - जगह।

आज्ञा उसकी अस सिर धरते।
खान पान निद्रा भी तजते।।२८ ।।
सो धन जोड़ किया क्या भाई।
जक्त लाज में दिया उड़ाई।।२९ ।।
सो जग की गति पहिले भाखी।
चार दिना फिर है नहिं बाक़ी।।३० ।।
सो धन कारण हाकिम सेवा।
ऐसी करते क्या कहुँ भेवा[1]।।३१ ।।
गुरु सेवा जो सदा सहाई।
ता को ऐसी पीठ दिखाई।।३२ ।।
दिन नहिं पक्ष मास नहिं बरसा।
कभी न दर्शन को मन तरसा।।३३ ।।
कहो कैसे तुम्हरा उद्धारा।
नर्क निवास दुक्ख चौधारा।।३४ ।।
उस दुख में कहो कौन सहाई।
गुरु से प्रीत न करी बनाई।।३५ ।।
जो इसकी परतीत न लाओ।
तौ मन अपना यों समझाओ।।३६ ।।
रोग दुक्ख नित प्रती सताई।
मौत पियादे हैं यह भाई।।३७ ।।

१ - भेद।

मृत्यु होन में नहिं कुछ संसा।
वह तो करे सकल जिव हिंसा।।३८ ।।
यह हिंसा तुम पर भी आवे।
इक दिन काल सीस पर धावे।।३९ ।।
उस दिन का कुछ करो उपाई।
धन हाकिम कुछ काम न आई।।४० ।।
पर जो समझवार तुम होते।
तो धन से कुछ कारज लेते।।४१ ।।
कारज लेना यह है भाई।
गुरु सेवा में ख़र्च कराई।।४२ ।।
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का।
उन पै धन है भक्ति नाम का।।४३ ।।
पर तेरा उपकार करावें।
भूखे प्यासे को दिलवावें।।४४ ।।
उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे।
जो उनको परसन्न करावे।।४५ ।।
उनका ख़ुश होना है भारी।
सत्तपुरुष निज किरपा धारी।।४६ ।।
गुरु परसन्न होयँ जा ऊपर।
वही जीव है सब के ऊपर।।४७ ।।

गुरु राज़ी तो करता राज़ी।
कर्म काल की चले न बाज़ी।।४८ ।।
गुरु की आन[1] सभी मिल मानें।
सुकदेव नारद ब्यास बखानें।।४९ ।।
ता ते गुरु को लेव रिझाई।
औरन रीझे कुछ न भलाई।।५० ।।
गुरु परसन्न और सब रूठे।
तौ भी उसका रोम न टूटे।।५१ ।।
औरन को परसन्न जो करता।
गुरु से द्रोह घात जो रखता।।५२ ।।
गुरु की निन्दा से नहिं डरता।
गुरु को मानुष रूप समझता।।५३ ।।
सो नरकी जानो अपघाती[2]।
उस सँग दूत करें उतपाती।।५४ ।।
या से समझो बूझो भाई।
गुरु को परसन करो बनाई।।५५ ।।
कुल कुटुंब कुछ काम न आई।
और बिरादरी करे न सहाई।।५६ ।।
यह तो चार दिना के संगी।
इन निज स्वारथ में बुधि रंगी।।५७ ।।

१ - पक्ष। २ - अपने जीव का घात करने वाला।

लज्जा डर इन का मत करो।
गुरु भक्ती में अब चित धरो।।५८ ।।
गुरु सहायता य्हाँ व्हाँ करें।
उन से करता भी कुछ डरे।।५९ ।।
कुल कुटुंब से कुछ नहिं सरे।
इन के संग नर्क में पड़े।।६० ।।
कार्य मात्र बरतो इन माहीं।
बहुत मोह में बहु दुख पाईं।।६१ ।।
ता ते सतसँग सतगुरु सेवो।
नाम पदारथ दम दम लेवो।।६२ ।।
गुरु समान और नाम समाना।
तीसर सतसँग और न जाना।।६३ ।।
इन से सब कारज होयँ पूरे।
कर्म काट पहुँचो घर मूरे[1]।।६४ ।।
यह कहना मेरा अब मानो।
नहीं अंत को पड़े पछतानो।।६५ ।।
धन और मान काम नहिं आवे।
हुकम हाकिमी सभी नसावे।।६६ ।।
ता ते कुछ भक्ती कर लीजे।
यह भी सुफल कमाई कीजे।।६७ ।।

* * * * *

१ - मूल।

।। शब्द दूसरा।।

भेद आरती सुन सखि मोसे।
प्रगट बनाय कहूँ अब तो से।। १ ।।
सरधा थाल हाथ लो पहिले।
सम[1] दम[2] जोत प्रेम घी मेले।। २ ।।
जक्त भोग से कर बैरागा।
काम क्रोध तब छिन में त्यागा।। ३ ।।
सुरत शब्द का गावो गीत।
गुरु चरनन में जोड़ो चीत।। ४ ।।
दया करें तब राधास्वामी।
इक दिन देवें पद निज नामी।। ५ ।।
दृष्टि जोड़कर आरत फेरो।
तन मन अपने दोनों घेरो।। ६ ।।
पूरन पद को करो पयाना[3]।
सत्त नाम तब सुरत समाना।। ७ ।।
आरत गाई प्रेम भक्ति से।
मन को मोड़ा शब्द जुक्ति से।। ८ ।।

।। शब्द तीसरा।।

सोचत कहा सखि करले आरत।
फिर नहिं ऐसा समय परापत।। १ ।।

१ - मन का रोकना। २ - इन्द्रियों का रोकना। ३ - चलने की तैयारी।

कहा करूँ सजनी मैं बिन बल।
तन मन मेरा है अति चंचल।। २ ।।
कर धीरज मैं करूँ उपाई।
सतसँग कर स्वामी ढिंग[१] जाई।। ३ ।।
वे दयाल जब किरपा धारें।
मन चंचल को छिन में मारें।। ४ ।।
शब्द थाल देवें स्रुत हाथा।
प्रेम जोत जगवावें साथा।। ५ ।।
जब आरत तू करे बनाई।
तबही मुक्ति पदारथ पाई।। ६ ।।
यह निश्चय कर साँची जानो।
तुम स्वामी को समरथ मानो।। ७ ।।
भोग लगाय लेव परशादी।
चरनामृत ले मन को साधी।। ८ ।।
राधास्वामी जप निज नामा।
सत्तलोक पावे तब धामा।। ९ ।।

* * * * *

१ - निकट।

।। बचन सत्रहवाँ।।

चितावनी भेषों को

भाग चौथा

।। शब्द पहिला।।

तुम साध कहावत कैसे।
मैं पूछूँ तुम से ऐसे।। १ ।।
मान न छोड़ो क्रोध न छोड़ो।
कुटिल बचन नहिं सहते।। २ ।।
कोमल चित्त न कोमल बोली।
दया भाव नहिं लेसे[1]।। ३ ।।
आप पुजावत काहु न पूजत।
माँग माँग धन जोड़त पैसे।। ४ ।।
काम न छूटा लोभ न छूटा।
मोह ईर्षा डारत पीसे।। ५ ।।
भजन भक्ति अभ्यास न करते।
कभी न छूटो तुम इस जम से।। ६ ।।
घर छोड़ा उद्यम पुनि छोड़ा।
मेहनत कोई न करते।। ७ ।।
देश बिदेश फिरो झख मारत।
क़फ़न[2] पहिन क्यों लाज लगाते।। ८ ।।

१ - ज़रा सा भी। २ - कफ़नी या साधुओं का कपड़ा।

दंभ[1] कपट छल हिरदे बसता।
गिरही[2] को आचार दिखाते।। ९ ।।
चौके से हम रोटी खावें।
रोटी पूरी भेद समझते।।१० ।।
बुद्धि बिचार न गुरु मिला पूरा।
गिरही की भय लज्जा करते।।११ ।।
साध चरन अठशठ[3] से उत्तम।
भूमि पवित्र जहाँ पग धरते।।१२ ।।
तुम तो कर्म भर्म में भटके।
साध नाम अपना क्यों धरते।।१३ ।।
भेष बनाय जगत को ठगते।
काल ठगौरी[4] डाली तुम पै।।१४ ।।
अब कुछ समझ करो सतसंगत।
डरो ज़रा नर्कन के दुख से।।१५ ।।
बिरह भाव बैराग सम्हालो।
भक्ति करो और भागो जग से।।१६ ।।
मन को मारो इंद्री बाँधो।
सुरत लगाओ शब्द अधर से।।१७ ।।
तब चित कोमल बुद्धी निरमल।
आप होय छूटो मन ठग से।।१८ ।।

१ - फ़रेब। २ - गृहस्थी। ३ - तीरथ। ४ - ठगाई या फ़रेब।

अब क्या कहूँ कहा मैं बहुतक।
अधिकारी माने इक तुक[1] से।।१९ ।।
जो निलज्ज कपटी जग मारे।
वह क्या जानें भूत पशू से।।२० ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
मानेंगे कोइ हंस बचन से।।२१ ।।

।। शब्द दूसरा।।

शब्द की करी न कोई कमाई।
फिर मर्म कहाँ से पाई।। १ ।।
यह शब्द अधर से आता।
तू सुन सुन कर क्या गाता।। २ ।।
अंतर में सुरत लगाता।
तौ भेद अधर का पाता।। ३ ।।
यह कहना सभी भुलाता।
बिन शब्द न और सुहाता।। ४ ।।
तू शब्द न दृढ़ कर गहता।
ता ते मन छिन छिन बहता।। ५ ।।
जो शब्द हाथ तेरे आता।
तो होता मन रस माता[2]।। ६ ।।

१ - कड़ी, बचन। २ - मतवाला।

बिन शब्द न और कमाता।
इच्छा सब दूर बहाता।। ७ ।।
कोइ महिमा शब्द सुनाता।
तू उस से प्रेम बढ़ाता।। ८ ।।
तैं क़दर शब्द नहिं जानी।
तेरी बातें झूठ कहानी।। ९ ।।
जो शब्द का रसिया होता।
तो मान प्रतिष्ठा खोता।।१० ।।
तेरी दशा और ही होती।
तेरी सुरत न कबही बहती।।११ ।।
अब बात बना तू बहुती।
पर शब्द कमाई न होती।।१२ ।।
जिन शब्द कमाया भाई।
उन सुरत अगम रस पाई।।१३ ।।
सब जक्त लगा उन फीका।
इक शब्द सभी का टीका[1]।।१४ ।।
राधास्वामी गायें यह ठीका।
जिन मानी तिन रस चीखा।।१५ ।।

* * * * *

१ - सिर यानी सबसे बड़ा।

।। बचन अट्ठारहवाँ।।

उपदेश सतगुरु भक्ति का

।। शब्द पहिला।।

गुरु करो खोज कर भाई।
बिन गुरु कोइ राह न पाई।। १ ।।
जग डूबा भौजल धारा।
कोइ मिला न काढ़नहारा[1]।। २ ।।
जग पंडित भेष बिचारे।
क्या जोगी ज्ञानी हारे।। ३ ।।
संतन से प्रीत न धारी।
क्यों उतरें भौजल पारी।। ४ ।।
तप तीरथ बर्त पचे रे।
पढ़ बिद्या मान भरे रे।। ५ ।।
भक्ति रस नेक न पाया।
भक्तों की सरन न आया।। ६ ।।
भक्ति का भेद न जाना।
गुरु को सतपुरुष न माना।। ७ ।।
गुरु सब को पार लगावें।
जो जो उन चरन धियावें।। ८ ।।

१ - निकालनेवाला।

गुरु से तू बेमुख फिरता।
मन के नित सन्मुख रहता।। ९ ।।
करमों में पचता खपता।
नर देही बाद[१] गँवाता।। १० ।।
अब चेतो समझो भाई।
कर प्रीत गुरू सँग आई।। ११ ।।
कह कर राधास्वामी गाई।
करनी कर मिले बड़ाई।। १२ ।।

।। शब्द दूसरा।।

गुरु की कर हर दम पूजा।
गुरु समान कोइ देव न दूजा।। १ ।।
गुरु चरन सेव नित करिये।
तन मन गुरु आगे धरिये।। २ ।।
गुरु दरस करो आँखन से।
गुरु बचन सुनो सरवन से।। ३ ।।
गुरु के बल मन को मारो।
गुरु के बल काल सँहारो।। ४ ।।
गुरु ब्रह्म रूप धर आये।
गुरु पारब्रह्म गति गाये।। ५ ।।

१ - निष्फल।

गुरु सत्तनाम पद खोला।
गुरु अलख अगम को तोला।। ६ ।।
गुरु रूप धरा राधास्वामी।
गुरु से बड़ नहिं अनामी।। ७ ।।

।। शब्द तीसरा।।

गुरु ध्यान धरो तुम मन में।
गुरु नाम सुमिर छिन छिन में।। १ ।।
गुरु ही गुरु गावो भाई।
गुरु ही फिर होयँ सहाई।। २ ।।
जितने पद ऊँचे नीचे।
गुरु बिन कोइ नाहिं पहुँचे।। ३ ।।
गुरु ही घट भेद लखाया।
गुरु ही सुन शिखर चढ़ाया।। ४ ।।
महासुन्न भी गुरु दिखलाई।
गुरु भँवरगुफा दरसाई।। ५ ।।
गुरु सत्तलोक पहुँचाया।
गुरु अलख अगम परसाया।। ६ ।।
गुरु ही सब भेद बखाना।
गुरु से राधास्वामी जाना।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द चौथा।।

गुरु चरन पकड़ दृढ़ भाई।
गुरु का सँग करो बनाई।। १ ।।
गुरु बचन करो आधारा।
गुरु दरस निहारो सारा।। २ ।।
गुरु की गति अगम अपारा।
गुरु अस्तुति करो सँवारा।। ३ ।।
गुरु राखो हिरदे माहीं।
तो मिटे काल परछाहीं।। ४ ।।
भोगों की आसा त्यागो।
मन्सा तज जग से भागो।। ५ ।।
आसा गुरु शब्द लगाओ।
मन्सा गुरु पद में लाओ।। ६ ।।
आसा और मन्सा मोड़ी।
मन इन्द्री गुरु में जोड़ी।। ७ ।।
दिन रात रहे गुरु ध्याना।
गुरु बिन कोइ और न जाना।। ८ ।।
गुरु स्वाँस गिरास न बिसरे।
तू पल पल गा गुरु जस[1] रे।। ९ ।।

१ - महिमा।

गुरु हैं हितकारी तेरे।
गुरु बिन कोइ मित्र न है रे।।१० ।।
गुरु फंद छुड़ावें जम के।
गुरु मर्म लखावें सम के।।११ ।।
भौजल से पार उतारें।
छिन छिन में तुझे सँवारें।।१२ ।।
ज्यों निज अंडा सेवे कच्छा।
त्यों गुरु राखें तेरी पच्छा।।१३ ।।
गुरु सम और नहीं को रक्षक।
कुल कुटुंब सब जानो तक्षक[१]।।१४ ।।
ता ते गुरु को कभी न छोड़ो।
कनक कामिनी से मन मोड़ो।।१५ ।।
गुरु की भक्ति सदा सुखदाई।
गुरु बिन मन बुधि भी दुखदाई।।१६ ।।
गुरु बिस्वास चित्त में धरो।
गुरु परशाद जक्त से तरो।।१७ ।।
मान मोह मद गुरु सब हरें।
काम क्रोध भी तुझ से डरें।।१८ ।।
लोभ लहर सब देयँ निकारी।
माया ममता बाज़ी हारी।।१९ ।।

१ - साँप।

तुझ से जीत सके नहिं कोई।
गुरु का बल जो मन में होई।।२० ।।
गुरु से पावे नाम रसायन।
घट से भागे तृष्णा डायन।।२१ ।।
गुरु चरनामृत गुरु परशादी।
प्रीत सहित ले मिटे उपाधी।।२२ ।।
गुरु पै तन मन दोनों वारो।
हिरदे में गुरु रूप निहारो।।२३ ।।
गुरु हैं दाता गुरु हैं दानी।
गुरु आराधो[1] छिन छिन प्रानी।।२४ ।।
सत्तपुरुष सतनाम गुरू हैं।
अलख रूप और अगम गुरू हैं।।२५ ।।
राधास्वामी गुरु का नाम।
निज पद पाय करो बिसराम।।२६ ।।
गुरु सब बिधि हैं अंतरजामी।
गावो ध्यावो राधास्वामी।।२७ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

सतगुरु का नाम पुकारो।
सतगुरु को हियरे धारो।। १ ।।

१ - पूजा करो।

सतगुरु का करो भरोसा।
फिर करो न कुछ अफ़सोसा।। २ ।।
सतगुरु तोहि छिन छिन पोसें।
हँगता[1] तेरी सब बिधि खोसें[2]।। ३ ।।
तू कर उन चरनन होशें।
सतगुरु से मत कर रोसें[3]।। ४ ।।
सतगुरु गति अब सुन मो से।
कहि जात न रंचक[4] मुँह से।। ५ ।।
दसवें में खैंचें नौ से।
फिर एक करें तोहि दो से।। ६ ।।
शब्दा रस तोहि पिलावें।
जमपुर से फेर बचावें।। ७ ।।
घर अगम तोहि दरसावें।
मारग सब तोहि लखावें।। ८ ।।
जो संगत उनकी करते।
सो जग से कभी न डरते।। ९ ।।
जो बेमुख गुरु से फिरते।
सो भौसागर में गिरते।।१० ।।
चौरासी चक्कर खावें।
फिर जन्म जन्म दुख पावें।।११ ।।

१ - अहंकार। २ - दूर करें। ३ - रूठना। ४ - थोड़ी।

तुम सोचो अपने मन में।
कोइ नाहिं गुरू सम जग में।।१२ ।।
जिन जिन गुरु भक्ती धारी।
सो पहुँचे निज दरबारी।।१३ ।।
गुरु भक्ति न जिन को प्यारी।
तिन जीती बाज़ी हारी।।१४ ।।
गुरु चरनन आशिक़ होना।
यह बात बड़ी क्या कहना।।१५ ।।
गुरु लगें जिसे अति प्यारे।
तिन कुल कुटुंब सब तारे।।१६ ।।
धन पिता मात उन जन के।
जिन भक्ति करी कुल तज के।।१७ ।।
जिन सही मलामत[1] जग की।
तिन मिली रास[2] सुख घर की।।१८ ।।
जो कुल लाज जक्त से डरे।
गुरु भक्ती से वह पुनि गिरे।।१९ ।।
सूरा रन से कभी न टरे।
सती सदा मुरदे सँग जरे।।२० ।।
रण छोड़े कायर कहलाय।
सती फिरे भंगी घर जाय।।२१ ।।

१ - निन्दा। २ - भंडार, ढेरी।

पपिहा अपना पन नहिं त्यागे।
जले पतंगा जोती आगे।।२२ ।।
मछली को जैसे जल धारा।
गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा।।२३ ।।
जिन पर बख़्शिश गुरु की होई।
गुरुमुख ऐसा बिरला कोई।।२४ ।।
राधास्वामी कही बनाय।
सेवक को गुरु दिया जगाय।।२५ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

सतगुरु कहें करो तुम सोई।
मन के कहे चलो मत कोई।। १ ।।
यह भौ में ग़ोते दिलवावे।
सतगुरु से बेमुख करवावे।। २ ।।
काल चक्र में डाल घुमावे।
मोह जाल में बहुत फँसावे।। ३ ।।
मित्र न जानो बैरी पूरा।
गुरु भक्ती से डारे दूरा।। ४ ।।
दारा सुत सम्पति परिवारा।
डारे काम क्रोध की धारा।। ५ ।।
इन्द्री भोग बास भरमावे।
भक्ति बिबेक नाश करवावे।। ६ ।।

सतगुरु प्रीतम मिलें न जब तक।
कभी न छूटें मन के कौतुक[१]।। ७ ।।
छल बल मन के कहँ लग बरनूँ।
ऋषी मुनी कोइ जाने न मरमूँ।। ८ ।।
ता ते सतगुरु खोजो निज के।
बिन सतगुरु कोइ चले न बच के।। ९ ।।
सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई।
मन मलीन को धोवें वोही।।१० ।।
मेरा भाग उदय हुआ भारी।
सतगुरु की मैं हुई अति प्यारी।।११ ।।
जक्त जीव कहा जानें महिमा।
बेद कतेब न जानें मरमा।।१२ ।।
ज्ञानी जोगी सब थक हारे।
सतगुरु महिमा कोइ न बिचारे।।१३ ।।
ता ते सतगुरु सरन पुकारूँ।
आरत उनकी नित प्रति धारूँ।।१४ ।।
आरत करूँ प्रेम से जबही।
कुल परिवार तरे मेरा तबही।।१५ ।।
आरत बिधि अब करूँ सिंगारा।
राधास्वामी मेरे हुए दयारा।।१६ ।।

१ - खेल।

राधास्वामी परम दयाल।
कर आरत उन हुआ निहाल।।१७ ।।

।। शब्द सातवाँ।।

अरे मन रँग जा सतगुरु प्रीत।
होय मत और किसी का मीत।। १ ।।
यही अब धारो हित कर चीत।
बिना गुरु जानो सभी अनीत[१]।। २ ।।
गुरू से लेना जा उन सीत[२]।
तजो सब कलमल रहो अतीत[३]।। ३ ।।
मार लो मन को यही पलीत[४]।
सुरत में धरो शब्द की रीत।। ४ ।।
चढ़ो तुम नभ में यह जग जीत।
गहो अब संतन की यह नीत[५]।। ५ ।।
गुरू का नाम सम्हारो चीत।
लगाओ छिन छिन उन से प्रीत।। ६ ।।
गायें राधास्वामी यह निज गीत।
तजो सब छलबल ममता तीत[६]।। ७ ।।

* * * * *

१ - इन्साफ़ से रहित। २ - परशादी। ३ - निर्माया। ४ - मैला, मलीन।
५ - क़ानून, नियम। ६ - माया।

।। शब्द आठवाँ।।

गुरू की मौज रहो तुम धार।
गुरू की रज़ा[1] सम्हालो यार।। १ ।।
गुरू जो करें सो हित कर जान।
गुरू जो कहें सो चित धर मान।। २ ।।
शुकर[2] की करना समझ बिचार।
सुक्ख दुख देंगे हिकमत धार।। ३ ।।
ताड़ और मार करें सोइ प्यार।
भोग सब इंद्री रोग निहार।। ४ ।।
कहूँ क्या दम दम शुकरगुज़ार।
बिना उन और न करनेहार।। ५ ।।
दुखी चित से न हो दुख लार।
सुखी होना नहीं सुख जार।। ६ ।।
बिसारो मत उन्हें हर बार।
दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार।। ७ ।।
गुरू और शब्द ये दोउ मीत।
नहीं कोइ और इन धर चीत।। ८ ।।
यही सतपुरुष यही करतार।
लगावें तोहि इक दिन पार।। ९ ।।

१ - प्रसन्नता। २ - धन्यवाद।

बिना उन कोइ नहीं संसार।
देव मन सूरत उन पर वार। १० ।।
करें वह नित्त तेरी सार।
तेरे तन मन के हैं रखवार।। ११ ।।
शुकर कर राख हिरदे धार।
मिटावें दुक्ख सबही झाड़[1]।। १२ ।।
करें क्या मन तेरा नाकार।
नहीं तू छोड़ता बिष धार।। १३ ।।
भोग में गिरे बारम्बार।
न माने कहन उन की सार।। १४ ।।
इसी से मिले तुझ को दंड।
नहीं तू मानता मति मंद।। १५ ।।
सहो अब पड़े जैसी आय।
करो फ़र्याद गुरु से जाय।। १६ ।।
पकड़ फिर उन्हीं को तू धाय।
करेंगे वोही तेरी सहाय।। १७ ।।
बिना उन और नहीं दरबार।
रहो उन चरन में हुशियार।। १८ ।।
गुनह[2] तुम किये दिन और रात।
गुरू की कुछ न मानी बात।। १९ ।।

१ - सब। २ - पाप।

इसी से भोगते दुख घात[1]।
बचावेंगे वही फिर तात।।२० ।।
रहो राधास्वामी के तुम साथ।
लगे फिर शब्द अगम तुम हाथ।। २१ ।।

।। शब्द नवाँ।।

आज सखि काज करो कुछ अपना।
गुरु दरस तको छोड़ो जग सुपना।। १ ।।
नहिं पछितैहो सिर धुन रोइहो।
जम की नगरिया अनेक दुख सहिहो।। २ ।।
मानो बचन सुनो धर कान।
सुरत लगाय सुनो धुन तान।। ३ ।।
नहिं मर मर जन्मो चारों खान।
मान मान अब मेरी कही मान।। ४ ।।
गुरु के चरन का कर तू ध्यान।
शान[2] गुमान छोड़ अभिमान।। ५ ।।
गुरु बिन तेरा कौन सहाई।
नाम बिना को पार लगाई।। ६ ।।
आज काज कर गुरु सँग भाज।
सूना पड़ा तेरा तख़्त और ताज।। ७ ।।

१ - चोट, बिना मालूम मार। २ - शेख़ी, अकड़।

शब्द पिछान सुरत निज साज।
छोड़ जक्त और कुल की लाज।। ८ ।।
मन और सुरत गुरू सँग माँज।
नहिं फिर खुलिहै तेरा पाज[1]।। ९ ।।
कूड़ फटक ले गुरु का छाज[2]।
भोग बिलास छोड़ यह खाज[3]।।१० ।।
राधास्वामी कही बनाई।
जो नहिं मानो भुक्तो भाई।।११ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

गुरु दरियाव चलो स्रुत सजनी।
मन की लहर सम्हार।। १ ।।
चित से चेत खेत को जीतो।
यह औसर नहिं बारम्बार।। २ ।।
तेरा भाग बढ़ा गुरु किरपा।
न्हाओ अमृत धार।। ३ ।।
मोती चुनो हंस गति धारो।
चढ़ो अंड के पार[4]।। ४ ।।
खंड खंड ब्रह्मंड पसारा।
निरखो नैन निहार।। ५ ।।

१ - क़लई। २ - सूप। ३ - खुजली का रोग। ४ - सहसदल कँवल।

कँवल पार दल द्वार खोलकर।
पहुँची सुन्न मँझार।। ६ ।।
दीपक हाथ चली घर अपने।
मेटत घट अँधियार।। ७ ।।
धुन धधकार आदि की आई।
पकड़ी ज्यों मक[1] तार।। ८ ।।
समुँद पार सेता पद न्यारी।
सुनत भँवर गुंजार[2]।। ९ ।।
सुन्न शब्द सत शब्द अधारी।
पाया गुरु दरबार।। १० ।।
सतगुरु प्रेम मगन लौ लाई।
बिसरी सब संसार।। ११ ।।
सार शब्द जहँ तेज अनामी।
नाम रूप से न्यार।। १२ ।।
संत धाम निज अलख अगम पर।
स्रुत पाया सिंगार।। १३ ।।
राधास्वामी अचल मुक़ामी।
मैं उनके बलिहार।। १४ ।।
यही आरती करूँ गुरू की।
धसी वार से पार।। १५ ।।

१ - मकड़ी। २ - शब्द, आवाज़।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

नैन कँवल गुरु ताक।
अरे मन भँवरा।। १ ।।
तू निर्मल सीतल होय।
सुन अनहद घोरा[1]।। २ ।।
तेरा भाग बढ़ेगा भाई।
कर घट में दौरा।। ३ ।।
त्रिकुटी में मेघा गरजे।
तू होजा मोरा।। ४ ।।
स्रुत तोड़ा नभ का द्वारा।
वहाँ करती शोरा।। ५ ।।
स्रुत सेत पदम पर आई।
गया काल का ज़ोरा।। ६ ।।
राधास्वामी रूप दिखाया।
मन सूरत मोड़ा।। ७ ।।

।। शब्द बारहवाँ।।

सतसँग करत बहुत दिन बीते।
अब तो छोड़ पुरानी बान।। १ ।।
कब लग करो कुटिलता गुरु से।
अब तो गुरु को लो पहिचान।। २ ।।

१ - आवाज़।

गुरु को तुम मानुष मत जानो।
वे हैं सत्तपुरुष की जान।। ३ ।।
जैसे तैसे मन समझावो।
धर परतीत करो उन ध्यान।। ४ ।।
दया मेहर से बचन सुनावें।
वे हैं पूरन पुरुष अनाम।। ५ ।।
धरी देह मानुष की गुरु ने।
ज्यों त्यों तेरा करें कल्यान।। ६ ।।
सेवा कर पूजा कर उन की।
उनहीं को गुरु नानक जान।। ७ ।।
वही कबीर वही सतनामा।
सब संतन को वहीं पिछान।। ८ ।।
तेरा काज उन्हीं से होगा।
मत भटके तू तज अभिमान।। ९ ।।
चूके मत औसर अब पाया।
बढ़कर इन से कोइ न मिलान।। १० ।।
जो अब के तू गुरु से चूका।
तौ भरमेगा चारों खान।। ११ ।।
फिर ऐसे गुरु मिलें न कबही।
मान मान तू अबही मान।। १२ ।।

पढ़ पढ़ पोथी गा गा साखी।
क्यों मन में तू धरता मान।।१३ ।।
इसी मान ने ख़्वार[1] किया है।
यही मान अब करता हान।।१४ ।।
ता ते प्यारे कहूँ बुझाई।
यह इस्तिग़ना[2] भली न जान।।१५ ।।
जल्दी करो कपट को छोड़ो।
सरधा भाव बढ़ावो आन।।१६ ।।
इतने पर मन कहा न माने।
तौ फिर अपनी तूही जान।।१७ ।।
सिर पर तेरे हुकम काल का।
ता ते मन तेरा नहिं मान।।१८ ।।
लगा रहेगा संग में गुरु के।
सहज सहज शायद मन मान।।१९ ।।
एक बात जानी हम भाई।
है तू बढ़का बेईमान।।२० ।।
राधास्वामी कहें बुझाई।
ऐसे जीव होयँ हैरान।।२१ ।।

* * * * *

१ - ख़राब। २ - बेपरवाही।

।। बचन उन्नीसवाँ।।

उपदेश गुरू और शब्द अथवा

नाम भक्ति का

।। शब्द पहिला।।

चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूँ। १ ।।
गुरु तो पूरा ढूँढ़ तेरे भले की कहूँ।।२ ।।
शब्द रता गुरु देख तेरे भले की कहूँ।।३ ।।
तिस गुरु सेवा धार तेरे भले की कहूँ।।४ ।।
गुरु चरनामृत पीव तेरे भले की कहूँ।।५ ।।
गुरु परशादी खाव तेरे भले की कहूँ।।६ ।।
गुरु आरत करले तेरे भले की कहूँ।।७ ।।
तन मन भेंट चढ़ाव तेरे भले की कहूँ।।८ ।।
बचन गुरु के मान तेरे भले की कहूँ।। ९ ।।
गुरु को कर परसन्न तेरे भले की कहूँ।।१० ।।
नित्त भजन कर नेम तेरे भले की कहूँ।।११ ।।
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूँ।।१२ ।।
दुक्ख न दे तू काय तेरे भले की कहूँ।।१३ ।।
बचन तान मत मार तेरे भले की कहूँ।।१४ ।।
कड़ुवा तू मत बोल तेरे भले की कहूँ।।१५ ।।
सबको सुख पहुँचाव तेरे भले की कहूँ।।१६ ।।
नाम अमी रस पीव तेरे भले की कहूँ।।१७ ।।

सील छिमा चित राख तेरे भले की कहूँ।।१८ ।।
संतोष बिबेक बिचार तेरे भले की कहूँ।।१९ ।।
काम क्रोध को त्याग तेरे भले की कहूँ।।२० ।।
लोभ मोह को टार तेरे भले की कहूँ।।२१ ।।
दीन ग़रीबी धार तेरे भले की कहूँ।।२२ ।।
संतों से कर प्रीत तेरे भले की कहूँ।।२३ ।।
भोजन बहुत न खाव तेरे भले की कहूँ।।२४ ।।
सतसँग में तू जाग तेरे भले की कहूँ।।२५ ।।
मान बड़ाई छोड़ तेरे भले की कहूँ।।२६ ।।
भोग बासना जार तेरे भले की कहूँ।।२७ ।।
सम दम हिरदे धार तेरे भले की कहूँ।।२८ ।।
बैराग भक्ति ना छोड़ तेरे भले की कहूँ।।२९ ।।
गुरु स्वरूप धर ध्यान तेरे भले की कहूँ।।३० ।।
गुरु ही का जप नाम तेरे भले की कहूँ।।३१ ।।
गुरु अस्तुत कर नित्त तेरे भले की कहूँ।।३२ ।।
गुरु से प्रेम बढ़ाव तेरे भले की कहूँ।।३३ ।।
तीरथ मूरत भर्म तेरे भले की कहूँ।।३४ ।।
जात अभिमान बिसार तेरे भले की कहूँ।।३५ ।।
पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूँ।।३६ ।।
वक़्त गुरू को मान तेरे भले की कहूँ।।३७ ।।

तीरथ गुरु के चरन तेरे भले की कहूँ।।३८ ।।
गुरु की सेवा बर्त तेरे भले की कहूँ।।३९ ।।
विद्या गुरु उपदेश तेरे भले की कहूँ।।४० ।।
और विद्या पाखंड तेरे भले की कहूँ।।४१ ।।
लीक[१] पुरानी छोड़ तेरे भले की कहूँ।।४२ ।।
जो गुरु कहें सो मान तेरे भले की कहूँ।।४३ ।।
मारग ज्ञान न धार तेरे भले की कहूँ।।४४ ।।
भक्ती पंथ सम्हार तेरे भले की कहूँ।।४५ ।।
सुरत शब्द मत ले तेरे भले की कहूँ।।४६ ।।
सुरत चढ़ा नभ माहिं तेरे भले की कहूँ।।४७ ।।
गगन तिरकुटी जाव तेरे भले की कहूँ।।४८ ।।
दसवें द्वार समाव तेरे भले की कहूँ।।४९ ।।
भँवरगुफा चढ़ आव तेरे भले की कहूँ।।५० ।।
सत्तलोक धस जाव तेरे भले की कहूँ।।५१ ।।
अलख अगम को पाव तेरे भले की कहूँ।।५२ ।।
राधास्वामी नाम धियाव तेरे भले की कहूँ।।५३ ।।
भटक अटक सब तोड़ तेरे भले की कहूँ।।५४ ।।
टेक पक्ष गुरु बाँध तेरे भले की कहूँ।।५५ ।।

* * * * *

१ - टेक।

।। शब्द दूसरा।।

गुरू का ध्यान कर प्यारे।
बिना इस के नहीं छुटना। १ ।।
नाम के रंग में रँग जा।
मिले तोहि धाम निज अपना।। २ ।।
गुरू की सरन दृढ़ कर ले।
बिना इस काज नहिं सरना।। ३ ।।
लाभ और मान क्यों चाहे।
पड़ेगा फिर तुझे देना।। ४ ।।
करम जो जो करेगा तू।
वही फिर भोगना भरना।। ५ ।।
जक्त के जाल से ज्यों त्यों।
हटो मरदानगी[1] करना।। ६ ।।
जिन्होंने मार मन डाला।
उन्हीं को सूरमा कहना।। ७ ।।
बड़ा बैरी यह मन घट में।
इसी का जीतना कठिना।। ८ ।।
पड़ो तुम इसी के पीछे।
और सबही जतन तजना।। ९ ।।

१ - बहादुरी।

गुरू की प्रीत कर पहिले।
बहुर घट शब्द को सुनना।। १० ।।
मान दो बात यह मेरी।
करे मत और कुछ जतना।। ११ ।।
हार जब जाय मन तुझ से।
चढ़ा दे सुर्त को गगना।। १२ ।।
और सब काम जग झूठा।
त्याग दे इसी को गहना[1]।। १३ ।।
कहें राधास्वामी समझाई।
गहो अब नाम की सरना।। १४ ।।

।। शब्द तीसरा।।

गुरू बिन कौन उबारेगा।
नाम बिन कौन सुधारेगा।। १ ।।
भजन बिन को निस्तारेगा।
सरन बिन कौन सँवारेगा।। २ ।।
बिरह बिन कौन पुकारेगा।
दर्द बिन कौन चितारेगा।। ३ ।।
शब्द बिन कौन सिंगारेगा।
संग बिन कौन निहारेगा।। ४ ।।

१ - ग्रहण करना, पकड़ना।

काल को कौन गारेगा।
कर्म किस भाँत हारेगा।। ५ ।।
संत कोइ आन मारेगा।
भक्त कोइ दोऊ जारेगा।। ६ ।।
काम सतसँग सारेगा।
जोई तन मन को वारेगा।। ७ ।।
सोई निज नाम धारेगा।
जक्त को आन तारेगा।। ८ ।।
जीव इक इक उबारेगा।
मान मद मोह टारेगा।। ९ ।।
सरन सतगुरु सम्हारेगा।
नाम पद सो निहारेगा।।१० ।।
राधास्वामी जो सरावेगा[१]।
सोई वह धाम पावेगा।।११ ।।

।। शब्द चौथा।।

गुरू बिन कभी न उतरे पार।
नाम बिन कभी न होय उधार।। १ ।।
संग बिन कभी न पावे सार।
प्रेम बिन कभी न पावे यार।। २ ।।
जुक्ति बिन चढ़े न गगन मँझार।
दया बिन खुले न बज्र किवाड़।। ३ ।।

१ - स्तुति करेगा।

सुरत बिन होय न शब्द सम्हार।
निरत बिन होय न धुन आधार।। ४ ।।
गुरू से करना पहिले प्यार।
नाम रस पीना मन को मार।। ५ ।।
काल घर जान तजा संसार।
द्याल घर आई जन्म सुधार।। ६ ।।
संत गति पाई गुरु की लार।
शब्द सँग मिली मिला पद चार।। ७ ।।
कहा राधास्वामी अगम बिचार।
सुने और माने करे निरवार।। ८ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

सुरत धुन धार री, तज भोग निकाम।।टेक ।।
दारा सुत धन मान बड़ाई।
यह सब थोथा काम।। १ ।।
लोक प्रतिष्ठा जक्त बड़ाई।
इन में नहिं आराम।। २ ।।
सतगुरु भक्ति नाम रस पीवे।
तौ पावे तू अविचल[1] धाम।। ३ ।।
तन मन साथ करो अब संगत।
तब मिले नाम सतनाम।। ४ ।।

१ - स्थिर।

सुरत चढ़ाय चलो ऊपर को।
होत जहाँ धुन आठों जाम।। ५ ।।
नर की देह सुफल होय तेरी।
मिले शब्द बिसराम।। ६ ।।
स्वाँस नक़ारा[1] कूँच[2] पुकारा।
बजे सुबह से शाम।। ७ ।।
राधास्वामी नाव लगाई।
भौ उतरो बिन दाम।। ८ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

सुरत सुन बात री।
तेरा धनी बसे आकाश।। १ ।।
तजो सँग जार री।
तू देख पिया परकाश।। २ ।।
चलो गुरु की लार री।
तू पावे अजर निवास।। ३ ।।
गहो सरन कोइ साध री।
जो मिले शब्द घर बास।। ४ ।।
तन पिंजरा यह काल का।
क्यों करे पराई आस।। ५ ।।

१ - नगाड़ा। २ - जात्रा करना।

दस इंद्री के भोग की।
तेरे पड़ी गले में फाँस।। ६ ।।
नौ द्वारन में बँध रही।
अब चैन नहीं इक स्वाँस।। ७ ।।
दसवीं खिड़की खोल री।
कर परम बिलास।। ८ ।।
सतगुरु पूरे कह रहे।
तू मान बचन बिस्वास।। ९ ।।
राधास्वामी नाम भज।
होयँ कर्म सब नाश।। १० ।।

।। शब्द सातवाँ।।

सुरत क्यों हुई दिवानी।
तेरी बिरथा बैस बिहानी।। १ ।।
जग भोग रोग दिन बीते।
तू जाय दोऊ कर रीते[1]।। २ ।।
जमपुर होय धूमा धामी।
तू पड़े चौरासी खानी।। ३ ।।
व्हाँ कौन सहाई तेरा।
तू बचन मान अब मेरा।। ४ ।।

१ - दोनों हाथ ख़ाली।

कर गुरु से हित चित लाई।
सुन मान बचन गुरु भाई।। ५ ।।
सूरत जा शब्द मिलाई।
कर निस दिन यही कमाई।। ६ ।।
तेरा भाग बढ़त नित जावे।
फिर काल न तोहि सतावे।। ७ ।।
रस अगम शब्द का पावे।
मन भोग सहज छुट जावे।। ८ ।।
चढ़ चढ़ नभ ऊपर धावे।
दल सहस कँवल गति पावे।। ९ ।।
तिल मोड़े बिजली चमके।
सुन शब्द अनाहद धमके।।१० ।।
फिर चाँद सुरज दोउ दरसें।
सुखमन मन सूरत परसें।।११ ।।
गुरु मूरत अजब दिखाई।
सोभा कुछ कही न जाई।।१२ ।।
नर रूप दिखावें तबही।
मन खैंच चढ़ावें जबही।।१३ ।।
दे मदद बढ़ावें आगे।
मन जुग जुग सोया जागे।।१४ ।।

चढ़ बंक चले त्रिकुटी में।
फिर सुन्न तके सरवर में।।१५ ।।
जहँ सोभा हंसन भारी।
वह भूमि लगे अति प्यारी।।१६ ।।
धुन किंगरी बजे करारी।
सुन सुरत हुई मतवारी।।१७ ।।
फिर लगे महासुन तारी।
जहँ दीप अचिंत सम्हारी।।१८ ।।
लख भँवरगुफा हुइ न्यारी।
जहँ सेत सूर उजियारी।।१९ ।।
चौथे पद करी तयारी।
धुन बीन सुनी अति भारी।।२० ।।
लख अलख अगम्म लखा री।
हुइ राधास्वामी रूप निहारी।।२१ ।।
महिमा उनकी क्या कहुँ भारी।
मुझ ग़रीब की बहुत सुधारी।।२२ ।।

।। शब्द आठवाँ।।

बिरहनी गुरु की सरन सम्हार।।टेक।।
या जग में कोइ मीत[1] न तेरा।
करो नाम आधार।। १ ।।

१ - मित्र।

चेतन डोरी शब्द लगावो।
खुले घाट और द्वार।। २ ।।
काम क्रोध की कीचड़ छूटे।
न्हाव निरमली धार।। ३ ।।
गगन मँडल में अनहद गाजे।
सुन सुन करो अधार।। ४ ।।
बिना संत कोइ अंत न पावे।
चलो संत की लार।। ५ ।।
राधास्वामी हित उपदेशी।
कहते हेला मार[1]।। ६ ।।
जो समझे सो सार समावे।
पावे भेद अपार।। ७ ।।

।। शब्द नवाँ।।

सुरत सँग सतगुरु धोवत मन को।।टेक ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ावत छिन छिन।
भेट चढ़ावत तन को।। १ ।।
शुद्ध होय शब्दारस पावत।
चढ़त उलट घट घन को।। २ ।।
इन्द्री पाँच प्रकिर्त पचीसो।
दूर हटावत तीनों गुन को।। ३ ।।

१ - ऊँची आवाज़ से।

धुन रस पाय हुई मतवारी।
कहत न काहू जन को।। ४ ।।
जिन यह भेद स्वाद नहिं जाना।
कहूँ कहा अब तिन को।। ५ ।।
पण्डित ज्ञानी भेष भुलाने।
तीरथ बरत करें करमन को।। ६ ।।
यह रस सार शब्द क्यों पावें।
जाल बिछावें नित भरमन को।। ७ ।।
कौन कहे उन को समझाई।
सुनें न संत बचन को।। ८ ।।
षट शास्तर और सिम्रित पुराना।
लीक पीट छोड़ें नहिं पन को।। ९ ।।
शिव और शक्ति गनेश मनावें।
कौन कहे अब उनको।।१० ।।
बिष्णु सूर और देव अनेका।
पुजवावें सबहिन को।।११ ।।
गुरु भक्ती संतन की महिमा।
नेक न जानें वह इस गुन को।।१२ ।।
हित कर कहें कोई नहिं माने।
कौन ग़रज़ अब हम को।।१३ ।।

राधास्वामी भेद बतावें।
पकड़ रहो तुम अब घट धुन को।।१४ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

गुरु घाट चलो मन भाई।
सुरत चदरिया लेव धुवाई।। १ ।।
सेवा साबन दर्शन मंजन।
प्रेम का नीर भराई।। २ ।।
बचन की रेह[1] भाव की भाठी।
बिरह की अगिन जराई।। ३ ।।
भक्ति नदी जहँ निस दिन बहती।
मल मल ता में मैल गँवाई।। ४ ।।
उज्जल निर्मल हुई सुरत जब।
ओढ़त मन अब अति हरखाई।। ५ ।।
चला गगन पर मिला शब्द सँग।
चढ़त २ त्रिकुटी ढिंग आई।। ६ ।।
सुन्न शिखर चढ़ हंस रूप धर।
महासुन्न छबि औरहि पाई।। ७ ।।
भँवरगुफा पर सोहं सोहं।
सत्तलोक सत सोहं गाई।। ८ ।।

१ - कपड़ा धोने की मिट्टी।

अलख अगम को देखत देखत।
राधास्वामी चरनन जाय समाई।। ९ ।।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

तू देख उलट कर मन में।
क्यों फिरे भटकता बन में।। १ ।।
गुरु कहें तोहि छिन छिन में।
तू सुमिर नाम निस दिन में।। २ ।।
गुरु मूरत धार अँदर में।
मन चंचल रोक मँदर में।। ३ ।।
फिर सुरत लगा सुन् दर[१] में।
तू धस जा ब्रह्म रँदर[२] में।। ४ ।।
चुप बैठो गगन कँदर[३] में।
मन खैंच धरो धुन धर[४] में।। ५ ।।
तुम सुरत जमाओ सुन में।
भरमो मत तीनों गुन में।। ६ ।।
क्यों पड़ो जाय औगुन में।
मत गिरो जाय दोषन में।। ७ ।।
तेरा जन्म गया धोखन में।
अब खोज करो शब्दन में।। ८ ।।

१ - सुन का दर यानी द्वारा। २ - छिद्र, द्वारा।
३ - गुफा। ४ - धुन की धार।

नित कर बिलास संतन में।
मत पचो मान और धन में।। ९ ।।
मन इन्द्री बस कर तन में।
तू लग रहु इसी जतन में।।१० ।।
बस आवें यह कोइ दिन में।
फिर सुनो नाद सरवन में।।११ ।।
फिर देर न होय जागन में।
तू मगन रहो रागन में।।१२ ।।
अब गिर राधास्वामी चरनन में।
तेरा काज करें पल छिन में।।१३ ।।

।। शब्द बारहवाँ।।

सुन रे मन अनहद बैन।
घट में मठ[1] निरखो नैन।। १ ।।
गुरु शब्द गहो उपदेशा।
रस पी पी करो प्रवेशा।। २ ।।
चक्कर अब फेरो आई।
धुन शब्द तभी खुल जाई।। ३ ।।
बिन नाम नहीं गत पाई।
सतगुरु यों कहें बुझाई।। ४ ।।

१ - मन्दिर।

सतसँग अब करो बनाई।
गुरु गहो आन सरनाई।। ५ ।।
जग भोग रोग सम जानो।
धन माल चाह दुख मानो।। ६ ।।
भौसागर फाट[1] अपारा।
डूबे सब उसकी धारा।। ७ ।।
गुरु बिन कोइ पार न पाया।
बिन नाम न धीरज आया।। ८ ।।
अब सुरत सम्हालो आई।
जो शब्द हाथ लग जाई।। ९ ।।
मन इन्द्री तन भरमाई।
दुख सुख में गये भुलाई।। १० ।।
हौं हौं कर[2] जन्म बिताई।
करता की बूझ न आई।। ११ ।।
अब सोच करो तुम मन में।
कुछ रोको मन निज तन में।। १२ ।।
राधास्वामी कहत बुझाई।
तब सुरत शब्द घर पाई।। १३ ।।

* * * * *

१ - चौड़ाई । २ - आपा ठानकर।

।। शब्द तेरहवाँ।।

गुरु कहें जक्त सब अंधा।
कोइ गहे न घट की संधा[1]।। १ ।।
बाहरमुख भरमें सारे।
अंतरमुख शब्द न धारे।। २ ।।
मन जक्त भोग रस बंधा।
नित करे कर्म बस धंधा।। ३ ।।
फँस मरे काल के फंदा।
अब हुआ जीव अति गंदा।। ४ ।।
गुरु कहें नित्त समझाई।
कर खोज शब्द घट जाई।। ५ ।।
यह सुने न गुरु के बैना।
कस खुलें हिये के नैना।। ६ ।।
बिरला कोइ जिव अधिकारी।
गुरु बचन करे आधारी।। ७ ।।
जो बचन सम्हारे गुरु के।
मन फंद लगावे छल के।। ८ ।।
ज्यों त्यों कर जीव भुलावे।
काल अपने खेल खिलावे।। ९ ।।

१ - निशान यानी शब्द।

गुरु भक्ति न करने पावे।
बहु भाँति उपाधि लगावे।। १० ।।
कभी मित्र होय भरमावे।
कभी बैरी बन धमकावे।। ११ ।।
कभी रोगन माहिं झुमावे।
नाना बिधि जाल बिछावे।। १२ ।।
शब्दा रस लेन न पावे।
यों जीव सदा दुख पावे।। १३ ।।
गुरु मेहर करें जिस जन पर।
सो बचे शब्द धुन सुन कर।। १४ ।।
तब गहे शब्द रस जाँची।
फिर जले न जग की आँची।। १५ ।।
सब बात लगी अब काँची।
गुरु भक्ति मिली अब साँची।। १६ ।।
राधास्वामी की लीन्ही सरनी।
सो जीव लगे भौ तरनी[१]।। १७ ।।

।। शब्द चौदहवाँ।।

सुरत नहिं चढ़े कहा करिये।
पिंड नहिं तजे झुरत रहिये।। १ ।।

१ - संसार से पार होने लगे।

मन कहा न करे कुमति भरिये।
इन्द्री रस भोग अधिक जरिये।। २ ।।
गुन तीन कर्म बस नित डरिये।
दुख सुख संतापें बहु सहिये।। ३ ।।
कोइ और उपाय नहीं चहिये।
गुरु चरन सरन में सिर धरिये।। ४ ।।
जब नाम अमी रस घट भरिये।
स्रुत खैंच गगन को अब चढ़िये।। ५ ।।
संतन मत साँचा यह कहिये।
स्रुत शब्द लखावें सो गहिये।। ६ ।।
मन चढ़े गगन पर जा रहिये।
स्रुत लगे शब्द से रस पैये।। ७ ।।
सुन जाँच करो और घर अइये।
फिर मौज करो आनँद लहिये।। ८ ।।
गुरु नाम रटो तब मन हरिये।
सतलोक चलो कारज सरिये।। ९ ।।
घर अलख अगम जा कर लखिये।
राधास्वामी चरन में फिर पकिये।। १० ।।

।। शब्द पंद्रहवाँ।।

गुरु तारेंगे हम जानी।
तू सुरत काहे बौरानी।। १ ।।

दृढ़ पकड़ो शब्द निशानी।
तेरी काल करे नहिं हानी।। २ ।।
तू होजा शब्द दिवानी।
मत सुनो और की बानी।। ३ ।।
सब छोड़ो भर्म कहानी।
गुरु का मत लो पहिचानी।। ४ ।।
चढ़ बैठो अगम ठिकानी।
राधास्वामी कहत बखानी।। ५ ।।

।। शब्द सोलहवाँ।।

गुरु क्यों न सम्हार।
तेरा नर तन बीता भर्म में।। १ ।।
दारा सुत परिवार।
ठगियन सँग क्यों खोवई।। २ ।।
क्यों नहिं करत बिचार।
जग मिथ्या यह है सही।। ३ ।।
मन है बड़ा गँवार,
मोह रहा कर प्यार।
छूटे कैसे जार से।। ४ ।।
बिन गुरु चले न दाव।
थाके सभी उपाव कर।। ५ ।।
नाम सम्हारो मीत।
धीरज धर घट में रहो।। ६ ।।

मौज निहारो पीव।
जो करिहैं सो सब भला।। ७ ।।
तेरी बुद्धि मलीन।
मन चंचल घाटा गहे।। ८ ।।
तू नहिं जाने भेद।
भर्म जाल में फँस रहा।। ९ ।।
या ते कर बिस्वास।
गुरु बिन और न दूसरा।।१० ।।
गुरु का घाट निहार।
सुरत बाँध निज शब्द में।।११ ।।
शब्द बिना कोइ नाहिं।
जो काढ़े इस फंद से।।१२ ।।
ता ते शब्द किवाड़।
खोलो गुरु कुंजी पकड़।।१३ ।।
महल माहिं धस जाय।
गुरुमुख को रोकें नहीं।।१४ ।।
मनमुख भटका खाय।
चढ़ उतरे गिर गिर पड़े।।१५ ।।
ठीका ठौर न पाय।
क्योंकर गुरु समझावहीं।।१६ ।।

मन मत छोड़े नाहिं।
गुरु को दोष लगावहीं।।१७ ।।
गुरु जो कहें उपाव।
उस में मन बाँधे नहीं।।१८ ।।
क्योंकर होय निबाह।
जम धक्के खावत फिरे।।१९ ।।
राधास्वामी कहत सुनाय।
मन बैरी को मीत कर।।२० ।।

।। शब्द सत्रहवाँ।।

मन मारो तन को जारो।
इन्द्री रस भोग बिसारो।। १ ।।
तुम निद्रा आलस टारो।
गुरु के सँग शब्द पुकारो।। २ ।।
सतसँग तुम नितही धारो।
गुरु दर्शन नित्त निहारो।। ३ ।।
मन से क्यों दम दम हारो।
जग आसा दूर निकारो।। ४ ।।
यह भर्म सभी अब टारो।
फिर परखो तुम घर न्यारो।। ५ ।।
खोलो चढ़ गगन किवाड़ो।
धस बैठो दसवें द्वारो।। ६ ।।

फिर महासुन्न होय पारो।
तहँ देखो भँवर उजारो।। ७ ।।
सतनाम मिला अति प्यारो।
जा अलख अगम को धारो।। ८ ।।
राधास्वामी धाम अपारो।
दिया सतगुरु परम उदारो।। ९ ।।

।। शब्द अठारहवाँ।।

धाम अपने चलो भाई।
पराये देस क्यों रहना।। १ ।।
काम अपना करो जाई।
पराये[1] काम नहिं फँसना।। २ ।।
नाम गुरु का सम्हाले चल।
यही है दाम गँठ बँधना।। ३ ।।
जक्त का रंग सब मैला।
धुला ले मान यह कहना।। ४ ।।
भोग संसार कोइ दिन के।
सहज में त्यागते चलना।। ५ ।।
सरन सतगुरु गहो दृढ़ कर।
करो यह काज पिल[2] रहना।। ६ ।।

१ - दूसरे का । २ - ज़ोर देकर लगना।

सुरत मन थाम अब घट में।
पकड़ धुन ध्यान धर गगना।। ७ ।।
फँसे तुम जाल में भारी।
बिना इस जुक्त नहिं खुलना।। ८ ।।
गुरू अब दया कर कहते।
मान यह बात चित धरना।। ९ ।।
भटक में क्यों उमर खोते।
कहीं नहिं ठीक तुम लगना।। १० ।।
बसो तुम आय नैनन में।
सिमट कर एक यहँ होना।। ११ ।।
दुई यहँ दूर हो जावे।
दिरिष्टी जोत में धरना।। १२ ।।
श्याम तज सेत को गहना।
सुरत को तान धुन सुनना।। १३ ।।
बंक के द्वार धस बैठो।
तिरकुटी जाय कर लेना।। १४ ।।
सुन्न चढ़ जा धसो भाई।
सुरत से मानसर न्हाना।। १५ ।।
महासुन चौक अँधियारा।
वहाँ से जा गुफा बसना।। १६ ।।

लोक चौथे चलो सज के।
गहो वहँ जाय धुन बीना।।१७ ।।
अलख और अगम के पारा।
अजब इक महल दिखलाना।।१८ ।।
वहीं राधास्वामी से मिलना।
हुआ मन आज अति मगना।।१९ ।।

।। शब्द उन्नीसवाँ।।

समझ कर चल जगत खोटा।
मान मद त्याग मन मोटा।। १ ।।
ख़ुदी[१] को छोड़ नहिं टोटा[२]।
भक्ति कर खाय क्यों सोटा।। २ ।।
करो सतसंग गुरु केरा[३]।
सुरत से लो गगन झोटा[४]।। ३ ।।
मगन होय बैठ फिर घट में।
फ़तह कर तिरकुटी कोटा[५]।। ४ ।।
कुटुँब सँग चार दिन नाता।
मोह सँग क्यों पड़ा लोटा।। ५ ।।
करो कुछ भजन अंतर में।
गहो गुरु चरन की ओटा[६]।। ६ ।।

१ - अहंकार। २ - हानि। ३ - का। ४ - झोंका झूले का।
५ - किला। ६ - सरन।

गुरू बिन कोइ नही संगी।
उन्हीं सँग बैठ मन घोटा[१]।। ७ ।।
करेंगे काज वह तेरा।
उतारें पाप की पोटा[२]।। ८ ।।
मिले तब नाम की रंगत।
शब्द की सेज जा लोटा।। ९ ।।
भाग तेरा बड़ा जागा।
हुआ मन अर्श[३] का तोता।।१० ।।
उठा फिर जाग इक छिन में।
जुगन जुग से पड़ा सोता।। ११ ।।
जक्त को देख तू मथ कर।
नहीं कुछ सार है थोथा।।१२ ।।
उलट कर दिल मथो अपना।
अमोलक़ वक़्त क्यों खोता।।१३ ।।
गुरू ने अब करी किरपा।
दिया अब काल को ग़ोता।।१४ ।।
कहें राधास्वामी यह तुम को।
चलो सतलोक दूँ न्योता।।१५ ।।

* * * * *

१ - रगड़ा। २ - बोझ। ३ - आकाश।

।। शब्द बीसवाँ।।

अरे मन देख कहाँ संसार।
झूठे भर्म हुआ बीमार।। १ ।।
भरे तेरे मन में सभी बिकार।
जतन से इन को दूर निकार।। २ ।।
होय फिर झूठा जक्त असार।
गहो फिर गुरु से चरन सम्हार।। ३ ।।
मिले तब उन से नाम अपार।
देख फिर घट में मोक्ष दुवार।। ४ ।।
चलो फिर शब्द बिचार बिचार।
पाओ इक शब्द सार का सार।। ५ ।।
पड़े क्यों भटको नैनन वार।
झाँक तिल खिड़की उतरो पार।। ६ ।।
गुरू से लेना जुक्ती यार।
गुरू बिन नहीं खुले यह द्वार।। ७ ।।
कमाना जुक्ती तुम कर प्यार।
लगाना सुरत सहज मन मार।। ८ ।।
चले फिर सूरत धुन की लार।
चुए जहँ पल पल अमृत धार।। ९ ।।
नाम रस पिओ रहो हुशियार।
ऋद्धि और सिद्धि रहें तेरे द्वार।।१० ।।

करो मत उनको अंगीकार।
वहाँ से आगे धरो पियार।।११ ।।
चलो और देखो घट का सार।
पहुँचना राधास्वामी के दरबार।।१२ ।।

।। शब्द इक्कीसवाँ।।

अब बही सुरत मँझधार।
गुरू बिन कौन लगावे पार।। १ ।।
जकड़ कर पकड़ा इन संसार।
नाम बिन कौन करे निरवार।। २ ।।
नाम का किया न कुछ आधार।
गुरू सँग किया न अब के प्यार।। ३ ।।
कर्म का बहुत उठाया भार।
काल ने खाया सब को झाड़।। ४ ।।
साध कोइ किया न अपना यार।
देह में किया बहुत अहंकार।। ५ ।।
कुमति बस भरमें बारम्बार।
सुमति का किया न नेक बिचार।। ६ ।।
देह सँग रही न कुछ हुशियार।
हुई अब ग़ाफ़िल भोगन लार।। ७ ।।

बिछाया जग में मन ने जार[1]।
पड़ी अब मन के क़ाबू हार।। ८ ।।
कहें राधास्वामी तोहि पुकार।
पकड़ अब चरन सम्हार सम्हार।। ९ ।।

।। बचन बीसवाँ।।

उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का

।। शब्द पहिला।।

चलो री सखी आज पिया से मिलाऊँ।
तन मन धन की प्रीत छुड़ाऊँ।। १ ।।
पुत्र कलित्र[2] जाल छुटकाऊँ।
सुन्न मँडल धुन अजब सुनाऊँ।। २ ।।
गगन तख़्त पर जाय बिठाऊँ।
तीन लोक का राज दिलाऊँ।। ३ ।।
तिरबेनी तीरथ परसाऊँ।
मन माधो[3] से खूँट छुड़ाऊँ।। ४ ।।
काल चक्र से तुरत बचाऊँ।
कर्म काट निज घर पहुँचाऊँ।। ५ ।।
महासुन्न और भँवरगुफा से।
सत्तपुरुष दीदार कराऊँ।। ६ ।।

१ - जाल। २ - स्त्री। ३ - जिस का झुकाव माया की तरफ़ हो।

दीन दुरबीन पुरुष इक ऐसी।
अलख अगम के पार समाऊँ।। ७ ।।
राधास्वामी पद हम जाना।
कहन सुनन का लगा ठिकाना।। ८ ।।

।। शब्द दूसरा।।

जागो री सुरत अब देर न करो।
चालो री सुरत अब गगन चढ़ो।। १ ।।
भागो री सुरत अब पिया से मिलो।
लागो री सुरत अब शब्द रलो।। २ ।।
ताको री सुरत अब निरत[1] करो।
झाँको री सुरत अब मूरत लखो।। ३ ।।
न्हावो री सुरत और नीर भरो।
धाओ री सुरत और ध्यान धरो।। ४ ।।
गाओ री सुरत और गवन[2] करो।
भोगो री सुरत सुख सहज बरो[3]।। ५ ।।
झँझरी निरख फिर नाम भजो।
बंक छोड़ धुन गगन गहो।। ६ ।।
सुन्न तजो महासुन्न रहो।
भँवरगुफा पर जाय अड़ो।। ७ ।।

१ - निरनय। २ - जात्रा। ३ - पिया का।

सत्तलोक सतनाम रसो।
अलख अगम के पार बसो।। ८ ।।
राधास्वामी राधास्वामी रटन करो।
बहुत कहा अब ख़तम करो।। ९ ।।

।। शब्द तीसरा।।

भक्ति अब करो मेरे भाई।
प्रीत अब धरो मेरे भाई।। १ ।।
अजब यह औसर पाई।
मिले अब राधास्वामी आई।। २ ।।
सेवा दर्शन बाड़[1] धराई।
पौद अब शब्द खिलाई।। ३ ।।
सुरत शम्शेर[2] चलाई।
काल सिर काट गिराई।। ४ ।।
धमक अब सुन्न समाई।
चमक जहँ चन्द्र दिखाई।। ५ ।।
श्याम तज सेत मिलाई।
हेत कर नेत[3] घर आई।। ६ ।।
महासुन तार मिलाई।
भँवर का द्वार तुड़ाई।। ७ ।।

१ - टट्टी, रोक। २ - तलवार। ३ - दसवाँ द्वार।

शब्द पद जाय समाई।
अलख और अगम सराई[1]।। ८ ।।
राधास्वामी अगम सुनाई।
सरन अब पूरी पाई।। ९ ।।

।। शब्द चौथा।।

चेतो रे जम जाल बिछाया।
काल कुल चक्र चलाया।। १ ।।
सरन गहो सतगुरु के री।
बचे चौरासी फेरी।। २ ।।
उलट कर घट में आवो।
सुई के द्वार समावो।। ३ ।।
पकड़ मन खैंचो तानी।
सुनो फिर अनहद बानी।। ४ ।।
जोत की गहो निशानी।
निरंजन रूप पिछानी।। ५ ।।
बंक चढ़ त्रिकुटी फोड़ो।
सुन्न में आतम जोड़ो।। ६ ।।
काल की हद्द छुड़ानी।
द्याल पद लिया अगवानी।। ७ ।।

१ - महिमा किया।

संत सँग नाता जोड़ा।
गगन का नाका[1] तोड़ा।।८ ।।
सुरत का घोड़ा दौड़ा।
निरत का चाबुक छोड़ा।। ९ ।।
सुरत का बान चलाया।
भँवर का चक्र फिराया।।१० ।।
शब्द से शब्द समाया।
परम पद अपना पाया।।११ ।।
बीन धुन अजब सुनाई।
सुरत जहँ दीन तनाई।।१२ ।।
मिला अब प्रीतम प्यारा।
सुरत सत रूप निहारा।।१३ ।।
अलख का लखा उजाला।
अगम पद जाय सम्हाला।।१४ ।।
राधास्वामी कीन्ह निहाला।
सीस उन चरनन डाला।।१५ ।।

।। शब्द पाँचवाँ।।

भजन कर मगन रहो मन में।।टेक ।।
जो जो चोर भजन के प्रानी।
सो सो दुक्ख सहें।। १ ।।

१ - हद्द, सीमा।

आलस नींद सतावे उनको।
नित नित भर्म बहें।। २ ।।
काम क्रोध के धक्के खावें।
लोभ नदी में डूब मरें।। ३ ।।
गुरु सँग प्रीत करें नहिं पूरी।
नाम न डोर गहें।। ४ ।।
तृष्णा अग्नि जलें निस बासर।
नर्कन माहिं पड़ें।। ५ ।।
संतन साथ बिरोध बढ़ावें।
उलटी बात कहें।। ६ ।।
सतसँग महिमा मूल न जानें।
भेड़ चाल में नित्त पचें।। ७ ।।
धन और मान भोग रस चाहें।
रोग सोग में आन फँसें।। ८ ।।
भाग हीन मत हीन परानी।
नर देही बरबाद करें।। ९ ।।
ऐसी दशा माहिं नित बरतें।
हम क्योंकर समझाय सकें।। १० ।।
साध गुरू का कहा न मानें।
मन मत अपनी ठान[१] ठनें।। ११ ।।

१ - हठ करके रखते हैं।

खर[1] कूकर सम वे नर जानो।
बिरथा उदर भरें।।१२ ।।
जमपुर जाय बहुत पछतावें।
वहाँ फिर उनकी कौन सुने।।१३ ।।
जन्म जन्म चौरासी भोगें।
यह शरीर फिर नाहिं धरें।।१४ ।।
दुर्लभ देह मिली यह औसर।
ऐसी कर जो बात बने।।१५ ।।
सतगुरु सरन पकड़ ले अब की।
तौ सब काज सरें।।१६ ।।
हित का बचन दया कर बोलें।
तू नहिं कान सुने।।१७ ।।
अंधा बहरा फिरे जक्त में।
कुल कुटुंब तेरी हान करें।।१८ ।।
कर सतसंग मान यह कहना।
कान आँख फिर दोऊ खुलें।।१९ ।।
देखे घट में जोत उजाला।
सुने गगन में अजब धुनें।।२० ।।
सुन्न जाय तिरबेनी न्हावे।
हीरे मोती लाल चुने।।२१ ।।

१ - गदहा।

महासुन्न में सुरत चढ़ावे।
तब सतगुरु तेरे संग चलें।।२२ ।।
भँवरगुफा की बंसी बाजी।
महाकाल भी सीस धुने।।२३ ।।
अब चढ़ गई पुरुष दरबारा।
वहाँ जाय धुन बीन गुने।।२४ ।।
ले दुरबीन चली आगे को।
अलख अगम का भेद भने[1]।।२५ ।।
य्हाँ से आगे चली उमँग से।
तब राधास्वामी चरन मिलें।।२६ ।।
मिला अधार पार घर पाया।
लीला व्हाँ की कहे न बने।।२७ ।।

।। शब्द छठवाँ।।

कोइ सुनो हमारी बात।
कोइ चलो हमारे साथ।। १ ।।
क्यों सहो काल की घात।
जम धर धर मारे लात।। २ ।।
तुम चढ़ो गगन की बाट।
तो खुले अधर का पाट।। ३ ।।

१ - बरनन करती है।

घट बाँधो दृढ़ कर ठाट।
छूटे यह औघट घाट।। ४ ।।
शब्द रस भरो सुरत के माट।
बंक चढ़ खोलो सुखमन घाट।। ५ ।।
नाम की मिली अपूरब[१] चाट।
अब सोऊँ बिछाये खाट।। ६ ।।
चेतन की जड़ से खोली साँट[२]।
उलट मन कला खाय ज्यों नाट[३]।। ७ ।।
मानसर देखा चौड़ा फाट[४]।
गया फिर परदा सुन का फाट।। ८ ।।
काल की डारी गर्दन काट।
कर्म की खुल गई भारी आँट[५]।। ९ ।।
सुन्न का लिया अमी रस बाँट।
शब्द की खुली हिये में हाट।।१० ।।
मोह मद हो गये बारह बाट[६]।
मिले अब सतगुरु मेरे तात।।११ ।।
बाल ज्यों पावे पित और मात।
कहूँ क्या खोल यह विख्यात।।१२ ।।
अब चले न माया घात।
झड़ पड़ी बृक्ष ज्यों पात।।१३ ।।

१ - अचरज। २ - पेंच,लपेट। ३ - नट। ४ - पाट,चौड़ाई। ५ - दो तागों के सिरे को चुटकी से मिला देने को आँट कहते हैं। ६ - इधर उधर।

कर्म की कीन्ही बाज़ी मात।
लखी जाय सुन में धुन की भाँत।।१४ ।।
टूट गया पिंड से मेरा नात।
दिखाई गुरु ने अचरज क्रांत।।१५ ।।
पाई अब मैं ने ऐसी शांत।
अब रही न कोई भ्रांत।।१६ ।।
गुरु करी प्रेम की दात।
सुरत अब हुई शब्द की ज़ात[1]।।१७ ।।
सुरत रहे लागी दिन और रात।
शब्द रस अब नहिं छोड़ा जात।।१८ ।।
गुरू का दम दम अब गुन गात।
अमर पद पाया छूटा गात[2]।।१९ ।।
नाम धुन चली अधर से आत।
अर्श[3] का चरख़ा डाला कात।।२० ।।
राधास्वामी धरा सीस पर हाथ।
मैं तजूँ न उन का साथ।।२१ ।।

।। शब्द सातवाँ।।

नाम धुन सुनो, शब्द धुन गुनो।
गगन चढ़ चलो, प्रेम लौ लाय।। १ ।।

१ - एक रस, एक बर्ण। २ - तन। ३ - आसमान।

गुरू सँग करो, साध सँग रलो।
चेत कर रहो, सदा चित लाय।। २ ।।
बाँध मन धरो, सरन गुरु तको।
चरन गहि चखो, अगम रस आय।। ३ ।।
धीर पुन गहो, सील घर रहो।
क्रोध को दहो, शान्त घर आय।। ४ ।।
काल कुल दलो, द्याल पद चलो।
मगन होय रहो, परम पद पाय।। ५ ।।
घाट घट खुले, बाट तब चले।
द्वार तिल धसे, श्याम पद पाय।। ६ ।।
सेत पहिचान, जोत लख आन।
सुखमना जान, बंक धस जाय।। ७ ।।
संख धुन मिले, सुरत फिर पिले।
भेद तब खुले, नाद धुन गाय।। ८ ।।
सुन्न चढ़ आय, मानसर न्हाय।
हंस गति लाय, चन्द्र में धाय।। ९ ।।
खोज कर चली, महासुन मिली।
पाय निज गली, बिहँग[1] हो जाय।।१० ।।
भँवर गढ़ तोड़, बाँसरी घोर।
सोहं का शोर, सुना रस खाय।।११ ।।

१ - पक्षी।

पाय पद चार, पुरुष धर प्यार।
बीन धुन सार, सुनी निज आय।।१२ ।।
अलख घर मिला, अगम गुल खिला।
चाल धुर चला, लिया सब काज बनाय।।१३ ।।
एक पद रहा, गुप्त सो कहा।
सीस अब धरा, चरन राधास्वामी जाय।।१४ ।।

।। शब्द आठवाँ।।

खोलो री किवड़ियाँ,
चढ़ो री अटरियाँ।
सुरत न टरियाँ,
करो शब्द सँग रलियाँ[1]।। १ ।।
पावो री मरमियाँ,
छूटे री मरनियाँ।
जन्म सुफलियाँ,
झाँकोरी निरत गुरु गलियाँ।। २ ।।
धावो री धरनियाँ[2],
गहो री सरनियाँ।
होवो री मगनियाँ,
भैलो नाम दिवनियाँ।। ३ ।।

१ - विलास। २ - सुरत।

खोजो री अमनियाँ[१],
टले री जमनियाँ।
छुटे री गुननियाँ[२],
राधास्वामी शब्द जुगनियाँ[३] ।। ४ ।।

।। शब्द नवाँ।।

लोभ री खुवनियाँ,
काम री दलनियाँ।
क्रोध री दगनियाँ[४] ,
मन संतोष मिलनियाँ।। १ ।।
काटो री मलनियाँ[५],
चढ़ो री गगनियाँ।
जाय री तपनियाँ,
पकड़ो गुरू चरनियाँ।। २ ।।
हौं मैं री टलनियाँ,
भाजत[६] गुननियाँ[७]।
बढ़ेरी लगनियाँ,
रहो निस बास जगनियाँ।। ३ ।।
गावो री गुननियाँ[८],
धावो री धुननियाँ।

१ - निर्मल, शुद्ध। २ - गुनावन। ३ - योग। ४ - जलाना।
५ - मैल। ६ - भागे। ७ - तीनों गुन। ८ - महिमा।

बुझे री अगनियाँ,
राधास्वामी शान्त दिवनियाँ[१] ।। ४ ।।

।। शब्द दसवाँ।।

गुरु कहें खोल कर भाई।
लग शब्द अनाहद जाई।। १ ।।
बिन शब्द उपाव न दूजा।
काया का छुटे न कूज़ा[२] ।। २ ।।
घर में घर गुरु दिखलावें।
धुन शब्द पाँच बतलावें।। ३ ।।
धुन में अब सुरत लगावो।
इस घर से उस घर जावो।। ४ ।।
वह घर है अगम अपारा।
दसवें के पार निहारा।। ५ ।।
दस द्वारा घट चढ़ खोलो।
सत शब्द अधर पै तोलो।। ६ ।।
बिन मेहर गुरू नहिं पावे।
बिन शब्द हाथ नहिं आवे।। ७ ।।
स्रुत खैंच चढ़ावो गगनी।
धुन शब्द सुनो यह करनी।। ८ ।।

१ - देवें। २ - सुराही।

मन चंचल थिर न रहावे।
चित निर्मल कस होय आवे।। ९ ।।
स्रुत शब्द कमाई करना।
सब जतन दूर अब धरना।।१० ।।
निश्चय दृढ़ इस पर धरना।
आलस कर कभी न फिरना।। ५ ।।
यह सार सार सब गाया।
संतन मत भाष सुनाया।। ६ ।।
राधास्वामी भेद लखाया।
सुन मान सार समझाया।। ७ ।।

।। शब्द ग्यारहवाँ।।

चढ़ झाँको गगन झँझरिया।
धस देखो श्याम सुँदरिया[१]।। १ ।।
फिर तको जोत झिलमिलिया।
मद मान मोह दल मलिया[२]।। २ ।।
सब दूर होयँ कलमलिया[३]।
धुन शब्द सुरत जा रलिया।। ३ ।।
त्रिकुटी चढ़ देख कँवलिया।
धुन परखो सुन्न मँडलिया।। ४ ।।

१ - तीसरा तिल। २ - मरदन किया। ३ - काल का मैल।

तब सुरत होय निर्मलिया।
तुम धारो यही अमलिया[१]।। ५ ।।
भागे फिर माया छलिया।
स्रुत पकड़ा शब्द अटलिया[२]।। ६ ।।
यह अगम भेद अब मिलिया।
राधास्वामी कहन सम्हलिया।। ७ ।।

।। शब्द बारहवाँ।।

घुमर[३] चल सुरत घोर सुन भारी।
अरी सतगुरु संत पियारी।। १ ।।
जग रहना है दिन चारी[४]।
क्यों भार उठावो भारी।। २ ।।
गुरु कहें पुकार पुकारी।
धुन संग करो चल यारी।। ३ ।।
ममता सब झाड़ निकारी।
स्रुत अगम देश पग धारी।। ४ ।।
यह काम नहीं संसारी।
कोइ गुरुमुख बूझ सम्हारी।। ५ ।।
मनमुख सब बाज़ी हारी।
सतसँग कर छुटे बिकारी।। ६ ।।

१ - अभ्यास। २ - निश्चल। ३ - घूम कर। ४ - चार अवस्था उमर की, लड़कपन, जवानी, अधेड़, बुढ़ापा।

इक नाम सार सब खारी।
तू हो जा नाम अधारी।। ७ ।।
यह जुक्ति बताई न्यारी।
नहिं बेद कितेब बिचारी।। ८ ।।
अब मानो बात हमारी।
ग़फ़लत तज हो हुशियारी।। ९ ।।
कामादिक काढ़ निकारी।
फिर न्हावो सीतल धारी।।१० ।।
मन माया दोनों मारी।
तब काल करम दोउ हारी।। ११ ।।
फिर सुरत करे असवारी।
सतगुरु के महल सिधारी।।१२ ।।
तू अगम पुरुष की नारी।
सब की अब हुई दुलारी।।१३ ।।
सतगुरु सँग प्रेम बढ़ा री।
देखे घट शब्द उजारी।।१४ ।।
सरवर[1] की धारा जारी।
राधास्वामी कहत पुकारी।।१५ ।।

* * * * *

१ - मानसरोवर।

।। शब्द तेरहवाँ।।

चढ़ सुरत गगन की घाटी।
क्यों जले भरम की भाठी।। १ ।।
क्यों चले काल की बाटी।
तू खोल कपट की टाटी[१]।। २ ।।
तुझे पड़ी विषय रस चाटी।
तू रले एक दिन माटी।। ३ ।।
सौदा कर सतगुरु हाटी[२]।
चल खोलो घट की टाटी।। ४ ।।
अब बाँध सुरत सँग ठाठी।
तब छूटे करम प्रपाटी[३]।। ५ ।।
फिर खोलो चढ़कर साँटी।
नभ चढ़ जा खोल कपाटी।। ६ ।।
घट देखो चौक सपाटी[४]।
जग छूटा हुई उचाटी।। ७ ।।
मन माना छोड़ लपाटी[५]।
मैं मारा काल झपाटी[६]।। ८ ।।
घट बली जोत की लाटी।
मैं राधास्वामी दर की भाटी[७]।। ९ ।।

* * * * *

१ - परदा। २ - दुकान। ३ - सिलसिला। ४ - साफ़। ५ - लपेट की बात। ६ - जल्द। ७ - भाट याने महिमा गाने वाला।

।। शब्द चौदहवाँ।।

मन घोटो घट में लाई।
मन आसा सब मिट जाई।। १ ।।
धुन शब्द सुनो गगनाई।
स्रुत लगे होय मगनाई।। २ ।।
चंचलता चित्त भगाई।
निर्मलता मिली सफ़ाई।। ३ ।।
भोगों की आस छुटाई।
सुमिरन मन अधिक लगाई।। ४ ।।
मल बास रिदे[१] से जाई।
अमृत रस पिया अघाई।। ५ ।।
महिमा कुछ कही न जाई।
मन मारा सुरत समाई।। ६ ।।
घट अनहद घोर बजाई।
गुरु सतगुरु लीन रिझाई।। ७ ।।
घट भान उदय होय आई।
चंदा की जोत जगाई।। ८ ।।
संतन मत करूँ बड़ाई।
स्रुत सिमृत सभी लजाई।। ९ ।।

१ - हृदय।

आरत की बात चलाई।
फिर सामाँ सब ले आई।।१० ।।
गुरु आगे धरे बनाई।
गुरु मेहर करी अति भाई।।११ ।।
मैं भी फिर आरत गाई।
गुरु मुझ पर हुए सहाई।।१२ ।।
गुरु चरनन दास कहाई।
मैं सोभा अद्‌भुत पाई।।१३ ।।
राधास्वामी नाम धियाई।
लीला कुछ अगम दिखाई।।१४ ।।

।। शब्द पंद्रहवाँ।।

घन गरज सुनावत गहरी।
अब सूरत सुन सुन ठहरी।। १ ।।
मन छोड़त सब बिष लहरी।
तू चढ़ चल और व्हाँ रह री।। २ ।।
वह सुन्न बड़ी अति गहरी।
लीला वहाँ देख अँधेरी।। ३ ।।
फिर सेत कँवल सुर्त ठहरी।
घट शब्द गुरू हुइ चेरी।। ४ ।।
वहाँ संत करें नित फेरी।
सुन बात सखी अब मेरी।। ५ ।।

सत शब्द जाय धुन हेरी।
अब फिरी दुहाई तेरी।। ६ ।।
जिन राधास्वामी चरन गहे री।
उन मिटी चौरासी फेरी।। ७ ।।

।। शब्द सोलहवाँ।।

सुरत तू चढ़ जा तुरत गगन को।
लखो जाय पहिले जोत निर्गुन को।। १ ।।
छोड़ चल सकल पसार सर्गुन को।
काट अब जड़ से फाँस त्रिगुन को।। २ ।।
निर्गुन छोड़ चलो आगे को।
पकड़ो जाय महा निर्गुन को।। ३ ।।
या को त्याग सुनो सुन धुन को।
यों तुम धारो संत बचन को।। ४ ।।
व्हाँ से चल पहुँचो महासुन को।
देखो आगे धाम सोहं को।। ५ ।।
सत्तनाम पद मिला सुरत को।
अलख अगम जा परस चरन को।। ६ ।।
राधास्वामी कहत भेद निज घर को।
मेट दिया अब आवागवन को।। ७ ।।

* * * * *

।। शब्द सत्रहवाँ।।

त्याग चल सजनी जग की धार।
बहे मत या में दुक्ख अपार।। १ ।।
सुरत से होजा सतगुरु लार।
शब्द में तन मन दोनों गार[1]।। २ ।।
लगी रहु आठों पहर सम्हार।
अमी रस पीती रहु हुशियार।। ३ ।।
गगन का पकड़े रहु तू द्वार।
नाद सँग कर ले अब के प्यार।। ४ ।।
कहें राधास्वामी हेला मार।
सोच कर चढ़ना त्रिकुटी द्वार।। ५ ।।

।। शब्द अठारहवाँ।।

सुरत अब चढ़ो नाम रँग लाग।
जक्त सब सोवे तू उठ जाग।। १ ।।
बढ़े फिर तेरा अचरज भाग।
सुने तू चढ़ कर अनहद राग।। २ ।।
मिले तोहि प्यारी परम बैराग।
लगे तेरा धुन से अति अनुराग।। ३ ।।
मिटे सब मन का दोष और राग।
मार ले नभ चढ़ काला नाग।। ४ ।।

१ - गला दे।

खेल नित सतगुरु सँग तू फाग।
बासना टूटे सब ज्यों ताग॥ ५ ॥
हुई अब निर्भय जम भौ भाग।
हंस सँग मिली उड़ाया काग॥ ६ ॥
हुई अब निर्मल छूटे दाग़।
राधास्वामी दीन्हा शब्द सुहाग॥ ७ ॥

॥ शब्द उन्नीसवाँ॥

हंसनी क्यों पीवे तू पानी॥टेक॥
सागर क्षीर भरा घट भीतर।
पीवो सूरत तानी॥ १ ॥
जग को जार धसो नभ अंदर।
मंदर परख निशानी॥ २ ॥
गुरु मूरत तू धार हिये में।
मन के सँग क्यों फिरत निमानी[1]॥ ३ ॥
तेरा काज करें गुरु पूरे।
सुनले अनहद बानी॥ ४ ॥
करम भरम बस सब जग बौरा।
तू क्यों होत दिवानी॥ ५ ॥
सुरत सम्हार करो सतसंगत।
क्यों बिष अमृत सानी॥ ६ ॥

१ - हीन।

तेरा धाम अधर में प्यारी।
क्यों धर[1] संग बँधानी।। ७ ।।
जल्दी करो चढ़ो ऊँचे को।
राधास्वामी कहत बखानी।। ८ ।।

।। शब्द बीसवाँ।।

हंसनी छानो दूध और पानी।।टेक।।
छोड़ो नीर पियो पय[2] सारा।
निस दिन रहो अघानी।। १ ।।
जुक्ति जतन से घट में बैठो।
सूरत शब्द समानी।। २ ।।
खान पान निद्रा तज आलस।
सुन ले अधर कहानी।। ३ ।।
फिर औसर नहिं हाथ पड़ेगा।
भरमो चारों खानी।। ४ ।।
गुरु का कहना मान सखी री।
देत सिखापन[3] जानी।। ५ ।।
पाँचों इन्द्री उलटी तानो।
इच्छा मार भवानी[4]।। ६ ।।
मन को साध चढ़ो गगनापुर।
सुनो अनाहद बानी।। ७ ।।

१ - देह। २ - अमृत, दूध। ३ - शिक्षा। ४ - संसार में लाने वाली।

शोर होत तेरे घट के भीतर।
तू क्यों रहे अलसानी।। ८ ।।
राधास्वामी टेरत तो को।
कह कर अमृत बानी।। ९ ।।

।। शब्द इक्कीसवाँ।।

सुरत को साध, छबीली हो मगनी।
चदरिया धोय, अधर में जा रँगनी।। १ ।।
करम सब जार, लगा ले घर अगनी।
मान मद छोड़, दूर कर सब बिघनी।। २ ।।
सोवना छोड़, रैन का रहो जगनी।
गुरू यों कहें, बात ले मान करो लगनी।। ३ ।।
सरन में आय,
चरन उर धार सुनो सजनी।
कहें राधास्वामी,मानो आज,धरन धरनी[1]।। ४ ।।

।। शब्द बाईसवाँ।।

सुरत अब सार सम्हालो नाम।।टेक।।
चेत चलो तुम जग से अबके।
फिर औसर नहिं पाम[2]।। १ ।।
गुरु की भक्ति प्रेम चित धारो।
वही सुधारें काम।। २ ।।

१ - जो पिंड को धारण कर रही है यानी सुरत। २ - पावेगी।

नाम भेद दे सुरत चढ़ावें।
पहुँचावें निज धाम।। ३ ।।
तू सुख साथ सहज रस भोगे।
पावे फिर आराम।। ४ ।।
राधास्वामी कहें सुनाई।
सेत मिला और छूटा श्याम।। ५ ।।

।। शब्द तेईसवाँ।।

चमन[1] को चीन्ह री बुलबुल।
खिले जहँ बहुत से गुल गुल[2]।। १ ।।
गुरू सँग चल रहो हिल मिल।
चढ़ाओ सुरत मन मिल मिल।। २ ।।
लगाओ खैंच कर दिल दिल।
समाओ जोत में तिल तिल।। ३ ।।
सहसदल कँवल लख खिल खिल।
हटा कर देख दो सिलसिल[3]।। ४ ।।
झाँक वह घाट रहु खुल खुल।
उतर जा पार चढ़ पुल पुल।। ५ ।।
सुगन्धें महकतीं संदल[4]।
धुलें तब सुरत मन कलमल।। ६ ।।

१ - फुलवारी। २ - फूल। ३ - परदे। ४ - चन्दन।

हटे फिर काल की किलकिल[1]।
लगे तब शब्द में पिल पिल।। ७ ।।
छुटाई कर्म की दल्दल।
मिलो राधास्वामी से चल चल।। ८ ।।

।। शब्द चौबीसवाँ।।

धुन में अब सुरत लगाओ।
शब्दा रस पी त्रिप्ताओ।। १ ।।
इन्द्री सब घट उलटाओ।
मन फैला खैंच मिलाओ।। २ ।।
गुनना बिष छोड़ समाओ।
आलस तज शौक़ बढ़ाओ।। ३ ।।
लय होय न मन समझाओ।
बिक्षेप[2] बिघन यह दूर कराओ।। ४ ।।
इक शब्द पकड़ और सब बिसराओ।
यह मारग नित्त कमाओ।। ५ ।।
बिन सुरत शब्द कुछ और न गाओ।
मन रोको नभ पर धाओ।। ६ ।।
तिल पर भी सुरत जमाओ।
पिल कर दल सहस खुलाओ।। ७ ।।

१ - शोर। २ - बिघन अभ्यास के—लय, बिक्षेप, कषाय, रसास्वाद।

जहँ जोत निरंजन पाओ।
फिर शब्दहि शब्द समाओ।। ८ ।।
चढ़ बंकनाल में आओ।
गढ़ त्रिकुटी फ़तह कराओ।। ९ ।।
सुन में धस खेल खिलाओ।
व्हाँ का भी शब्द जगाओ।।१० ।।
महासुन्न निरखते जाओ।
फिर भँवरगुफा पर छाओ।।११ ।।
आगे सतलोक घुमाओ।
व्हाँ से भी अलख चढ़ाओ।।१२ ।।
फिर अगम देश धस जाओ।
राधास्वामी सँग मिल जाओ।।१३ ।।

।। शब्द पच्चीसवाँ।।

दुलहनी करो पिया का संग।।टेक ।।
दुलहा तेरा गगन बसेरा[१]।
तू बसे नइहर अंग।। १ ।।
गुरु के साथ चलो उस नगरी।
चढ़े प्रेम का रंग।। २ ।।
यह जोबन तेरा उतर जायगा।
फिर तू होगी तंग।। ३ ।।

१ - बसता है।

ता ते अभी सम्हारो मग को।
धारो ढंग उमंग।। ४ ।।
नाम रँगीला दुलहा तेरा।
उड़ो गगन जस चंग[१]।। ५ ।।
सूरत डोर बाँध दे गुरु से।
त्यागो सभी उचंग।। ६ ।।
पिय के द्वार तेरे नौबत झड़ती।
बिच बिच बजे मुँहचंग।। ७ ।।
राधास्वामी पता बताया।
चढ़ चल पकड़ तरंग।। ८ ।।

।। शब्द छब्बीसवाँ।।

घट में चढ़ खेल कबड्डी।
स्वान[२] ज्यों चूसे मत बिष हड्डी।। १ ।।
मार मन चढ़ो काल की चड्ढी[३]।
नाम गह पाला[४] छोड़ तिगड्डी[५]।। २ ।।
चलो घर चढ़ कर सूरत गड्डी[६]।
बनो तुम मीरी[७] हो मत फड्डी[८]।। ३ ।।
तरंगें रोको बाँधो गड्डी[९]।
उखाड़ो ममत पुरानी गड्डी[१०]।। ४ ।।

१ - पतंग। २ - कुत्ता। ३ - सवारी। ४ - हद।
५ - तीन गुनों का। ६ - गाड़ी। ७ - अव्वल।
८ - निकृष्ट। ९ - गठरी। १० - गाड़ी हुई।

पकड़ कर मूँड काल की डड्ढी।
बिषय सब त्यागो खा मत बड्डी[१]।। ५ ।।
सुरत मैं गुरु चरनन पर अड्डी[२]।
जक्त की सभी बासना कड्ढी[३]।। ६ ।।
राधास्वामी नाम चढ़ो यह सिड्ढी[४]।
काल की बात होय सब फिड्डी[५]।। ७ ।।

।। शब्द सत्ताईसवाँ।।

कोमल चित्त दया मन धारो।
परमारथ का खोज लगाना।। १ ।।
इन्द्री थान बिषय को त्यागो।
सुरत शब्द में नित्त लगाना।। २ ।।
सार पदारथ गुरु से पाओ।
चरन कँवल में प्रीत बढ़ाना।। ३ ।।
धारा अगम पकड़ स्रुत जोड़ो।
इस सतसँग में सदा समाना।। ४ ।।
चली सुरत नभ द्वारा झाँका।
अंडा तीन लोक दरसाना।। ५ ।।
परे जाय ब्रह्मंड समानी।
सुन्न सरोवर कँवल खिलाना।। ६ ।।

१ - रिश्वत। २ - जमाया। ३ - निकाला। ४ - सीढ़ी, जीना।
५ - फीकी।

अब तो काल कला सब हारा।
मानसरोवर बैठ अन्हाना।। ७ ।।
अक्षर रूप निरखती चाली।
छोड़ दिया अब देश बिगाना।। ८ ।।
सूरत साफ़ उड़ी ऊँचे को।
छूट गया सब महल पुराना।। ९ ।।
आगे चढ़ चढ़ अधर समानी।
शब्द शब्द का मर्म पिछाना।।१० ।।
संत बिना कोइ समझे नाहीं।
आगे जो जो भेद दिखाना।।११ ।।
कहने में आवे नहिं पूरा।
उलटा सुलटा करत बखाना।।१२ ।।
बाचक अपनी उक्ति लगावें।
अमल बिना नहिं बूझ बुझाना।।१३ ।।
संतन की गति संतहि जानें।
और कहो कैसे पहिचाना।।१४ ।।
अपनी उक्ति चतुरता त्यागो।
संत बचन को करो प्रमाना।।१५ ।।
वह कहते देखी निज अपनी।
तू सुन २ क्यों बुद्धि लड़ाना।।१६ ।।

राधास्वामी सब से कहते।
संत भेद कोइ भेदी जाना।।१७ ।।

।। शब्द अट्ठाईसवाँ।।

गुरु बचन कहें सो सुन रे।
अब सतसंग में चित धर रे।। १ ।।
तुझे नाम मिला है अजर रे।
तू सुरत सम्हार पकड़ रे।। २ ।।
गुरु खैंचें तोहि अधर रे।
उन के सँग बाँध कमर रे।। ३ ।।
तू फैला बहुत पसर[1] रे।
गुरु खोवें तेरी कसर रे।। ४ ।।
और मारें काल पकड़ रे।
फिर खोवें सभी अकड़[2] रे।। ५ ।।
तू सुरत लगा दे जकड़ रे।
तेरा मिटे चौरासी चकर रे।। ६ ।।
मन माला फेर सुमिर रे।
गुरु कुंजी हाथ पकड़ रे।। ७ ।।
ले अनहद शब्द ख़बर रे।
घट फोड़ो गगन अबर[3] रे।। ८ ।।
तू छोड़ बिरह के सर[4] रे।
सुन घोर मानसर चल रे।। ९ ।।

१ - फैलकर। २ - ऐंठ, अहंकार। ३ - बादल। ४ - तीर।

कर सुन्न शिखर पर घर रे।
धुन सुनता चल सतपुर रे।।१० ।।
फिर अलख अगम जा तर रे।
राधास्वामी धाम अमर रे।।११ ।।
यह आरत नितही कर रे।
गुरु करें दया तुझ पर रे।।१२ ।।

।। शब्द उन्तीसवाँ।।

सुरतिया गगन चढ़ाइलो मीत।
मिटाइलो सकल भरम भौ भीत[१]।। १ ।।
भवन[२] तज गइलो अधर मसीत[३]।
बाँग[४] सुन ध्याइलो अजर अजीत।। २ ।।
नाम रस पाइलो गुरु की नीत।
शब्द धुन गाइलो अचरज गीत।। ३ ।।
समाइलो मनुवाँ गह गुरु रीत।
लगाइलो घट में छिन छिन प्रीत।। ४ ।।
भगाइलो काल करम दल जीत।
मिटाइलो मन से भरम अनीत[५]।। ५ ।।
बजाइलो सुन में शब्द अतीत[६]।
मेहर से पाइलो संतन सीत[७]।। ६ ।।

१ - भय। २ - घर। ३ - मस्जिद। ४ - नमाज़ के लिये बुलाने की आवाज़। ५ - अन्याय। ६ - निरमाया। ७ - प्रसाद।

बसाइलो राधास्वामी सरन पुनीत[१]।
धारिलो नाम रसायन चीत।। ७ ।।

।। शब्द तीसवाँ।।

सुन री सखी चढ़ महल बिराज।
जहँ तेरे प्रीतम बैठे आज।। १ ।।
कर बिलास और जग से भाज।
तख़्त बैठ और कर व्हाँ राज।। २ ।।
हंसन का जहँ जुड़ा समाज।
तू उन मिल कर अपना काज।। ३ ।।
गुरु चरन पकड़ तज कुल की लाज।
मन दर्पन बहु बिधि कर माँज।। ४ ।।
सुरत निरत का लेकर छाज[२]।
छाँट फटक[३] डालो धुन नाज[४]।। ५ ।।
बड़े भाग पाया सब साज।
सतगुरु बख़्शा तख़्त और ताज[५]।। ६ ।।
तीन लोक का खुल गया पाज[६]।
चार लोक चढ़ भोगूँ राज।। ७ ।।
राधास्वामी दिया मोहिं यह दाज[७]।
अब मेरा होय न कभी अकाज।। ८ ।।

* * * * *

१ - पवित्र। २ - सूप। ३ - साफ़ करलो। ४ - अनाज। ५ - मुकुट। ६ - क़लई, मुलम्मा। ७ - जहेज़ यानी बख़्शिश।

।। बचन इक्कीसवाँ।।

।। हिदायतनामा[1] ।।

बीच बयान सुहबत और ख़िदमतगुज़ारी[2] मुर्शिद कामिल[3] के और शरह[4] दरजात फ़क़ीरी के और जिस में उपदेश शब्द के अभ्यास का और भेद शब्द मार्ग और उसके मुक़ामात का भी बर्णन किया है।

जिन लोगों को शौक़ मिलने मालिक कुल का है और तहक़ीक़ात मज़हब की मंज़ूर है कि कौन सा मज़हब सब से बाला[5] है और तरीक़[6] भी उसका बहुत सीधा चाहते हैं उन के वास्ते यह कलाम[7] कहा जाता है।

उनको चाहिये कि कुछ दुनिया की मुहब्बत कम करें याने ज़र[8] और ज़न[9] और औलाद की चाह तक़दीर[10] के हवाले करके अव्वल सुहबत फ़क़ीरों की मुक़द्दम[11] रक्खें। फ़क़ीरों में सुहबत उस

१ - उपदेश। २ - सेवा। ३ - पूरे सतगुरु। ४ - बयान। ५ - ऊँचा। ६ - रास्ता। ७ - बचन। ८ - धन। ९ - स्त्री। १० - प्रारब्ध। ११ - मुख्य।

फ़क़ीर की करें जो शाग़िल[१] शग़ल[२] सुल्तानुल्अज़कार[३] का होवे या शग़ल-नसीरा[४] करता होवे, यानी अनहद शब्द के मार्ग को जानता होवे और दृष्टि की साधना जिस ने करी होवे और मर्दुमक-चश्म[५] यानी दोनों तिलों को खींच कर शग़ल[२] की मदद से एक किया होवे और आवाज़े-आसमानी को सुनकर रूह को चढ़ाता होवे और जो ऐसा फ़क़ीर कम्याब[६] हो तो ज़िकरुल्क़लूब[७] पासे-अनफ़ास[८] वालों को तलाश करे, उन की सुहबत से भी सफ़ाई दिल और कमज़ोरी नफ़्से-अम्मारा[९] की होगी और कुछ लज्ज़त[१०] अंदरूनी[११] हासिल होगी लेकिन जो फ़ायदा कि रूह के चढ़ाने का है वह तो तरीक़ सुल्तानुल-अज़कार ही से हासिल होगा।

अब चाहिये कि ऐसे फ़क़ीर की ख़िदमत में जा कर उन से मुहब्बत पैदा

१ - अभ्यासी। २ - अभ्यास। ३ - सुरत शब्द योग। ४ - दृष्टि का साधन। ५ - आँख की पुतली। ६ - दुर्लभ। ७ - नाम की ज़रब दिल पर लगाना। ८ - स्वाँसा का अभ्यास। ९ - मलीन मन। १० - रस। ११ - अंतरी।

करो और उनकी ख़िदमत-गुज़ारी में चुस्त व चालाक रहो और तन से, मन से, धन से, ब-हर-सूरत उनको अपने ऊपर मेहरबान और मुतवज्जह कर लो और दर्शन उनका दिल और दीदा[१] से घंटे दो घंटे बराबर करते रहो यानी अपनी आँखों से उनकी आँखों को ताकते रहो और जिस क़दर ताक़त अपनी देखो पलक से पलक न लगाओ और इस कसरत[२] को रोज़ ज़्यादा करते रहो। जिस रोज़ और जिस वक़्त नज़र-मेहर-आलूद[३] उन की तुम पर पड़ेगी उसी दिन सफ़ाई दिल की फ़ौरन होगी और जब वह मेहर करके अपनी मौज व मरज़ी से शग़ल बाला[४] का उपदेश करें तो रूह तुम्हारी आवाज़े-आसमानी को पकड़ेगी और मुनासिब है कि तुम भी इस शग़ल को रोज़मर्रा बिला-नाग़ा[५] चार बार दो बार

१ - आँख। २ - अभ्यास, मश्क़। ३ - मेहर से भरी हुई दृष्टि । ४ - ऊपर बयान किये हुए। ५ - नित्त नेम से।

जिस क़दर फ़ुरसत मिले करते रहो और जो दिल तुम्हारा क़बूल न करे और वसवसा[१] और ख़दशा[२] और गुनावन बे-फ़ायदा उठावे तो फ़र्याद[३] मुर्शिद के आगे करो और फिर उसी शग़ल में मेहनत रक्खो। उनकी तवज्जह और तुम्हारी मेहनत से रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी होगी और जल्दी और इज़्तिराबी[४] करना नहीं, क्योंकि - ताजील कारे शयातीं बुवद[५] - आहिस्ता आहिस्ता हासिल होना मुफ़ीद पड़ेगा और जल्दी जो कुछ होगा वह क़ायम नहीं रहेगा क्योंकि वह शैतान की तरफ़ से होगा। जो मुर्शिद रहमान[६] की मदद से होगा, वह हमेशा क़ायम रहेगा। ज़ाहिर लवाज़मा[७] जो कुछ चाहिये सो मैं कह चुका अब बातिनी[८] हाल कि जो दरजे फ़क़ीरों को हासिल हैं उस को बयान करता हूँ।

१ - भरम। २ - चिंता। ३ - पुकार। ४ - बेचैनी। ५ - जल्दी शैतान का काम है। ६ - दयालु। ७ - सामान। ८ - अंतरी।

जिस वक़्त निगाह तुम्हारी दिमाग़[१] के भीतर उलट कर आसमान को देखेगी और रूह तुम्हारी जिस्म[२] को छोड़ कर ऊपर को चढ़ेगी तो तुम को आकाश नज़र पड़ेगा कि जिस में थाना सहस दल कँवल का है और हज़ारों पंखड़ियाँ उस की जुदा जुदा काम तीनों लोक का दे रही हैं। उसकी सैर को देख कर तुम बहुत ख़ुश होगे और तीन लोक के मालिक का दर्शन पाओगे। और बहुत से मज़हब इसी मुक़ाम को पाकर और इसी को मालिक-कुल गरदान कर[३] धोखा खा गये, और नूर और तजल्ली[४] इस जगह की देख कर तृप्त हो गये, आगे चलने का रास्ता बंद हो गया, मुर्शिद आगे का उन को न मिला, जो मुर्शिद मिलता तो आगे का रास्ता खुलता, सो इस से आगे का हाल सुनो।

इस आकाश के ऊपर एक दरवाज़ा

१ - मस्तक। २ - देह। ३ - मान कर। ४ - प्रकाश।

ऐसा बारीक और झीना है कि जैसे रौज़न[१] सुई के नाके का होता है। चाहिये कि उस रौज़न में अपनी रूह को प्रवेश करो[२] और आगे उस के बंकनाल, टेढ़ा रास्ता, कुछ दूर तक सीधा गया और फिर नीचा पड़ा और फिर ऊँचे को चढ़ा, उस नाल को पार करके दूसरे आसमान पर सुरत पहुँची।

उस आसमान पर एक मुक़ाम त्रिकुटी कि उस को मुसल्लसी[३] कहते हैं, लाख जोजन वसीअ[४] और लाख जोजन तवील[५] है। उस में लीला और तमाशे तरह-ब-तरह के हैं। शरह[६] उसकी कहाँ तक करूँ, मगर कुछ कहता हूँ कि हज़ार आफ़्ताब[७] और हज़ार माहताब[८] उस की रौशनी से ख़जिल[९] हैं और आवाज़ "ओं ओं" और "हू हू" और बादल की सी गरज बहुत सुहावनी आठ पहर होती रहती है। उस मुक़ाम को पा करके रूह को बहुत सरूर[१०]

१ - छिद्र। २ - धसाओ। ३ - त्रिकोन। ४ - चौड़ा। ५ - लम्बा। ६ - व्याख्या। ७ - सूरज। ८ - चन्द्रमा। ९ - लज्जित। १० - आनन्द।

हासिल होता है और रूह भी बहुत पाक और लतीफ[१] हो जाती है। आलमे रूहानी[२] की ख़बर उस जगह से पड़नी शुरू होती है। कोई दिन उस जगह की सैर करके फिर ऊपर चढ़ती है।

चढ़ते चढ़ते करोड़ जोजन ऊपर चढ़ कर तीसरा परदा फोड़ कर सुन्न में पहुँची कि जिस को फ़ुक़रा ने आलमे-लाहूत कहा है। उस की तारीफ़ क्या कहूँ, उस मुक़ाम पर रूहें बहुत बिलास करती हैं और रौशनी वहाँ की ऐसी है कि बारह बारह हिस्सा ज़्यादा रौशनी त्रिकुटी से मालूम पड़ती है। तालाबे-ज़ुलाली[३] व हौज़े-कौसरी[४] पुर-अज़-आबे-हयात[५] कि हिन्दी में उसको मानसरोवर कहते हैं, जा-ब-जा[६] मौजूद हैं और कितने ही गुलशन[७] और चमन[८] खिले हुए नज़र पड़ते हैं और अक्सर रूहें

१ - सूक्ष्म। २ - चैतन्य देश। ३ - निर्मल, साफ़। ४ - अमृत कुंड। ५ - अमृत से भरे हुए। ६ - जगह जगह, हर जगह, इधर उधर। ७ - फुलवारी। ८ - बाग़।

ब-सूरत-नाज़नीनाँ[१] मुक़ामाते मुख़्तलिफ़[२] पर रक्स[३] कर रही हैं व ग़िज़ाहाय लतीफ़ अज़-बस-शीरीं[४] व ख़ुशनुमा[५] तरोताज़ा तैयार हैं और नग़्महा[६] व तरानहा[७] हर जानिब[८] को हो रहे हैं। उस आनन्द व सरूर को रूह रसीदा[९] जानती है। कहने में आ नहीं सकता, और हर एक जगह झिरने आबे-हयात के जारी हैं याने अमी सरोवर भरे हैं, अमृत की धारा चल रही हैं। रौनक़[१०] और ज़ेबाइश[११] उस मुक़ाम की क्या कहूँ, हीरों के चबूतरे, पन्नों की क्यारियाँ, जवाहिरात के पौदे, लाल और चुन्नियाँ जड़े हुए नमूदार[१२] हो रहे हैं। मछलियाँ मुरस्सा[१३] उन तालाबों में पैर रही हैं। दम दम पर झलक दिखाती हैं। पल पल पर चमक उनकी दिल को पकड़ती है। आगे उसके अनन्त शीश महल बने हुए हैं और रूहें अपने अपने

१ - ख़ूबसूरत। २ - जुदा। ३ - नृत्य। ४ - उम्दा खाना और मिठाई। ५ - सुहावनी। ६ - राग। ७ - रागनी। ८ - तरफ़। ९ - पहुँची हुई। १० - शोभा। ११ - सजावट। १२ - दिखलाई देते हैं। १३ - जड़ाऊ।

मुक़ामों पर मुवाफ़िक़ हुक्म मालिक अपने के, मुक़ीम[१] हैं और कैफ़ियत और बिलास नये नये परस्पर देखती हैं और दिखाती हैं कि हिंदी में उन्हीं रूहों को हंस मंडली करके बयान किया है। नक़्शबंदी[२] उन मुक़ामों की देखने ही के ताल्लुक़ है। कुल कारख़ाना उस जगह का रूहानी है याने चेतन्य लतीफ़[३] — कसीफ़[४] और जड़ नहीं है — और वहाँ की रूहों में लताफ़त[५] और पाकी[६] अज़-बस[७] है, कसाफ़त[८] और मलीनता जिसमानी याने बदन की नहीं है, और शरह उस सैरगाह की फ़क़ीर जानते हैं। ज़्यादा खोलना उस का मुनासिब नहीं। मुद्दत कसीर[९] उस जगह रूह इस फ़क़ीर की ने सैर की, फिर मुरशिदों की हिदायत से आगे को चली।

चलते चलते पाँच अरब पछत्तर करोड़ जोजन ऊँची गई। आलमे-हाहूत[१०] का

१ - ठहरी। २ - चित्रकारी और बनावट। ३ - सूक्ष्म। ४ - स्थूल, नापाक। ५ - सूक्ष्मता। ६ - निर्मलता। ७ - बहुत। ८ - गंदगी। ९ - बहुत ज़्यादा। १० - महासुन्न।

नाका तोड़ा। उस आलम की सैर की। उस मुक़ाम का बयान क्या करूँ, दस नील तक ज़ुलमात याने अँधेरा है। गहराई उस तिमिर खंड की कहाँ तक वर्णन करूँ, खरब जोजन तक रूह नीचे उतर गई, और थाह उसकी हाथ न लगी, फिर उलट कर ऊपर चढ़ आई और जो निशाना कि मुर्शिदों ने बताया था, उसकी सुध लेकर उसी रास्ते पर चली और अंत लेना उस मुक़ाम का अनसब[1] न समझा आगे को बढ़ी। यह मैदान महासुन्न का है। इस जगह चार मुक़ाम निहायत गुप्त हैं और किसी संत ने खोले नहीं। उस जगह रूहें बे-शुमार जो कि मरदूद[2] दरबार सच्चे ख़ुदा की हैं, उन के बंदी-ख़ाने बने हुए हैं। अगरचे तकलीफ़ उन रूहों को उस जगह कुछ नहीं है, अपनी अपनी रौशनी में अपना अपना कारज करती रहती हैं लेकिन दर्शन

१ - मुनासिब। २ - निकाली हुई।

मालिक का उन को नसीब नहीं होता। दर्शन के न मिलने से अलबत्ता बे-कली है। मगर एक सूरत मुआफ़ी की उनके वास्ते भी मुक़र्रर रक्खी गई है कि जब जब संत उस रास्ते से गुज़र करते हैं और जो रूहें कि नीचे के लोकों में से संतों के वसीले से जाती हैं, जिन जिन रूहों को कि इत्तिफ़ाक़ उन संतों के दर्शनों का हो जावे, इन रूहों के ले जाने की जो ख़ुशी कि संतों को होती है और उस सच्चे ख़ुदा की निहायत मेहरबानी और अल्ताफ़[1] इन रूहों पर होता है, संत उन रूहों को बख़्शा कर फिर सच्चे ख़ुदा के पास बुलवा लेते हैं और हाल उस जगह का बहुत से बहुत है मगर कहाँ तक कहूँ।

उस मुक़ाम को छोड़ कर आलमे हूतलहूत में पहुँची कि जिस को हिंदी में भँवरगुफा कहते हैं कि वहाँ एक चक्कर कि जिस को हिंडोलना कहते हैं, ऐसा

१ - दया।

लतीफ़ फिर रहा है और रूहें उस जगह सदा झूलती रहती हैं और गिर्द उस के अनन्त दीप रूहानी बने हुए हैं और उन दीपों में से आवाज़ "सोहं सोहं" व सदाय[1] "अनाहू अनाहू" सदा उठ रही है और रूहें और हंस उन्हीं धुनों से हमेशा बिलास करते रहते हैं और जो जो सिफ़त[2] इस मुक़ाम पर और है वह ज्यों की त्यों लिखने में नहीं आती। देखने ही के ताल्लुक़ है। जब रूह इस मार्ग को कमाती कमाती पहुँचेगी, तब आप देख लेवेगी, इस वास्ते मुनासिब है कि इस तरीक़ की कमाई करे जाओ। यह शग़ले आवाज़ है। इस को मत छोड़ो। अब यहाँ की सैर देखकर रूह आगे को चढ़ी।

आकाश मार्ग होकर याने ऊँचे को चढ़ती चली जाती है, दूर से सुगंधें मलयागिर की और क़िस्म क़िस्म के इतरियात की सी लपटें चली आती हैं

१ - आवाज़। २ तारीफ़।

और धुनें बाँसरियों की अनंत सुनाई देती हैं। उनको सुनती और सूँघती हुई रूह याने सुरत आगे को चढ़ती चली जाती है। जब इस मैदान के पार पहुँची नाका सत्तलोक का हासिल हुआ कि वहाँ से आवाज़ "सत्त सत्त" और "हक़ हक़" बीन के बाजे में से निकलती सुनाई दी कि उस को सुन कर रूह मस्तानावार[१] धसी चली जाती है। और वहाँ नहरें सुनहरी और रुपहरी पुर-अज़-आबे-ज़ुलाल[२] दीखने लगीं और बाग़ बड़े बड़े नज़र आये। एक एक दरख़्त उसका करोड़ करोड़ जोजन की बुलंदी[३] रखता है और सूरज और चाँद करोड़ों बजाय फूल और फलों के लगे हुए हैं और अनेक रूहें और हंस उन दरख़्तों पर बजाय जानवरों के चहचहे और बिलास कर रहे हैं। अजब लीला उस मुक़ाम की है कि कहने में नहीं आ सकती। यह लीला देखती हुई रूह यानी

१ - मतवाली। २ - अमृत से भरी हुई। ३ - ऊँचाई।

सुरत सत्तलोक में दाख़िल हुई और सत्तपुरुष का दर्शन पाया।

अब सत्तपुरुष के स्वरुप का वर्णन करता हूँ कि एक एक रोम उस का इस क़दर मुनव्वर[१] है कि करोड़ों सूरज और चाँद शरमिंदा हैं। जब कि एक रोम की ऐसी सिफ़त है तो तमाम रोमों की क्या सिफ़त लिखने में आवे और जिस्म की तारीफ़ की कहाँ गुंजाइश, नैन नासिका और श्रवण मुख और हाथ और पाँव का क्या वर्णन करूँ, महज़[२] नूर[३] ही नूर है, नूर का समुद्र कहूँ तो नहीं बनता।

एक पदम पालंग घेर सत्तलोक का है और पालंग की शुमार यह है कि यह त्रिलोकी एक पालंग है। पस दराज़ी[४] और वसअत[५] सत्तलोक की किस क़दर बड़ी हुई कि क़यास[६] काम नहीं कर सकता, और रूहें पाक कि जिन को हंस

१ - रोशन, प्रकाशवान। । २ - बिलकुल। ३ - प्रकाश। ४ - लम्बाई। ५ - चौड़ाई। ६ - समझ, अनुमान।

कहते हैं, वहाँ बसती हैं और सत्तपुरुष का दर्शन करती हैं और नवाय[१] बीना जा-ब-जा सुन रही हैं व ग़िज़ाय[२] अमी हमेशा खाती रहती हैं।

इस मुक़ाम का भी बिलास देख कर रूह आगे को चली और अलख लोक में पहुँची। अलख पुरुष का दर्शन पाया। एक संख का घेर उस लोक का है और अरब खरब सूरजों का उजाला एक एक रोम में अलख पुरुष के है।

फिर वहाँ से ऊपर को चली। अगम लोक को पाया कि जिस का घेर महासंख पालंग का है और करोड़ संख की काया[३] अगम पुरुष की है और वहाँ के हंसों के रूप भी अद्भुत हैं और बिलास भी वहाँ के अचरज रूप हैं। इस जगह बहुत मुद्दत बिश्राम किया।

इस से आगे राधास्वामी यानी अनामी पुरुष का दीदार किया और उस में

१ - आवाज़। २ - आहार। ३ - जिस्म।

समाई। वह बे-इन्तिहा[१] और बे-शुमार और बे-अंत है और फ़क़ीरों का निज स्थान वही है। उस को पा करके सब संत चुप हो गये और मैं भी अब चुप होता हूँ।

इतनी बड़ी भारी गति फ़क़ीर और संत की है। और जो लोग कि पहिले ही मुक़ाम पर थक गये और उस को बे-इन्तहा[१] और बे-अन्त कहने लगे, पस उन के मुरीदों और सेवकों को कैसे इन मुक़ामात का निश्चय कराया जाय? सिवाय संत और फ़क़ीर कामिल के कोई नहीं जान सकता और यक़ीन भी इन मुक़ामों का उन्हीं को होगा कि जिन को संत और फ़क़ीर भेदी इन मुक़ामों के मिले होंगे। उनको इनके बचन पर एतक़ाद[२] होगा तो यक़ीन लावेंगे। यह मुक़ाम न पैग़म्बर साहिब पर खुले और न व्यास और वशिष्ठ को मालूम हुए, पस हिन्दू और मुसलमान कोई इसका

१ - अपार। २ - निश्चय।

यक़ीन कर नहीं सकता। उन को इस हाल का सुनाना भी ज़रूर नहीं क्योंकि वह पैग़म्बर और क़ुरान के पाबन्द हैं और हिन्दू व्यास बशिष्ट और वेद के क़ैदी हैं। इनसे यह बचन सुने भी नहीं जावेंगे।

इससे मुनासिब है कि जिस किसी को एतक़ाद फ़क़ीर और संत पर ऐसा है कि इन सब से आगे संत पहुँचे हैं और संतों की महिमा बहुत भारी है और ख़ुदा और परमेश्वर दोनों के पैदा करने वाले संत हैं और इनकी गति को वे दोनों नहीं जान सकते, ऐसा एतक़ाद संत और फ़क़ीर पर जिस किसी का है, उसको सुनाना और कहना इस हाल का फ़ायदा करेगा। इस वास्ते हर एक को यह सुनाना न चाहिये जब तक कि एतक़ाद उस का ऐसा परख न लिया जावे, जैसा कि ऊपर मैं ने बयान किया है।।

* * * * *

।। ग़ज़ल फ़ारसी व तरजुमा ।।

बीच बयान चढ़ने रूह के अर्श याने आसमान पर और पहुँचना मुक़ाम हूत यानी सत्तलोक और सैर मुक़ामात रास्ते के।

।। ग़ज़ल पहली ।।

मुर्शिदा आशिक़े दीदारे जमालत गश्तम।
दिल ख़स्ता व जाँ बाख़्ता,
अज़ ख़ुद रफ़्तम।।१ ।।
यक निगाहे तो मरा चाक गिरेबाँ करदा।
हम्चो मजनूँ पए लैला चे परेशाँ करदा।।२ ।।
दर्दमन्देम दिगर हेच न दरमाँ दारेम।
लुत्फ़े गुफ़्तारि जिगर,
रेश चो मरहम दारेम।।३ ।।
रुए ज़ेबाय तो तारे
दिले मन नूराँ कर्द।
मह व ख़ुरशैद हज़ाराँ
ब फ़लक ख़िजलाँ कर्द।।४ ।।
दौरे अफ़लाक चुनाँ
गरदिशे दौराँ करदा।
आशिक़ाँ रा ज़े क़दम्बोसिये
महबूब नुमायाँ करदा।।५ ।।

हिर्से दुनियाँ ज़े दरूनम
हमा बेरूँ गरदीद।
शौक़े दीदार दिलम रा
हमा सर पुर पेचीद।।६ ।।
मरहबा बख़्ते सफ़ेदम
क़दमे यार गिरिफ़्त।
रुहे मन शक़्क़े क़मर कर्दो
फलक़ रा बिगिरि्फ़्त।।७ ।।
नग़्महा नेक शुनीदम
व निदाहा वाफ़िर।
काबा बुतख़ाना व निज़्दम
शुदा हर दो काफ़िर।।८ ।।

।। तरजुमा ग़ज़ल पहिली।।

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ।
मन से बेज़ार सुरत वार के दीवाना हुआ।।१ ।।
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे बेहाल किया।
लैला के इश्क़ में मजनूँ सा परेशान किया।।२ ।।
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिं और इलाज।
मेरे दिल ज़ख़्म का मरहम
तेरी बोली है इलाज।।३ ।।

तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ।
सूरज और चाँद हज़ारों
हुए उस से ख़िजलाँ।।४।।
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर हुआ।
प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के
मशहूर हुआ।।५।।
हिर्स दुनियाँ की मेरे दिल से हुई है सब दूर।
तेरे दरशन की लगन मन में रही है भरपूर।।६।।
वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली।
चन्द्र मंडल को वहीं फोड़ के
गगना में पिली।।७।।
राग और रागनी मैं ने सुने अंतर जाकर।
मेरे नज़्दीक हुए हिन्दु मुसलमाँ काफ़िर।।८।।

।। ग़ज़ल दूसरी।।

अंदरूँ अर्श रफ़्ता दीदम नूर।
कुश्ता शैताँ व हम दमीदम सूर।।१।।
होशे तन रफ़्त रूह बाला शुद।
जा गिरिफ़्ता ब जा कि साबिक़ बूद।।२।।
दर्दमंदाने इश्क़े कूए वहीद।
मेकशम अज़ जमा बसूए फ़रीद।।३।।

हर्चे गोयम शुनो बगोशे तमीज़।
रूह रा कश रसाँ व सौते अज़ीज़।। ४ ।।
दर दिमाग़े तो गुलशनो मजलिस।
सैर कुन तेज़ रौ ज़े मुर्शिद पुर्स।। ५ ।।
चश्म बंदो व मर्दुमक दर कश।
बर फ़लक रौ कुशादा कुन तो दरश।। ६ ।।
अंदरूनश रवाँ चो रूह नमूद।
कुन तो सैरश निगर बहारे वजूद।। ७ ।।
दर वजूदत अजब तमाशाए।
आसमाँ ज़ेरो अर्ज़ बालाए।। ८ ।।
कज नए दाद राह रूहम रा।
दर रसीदम मुसल्लसी हर जा।। ९ ।।
शम्स दीदम बरंगे सुर्ख़ आँ जा।
खुर हज़ाराँ न हमसरत ज़ेबा।। १० ।।
मुलके लाहूत पेश अज़ाँ याबी।
सुन्न मेगोयंद ओरा दर हिन्दी।। ११ ।।
सौते आँजा निदा हमीं दारद।
हम् चो किंगरी व साराँगी आयद।। १२ ।।
हौज़े आबे ज़ुलाल दीदम पुर।
मेख़ुरंद आमिलाँ दराँजा दुर।। १३ ।।

चूँ गुज़श्तम ज़े आलमे लाहूत।
दर रसीदम ब आलमे हाहूत।।१४ ।।
हाले आँजा ब कै बुगोयम बाज़।
रूह रफ़ता हरकि दानद आँ आवाज़।।१५ ।।
सौते पोशीदा हस्त तर बारीक।
साख़्त राहश बक़ुदरते तारीक।।१६ ।।
मुरशिद हमराह शुद दराँ मैदाँ।
शुदा हैराँ बराय ओ शैताँ।।१७ ।।
रूह आँ जा गुज़ाश्त बाला रफ़्त।
सौत अनाहू शुनीद दीद गिरफ़्त।।१८ ।।
हूतल्हूत आलमे अजायब याफ़्त।
रूह रा अंदरूँ दरीचा ताख़्त।।१९ ।।
पस बिरफ़्तो रसीद आलमे हूत।
याफ़्त आबे हयात दम दम क़ूत।।२० ।।
पेश अज़ाँ हर्चे हस्त हस्ती हस्त।
लबे मन शुद ख़मोश बाहम बस्त।।२१ ।।
जुज़ फ़क़ीरे कसे न याफ़्त मुक़ाम।
राधास्वामी न गुफ़्त आँ रा नाम।।२२ ।।

* * * * *

।। तरजुमा ग़ज़ल दूसरी।।

अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर।
काल को मार कर मैं फूँका सूर।। १ ।।
देह की सुध गई जो सुर्त चढ़ी।
जाके बैठी जहाँ कि पहिले थी।। २ ।।
निज गली यार के जो आशिक़ हैं।
भीड़ से अब एकांत लाऊँ मैं।। ३ ।।
जो कहूँ मैं सो कान देके सुनो।
सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो।। ४ ।।
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग।
सैर कर जल्द ले गुरू का रंग।। ५ ।।
तान पुतली को आँख को मत खोल।
चढ़ के आकाश का दुआरा खोल।। ६ ।।
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार।
देह की सैर कर व देख बहार।। ७ ।।
अचरजी सैर है तेरे बीचे।
पिरथी ऊपर है आस्माँ नीचे।। ८ ।।
बंक नाल होके आगे सुर्त चली।
तिरकुटी पहुँच कर गुरू से मिली।। ९ ।।
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ।
सहस सूरज हैं उस के इक रोमूँ।।१० ।।

आगे चल सुर्त सुन्न में पहुँची।
धुन किंगरी व सारँगी की सुनी।।११ ।।
कुंड अमृत भरे नज़र आये।
हंस रूप होय मोती चुन खाये।।१२ ।।
सुन्न को छोड़ कर चली आगे।
पहुँची महासुन जहाँ सोहं जागे।।१३ ।।
हाल व्हाँ का मैं क्या कहूँ क्या है।
जानता है वही जो पहुँचा है।।१४ ।।
रास्ते में वहाँ अँधेरा है।
सतगुरू संगही निबेड़ा है।।१५ ।।
सतगुरू संग तै किया मैदाँ।
काल देख उनको हो गया हैराँ।।१६ ।।
सुर्त चढ़ कर गुफ़ा में पहुँची धाय।
धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय।।१७ ।।
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली।
खोल खिड़की को अंदरून चली।।१८ ।।
आगे चल सतलोक पहुँची धाय।
और अमी का अहार दम दम खाय।।१९ ।।
आगे इस के अलख अगम है मुक़ाम।
तिस परे हैगा राधास्वामी नाम।।२० ।।

यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम।
संत बिन कौन पा सके यह धाम।।२१ ।।
भेद सब इस जगह तमाम हुआ।
सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ।।२२ ।।

।। ग़ज़ल तीसरी।।

आशिक़म ज़ाते मुर्शिदे कामिल।
दिले मन शुद ब क़ौले शाँ माइल।। १ ।।
चूँ गिरिफ़्तम क़दम व खाक़े क़दम।
ज़ुल्मते दिल शुदा हमा ज़ाइल।। २ ।।
रूए ज़ेबा व क़द्दे सर्वे रवाँ।
नूर दर सीना नफ़्स रा क़ातिल।। ३ ।।
सोहबते मुर्शिदो कलामे रशीद।
कर्द दुनिया व दीन रा बातिल।। ४ ।।
राज़े पिनहाँ वजूद शुद ज़ाहिर।
याफ़्तम लुत्फ़ मुर्शिदे आमिल।। ५ ।।
रूहे मन चूँ गिरिफ़्त आवाज़े।
बर फ़लक दर रसीद शुद क़ाबिल।। ६ ।।
दीद नौरस बहार रफ़त् ख़िज़ाँ।
इल्में अर्शी बेयाफ़्त शुद फ़ाज़िल।। ७ ।।
कुल्फ़ते मौतो रंजे पैदाइश।
बर रुख़े हर दो परदा शुद हाइल।। ८ ।।

राज़े बातिन शुदा ब मन ज़ाहिर।
चूँ शुदम पेशे पीरे खुद साइल।। ९ ।।
जिस्मे ख़ाकी गुज़ाश्तम बिलफ़ेल।
शुदा शैताँ बराय मन काहिल।।१० ।।
रूह परवाज़ कर्द जानिबे अर्श।
फ़ेलो मफ़ऊल रफ़्त शुद फ़ाइल।।११ ।।
नज़रे मेहर कर्द मुर्शिदे मन।
हिज्र बुगुज़श्त मन शुदम वासिल।।१२ ।।
ज़ाहिदो मुत्तक़ी नमाज़ी पंज।
कस न दानद चुनाँ बजुज़ शाग़िल।।१३ ।।
रूबरू आमिलाने बातिन फ़हम।
आलिमाँ इल्मे ज़ाहिरी जाहिल।।१४ ।।
हमा दुनिया फ़ितादा दर शुबहात।
हर कि हादी न याफ़्त शुद नाक़िल।।१५ ।।
जुमला रा कर्द जिहल ज़ेरो ज़बर।
मुर्शिदे याफ़्त शुद हमा आक़िल।।१६ ।।
याफ़्ता राधास्वामी मेहरे फ़क़ीर।
हम शुदा लुत्फ़े एज़िदी शामिल।।१७ ।।

* * * * *

।। तरजुमा ग़ज़ल तीसरी।।

निज रूप पूरे सतगुरू का
प्रेम मन में छा रहा।
बचन अमृत धार उनके
सुन अमी में न्हा रहा।। १ ।।
जब से चरनों में लगा
और धूर चरनों की लई।
मन के अंतर का अँधेरा
मैल सब जाता रहा।। २ ।।
मुखड़ा सुहावन क़द्द सीधा
चाल अति शोभा भरी।
तेज रोशन सीने अंदर
मन को घायल कर रहा।। ३ ।।
जो किया सतसंग सतगुरु
और बचन पूरे सुने।
दीन दुनिया झूठी लागी
और न उनका ग़म रहा।। ४ ।।
पिंड का सब भेद पोशीदा
मुझे ज़ाहिर हुआ।
मेहर से पूरे गुरू के
काम मेरा बन रहा।। ५ ।।

सुर्त ने जब धुन को पकड़ा
आस्माँ पर चढ़ गई।
हो गई क़ाबिल वहाँ पर
फिर न कोई ग़म रहा।। ६ ।।

।। वज़न २।।

सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई।
नभ पै पहुँची व जानकार हुई।। ७ ।।
देखी व्हाँ पर अजब नवीन बहार।
और अनुभव जगा हुई सरशार।। ८ ।।
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात।
हो गई दूर और गई आफ़ात।। ९ ।।
भेद अंतर का मुझ पै हाल खुला।
जब कि सतगुरु से मैं सवाल किया।। १० ।।
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया।
काल भी थक के मुझ से बाज़ रहा।। ११ ।।
सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार।
कर्म कारज गये हुई करतार।। १२ ।।
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा।
पद से जाकर मिली बियोग गया।। १३ ।।
करमी शरई नमाज़ी क्या जानें।
भेद अभ्यासी आप पहिचानें।। १४ ।।

विद्यावान सब रहे मूरख।
अंतरी भेद को न जानें कुछ।।१५ ।।
संशय में सब जगत रहा कूड़ा।
रहा बाचक न पाया गुरु पूरा।।१६ ।।
पाये सतगुरु उसी का जागा भाग।
बाक़ी बाद और बिबाद में रहे लाग।।१७ ।।
राधास्वामी गुरू ने की किरपा।
भाग जागा है मेरा अब धुर का।।१८ ।।

* * * * * * *
* * * * *
* * *
*

राधास्वामी मत की

पुस्तकों का सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

गद्य (हिन्दी)

२०) जुगत प्रकाश
२१) सार उपदेश
२२) प्रेम उपदेश
२३) राधास्वामी मत संदेश
२४) राधास्वामी मत उपदेश
२५) निज उपदेश
२६) प्रश्नोत्तर सन्त मत
२७) छाँटे हुये बचन महात्माओं के
२८) गुरु उपदेश
२९) बचन महाराज साहब
३०) बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग
३१) बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग
३२) बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग
३३) बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग
३४) जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज
३५) जीवन चरित्र, हुज़ूर महाराज
३६) जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज
३७) शब्द कोश संत मत बानी
३८) लोक-परलोक हितकारी
३९) मौलाना रूम के दृष्टान्त और
औलियाओं की कथाएँ
४०) समाध पुस्तिका

Books In English

४१) राधास्वामी मत प्रकाश
Radhasoami Mat Prakash

४२) डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ
Discourse On Radhasoami Faith

४३) फेलप्स साहब के नोट्स
Phelp's Notes

४४) ए सोलेस टू सतसंगीज़
A Solace to Satsangis

राधास्वामी सहाय

सार बचन राधास्वामी

नज़्म यानी छंद बंद

दूसरा भाग

* *

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

* *

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

सार बचन राधास्वामी
नज़्म यानी छंद बंद

दूसरा भाग

जिसको कि
परम पुरुष पूरन धनी स्वामी जी महाराज ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

उन्नीसवीं बार) (1500 प्रतियाँ

(विशेष द्वि-शताब्दी संस्करण)

3 सितंबर 2018

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

पहली बार	सन् 1884	2000 प्रतियाँ
अठारहवीं बार	सन् 2014	2000 प्रतियाँ
उन्नीसवीं बार)	सन् 2018	(1500 प्रतियाँ

(विशेष द्वि-शताब्दी संस्करण)

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912

मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

राधास्वामी सहाय

सूचीपत्र सार बचन छंद बंद दूसरा भाग

शब्द की टेक			सफ़ा

शब्द की टेक			सफ़ा

सूचीपत्र बचनों का

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय
सार बचन राधास्वामी
नज़्म यानी छन्द बन्द
दूसरा भाग
।। बचन बाईसवाँ ।।
भेद काल मत और दयाल मत का और वर्णन हाल भूल भरम संसारियों का
।। पहला शब्द।।

चार खान चौपड़ जग रची।
अन्ड[1] जेर[2] सेदज[3] उदभिजी[4] ।। १ ।।
माया ब्रह्म पुरुष पिरकिरती।
मन इच्छा खेलें शिव शक्ती।। २ ।।
सुरत नर्द[5] ता में बहु पची।
धूम खेल की अति कर मची।। ३ ।।
तीन गुनन का पासा लीन्ह।
रजगुन तमगुन सतगुन चीन्ह।। ४ ।।

---

१ - अन्डज यानी जो अन्डे से पैदा होते हैं। २ -जेरज यानी जो झिल्ली से पैदा होते हैं। ३ -स्वेदज यानी जो पसीने से पैदा होते हैं। ४ -उद्‌भिज यानी जो मिट्टी या खान से पैदा होते हैं। ५ -गोट।

कर्म हाथ से पासे डारे।
भोग अंक ता में बिस्तारे।। ५ ।।
झूँठी बाज़ी जानी सच्ची।
कोइ पक्की कोई मारे कच्ची।। ६ ।।
नर्द सुरत चौरासी घर में।
भरमत फिरे दुक्ख और सुख में।। ७ ।।
हारे ब्रह्म और जीती माया।
जीव नर्द बहु विधि दुख पाया।। ८ ।।
कभि कभि ब्रह्म जीत जो होई।
नर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई।। ९ ।।
चौपड़ से बाहर नहिं होई।
निज घर अपना पाये न कोई।।१० ।।
माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई।
खेलें इन नरदन से सोई।।११ ।।
भरमे नर्द पिटे और कुटे।
दुख उनका कोई नहिं सुने।।१२ ।।
सभी नर्द पछतावें दम दम।
कैसे छूटें इन से अब हम।।१३ ।।
करें फ़र्याद दाद[१] नहिं पावें।
रोवें झीखें और चिल्लावें।।१४ ।।

१ - इनसाफ़।

बार बार भरमें चौरासी।
कोई न काटे उनकी फाँसी।।१५ ।।
श्रुति सिमृत और वेद पुरान।
सबही मारें इनकी जान।। १६।।
माया काल बिछाया जाल।
अपने स्वारथ करें बेहाल[१]।।१७ ।।
कोई गोट न जावे घर को।
य्हाँ ही खेल खिलावें सब को।।१८ ।।
सत्त पुरुष देखा यह हाल।
काल हुआ जीवन का काल।।१९ ।।
अपने स्वाद जीव भरमावे।
पता हमारा काहु न बतावे।।२० ।।
पुरुष दयाल दया उमगाई।
संत रूप धर जग में आई।।२१ ।।
नर्दन को बहु विधि समझाया।
काल निर्दई तुम को खाया।।२२ ।।
अब मैं कहूँ करो तुम सोई।
जाल जाल[२] कर न्यारे होई।।२३ ।।
सतगुरु संग बाँध जुग चलो।
चोट न खाव काल बल दलो।।२४ ।।

१ - परेशान, दुखी। २ - जला।

यह घर काल बसाया आन।
तुम को लाया हमसे माँग।।२५ ।।

।। दोहा।।

यह तो घर है काल का, घर अपना मत जान।
निश्चय करके मानियो, जो अब करूँ बखान।।२६।।

निज घर तुम्हरा हमरे देश।
अब मैं कहूँ देश संदेश।।२७ ।।
सत्तनाम सतपुरुष कहाई।
चौथा लोक संत कहें भाई।।२८ ।।
ता के परे अलखपुर बसा।
संत सुरत बिन कोई न धसा।।२९ ।।
अगम लोक रचना तिस परे।
बिन वहाँ पहुँचे काज न सरे[१]।।३० ।।
आगे ता के निज घर जान।
राधास्वामी धाम पिछान।।३१ ।।
इन लोकन की शोभा भारी।
देखे सो जिन जुक्ति सम्हारी।।३२ ।।
अब जुक्ती का भेद सुनाऊँ।
सुरत शब्द की राह लखाऊँ।।३३ ।।

१ - बने।

मन इन्द्री उल्टो घट माहीं।
सुरत निरत दोउ नैन जमाई।।३४ ।।
सहस कँवल चढ़ त्रिकुटी आओ।
सुन्न के परे महासुन पाओ।।३५ ।।
भँवरगुफा सतलोक निहारो।
अलख अगम के पार सिधारो।।३६ ।।
राधास्वामी कही बनाय।
चौपड़ खेली अद्भुत आय।।३७ ।।
पौ पर बाज़ी अटकी आय।
गुरु बिन पौ का दाव न पाय।।३८ ।।
संत सतगुरू जो जन पाय।
चौपड़ से बाहर हो जाय।। ३९।।
निज घर अपने जाय समाय।
राधास्वामी दर्शन पाय।। ४०।।

।। दूसरा शब्द।।

सुरत बुन्द सत सिंध तज।
आई दसवें द्वार।। १ ।।
व्हाँ से उतरी पिंड में।
बसी आय नौ वार।। २ ।।

मन इन्द्री सम्बन्ध कर।
पड़ी जगत की लार[१]।। ३ ।।
जन्म जन्म दुख में रही।
बही चौरासी धार।। ४ ।।
सुध भूली घर आदि की।
सत्तपुरुष दरबार।। ५ ।।
नर देही जब जब मिली।
किया न सतगुरु प्यार।। ६ ।।
संशय रोग भरमत रही।
क्यों कर उतरे पार।। ७ ।।
सतगुरु संत दया करी।
आये धर औतार।। ८ ।।
बहु विधि अब समझावहीं।
मारग शब्द पुकार।। ९ ।।
काल बिछाया जाल अस।
गुप्त किया मत सार।। १० ।।
करम भरम पाखंड का।
कीन्हा बहुत पसार।। ११ ।।
विद्या रस ज्ञानी ठगे।
बाचक अति अहंकार।। १२ ।।

१ - संग।

जड़ चेतन ग्रन्थी[1] बँधे।
थोथा[2] करें विचार।।१३ ।।
सुरत शब्द की राह को।
करें न अंगीकार।।१४ ।।
मन बैरी धोखा दिया।
तजे न मूल विकार।।१५ ।।
इन की संगत मत करो।
यह मारें घेरा डार।।१६ ।।
खोजी कोइ कोइ होयगा।
बादी[3] सब संसार।।१७ ।।
रोज़गारी भेखी सभी।
मानी मान अधार।।१८ ।।
रा धा स्वा मी गाइया।
इन से रहो हुशियार।।१९ ।।
संत सरन दृढ़ कर गहो।
काल बड़ा बरियार[4]।।२० ।।
सुरत न पावे शब्द रस।
तब लग रहे ख़ुवार[5]।।२१ ।।
ता ते सतगुरु संग कर।
पहुँचो निज घर बार।।२२ ।।

* * * * *

१ - गाँठ। २ - ख़ाली। ३ - झगड़ा करने वाले। ४ - बलवान। ५ - ज़लील।

।। तीसरा शब्द ।।

काल मत जग में फैला भाई।
द्याल मत भेद न काहू पाई।। १ ।।
वेद पुरान शास्त्र और सिमृत।
इन सब रूँधा[१] मारग आई।। २ ।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ती।
दस औतार जाल फैलाई।। ३ ।।
ज्ञानी जोगी और सन्यासी।
ब्रह्मचार तपसी भरमाई।। ४ ।।
कहा कहूँ सारा जग भूला
कोइ बिरले संत जनाई।। ५ ।।
पंडित भेख टेक में भूले।
सब भौ धार बहाई।। ६ ।।
साहेब कबीर और तुलसी साहेब।
द्याल मता इन आन चलाई।। ७ ।।
राधास्वामी खोल सुनाई।
मैं भी इन सँग मेल मिलाई।। ८ ।।

* * * * *

१ - बंद किया।

।।चौथा शब्द।।

इक पुरुष अजायब पाया।
कोइ मर्म न उसका गाया।। १ ।।
बिन संत हाथ नहिं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया।। २ ।।
क्या व्यास वशिष्ठ भुलाया।
क्या शेष महेश भ्रमाया।। ३ ।।
पारासर जोगी नारद।
श्रृंगी ऋषि ग़ोता खाया।। ४ ।।
हम कहें कौन समझाई।
परतीत न कोई लाया।। ५ ।।
संतन यह भाख सुनाया।
कोइ गुरुमुख बूझ बुझाया।। ६ ।।
घट घट में काल समाया।
श्रुति सिमृत जाल बिछाया।। ७ ।।
खट शास्तर बुद्धि चलाया।
अंधे मिल धूल उड़ाया।। ८ ।।
कुछ हाथ न उनके आया।
बिन सतगुरु भटका खाया।। ९ ।।
संतन वह देश जनाया।
तब तुच्छ जीव भी पाया।।१० ।।

नीचों को घाट लगाया।
उँचों को काल बहाया।।११ ।।
राधास्वामी पता बताया।
खोजी की कमर बँधाया।।१२ ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

मैं कहूँ कौन से भाई।
कोइ मेली नज़र न आई।। १ ।।
जो बात संत बतलाई।
काहू से मेल न खाई।। २ ।।
तिरलोकी सभी सुनाई।
चौथे का मर्म न गाई।। ३ ।।
जिस चौथा लोक जनाई।
सो अचरज करते भाई।। ४ ।।
कोई माने न बहुत मनाई।
अब क्यों कर करूँ लखाई।। ५ ।।
मैं समझ यही चित लाई।
बिन मेहर न सरधा आई।। ६ ।।
जो सतगुरु होयँ सहाई।
तो सभी बात बन आई।। ७ ।।

ता ते यह गिनत[1] मिटाई।
राधास्वामी चुप्प रहाई।। ८ ।।

।। छठा शब्द ।।

कहूँ अब गोपी कृष्ण विहार[2] ।।टेक ।।
मन है कृष्ण इन्द्रियाँ गोपी।
लीला भोग विकार।। १ ।।
कामादिक सब ग्वाल बाल सँग।
बिन्द्राबन तन करत खिलार।। २ ।।
नंद अनंद रूप पित अपना।
छोड़ तिरकुटी द्वार।। ३ ।।
नाद धाम तज जगत सम्हारा।
आय फँसा नौ वार।। ४ ।।
कंस रूप अज्ञान निशाचर[3]।
पड़ गया इस मन लार।। ५ ।।
नाद ज्ञान ले करी चढ़ाई।
मारा कंस गँवार।। ६ ।।
राधा सुरत मिली जिस मन को।
वही कृष्ण पहुँचा दस द्वार।। ७ ।।

१ - ख़याल। २ - खेल। ३ - राक्षस।

आगे का गुरु मिला न उसको।
रहा काल के जार[१]।। ८ ।।
यह दोउ लीला कृष्ण सम्हारी।
कभी नौ में और कभी दस द्वार।। ९ ।।
संत धाम इन भेद न पाया।
काल हुआ यह कृष्ण मुरार।।१० ।।
ता ते संतन वर्ण सुनाया।
कृष्ण काल दोउ एक विचार।। ११ ।।
जब लग सुरत न पावे सतपुर।
रहे काल के वार[२]।।१२ ।।
ता ते सतगुरु कहत जनाई।
छोड़ो कृष्ण दुआर।।१३ ।।
आगे चलो संत मत परखो।
जाकी ऊँची धार।।१४ ।।
चौथा लोक संत गुहरावें।
सत्त नाम पद सार।।१५ ।।
सुरत शब्द का मारग धारो।
पहुँचो निज घर बार।।१६ ।।
रा धा स्वा मी कहत बुझाई।
त्यागो कृष्ण लबार[३]।।१७ ।।

१ - जाल। २ - द्वार। दख़ल। ३ - झूठा।

यही हाल तुम राम विचारो।
दोनों हैं इकतार[1]।।१८ ।।
राम कृष्ण दोउ जग में आये।
काल धरे औतार।।१९ ।।
वही रावन को मार राम ने।
सीता सुमत सुधार।।२० ।।
आय अजुध्या तन के भीतर।
राज लिया दस द्वार।।२१ ।।
पहिले विपता बहुतक भोगी।
जब लग चढ़े न त्रिकुटी पार।।२२ ।।
संत मता इनहूँ नहिं जाना।
रहे काल के गार[2]।।२३ ।।
राधास्वामी कह समझावें।
कृष्ण राम दोनों तज डार।।२४ ।।
दस औतार काल के जानो।
सब ही से तुम गहो किनार[3]।।२५ ।।
चौथा पद जो संत बतावें।
सुरत शब्द ले उतरो पार।।२६ ।।

* * * * *

१ - एक से। २ - मुँह। ३ - अलेहदगी।

।।सातवाँ शब्द।।

देखो गगन के बीच, श्याम कंज खिल रहा।
भँवरा गया लुभाय, वहीं चढ़ के मिल रहा।।१।।
धोखे का वह मुक़ाम, उसे देखता रहा।
बहु सिद्ध नाथ जोगी, उन्हें पेखता[1] रहा।।२।।
काल अपना जाल एक, जुदा ही बिछा रहा।
जो जो गये वहाँ, उन्हें उलटावता रहा।।३।।
नाना कला[2] दिखाय, वहीं मोहता रहा।
सब की कमाई आप, खड़ा खोसता[3] रहा।।४।।
क्या क्या कहूँ, अनर्थ बहुत भाँति कर रहा।
बिन संत सतगुरू, वह सभी को निगल रहा।।५।।
आगे न कोइ जाय, इसी में भुला रहा।
माया का झूला डाल, मुनन को झुला रहा।।६।।
द्वारे के पार काहु को, जाने न दे रहा।
फिर भेद व्हाँ के पार का,सबही ढका रहा।।७।।
क्या शेष क्या महेश, सभी हार कर रहा।
बिन संत उसके पार, कोई भी न जा रहा।।८।।
सो भेद राधास्वामी, सभी को सुना रहा।
जिस पर है मेहर उनकी, वह परतीत ला रहा।।९।।

१ - देखता। २ - लीला। ३ - छीनता।

।।आठवाँ शब्द।।

पिया बिन प्यारी कैसे होय निबाह।।टेक।।

तू तो अचेत फिरे बौरानी।
कस पावे सच शाह।।१।।
जगत भाड़ में क्यों तू भुनती।
पावे निस दिन दाह[1]।।२।।
छोड़ उपाधि करो सत संगत।
ले सत गुरु से राह।।३।।
इन्द्री भोग बिसारो मन से।
छोड़ो सब की चाह।।४।।
चेतन रूप विचारो अपना।
फिर लगो शब्द घट आय।।५।।
कहना मान पियारी मेरा।
अब तैं पाया दाव।।६।।
अब के चूके ठौर न पइहो।
रहो बहुत पछताय।।७।।
ता ते पहिले सोधो[2] आपा।
फिर सतनाम समाय।।८।।
राह रकाना[3] गुरु से लेना।
सरन पड़ो उन जाय।।९।।

१ - जलन। २ - साफ़ करो। ३ - तरकीब।

बिन सरना उन काज न सरिहै।
ठग सँग काहे ठगाय।।१० ।।
पंडित भेख देह अभिमानी।
जग सँग रहे गठियाय[1]।।११ ।।
करम भरम संग हुए बावरे।
तीरथ बरत पचाय।।१२ ।।
गंगा जमना मूरत मंदिर।
माला तिलक लगाय।।१३ ।।
जप तप संजम और अचारा।
जाति बरन लिपटाय।।१४ ।।
शिखा[2] सूत[3] और धोती पोथी।
नेम धरम अटकाय।।१५ ।।
चौका दे दे करें रसोई।
कच्ची पक्की छूत लगाय।।१६ ।।
पानी साथ शुद्धता मानें।
नाम महातम चित न समाय।।१७ ।।
चौके बैठे मछली खावें।
भक्तन साथ उपाधि लगाय।।१८ ।।
विद्या पढ़ पढ़ मानी होवें।
पत्थर पानी जगत पुजाय।।१९ ।।

१ - गठ रहे। २ - चोटी। ३ - जनेऊ।

दान पुन्य की महिमा गावें।
देवी देवा रहे भुलाय।।२० ।।
मथुरा काशी गया द्वारका।
पित्तर पूजा दाग़ दग़ाय[1]।।२१ ।।
चार धाम[2] पृथ्वी परिकर्मा।
धूर फाँक फिर घर को आय।।२२ ।।
करम चढ़ाये भरम भुलाये।
दुख भोगे कुछ लाभ न पाय।।२३ ।।
जड़ बुद्धी अभिमानी भारी[3]।
सतसँग बचन न चित ठहराय।।२४ ।।
गंगा जमना पाप कटावें।
गोबर बछिया मूत पिलाय।।२५ ।।
पशू होय पशुवन को पूजें।
पीपल तुलसी पेड़ लगाय।।२६ ।।
नर देही की सार न जानें।
चौरासी में ग़ोता खाय।।२७ ।।
संत सीत[4] और गुरु परशादी।
चरनामृत को दोष लगाय।।२८ ।।
ऐसे मूरख भटका खावें।
तुम उन संग करो मत भाय[5]।।२९ ।।

१ - बदन पर गरम लोहे से द्वारका में दाग़ लगवाना। २ - जगन्नाथ, बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम। ३ - बढ़के। ४ - परशादी। ५ - भाव, प्रीत।

कथा पुरान सुनावत डोलें।
जिवका कारन भटका खाय।।३० ।।
जीव अकाज न सोचें कबही।
मान लोभ में रहे लिपटाय।।३१ ।।
सुनत सुनावत मरम न पावत।
अहंकार में रहे भुलाय।।३२ ।।
भक्ति भाव की सार न जानत।
जगत ठगौरी[1] निस दिन खाय।।३३ ।।
माया जाल बिछाया भारी।
ऋषी मुनी सब धर धर खाय।।३४ ।।
दस औतार जती और जोगी।
पंडित ज्ञानी रहे पछताय।।३५ ।।
संत मते की सार न जानें।
काल मते में अवधि[2] बिहाय[3]।।३६ ।।
सतगुरु बिन सब धोखा खावें।
निज घर अपने कोई न जाय।।३७ ।।
जगत जाल में रहे फँसाई।
बार बार चौरासी धाय।।३८ ।।
सुरत शब्द मारग अति सूधा।
ता का मरम न कोई पाय।।३९ ।।

१ - धोखा। २ - अवस्था, उमर। ३ - बिताया।

ऐसी भूल पड़ी जग माहीं।
हम किस किस को कहें बुझाय।।४० ।।
जो जो संत सरन में आवें।
सो सो पावें घर की राह।।४१ ।।
अब आरत सतगुरु की करहूँ।
बहुत कहा यह झगड़ा गाय।।४२ ।।
सुरत चढ़ाय चलूँ नभ ऊपर।
सहसकँवल में बैठूँ जाय।।४३ ।।
वहाँ से बंक तिरकुटी छेदूँ।
सुन्न शिखर में आसन लाय।।४४ ।।
महासुन्न और भँवरगुफा पर।
सत्तलोक में पहुँची धाय।।४५ ।।
अलख अगम के पार सिधारी।
वहाँ आरती कीन्ही जाय।।४६ ।।
प्रेम ख़ज़ाना मिला अपारा।
राधास्वामी लिये रिझाय।।४७ ।।

।।नवाँ शब्द।।

मैं भूली सतगुरु स्वामी।
मैं चूकी अंतरजामी।। १ ।।

क्या क्या कहूँ बिथा[1] बखानी।
सब जग को पंडियन कीन्ह दिवानी।। २ ।।
ब्राह्मण और भेखन बहु भरमानी।
ऊभट[2] में पड़े भटक भटकानी।। ३ ।।
मारग जो सीधा दीन्ह छिपानी।
तीरथ और बरतन माहिं भुलानी।। ४ ।।
गया गायत्री राह खुलानी।
यह कर्म प्रवृत्ति[3] करें करानी।। ५ ।।
उलटे गिर भौजल ग़ोता खानी।
यह साधन पिछले हुए पुरानी।। ६ ।।
श्रुति सिमृत व्यास आदिक करें बखानी।
यह साधन मुक्ति निमित्त न जानी।। ७ ।।
निरवृत्ति[4] साधन यों कह गानी।
कलजुग में इक नाम निशानी।। ८ ।।
सतगुरु सेवा सतसँग ठानी।
अब निरवृत्ती पर जिन मन मानी।। ९ ।।
तिन जीवन प्रति कहूँ बुझानी।
सतगुरु पूरा खोज खुजानी।। १० ।।
जब लग पूरा मिले न मिलानी।
तब लग खोजत रहे जहानी।। ११ ।।

१ - विपत्ति। २ - बुरी राह। ३ - संसार में फँसानेवाले।
४ - संसार से छुड़ाने वाले।

खोजन में जो दिवस बितानी।
वह साधन में वृथा न जानी।।१२ ।।
सतगुरु पूरे जभी भिटानी[1]।
प्रेम प्रीत से सेवा आनी[2]।।१३ ।।
तब वह भेद नाम दें दानी।
नाम जुक्ति तुम रहो कमानी।।१४ ।।
नाम प्रताप मुक्ति गति पानी।
बिना नाम नहिं ठौर ठिकानी।।१५ ।।
कलजुग में बिन नाम निशानी।
मुक्ति न होगी निश्चय ठानी।।१६ ।।
करमी धरमी जोगी ज्ञानी।
यह सब पिल रहे मन की घानी।।१७ ।।
सतगुरु संत मिले नहिं आनी।
भूले पढ़ पढ़ पिछली बानी।।१८ ।।
सब से करी काल ठग हानी।
संत बिना कोइ बचे न बचानी।।१९ ।।
बिरले संत नाम गति गानी।
चौथे लोक चढ़ पता जनानी।।२० ।।
राधास्वामी कहा भेद सब छानी।
उनकी दया से महुँ[3] पुनि जानी।।२१ ।।

१ - भेटें यानी मिलें। २ - करो। ३ - मैं।

भर्म मिटा भइ नाम दिवानी।
आरत उन की सजूँ सजानी।।२२ ।।

।। दसवाँ शब्द ।।

धोखे में सब जग जात पचा।।टेक।।
अपनी अपनी बुधि दौड़ावें।
सार भेद नहिं हाथ लगा।। १ ।।
कहाँ कहाँ की बरन सुनाऊँ।
साहेब सच्चा काहु न मिला।। २ ।।
बुधि चतुराई सबहिन कीन्ही।
थकी बुद्धि तब हार रहा।। ३ ।।
दसअष्टी[१] कुछ और बखानें।
छः शास्तर कुछ और कहा।। ४ ।।
चार वेद मिल नेति पुकारें।
संत बिना कोइ नाहिं कहा।। ५ ।।
सुरत चढ़ाय शब्द सँग पहुँचे।
अगम देश में राज किया।। ६ ।।
तिन का बचन न कोई माने।
मूरखता में बहक गया।। ७ ।।
बिन मिलाप सतगुरु पूरे के।
जन्म जुए में हार दिया।। ८ ।।

१ - अट्ठारह पुरान।

हिरसी जीव मिले बहुतेरे।
उन से कहो क्या काज सरा।। ९ ।।
मेहनत करें न मन को मारें।
कैसे छूटे जाल बड़ा।।१० ।।
काल शिकारी सिर पर ठाढ़ा।
जीव अनाड़ी फाँस फँसा।।११ ।।
राधास्वामी कहत विचारी।
बिना सरन अब कौन बचा।।१२ ।।

।। ग्याहरवाँ शब्द ।।

सुन गुरु बचन कहें जो तुझ से।
कर परतीत मान हित चित से।। १ ।।
चौथा लोक बतावें सतगुरु।
तीन लोक भाखें सब ही गुरु।। २ ।।
वेद पुरान सिमृत और शास्तर।
सबही मिल भाखें चौदह पुर।। ३ ।।
उन के बचन सभी मिल मानें।
कर परतीत झूठ नहिं जानें।। ४ ।।
प्रत्यक्ष तो दो लोक दिखावें।
और लोक सुन सुन सब गावें।। ५ ।।
जिन के मन में उनका निश्चा।
सो रखते सब उनकी दृढ़ता।। ६ ।।

तू सतगुरु का सेवक कैसा।
उनका बचन न माने वैसा।।७ ।।
एक लोक आगे वह कहें।
इन से ऊँचा ता में रहें।। ८ ।।
सो परतीत न लावो भाई।
यह अचरज मेरे मन आई।। ९ ।।

।।दोहा।।

महिमा सतगुरु संत की, करते सब मिल झाड़।
कहें संत सब से बड़े, कोई न पावत पार।।१०।।
गगन सात के ऊपरे,सतगुरु का निज धाम।
सुरतवंत कोई पावई,सत्त शब्द बिसराम।।११।।
गगन सात का भेद सुनाऊँ।
भिन्न भिन्न निर्णय कर गाऊँ।।१२ ।।
प्रथम गगन में दो दल बासा।
श्याम सेत का वहीं निवासा।।१३ ।।
दूसर गगन तिरकुटी थाना।
कँवल चार दल ओं ठिकाना।।१४ ।।
तीसर गगन सुन्न परमाना।
दसवाँ द्वारा संत बखाना।।१५ ।।
चौथा भँवरगुफा पहिचानो।
महासुन्न के ऊपर जानो।।१६ ।।

पंचम सत्तलोक सतनामा।
खष्टम अलख लोक परमाना।।१७ ।।
सप्तम अगम लोक सुर्त पाया।
संतन यह पद ऊँच सुनाया।।१८ ।।
तिस पर आदि अनाम समाना।
आदि अंत तिसका नहिं जाना।।१९ ।।
सो पद भेद संत कोइ पावें।
राधास्वामी कह समझावें।।२० ।।

।।दोहा।।

गगन भेद निर्णय किया, सैन[1] बैन के संग।
नैन उलट सुर्त मोड़ कर,चढ़े पुकारें संत।।२१।।
पद अनाम जो भाखिया,सो सतगुरु का ठाम[2]।
शब्द शब्द को बेधती,पहुँची मूल मुक़ाम[3]।।२२।।

संत दया बिन कोई न पावे।
बिना संत कुछ हाथ न आवे।।२३ ।।
करनी भी सब संत बताई।
बिना मेहर पचना है भाई।।२४ ।।
ताते मुख्य मेहर अब रही।
सरन पड़ो राधास्वामी कही।।२५ ।।

* * * * *

१ - इशारा। २ - धाम। ३ - स्थान।

।। बचन तेईसवाँ।।

हाल उत्पत्ति प्रलय रचना का और महिमा सुरत शब्द मार्ग की वास्ते पहुँचने निज स्थान के

।।पहला शब्द।।

बंझा[1] ने बालक[2] जाया।
जिन सकल जीव भरमाया।। १ ।।
अज्ञानी नाम कहाया।
जिन माया सबल[3] उपाया[4]।। २ ।।
ब्रह्मा और विष्णु महेशा।
नारद और सारद शेषा।। ३ ।।
ऋषि मुनि और जोगी ज्ञानी।
सब को उन ले धर खाया।। ४ ।।
वेद पुरान शास्त्र परमाना।
दे दे जीवन अधिक भुलाया।। ५ ।।
जीव अजान मर्म नहिं जाने।
काल दुष्ट जंजाल लगाया।। ६ ।।
रहट[5] घड़ी सम ऊँचे नीचे।
भरमत फिरे कुछ चैन न पाया।। ७ ।।

१ - जिस स्त्री को लड़का न होता हो, माया। २ - मन। ३ - बलवान।
४ - पैदा किया। ५ - पानी खींचने का चक्कर।

कोई ज्ञान कर ब्रह्म समाने।
कोइ उपाश[1] बैराट समाया।। ८ ।।
कोइ करमी स्वर्गन में पहुँचे।
कोइ विषई नर्कन भोगाया।। ९ ।।
मुक्ति पदारथ बढ़ कर जाना।
ज्ञानी ऐसा धोखा खाया।।१० ।।
कोई काल मुक्ती रस भोगा।
फिर नर देही आन बँधाया।।११ ।।
कर्म करे जैसे देही में।
फिर तैसा फल पाया।।१२ ।।
करमी विषई और उपाशक।
इन तो सदही[2] चक्कर खाया।।१३ ।।
काल जाल से कोई न बाचा।
निज घर अपने कोई न आया।।१४ ।।
तब सतपुरुष दया चित आई।
कलि में संत रूप धर आया।।१५ ।।
सब जीवन को दिया सँदेसा।
सत्तलोक का भेद जनाया।।१६ ।।
बिरले जीव बचन उन माना।
उनको ले सतपुर पहुँचाया।।१७ ।।

१ - भक्त। २ - सदा, हमेशा।

बहुतक जीव बँधे श्रुति सिमृत।
संत बचन परतीत न लाया।।१८ ।।
फिर फिर माँगें वेद प्रमाना।
उन उस घर को नेति सुनाया।।१९ ।।
जब नहिं वेद वेद का करता।
तब का भेद संत गुहराया।।२० ।।
उस घर मर्म वेद नहिं जाने।
फिर क्यों कर परमान सुनाया।। २१ ।।
यह तो बात अगम गति न्यारी।
संत बिना कोइ नेक न गाया।।२२ ।।
ताते संत बचन को मानो।
यह परतीत प्रमान दृढ़ाया।।२३ ।।
संत बिना कोइ मर्म न जाने।
वेद कतेब कहाँ से लाया।।२४ ।।
वह तो तीन गुनन में बरते।
काल बचन क़ानून सुनाया।।२५ ।।

।। दोहा ।।

वेद बचन त्रैगुन विषय, तीन लोक की नीत।
चौथे पद के हाल को,वह क्या जाने मीत।।२६ ।।
अब उत्पति वर्णन करूँ, जस संतन मत माहिं।
पुनि परलय भी कहत हूँ ,ताते भर्म नसाय।।२७ ।।

सब की आदि कहूँ अब स्वामी।
अकह अगाध[1] अपार अनामी।।२८ ।।
तिन से अगम पुरुष प्रगटाये।
अगम लोक में आसन लाये।।२९ ।।
अलख पुरुष का हुआ उजाला।
अलख लोक उन चौकी डाला।।३० ।।
फिर सतनाम पुरुष सत सोई।
सत्य सत्य रचना जहँ होई।।३१ ।।
सत्त लोक वह धाम सुहेला[2]।
हंस करें जहँ अचरज केला[3]।।३२ ।।
इन लोकन की महिमा भारी।
कहूँ कहा अद्भुत बिस्तारी।।३३ ।।
सहस अठासी दीप निवास।
हंस करें जहँ सदा बिलास।।३४ ।।
सुख का धाम सदा सुख जहाँ।
दुख कलेश का नाम न वहाँ।।३५ ।।
नइ नइ लीला सदा अनंद।
हंस करें नित परमानन्द।।३६ ।।
अमी अहार भोग परचंड[4]।
सच्च खंड वह धाम अखंड।।३७ ।।

१ - अथाह। २ - सुहावन,सुन्दर। ३ - किलोल। ४ - प्रबल।

तहँ से भँवरगुफा रच राखी।
सोहं पुरुष नाम कह भाखी।।३८ ।।
महासुन्न इक रचा ठिकाना।
दीप अचिंत महा मैदाना।।३९ ।।
तिस के नीचे सुन्न बिलास।
अक्षर दीप रकार प्रकास।।४० ।।
व्हाँ से रचा तिरकुटी धाम।
ओंकार का जहँ विश्राम।।४१ ।।
वेद कतेब का यही मुक़ाम।
तिरलोकी का कारन धाम।।४२ ।।
झँझरीदीप[1] की रचन रचाई।
निर्गुन काल की जहँ ठकुराई[2]।।४३ ।।
गुन तीनों व्हाँ से उतपाने।
ब्रह्मा विष्णु महेश कहाने।।४४ ।।
यहाँ से सरगुन रचा पसारा।
चार खान उत्पति विस्तारा।।४५ ।।
जन्में मरें जीव चौरासी।
काल निरंजन डाली फाँसी।।४६ ।।
वह दयाल पद कोई न पावे।
निरगुन सरगुन चक्कर खावे।।४७ ।।

१ - सहसदल कँवल। २ - हुकूमत, राज।

अब परलय का भाखूँ लेखा[1]।
जस सिमटाव जगत का देखा।।४८ ।।
काल आय जीवन को ग्रासा[2]।
जीव समाने काल की स्वाँसा।।४९ ।।
देही कारज पृथवी होई।
पृथवी ने गिरसी पुनि सोई।।५० ।।
पृथवी घोली जल ने आय।
जल को सोखा अगनी धाय।।५१ ।।
अगनी मिली पवन के रूप।
पवन हुई आकाश सरूप।।५२ ।।
आकाश समाना माया माहिं।
तम रूपा दीखे कुछ नाहिं।।५३ ।।
माया रली ब्रह्म में जाय।
शक्ती शिव[3] में गई समाय।।५४ ।।
शिव पहुँचे ओंकार मँझार।
ओंकार समाने सुन्न के द्वार।।५५ ।।
सुन्न किया महासुन्न निवास।
भँवरगुफा महासुन्न का बास।।५६ ।।
यहाँ तक परलय कभि कभि होई।
सत्तलोक का द्वारा सोई।।५७ ।।

१ - कैफ़ियत। २ - खाया। ३ - जोत निरंजन।

परलय गति आगे नहिं भाई।
सत्तलोक में कभी न जाई।।५८ ।।
काल त्रिलोकी कीन्ही नास।
महाकाल पुनि काल गिरास।।५९ ।।
महाकाल पहुँचा सत द्वार।
आगे गति[1] नहिं ठिटका[2] वार।।६० ।।
परलय महापरलय गति गाई।
पिंड प्रलय अब कहूँ बुझाई।।६१ ।।
काल किया जब तन परवेश।
जीव चला तज यह परदेश।।६२ ।।
मूलद्वार[3] पृथ्वी का बास।
खिंचा वहाँ से स्वाँस और भास[4] ।।६३ ।।
खिंच कर आया इन्द्री द्वार।
व्हाँ से पहुँचा नाभि मँझार।।६४ ।।
नाभी से खिंच हिरदे आया।
हिरदे से फिर कंठ समाया।।६५ ।।
पृथवी जल अग्नी और पौन।
कंठ माहिं रूँधन लगी होन।।६६ ।।
चारों तत्त्व भास और स्वाँस।
यहाँ से चले खिंचे आकाश।।६७ ।।

१ - पहुँच। २ - ठहर गया। ३ - गुदा चक्र। ४ - चैतन्य का प्रकाश।

दो दल कँवल काल के देश।
कर्म अनुसार खान परवेश।।६८।।
इस विधि काल जीव को खाय।
जन्मे मरे बहुत दुख पाय।।६९।।
सतगुरु बिन नहिं लगे ठिकाना।
ताते सतगुरु सरन समाना।।७०।।
सतगुरु कहें भेद दरसाई।
मारग घर का देयँ बुझाई।।७१।।
पिरथम सरन गहो सतगुरु की।
दुतिये बाड़[१] धरो सतसँग की।।७२।।
गुरु जो भेद बतावें तुम को।
धारो बचन कमाओ उनको।।७३।।
तन मन इंद्री सुरत समेटो।
चढ़ आकाश शब्द गुरु भेटो।।७४।।
सुनो नित्य तुम अनहद बानी।
देखो अद्‌भुत जोत निशानी।।७५।।
जोत फाड़ फिर सुन्न समाओ।
सुखमन होय बंक में आओ।।७६।।
बंक पार त्रिकुटी सुन गीत।
काल कर्म दोउ लीन्हे जीत।।७७।।

१ - ओट।

सुन्न शिखर चढ़ी सूरत घूम।
मानसरोवर पहुँची झूम।।७८ ।।
महा सुन्न जहँ अति अँधियार।
गुप्त चार धुन बानी सार।।७९ ।।
भँवरगुफा जाय लीन्ही चीन्ह।
आगे सत्तलोक चढ़ लीन्ह।।८० ।।
अलख अगम को जाकर परसा।
शब्द पकड़ मन सूरत सरसा[१]।।८१ ।।
रा धा स्वा मी नगर निहारा।
देखा जाय अगर उजियारा।।८२ ।।
उत्पति परलय मारग भेद।
जो जो सुने मिटे भ्रम खेद।।८३ ।।
यह उत्पति कर भली सुनाई।
वेद शास्त्र ताहि जाने न भाई।।८४ ।।

।। सोरठा।।

संतन का मत गूढ़[२], बिना संत को जानई।
राधास्वामी किया ज़हूर[३],माने सतसंगी कोई।।८५ ।।

* * * * *

१ - आनन्द पाया। २ - गुप्त। ३ - प्रकाश।

।। बचन चौबीसवाँ।।

माया संवाद

भेद वेदांत और हाल बाचक ज्ञानियों का और यह कि सिद्धांत पद वेदांत का सुरत शब्द मार्ग की कमाई से प्राप्त होगा

।। पहला शब्द।।

चढ़ो री सखी अब अगम अटारी।
खोल दई मेरे हिये की पिटारी।। १ ।।
हाथ लई मैंने विरह कटारी।
काल दुष्ट का सीस कटा री।। २ ।।
तिल का परदा तुरत फटा री।
गुरु से लिखाया अमर पटा[1] री।। ३ ।।
देख लिया अब मूल अटारी।
बाँध लई मैं ने प्रेम जटा री।। ४ ।।
छोड़ दिया जग देख मठा[2] री।
काम क्रोध अब दूर हटा री।। ५ ।।
लोभ मोह मेरा आज घटा री।
करम भरम सब आप लटा[3] री।। ६ ।।

१ - पट्टा। २ - छाछ। ३ - निरबल हो गया।

मन करे मेरा खेल नटा री।
भर गया मेरा प्रेम घटा[1] री।। ७ ।।
दुख सुख संशय सभी घटा री।
छाय गई अब विरह घटा री।। ८ ।।
मानसरोवर पाया तटा री।
फ़तह किया गढ़ झटापटा री।। ९ ।।
अमल किया जाय अगम पुरी में।
झाँक रही अब सुन झँझरी में।।१० ।।
धुन धधकार उठी जहँ भारी।
तीन लोक से हो गइ न्यारी।।११ ।।
धड़की छाती काल शिकारी।
धर धर रोवे माया पुकारी।।१२ ।।
इन मेरा अब देश उजाड़ी।
क्या ऐसी अब मन में धारी।।१३ ।।
बिनती करूँ अब राधास्वामी पै।
और उपाय नहीं अब मो पै।।१४ ।।
और जीव कोइ अब न चितावें।
घर मेरा जो चाहें बसावें।।१५ ।।
बहुतक जीव लिए हैं उबारी।
एक जीव यह सब पर भारी।।१६ ।।

१ - घड़ा।

बंद करो अब अपना रस्ता।
बहुत किया तुम मारग सस्ता।।१७ ।।
सुन लो स्वामी बिनती मोरी।
मैं आई अब सरना तोरी।।१८ ।।
और जीव तेरे मैं हूँ किस की।
मैं भी पकड़ी ओटा अब की।।१९ ।।
सुन कर बचन सुआमी बोले।
छल बल तेरे सब हम तोले।।२० ।।
जीव हमारा तू नहिं पावे।
अमर लोक को सीधा जावे।।२१ ।।
सिमृत शास्तर वेद पुराना।
इन में सब जिव आय फँसाना।।२२ ।।
संत पंथ का मारग छूटा।
तीरथ बर्त नेम कर लूटा।।२३ ।।
बहुत पुजाया पत्थर पानी।
करम भरम में जिव लिपटानी।।२४ ।।
ज्ञान ध्यान सब बाचक फैला।
जोग जुक्ति में ठेलमठेला[१]।।२५ ।।
साधन चारों[२] सब के ढीले।
जो समझाओ तो करें दलीले।।२६ ।।

१ - बे-परवाही, ढील। २ - बैराग, विवेक, षट सम्पति और मुमोक्षता।

मन अभिमानी जैसे फ़ीले[1]।
संत पंथ में ढीले ढीले ।।२७ ।।
ना गुरु भक्ति न नाम सनेहा।
कहो तो कहें हम आगे कीया ।।२८ ।।
पिछले जन्म का धोखा दे हैं।
विषई जीव को ले भरमै हैं।।२९ ।।
बालपने से विषय कमाये।
विद्या पढ़ पढ़ बुद्धि बढ़ाये।।३० ।।
बुद्धि बिलास किया अब सब ने।
मान बड़ाइ में लागे खपने।।३१ ।।
देखो न्याव कर मन में अपने।
बुधि से जग को कहते सुपने।।३२ ।।
मन तरंग में छिन छिन बहते।
तब जग को जागृत सम करते।।३३ ।।
कोइ उन का ज़रा करे अपमाना।
या कोइ का वह देखें माना।।३४ ।।
करें ईर्षा उसकी भारी।
क्रोध करें अति छाती जारी।।३५ ।।
बाहर सूरत बहुत बनावें।
अंतर में तलवार चलावें।।३६ ।।

१ - हाथी।

यह उनके है मन की रहनी।
परख परख मैं सब कह दीनी।।३७ ।।
ज्ञान मते को दाग़[1] लगाया।
ऐसा हि मत क्या व्यास चलाया।।३८ ।।
वह तो भये जोग मत सूरे।
ज्ञान ध्यान उन पाया पूरे।।३९ ।।
ब्रह्म देश उन बासा कीना।
मन और सुरत करी वहिं लीना।।४० ।।
इतना पद उन का है पूरा।
इनका कहना सब है कूड़ा।।४१ ।।
बिना जोग कोई ज्ञान बखाने।
सम दम साधन कैसे आने।।४२ ।।
या ते सुरत योग अब कीजे।
सम दम साधन वा ते लीजे।।४३ ।।
बिन सम दम नहिं आत्म अनंदा।
गाँठ खुली नहिं झूठा धन्धा[2]।।४४ ।।
जैसे बुलबुल बाँधे पेटी।
गई बाग़ में गुल[3] पर बैठी।।४५ ।।
छिन में खैंच खिलाड़ी लीना।
मिट गया आनँद दुख भया दूना।।४६ ।।

१ - धब्बा। २ - करतूत। ३ - फूल।

ऐसे ग्रन्थ बग़ीचे माहीं।
करें सैर यह ज्ञानी भाई।।४७ ।।
पढ़ते पढ़ते आनँद भोगें।
फिर पीछे मन के बस होवें।।४८ ।।
जो कोइ कहे चितावन कारन।
मिथ्या कह कह मुख से भाखन।।४९ ।।
रोग सोग में हालत बदली।
जानो गाँठ बँधी नहिं खोली।।५० ।।
ऐसे ज्ञान का नहीं भरोसा।
फिर साधो मन खाया धोखा।।५१ ।।
सुरत शब्द का साधन करिये।
तब सम दम छिन माहीं पइये।।५२ ।।
जो मन शब्द में ठहरे नाहीं।
तब ही जानो सम नहिं भाई।।५३ ।।
जो सम होता उन के हाथा।
तो छिन में मन शब्द समाता।।५४ ।।
मन चंचल तो ज्ञान भी चंचल।
क्यों सुख पावे आतम निश्चल।।५५ ।।
आतम सुख की क्या कहुँ महिमा।
जिन्हें परापत तिनही जाना।।५६ ।।

आतम में वह हर दम बरते।
कहो तुम कितनी बिरती[1] धरते।।५७ ।।
जो बिरती आतम नहिं माने।
तो सम ही का घाटा[2] जाने।।५८ ।।
जो बिरती आतम को परसे।
दिन दिन आनँद बढ़ता दरसे।।५९ ।।
जगत भोग सब छिन में फेंके।
बाल दशा होय जग को छेके[3] ।।६० ।।
अन्तर बिरती ऐसी रहई।
बाहर से कुछ काज न सरई।।६१ ।।
आप आप को आप पिछानो।
कहा और का नेक न मानो।।६२ ।।
ज्ञानी के प्रारब्ध न रहती।
देही उसकी विदेही में बरती।।६३ ।।
यह जो गति तुम में नहिं आई।
झूठा ज्ञान तुम्हारा भाई।।६४ ।।
बिना जोग ज्ञानी नहिं होई।
जनम मरन से छुटे न कोई।।६५ ।।
पिछला जोग कभी नहिं पाई।
ताते सुरत जोग ठहराई।।६६ ।।

१ - आचरन, दिली रुझान। २ - कमी। ३ - दूर करे।

संत मता अब धारो नीका[1]।
सुरत शब्द यह सब का टीका[2]।।६७ ।।
वह तो धर्म जुगन पिछले का।
इन जीवन का बल नहिं बूता।।६८ ।।
जब थे जिव सब ईश्वर कोटी।
अब जीवों की बुधि है खोटी।।६९ ।।
जीव कोटि में इनकी गिन्ती।
यह नहिं धारें उनकी जुगती।।७० ।।
या ते ज्ञान जोग दोउ खंडन।
भक्ति भाव संतन कियो मंडन[3]।।७१ ।।
सुरत शब्द की अब करो करनी।
तो उनकी सी हो जाय रहनी।।७२ ।।
ईश्वर पद जब घट में पाओ।
ईश्वर कोटी तुम हो जाओ।।७३ ।।
जब वह ज्ञान सुफल होय तुम को।
नहिं अधिकार ज्ञान का सब को।।७४ ।।
जब लग निश्चल चित्त न होई।
ज्ञान बचन को सुनो न कोई।।७५ ।।
बिन उपाशना चित नहिं ठहरे।
शब्द बिना कोइ उपास्य न है रे।।७६ ।।

१ - अच्छे तौर से। २ - सार, सिरमौर। ३ - स्थापित।

जो उपाशना कहे हम कीन्ही।
पिछले जन्म भुगत हम लीन्ही।।७७ ।।
तो मन निश्चल आतम माहीं।
होना चहिये अचरज नाहीं।।७८ ।।
जो मन आतम रंग न राचा[१]।
तो जानो सब कहना काचा।।७९ ।।
अब चहिये फिर करें उपाशन।
जासे कटें सभी मन बासन[२]।।८० ।।
जो तुम कहो कदाचित[३] ऐसी।
ज्ञानी को करनी नहिं रहती।।८१ ।।
लक्ष[४] गियानी की यह बातें।
बाचक को शोभा नहिं याते।।८२ ।।
अब मन में तुम ख़ूब विचारो।
बाचक तुमहीं हो अस धारो।।८३ ।।
धोखा मत खाओ पढ़ पोथी।
क्यों ऐसी बातें करो थोथी[५]।।८४ ।।
भक्ति भाव को मन में धारो।
कलजुग का यह धर्म सम्हारो।।८५ ।।
सत्तपुरुष ने धारा रूपा।
संत स्वरूप भये जग भूपा।।८६ ।।

१ - भीना हुआ। २ - बासना। ३ - कभी। ४ - प्रत्यक्ष।
५ - ख़ाली।

हुक्म दिया क़तई अब ऐसा।
भक्ति बिना तरना कहो कैसा।।८७।।
गुरु भक्ती बिन तरे न कोई।
बिन गुरु ज्ञान पार नहिं होई।।८८।।
शब्द ज्ञान गुरु ज्ञान पिछानो।
और गुरू सब झूठे जानो।।८९।।
धुन का नाम शब्द है भाई।
द्वार दसम से जो नित आई।।९०।।
जब तक सुरत न पकड़े धुन को।
मार न सक्ता कोई मन को।।९१।।
बिन मन मारे कभी न तरना।
जनम जनम भौसागर पड़ना।।९२।।
सुरत शब्द से मन को मारो।
और जतन कोई मत धारो।।९३।।
काल पड़ा जीवन के पाछे।
दूध छिपाय पिलावे छाछे[1]।।९४।।
खट शास्तर और चारों वेदा।
यह संतन ने किये निषेधा।।९५।।
बानी अपनी जुदी बनाई।
मूरख उन से विधी मिलाई।।९६।।

१ - मट्ठा।

संग पंडितन जिस ने कीन्हा।
बुद्धि हरी भये काल अधीना।। ९७ ।।
काल दूत तुम उन को जानो।
उन की बात ज़रा मत मानो।। ९८ ।।
संतन का मत उन से न्यारा।
गुरु पूरे सँग करो विचारा।। ९९।।
बिन गुरु पूरे हाथ न आवे।
गुरु पूरा जो शब्द बतावे।।१००।।
शब्द अर्थ जो और लगावे।
धुन के बिना झूठ वह गावे।।१०१।।
शब्द कहो चाहे धुन अनहद।
और अर्थ नहिं येही अद्‌भुत।।१०२।।
बार बार मैं कहा बनाई।
शब्द बिना नहिं और कमाई।।१०३।।
जो तुम चाहो अपन उधारा।
पकड़ो शब्द करो मत बारा[१]।।१०४।।
मैं अपनी सी सब कह दीनी।
आगे साहेब मौज अधीनी।।१०५।।
जिन पर किरपा उन की होई।
शब्द भेद जानेगा सोई।।१०६।।

१ - देरी।

धुन अंतर मन राखो अपना।
बार बार कहुँ मानो बचना।।१०७।।
काल बड़ा बरियार[1] कहावे।
या से कोइ न बचने पावे।।१०८।।
बिना संत कभी नाहिं उबारा।
तीन लोक से होय न पारा।।१०९।।
चौथा लोक संत दरबारा।
व्हाँ पहुँचे संतन का प्यारा।।११०।।
सुरत शब्द का मारग लीजे।
सत्तलोक को प्याना[2] कीजे।।१११।।
और मते सब काल पसारे।
हिन्दू मुसलमान सब सारे।।११२।।
जैनी और अँगरेज़ बिचारे।
ईसा पारसनाथ पुकारे।।११३।।
वह ईसा को बेटा मानें।
वह तीर्थंकर उनको जानें।।११४।।
यह तो बात सही मैं मानूँ।
पर इस में इक भेद बखानूँ।।११५।।
तिरलोकी का नाथ जो कहिये।
ईसा उसका बेटा सही है।।११६।।

१ - ज़बरदस्त। २ - कूँच, रवानगी।

तीर्थंकर भी उसको जाना।
नाम निरंजन कहें निरबाना।।११७।।
पद निर्वाण कहें हैं जैनी।
उनके मत की सब हम चीन्ही।।११८।।
राम ब्रह्म हिंदू कर बोले।
अल्ला ख़ुदा मुसल्माँ तोले।।११९।।
ख़ुद ख़ुदाय[१] का मर्म न जाना।
राम ब्रह्म का बाप छिपाना।।१२०।।
राम ब्रह्म से वह पद आगे।
चौथा लोक संत जहँ लागे।।१२१।।
नानक और कबीर बखाना।
तुलसी साहेब निज कर जाना।।१२२।।
उन की बानी वह पद गावे।
सच्चखंड सतलोक लखावे।।१२३।।
अब संशय कुछ करो न भाई।
सत्तलोक की आसा लाई।।१२४।।
निश्चय कर आसा दृढ़ राखो।
सुरत शब्द का मारग ताको।।१२५।।
सब विद्या और करमा धरमा।
दूर बहाओ यह सब भरमा।।१२६।।

१ - सच्चे मालिक।

जीव उबार न इन से होई।
सुरत शब्द अब धारो सोई।।१२७।।
चारों मत को यह उपदेशा।
पकड़ शब्द जाओ उस देशा।।१२८।।
चौथा लोक अगम है भाई।
शोभा व्हाँ की बरनी न जाई।।१२९।।
सत्तपुरुष जहँ सदा बिराजें।
कँवल सिंहासन ता पर गाजें।।१३०।।
कोटि सूर और चंद्र करान्ती[१]।
रोम रोम प्रति[२] सदा लजाती।।१३१।।
हंसन दीप जुदे रच राखे।
अमी अहार सभी नित चाखे।।१३२।।
अमृत कुंड भरे जहँ भारी।
सच्च खंड की शोभा न्यारी।।१३३।।
और बिलास अनेकन भाई।
भिन्न भिन्न कुछ कहा न जाई।।१३४।।
हीरे मोती लाल अपारा।
भरे जहाँ अचरज भंडारा।।१३५।।
राग रागनी सदा बसंता।
महिमा कहूँ कहा नहिं अंता।।१३६।।

१ - प्रकाश। २ - एक एक, हरेक।

अंतवंत[1] तिरलोकी जानो।
वह अस्थान सदा थिर[2] मानो।।१३७।।
शोभा हंसन कहा कहुँ भाई।
सूर चंद बहु देख लजाई।।१३८।।
नाना विधि जहँ उठें सुगंधा।
कोटि मलय[3] जहँ मानो मंदा[4]।।१३९।।
हंस करें जहँ सदा बिलासा।
पुरुष दरस दूजी नहिं आसा।।१४०।।
हंस करें जहँ सदा अनंदा।
काल कष्ट नाहीं कुछ धन्धा।।१४१।।
देखें अचरज भोगें अचरज।
कहूँ कहा सब अचरज अचरज।।१४२।।
बुधिवानों की बुद्धि हिराई।
विद्यावान नहीं कुछ पाई।।१४३।।
बुधि और विद्या दोनों हारें।
संत मते पर सिर धुन मारें।।१४४।।
बुधि विचार से समझा चाहें।
कभी न पावें भटका खावें।।१४५।।
या ते बुधि बल सब ही छोड़ो।
मन और सुरत शब्द में जोड़ो।।१४६।।

१ - नाश होनेवाली। २ - ठहराऊ। ३ - मलयागिर चंदन। ४ - मंद, तुच्छ।

करो कमाई निस दिन भाई।
बुद्धी से कुछ भेद न पाई।।१४७।।

।। दोहा।।

यह करनी का भेद है,
नाहीं बुद्धि विचार।
बुद्धि छोड़ करनी करो,
तो पावो कुछ सार।।१४८।।

।। दूसरा शब्द।।

घट कपट दूर कर भाई।।टेक।।
सरधा भाव चरन में राखो।
प्रीत प्रतीत बढ़ाई।। १ ।।
मुँह के कहे काज नहिं होगा।
जब लग मन में प्रेम न आई।। २ ।।
बाचक सूर कहें अपने को।
बिन रन देखे करत बड़ाई।। ३ ।।
बैरी सन्मुख होत कदाचित।
ऐसे भागें खोज न पाई।। ४ ।।
छाया तिमिर बुद्धि पर ऐसा।
अपनी गति की बूझ न लाई।। ५ ।।
जैसे मूसा बिल का सूरा।
बिल्ली का भय चित न समाई।। ६ ।।

बिल में बैठे बातें मारें।
बिल्ली को हम मार गिराई।। ७ ।।
बिल्ली बिल पर आन पुकारी।
आओ सूरमा बड़े सिपाही।। ८ ।।
सुन कर म्याउँ च्याउँ घबराये।
इक इक भागे ख़बर न पाई।। ९ ।।
ऐसे ज्ञानी बाचक जग में।
निज बैराग की करत बड़ाई।। १० ।।
भागहीन माया नहिं पूछे।
मन जाने हम त्याग कराई।। ११ ।।
धन वालों को ढूँढत डोलें।
काहू के उपदेश समाई।। १२ ।।
जो संयोग बने कहिं ऐसा।
विषय परापत होता जाई।। १३ ।।
तो भोगें पूरे बन जावें।
कहवें मन का धर्म सुनाई।। १४ ।।
अथवा परारब्ध सिर डालें।
तरह तरह की बात बनाई।। १५ ।।
राग द्वेष[1] में छिन छिन बरतें।
अब बैराग कहाँ गया भाई।। १६ ।।

१ - रग़बत, नफ़रत।

अन मिलते के त्यागी जानो।
ज्ञान लखौटा[1] कहत सुनाई।।१७ ।।
यों तो सख़्त कड़ा पत्थर सा।
अग्नी आगे पिघला जाई।।१८ ।।
मुख से मान अपमान समाना।
बरतन[2] में निज मानहि चाही।।१९ ।।
जो अपमान करे कोइ उनका।
क्रोध करें बैरी बन जाई।।२० ।।
मान करे मन की सी बोले।
प्रीत करें स्वारथ लिपटाई।।२१ ।।
और कर्म सबही नित करते।
भक्ति भाव में रहें अलसाई।।२२ ।।
जो भक्ती संतन ने भाखी।
ता का मर्म नेक नहिं पाई।।२३ ।।
खान पान बस्तर तन किरिया।
सब करते इक भक्ति हटाई।।२४ ।।
व्यवहारिक जग सत्त बतावें।
भक्ती का व्यवहार छुड़ाई।।२५ ।।
तीरथ बरत नेम खट करमा।
पूजा पाठ करें नित आई।।२६ ।।

१ - लाह का। २ - बरताव करने में।

पोथी पुस्तक विद्या नाना।
पढ़ें पढ़ावें बहु विधि भाई।।२७ ।।
सैर तमाशा देश दिशंतर।
मेला ठेला जात भ्रमाई।।२८ ।।
यह करतूत न छोड़ें कबहीं।
भक्ती से पुन[१] जन्म बताई।।२९ ।।
ज्ञान मता मारग ठहराया।
जो भक्ती का फल था भाई।।३० ।।
भक्ति दीनता करें न आदर।
अपनी भक्ती करन सिखाई।।३१ ।।
धन और माल देय जो कोई।
तो पाखँड सँग लेत गठाई।।३२ ।।
और व्यवहार करें सब जग का।
इक भक्ती से विरोध जनाई।।३३ ।।
भक्ती की परवाह न राखें।
हानि समझ मानो डरहि लगाई।।३४ ।।
गुरु भक्ती सुपने का सिंह कहें।
ता को छोड़त देर न लाई।।३५ ।।
और कर्म और भोग जगत के।
यह नहिं छोड़ें बरतें जाई।।३६ ।।

१ - पुनर्जन्म।

काग विष्ठ सम मुख से कहते।
सो नहिं छूटे विष्ठा खाई।।३७ ।।
भक्ति भाव को छिन छिन छोड़ा।
और करम दम साथ निबाही।।३८ ।।
जिन बातों में मन मरता था।
सो मिथ्या कर दूर कराई।।३९ ।।
और कर्म कोई किया न मिथ्या।
सब फ़ेलों[1] में नित्त खपाई।।४० ।।
ऐसे मूरख मन के मौजी।
निर्भय बरतें ख़ौफ़ न लाई।।४१ ।।
सुरत शब्द मारग नहिं धारें।
संत बचन परतीत न आई।।४२ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
ऐसा मत कोई गहो न भाई।।४३ ।।

।। तीसरा शब्द।।

हे विद्या तू बड़ी अविद्या।
संतन की तैं[2] क़दर न जानी।। १ ।।
संत प्रेम के सिंध भरे हैं।
तैं उलटी बुधि कीचड़ सानी।। २ ।।

१ - कामों। २ - तू ने।

संतन प्रेम लगा प्यारे से।
उनकी सूरत शब्द समानी।। ३ ।।
तू धन मान प्रतिष्ठा चाहे।
और चतुरता में लिपटानी।। ४ ।।
कलि में जीव बहुत तैं घेरे।
बिरले गुरुमुख बचे निदानी।। ५ ।।
उनकी प्रेम अनुभवी बानी।
तू बुद्धी संग रहत खपानी।। ६ ।।
विद्या पढ़ पढ़ बहुत पचे हैं।
प्रेम बिना कुछ हाथ न आनी।। ७ ।।
अर्थ संप्रदा[1] कर कर फूले।
अनुभव की उन सार न जानी।। ८ ।।
बानी बन में रहे भुलाने।
पढ़ पढ़ पोथी जन्म बितानी।। ९ ।।
घट के भीतर नेक न ठहरें।
मन चंचल की गति न पिछानी।। १० ।।
बाहरमुखी ग्रन्थ नित पढ़ते।
घट की पोथी पढ़ें न पढ़ानी।। ११ ।।
घट का भेद कहो जो उनसे।
तो उनका मन देत न हामी[2]।। १२ ।।

१ - टीका। २ - मानना।

संत गगन में सुरत चढ़ावें।
वे सुनते नित व्हाँ की बानी।।१३ ।।
उनकी गत मत अगम अपारा।
तू लोगन को रीझ रिझानी।।१४ ।।
प्रेमी जीव न मानें तेरी।
तू अपनी सी कहत कहानी।।१५ ।।
अस्तुत के भूखे तुम निस दिन।
मान अस्तुती चाह भरानी।।१६ ।।
अपने औगुन आप विचारो।
और काढ़न की जुगत कमानी।।१७ ।।
धोखे में क्यों जनम बिताओ।
सुरत शब्द में नित्त चढ़ानी।।१८ ।।
विद्या छोड़ करो यह करनी।
तो पावो सतनाम निशानी।।१९ ।।
विद्या पढ़ मन से नहिं जीतो।
विरथा थोथे तीर चलानी।।२० ।।
संत मता विद्या से न्यारा।
विद्या ठगनी जीव ठगानी।।२१ ।।
भक्ती भाव प्रेम नहिं उनके।
प्रेमी को वे मूरख जानी।।२२ ।।

विद्या के बल रहैं अभिमानी।
संतन से उन प्रीत न ठानी।।२३ ।।
जीव अकाज सोच नहिं मन में।
जगत बड़ाई मन में समानी।।२४ ।।
मुँह से मिथ्या जग को कहते।
बरतन में सो सच्चा मानी।।२५ ।।
मान अपमान समान न कीन्हा।
बाचक विद्या रहे भुलानी।।२६ ।।
ताते विद्या सभी भुलाओ।
संत सरन पकड़ो अब आनी।।२७ ।।
बे विद्या के जो नर प्रेमी।
सो संतन के सँग लिपटानी।।२८ ।।
विद्यावान एक नहिं ठहरे।
ताते विद्या विघन पिछानी।।२९ ।।
संत न विद्या पढ़ते कोई।
उनके अनुभव समुँद समानी।।३० ।।
उनका प्यार लगा प्यारे से।
विद्या क्यों कर याद रहानी।।३१ ।।
तन मन की सब सुध बिसरानी।
विद्या बुधि फिर क्यों ठहरानी।।३२ ।।

सब परकार प्रेम की महिमा।
विद्या अविद्या दोनों हानी।।३३ ।।
जिनका प्रेम शब्द में नाहीं।
उनको विद्या ख़्वार[१] करानी।।३४ ।।
जनम मरन से छुटें न भाई।
चौरासी में बहें बहानी।।३५ ।।
विद्या भूल चढ़ो अब घट में।
सुरत शब्द में लाओ तानी।।३६ ।।
विद्या भी बुधि विषय पिछानो।
यह आशक्ती[२] भली न जानी।।३७ ।।
कथनी बदनी[३] काम न आवे।
भक्ति बिना जम के सहे डानी[४]।।३८ ।।
गुरु भक्ती बिन सब जग चूका।
अनेक सियानप[५] में भरमानी।।३९ ।।
और जतन मिथ्या सब जानो।
यही जतन मैं कहा प्रमानी।।४० ।।
शब्द कमाई करो प्रेम से।
राधास्वामी कहत बखानी।।४१ ।।

१ - ख़राब। २ - पकड़। ३ - बहस मुबाहसा। ४ - दंड। ५ - चतुरता।

।। बचन पच्चीसवाँ।।

वर्णन भूल वेदान्त मत और वेदान्तियों का जो कि काल पुरुष के लक्ष स्वरूप को अनामी रूप और सिद्धान्त समझ कर उस में समाये और सिन्ध स्वरूप राधास्वामी की प्रतीत नहीं करते और उस की ख़बर न पाई

।। पहला शब्द।।

सतगुरु आरत लीन्ह सिंगारी।
जड़ चेतन से सुरत निकारी।। १ ।।
जीव चैतन्य देश अब छोड़ा।
शब्द चैतन्य देश किया पोढ़ा[1]।। २ ।।
सहस कँवल दल लिया अकाश।
चढ़ कर पहुँची गिर[2] कैलाश।। ३ ।।
द्वारा सुखमन नाका बंक।
तोड़ा फोड़ा उलटी गंग[3]।। ४ ।।
गंगा जमुना सरस्वती तीन।
धार त्रिवेनी लीन्ही चीन।। ५ ।।
त्रिकुट जाय लंका गढ़ घेरा।
रावन ब्रह्म राम मन हेरा[4]।। ६ ।।

१ - मज़बूत। २ - पर्वत। ३ - सुरत की धार। ४ - देखा।

सीता धुन ले सूरत साधी।
पहुँची जाय अवधपुर[1] आदी[2]।। ७ ।।
राज किया घर अजर बसाया।
रावन सीता राम समाया।। ८ ।।
गिर सुमेर परवत कंचन धर।
भान उलट फेरा शशि[3] मंदर।। ९ ।।
सुन्न नगर बस्ती जहँ अक्षर।
दीप अचिंत लखा निःअक्षर।।१० ।।
अक्षर निःअक्षर धुन पारा।
महासुन्न का ताका द्वारा ।।११ ।।
द्वारे धस गई भँवरगुफा में।
धारा सोहं सुरत सफ़ा में।।१२ ।।
उलटी पहुँची सत्त नगर में।
धाई दौड़ी अलख डगर में।।१३ ।।
अगम लोक जाय अधर सिधारी।
अगम पुरुष दीदार करा री।।१४ ।।
संतन उनमुन[4] देश बखाना।
बिस्मादी[5] हैरत[6] अस्थाना।।१५ ।।

१ - दसवाँ द्वार। २ - इब्तदाई, शुरू का। ३ - चन्द्रमा। ४ - अपने में आप मगन। ५ - विशेष समाधि। ६ - अचरज रूपी।

सोई अनामी अकह कहाया।
रूप न रेख[1] न रंग धराया।।१६ ।।
यह पद संतन निज कर थापा।
बिन जाने सब कहते आपा।।१७ ।।
इतने ऊँचे जो कोइ चढ़े।
रूप रंग रेखा ते टरे।।१८ ।।
सत्तलोक तिरलोकी चारी।
रूप रंग रेखा सब धारी।।१९ ।।
चार लोक के जो होय पार।
रूप रंग रेखा तज न्यार।।२० ।।
सिंध बुन्द तज आतम आया।
पिंड अंड ब्रह्मांड समाया।।२१ ।।
आतम लक्ष[2] ज्ञान लिया जिसने।
रूप रंग रेखा नहिं तिस में।।२२ ।।
बुन्द ज्ञान तिरपत हुए मन में।
सिंध ज्ञान पाया नहिं सुपने।।२३ ।।
बुन्द देश है अति ही नीचा।
सिंध देश है सब से ऊँचा।।२४ ।।
बुन्द सिंध को एक मिलावें।
बुन्द देश को सिन्ध बतावें।।२५ ।।

१ - चिन्ह। २ - प्रत्यक्ष।

सिंध देश जहँ संत बखाने।
संत बचन परतीत न आने[1]।।२६ ।।
रूप रंग रेखा से न्यारा।
सिंध देश को संत पुकारा।।२७ ।।
बुन्द माहिं रँग रूप न रेखा।
बीज रूप था इन नहिं देखा।।२८ ।।
यह पद वह पद एक न होई।
बुधि से विधी[2] मिलावें सोई।।२९ ।।
मेरे मत मूरख यह ज्ञानी।
कैसे इन को कहूँ बखानी।।३० ।।
यह परमान वेद का मानें।
संतन की परतीत न आनें।।३१ ।।
संत देश इन सुना न देखा।
सब को दिया काल ने धोखा।।३२ ।।
सिन्ध छिपाय बुन्द दिखलाई।
बुन्द देख सब गये भुलाई।।३३ ।।
सिंध भेद जो संत बतावें।
बुन्द माहिं ले सभी घटावें।।३४ ।।
अब इनको क्योंकर समझाऊँ।
हार मान अब चुप्प रहाऊँ।।३५ ।।

१ - लावे। २ - मेल।

आरत करूँ और प्रेम बढ़ाऊँ।
इनका झगड़ा अब नहिं गाऊँ।।३६ ।।
सुरत शब्द ले खैंच चढ़ाऊँ।
सिंध माहिं अब सहज समाऊँ।।३७ ।।
रा धा स्वा मी सतगुरु पाये।
महिमा उनकी अगम अथाये।।३८ ।।
बार बार जाऊँ बलिहारी।
चरन सरन पर तन मन वारी।।३९ ।।

।। सोरठा ।।

वार पार का भेद, आदि अंत सबही लखा।
पाया अगम अभेद, भूल भरम सबही थका।।४०।।

।। दूसरा शब्द।।

जग जाग्रत भौ दुख मूल।
सुपना भी दुख सुख सूल[१]।। १ ।।
सुषपति कुछ घर आराम।
वह भी नहिं ठहरन धाम।। २ ।।
तीनों में भरमत आठों जाम।
पूरा नहीं कहीं बिसराम।। ३ ।।
अब करिये कौन उपाय।
का से अब पूछूँ जाय।। ४ ।।

१ - कष्ट।

तड़पूँ और तरसूँ निस दिन।
विरह अग्नि जलूँ मैं दिन दिन।। ५ ।।
कोइ राह न सुख की गावे।
सब करम भरम भरमावे।। ६ ।।
कोइ तीरथ बरत बतावे।
कोइ जप तप माहिं लगावे।। ७ ।।
निज भेद कहे नहिं कोई।
विरथा नर देही खोई।। ८ ।।
यह सोच करा मैं भारी।
तब सतगुरु आन सम्हारी।। ९ ।।
कर दया भेद बतलाया।
तुरिया[१] पद मारग गाया।। १० ।।
तुरिया से आगे बरना।
फिर उस्से आगे चलना।। ११ ।।
तिस के भी परे लखाया।
उस के भी पार सुनाया।। १२ ।।
तिस परे और समझाया।
कुछ आगे और बुझाया।। १३ ।।
व्हाँ से पुनि आगे भाखा।
निज धाम मुख्य यह राखा।। १४ ।।

१ - सहसदल कँवल।

संतन गति अगम सुनाई।
जहँ वेद कतेब न जाई।।१५ ।।
तुरिया में सब थक बैठे।
आगे कोइ मर्म न देखे।।१६ ।।
इतने पद संत बताई।
बिन सुरत शब्द नहिं पाई।।१७ ।।
सतगुरु फिर भेद बतावें।
अब खुल कर तोहि सुनावें।।१८ ।।
तुरिया पद सहसकँवल में।
तिस आगे चढ़ त्रिकुटी में।।१९ ।।
दस द्वारा सुन में खोलो।
फिर महासुन्न चढ़ तोलो।।२० ।।
चढ़ भँवरगुफा तब आई।
फिर सत्तनाम पद पाई।।२१ ।।
व्हाँ से भी चली अगाड़ी।
हुइ अलख पुरुष दरबारी।।२२ ।।
जाय अगम लोक को लीन्हा।
लीला सब व्हाँ की चीन्हा।।२३ ।।
राधास्वामी धाम लखाया।
अब यही ठीक घर पाया।।२४ ।।

वह तुरिया भी नहिं पावें।
बातों की तुरिया गावें।।२५ ।।
तीनों[१] में चेतन बरते।
वाही को तुरिया कहते।।२६ ।।
बाचक यह बड़े अन्याई।
अवस्था चौथी सोऊ गँवाई।।२७ ।।
जोगेश्वर ज्ञानी पिछले।
चढ़ मूरधनी[२] घट खेले।।२८ ।।
उन चार अवस्था गाई।
पंचम कहा चेतन भाई।।२९ ।।
चारों से न्यारा गाया।
ताहि आतम भाख सुनाया।।३० ।।
इन मूरधनी घर त्यागा।
मन अकाश आतम कह भाखा।। ३१ ।।
क्यों कर इन कहूँ बुझाई।
इन बहुतहि धोखा खाई।।३२ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
तुम बचियो इन से भाई।।३३ ।।

* * * * *

१ - जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति। २ - ओंकार पद।

।। तीसरा शब्द ।।

सुरत मेरी दुविधा[1] आन छली।
बान अस मारा काल बली ।। १ ।।
कौन उपाय करूँ अब सजनी।
संशय अगिन में जात जली ।। २ ।।
इक गुरु ज्ञान वेदान्त सुनावें।
इक गुरु भाखें शब्द गली ।। ३ ।।
मैं अजान कुछ मर्म न जानूँ।
कौन राह को कहूँ भली ।। ४ ।।
शब्द कमाई होय न मो से।
यही खटक अब चित्त खली[2] ।। ५ ।।
ज्ञान बचन भी समझ न आवे।
दोउ में एक न मोहिं मिली ।। ६ ।।
अब क्या कहूँ हार कर बैठी।
मौज बिना क्या पेश चली ।। ७ ।।
राधास्वामी कहत बुझाई।
छोड़ो दुबिधा शब्द पिली ।। ८ ।।
ज्ञान मता यह काल पसारा।
सब जीवन को खात दली[3] ।। ९ ।।

१ - संशय। २ - दुख देती रही। ३ - टुकड़े करके।

सुरत शब्द मत द्याल सुनाया।
पकड़ गहूँ अब नाहिं टली।।१० ।।

।। *बचन* छब्बीसवाँ।।

सुरत *संवाद*

जिस में कुल भेद संत यानी राधास्वामी मत का और और मतों का जो संसार में प्रवृत्त हैं और जुक्ति उसमें सुरत शब्द मार्ग की और निज भेद मुक़ामात का वर्णन किया है

।। पहला प्रश्न।।

अब सूरत पूछे स्वामी से।
भेद कहो अपना तुम मो से।। १ ।।
बास तुम्हारा कौन लोक में।
य्हाँ आये तुम कौन मौज में।। २ ।।
देश तुम्हारा कितनी दूर।
खोजे सुरत न पावे मूर[1]।। ३ ।।
मैं बिछड़ी तुम से कहो कैसे।
देश पराये आई जैसे।। ४ ।।
मेरा हाल भिन्न कर गाओ।
देश आपना मोहिं लखाओ।। ५ ।।

१ - मूल।

मन तन संग पड़ी मैं कब से।
दुख पाये बहुतक मैं जब से।। ६ ।।
क्यों भूली मैं देश तुम्हारा।
आय पड़ी परदेश निहारा।। ७ ।।
पाताल बसो कि मृत्यु लोक में।
स्वर्ग बसो कि ब्रह्म लोक में।। ८ ।।
विष्णु लोक बैकुंठ धाम में।
इन्द्रपुरी या शिव मुक़ाम में।। ९ ।।
कृष्ण लोक या राम लोक में।
प्रकृत लोक या पुरुष लोक में।। १० ।।
या तुम व्यापक सभी लोक में।
चार खान चर अचर[1] थोक में।। ११ ।।
क्यों मोहिं डाला काल लोक में।
अति भरमाया हर्ष शोक में।। १२ ।।
अब क्यों आये मोहिं चितावन।
रूप धरा तुम अति मन भावन।। १३ ।।
मैं दासी तुम चरन निहारे।
भेद देव तुम अपने सारे।। १४ ।।

१ - चैतन्य और जड़।

।। उत्तर अंग पहला।।

तब हँस शब्द सुवामी बोले।
सुनो सुरत तुम मैं कहुँ खोले।।१५ ।।
जो तू पूछे भेद हमारा।
कहूँ सभी अब कर विस्तारा।।१६ ।।
मैं हूँ अगम अनाम अमाया।
रहूँ मौज में अधर समाया।।१७ ।।
मेरा भेद न कोई पावे।
मैं ही कहूँ तो कहन में आवे।।१८ ।।
पिरथम अगम रूप मैं धारा।
दूसर अलख पुरुष हुआ न्यारा।।१९ ।।
तीसर सत्त पुरुष मैं भया।
सत्तलोक मैं ही रच लीया।।२० ।।
इन तीनों में मेरा रूप।
य्हाँ से उतरीं कला[1] अनूप[2]।।२१ ।।
य्हाँ तक निज कर मुझ को जानो।
पूरन रूप मुझे पहिचानो।।२२ ।।
अंस दोय सतपुरुष निकारी।
जोत निरंजन नाम धरा री।।२३ ।।

१ - अंश। २ - जिस की उपमा न कर सके।

यह दो कला उतर कर आई।
झँझरी दीप में आन समाई।।२४ ।।
यहाँ बैठ तिरलोकी रची।
पाँच तीन की धूम अब मची।।२५ ।।
तीन लोक से मैं रहुँ न्यारा।
चार पाँच छः में विस्तारा।।२६ ।।
तीन लोक एक बुन्द पसारा।
सिंध रूप मैं अगम अपारा।।२७ ।।
मैं न पताल स्वर्ग नहिं मिरता[१]।
ब्रह्मा विष्णु महेश न जुगता[२]।।२८ ।।
नहिं गोलोक[३] नहीं साकेत[४]।
इन्द्रपुरी नहिं ब्रह्म समेत।।२९ ।।
तीन लोक व्यापक मैं नहीं।
बुन्द एक मेरी य्हाँ रही।।३३ ।।
उसी बुन्द का सकल पसारा।
वेद ताहि कहे ब्रह्म अपारा।। ३१ ।।
वेदान्ती याहि ब्रह्म बखानें।
सिद्धान्ती याहि शुद्ध पुकारें।। ३२ ।।
इसके आगे भेद न पाया।
सतगुरु बिन उन धोखा खाया।। ३३।।

१ - मृत्यु लोक। २ - माया। ३ - कृष्ण लोक। ४ - राम लोक।

जितने मत हैं जग के माहीं।
इसी बुन्द को सिंध बताहीं।।३४।।
सिंध असल रहा इन से न्यारा।
वेद कतेब न ताहि सम्हारा।।३५।।
ब्रह्मादिक सब वेद भुलाये।
ऋषि मुनि करम भरम लिपटाये।।३६।।
पीर पैग़म्बर क़ुतुब औलिया[१]।
बुन्द भेद पूरा नहिं मिलिया।।३७।।

।। उत्तर अंग दूसरा।।

सुनो सुरत तुम अपना भेद।
तुम हम में थीं सदा अभेद।।३८।।
काल करी हम सेवा भारी।
सेवा बस होय कुछ न विचारी।।३९।।
तुम को माँगा हम से उस ने।
सौंप दिया तुम्हें सेवा बस में।।४०।।
काल लाय तन मन में घेरा।
दुख सुख पाया तुम बहुतेरा।।४१।।
दुख में देखा तुम को जबही।
दया उठी हम आये तबही।।४२।।

१ - ईश्वर भक्त।

आय किया हम शब्द उपदेशा।
शब्द माहिं तुम करो प्रवेशा।।४३ ।।
शब्द शब्द पौड़ी[1] हम रची।
चढ़ चढ़ पहुँचो नगरी सच्ची।।४४ ।।
बुन्द देश को छोड़ो अबही।
सिंध देश चल खेलो तबही।।४५ ।।
बुन्द देश तिरलोकी जानो।
रचन मुरक्कब[2] य्हाँ पहिचानो।।४६ ।।
मुफ़रद[3] रचना तुम्हरे देश।
सत्त सत्त जहँ सत्त संदेश।।४७ ।।
य्हाँ रचना तरकीबी[4] हुई।
सो मैं खोल सुनाऊँ सही।।४८ ।।
मुफ़रद बुन्द हमारी आई।
दूसर माया आन मिलाई।।४९ ।।
पाँच तत्त्व तीनों गुन मिले।
यह सब दस आपस में रले।।५० ।।
रल मिल कर इन रचना ठानी।
तीन लोक और चारों खानी।।५१ ।।

१ - सीढ़ी चढ़ने की। २ - मिलौनी की। ३ - बे मिलौनी की।
४ - मिलौनी की।

।। उत्तर अंग तीसरा।।

वेदान्ती अब किया विचार।
नौ[1] को छाँट लिया दस सार।।५२ ।।
दसवीं वही बुन्द मम अंस।
छाँट ताहि लीन्हा होय हंस।।५३ ।।
जहाँ मिलौनी तहाँ विचार।
एक एक में कहा विचार।।५४ ।।
हमरे देश एक सतनाम।
वहाँ विचार का कुछ नहिं काम।।५५ ।।
कर विचार इन धोखा खाया।
बुन्द माहिं यह जाय समाया।।५६ ।।
चलना चढ़ना इन के नाहीं।
ता ते सिंध न पाया इनहीं।।५७ ।।
सिंध भेद जो इन से कहते।
तो परतीत न चित में धरते।।५८ ।।
करें दलील बुद्धि से भारी।
हँसी उड़ावें बचन न धारी।।५९ ।।
बुधि बल से वह करते तोल।
कभी न पावें डावाँ डोल।।६० ।।

१ - पाँच तत्त्व तीन गुन और माया।

यह मारग है प्रेम भक्ति का।
चलना चढ़ना सुरत शब्द का।।६१ ।।
संत मते पर नहिं परतीत।
सुरत शब्द नहिं धारें चीत।।६२ ।।
पाँच शब्द मारग नहिं चले।
सिंध पता कहो कैसे मिले।।६३ ।।

।। उत्तर अंग चौथा।।

विद्या पढ़ जो करें विचार।
बुन्द भेद भी मिला न सार।।६४ ।।
सार बुन्द है त्रिकुटी पार।
जोगेश्वर चढ़ करें विचार।।६५ ।।
प्राण जोग कर पहुँचे तहाँ।
बुँद ज्ञान उन पाया वहाँ।।६६ ।।
आगे का गुरु मिला न उनको।
व्हाँ का ज्ञान सुनाया सबको।।६७ ।।
जोग बिना विद्या पढ़ कहते।
विद्या बुधि से तिरपत रहते।।६८ ।।
यह तो निपट अहंकार में भूले।
इधर न उधर जमपुरी झूले।।६९ ।।
तू तो सुरत अब सुन मम बचन।
चढ़ और चल सुन सुन्न की धुन।।७० ।।

सुन सुन धुन चल देश हमारे।
हम तुझ को अब किया अपना रे।।७१ ।।

।। दूसरा प्रश्न।।

यह कि जो सुरत अपने देश को लौट जावे तो फिर काल देश में आवेगी या नहीं

चलने की तो करी तयारी।
स्वामी से यों बचन उचारी।।७२ ।।
संशय एक उठा मोहिं भारी।
सो निरवार कहो विस्तारी।।७३ ।।

।। दोहा।।

सेवा बस तुम काल को,सौंप दिया जब मोहिं।
तो अब कौन भरोस है, फिर भी ऐसा होय।।७४ ।।

।। उत्तर ।।

तब स्वामी हँस कर यों बोले।
कहूँ बचन मैं तुम से खोले।।७५ ।।
जान बूझ हम लीला ठानी।
मौज हमारी हुई सुन बानी।।७६ ।।
काल रचा हम समझ बूझ के।
बिना काल नहिं ख़ौफ़ जीव के।।७७ ।।

क़दर[1] द्याल नहिं बिना काल के।
मौज उठी तब अस दयाल के।।७८ ।।
दिया निकाल काल को व्हाँ से।
दख़ल काल अब कभी न य्हाँ से।।७९ ।।
मैं समरथ हूँ सब विधि जान।
बचन मोर तू निश्चय मान।।८० ।।
काल न पहुँचे उसी लोक में।
अब न करूँ कभी ऐसी मौज मैं।।८१ ।।
एक बार यह मौज ज़रूर।
अब मतलब नहिं डाली दूर।।८२ ।।
तू शंका अब मत कर चित में।
चलो देश हमरे रहो सुख में।।८३ ।।

।। तीसरा प्रश्न।।

यह कि जो जीव संत मार्ग पर नहीं चलते और कर्म और भर्म में पड़े हैं, उन को इस करनी का क्या फल प्राप्त होगा

।। अंग पहिला।।

सुन कर सुरत मगन होय बोली।
निश्चय किया बचन हम तोली।।८४ ।।

१ - महिमा।

मेरे मन अब दया समाई।
प्रश्न करूँ जीवन हित लाई।।८५ ।।
जग में सुरत अनेकन आईं।
काल जाल में गईं भुलाईं।।८६ ।।
कोई करे जप कोई तीरथ दाना।
कोई मूरत कोई तप अभिमाना।।८७ ।।
कोई अचार[1] कोई नेमी धरमी।
कोई विद्या पढ़ करते करनी।।८८ ।।
कोई वैराग त्याग सब देते।
वन परवत में जा कर रहते।।८९ ।।

।। अंग दूसरा।।

प्राण योग कर मुद्रा साधें।
पाँच मुद्रा धरें समाधें।। ९० ।।
चाचरी भूचरी खेचरी भाई।
और अगोचरी उनमुनी लाई।। ९१ ।।
चक्र वेध घट खैंचें प्राण।
सहस कँवल चढ़ लावें ध्यान।। ९२ ।।

।। अंग तीसरा।।

कोई ज्ञानी बाचक कोई लक्ष।
कोई खट शास्तर करते पक्ष।। ९३ ।।

१ - लौकिक धर्म पालन करने वाला।

मीमांसा वैशेषिक न्याय।
पातंजली जोग ठहराय।।९४ ।।
सांख्य करे नित[1] अनित[2] विचार।
वेदान्ती मिथ्या संसार।।९५ ।।
व्यापक सत चित आनंद रूप।
जीव ब्रह्म दोऊ एक स्वरूप।।९६ ।।
जीव वाच[3] त्रैदेह बतावें।
ईश्वर वाच ब्रह्मंड सुनावें।।९७ ।।
विश्व[4] नाम तेजस[5] और प्राग[6]।
जागृत स्वप्न सुषोपति भाग।।९८ ।।
वैराट हिरनगर्भ और अव्याकृत।
तीन नाम ईश्वर कहें कल्पित।।९९ ।।
वाच वाच दोउ मिथ्या मान।
व्यापक लक्ष[7] एक कर जान।।१०० ।।
विवर्तवाद[8] इन कीन्ही सिद्ध।
कोई अवछेद[9] अजात[10] विविद्ध[11]।।१०१ ।।
पर सिद्धान्त सबन का एक।
व्यापक निश्चय बाँधी टेक।।१०२ ।।

१ - ठहराऊ। २ - नाशमान। ३ - परघट स्वरूप। ४ - जाग्रत। ५ - स्वप्न। ६ -सुषुप्ति। ७ - गुप्त स्वरूप। ८ - वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म को कर्ता और संसार को मिथ्या माना है। ९ - जिसका टुकड़ा नहीं हुआ। १० - जो जनमा नहीं। ११ - हर तरह के।

पाँच शास्त्र इन किये निषेद।
छठा शास्त्र माना मत वेद।।१०३।।
चेतन को यह एक बतावें।
और कुल्ल रचना जड़ गावें।।१०४।।
चेतन ज्ञान मगन होय फिरते।
सब को कल्पित[1] उसमें कहते।।१०५।।
कुछ करनी करतूत न रखते।
चढ़ना चलना सब भ्रम कहते।।१०६।।
आना जाना भी कुछ नहीं।
चेतन ही चेतन इक सही।।१०७।।
पर इक मतलब की उन धारी।
व्यवहारक जग सत्य कहा री।।१०८।।
कोइ कोइ परारब्ध सत मानें।
भोग चुकें तब असत बखानें।।१०९।।
अब चेतन चेतन ही रहा।
जग त्रैकाल[2] कभी नहीं हुआ।।११०।।
मैं भी चेतन तू भी चेतन।
मैं तू का यह भर्म मिटावन।।१११।।
चेतन को पकड़ा मज़बूत।
छोड़ा जग को मिथ्या कूत[3]।।११२।।

१ - ख़याली। २ - भूत यानी जो हो गया, भविष्य जो होवेगा, वर्तमान जो हो रहा है। ३ - तौल कर।

सुरत अंस का भेद न पाया।
जो सतपुर से आन समाया।।११३।।
यह तो भेद संत कोई जाना।
और कोई नहिं परख पिछाना।।११४।।
बुद्धी की गम उसमें नाहीं।
वह रही चेतन चेतन माहीं।।११५।।
चेतन चेतन करत बखाना।
सुरत चैतन्य का मर्म न जाना।।११६।।
सब मत ऐसा धोखा खाया।
सुरत भेद काहू नहिं पाया।।११७।।

।। अंग चौथा।।

मुसल्मान हिन्दू और जैनी।
ईसाई क्या जानें कहनी।।११८।।
कोइ नमाज़ कोइ रोज़ा रखते।
कोइ मसजिद कोइ काबा[1] फिरते।।११९।।
कोइ क़ुरान पढ़ हाफ़िज[2] होते।
पढ़ें वज़ीफ़ा[3] रात न सोते।।१२०।।
कोइ चिल्ला कर मुल्ला बनते।
कोइ आबिद[4] कोइ ज़ाहिद[5] रहते।।१२१।।

१ - मक्का। २ - जिनको कुरान याद हो। ३ - जाप। ४ - पुजारी।
५ - परहेज़गार।

कोई मशायख़[1] क़ालो हाल[2] के।
कोइ सरोद[3] कोइ रागो ताल के।।१२२।।
कोई शरीअत[4] कोई तरीक़त[5]।
कोई मार्फ़त[6] कोई हक़ीक़त[7]।।१२३।।

।। अंग पाँचवाँ।।

जैन धर्म संजम बहु करते।
भूख प्यास को अति ही सहते।।१२४।।
बेला[8] तेला[9] चौला[10] साधें।
तीर्थंकर कुलकर आराधें।।१२५।।
जीव दया भी अति कर पालें।
दातन करें न दीवा बालें।।१२६।।
मुख पर बस्तर बाँधे बोलें।
सूत मोरछल लेकर डोलें।।१२७।।
हरी[11] तियागें पत्थर पूजें।
कोइ निर्वाण पद आतम बूझें।।१२८।।

।। अंग छठा।।

अब ईसाई का भाखूँ वृत्तन्ता[12]।
पढ़ किताब गिरजा जा पूजा।।१२९।।

---

१ - विद्यावान। २ - कालोहा। बातचीत। बोली और रहनी। मस्ती में झूमना। ३ - राग। ४ - कर्म कांड। ५ - उपासना। ६ - ज्ञान। ७ - विज्ञान। ८ - दो दिन का व्रत। ९ - तीन दिन का व्रत। १० - चार दिन का व्रत। ११ - साग फल आदिक। १२ - बयान।

इक सम होकर सब से बरतें।
नीच ऊँच जाती नहिं धरते।।१३०।।
पूजें जल्पा[1] और सलेब[2]।
मन के छोड़ें सबही ऐब।।१३१।।
हज़रत ईसा को यह मानें।
पुत्र ख़ुदा का उसको जानें।।१३२।।
वह बख़्शावें हम को इक दिन।
करें भरोसा उनका निस दिन।।१३३।।
यह भी मत है काल के घर का।
इन से भी मेरा मन फड़का।।१३४।।

।। अंग सातवाँ।।

और अनेक मते जग माहीं।
सब ही जानो काल की छाहीं।।१३५।।
यह पूछूँ मैं तुम से बात।
स्वामी कहो खोल विख्यात[3]।।१३६।।
इन जीवन को क्या फल होई।
भिन्न भिन्न कर भाखो सोई।।१३७।।

।। उत्तर।।

सुन अब सुरत कहूँ मैं तो से।
यह तो भूले हैं सब मो से।।१३८।।

१ - छोटी सूली जिसको ईसाई गले में पहनते हैं। सूली पर चढ़ा हुआ मनुष्य, ईसा। २ - सूली। ३ - प्रकट।

करमी शरई[१] हैं यह जीव।
सतगुरु बिन नहिं पावें पीव[२]।।१३९।।
कोइ राजा कोइ पंडित होवे।
कोइ धनवान सुखी जग सोवे।।१४०।।
कोइ स्वर्ग जा करे बिलास।
कोइ ऐराफ़[३] बहिश्त निवास।।१४१।।
कोइ सैयद कोइ शेख़ मौलवी।
कोइ आमिल[४] सिफ़ली[५] कोइ उलवी[६]।।१४२।।
कोइ तारागन मंडल पावे।
कोइ चाँद सूर्य के लोक समावे।।१४३।।
कोइ सुमेर पर करे बसेरा।
कोइ कैलास हिमांचल डेरा।।१४४।।
कोइ गन्धर्व लोक कोई इंद्रपुरी में।
कोइ पित्रलोक कोइ विष्णुपुरी में।।१४५।।
कोइ शक्तिलोक कोइ ईश धाम में।
कोइ ओंकार कोइ रंग नाम में।।१४६।।
उत्पति[७] अस्थित[८] परलै माहीं।
यह सब रहे काल की छाहीं।।१४७।।

१ - कर्मकांडी। २ - पति। ३ - स्वर्ग और नर्क के बीच में जो मुक़ाम है।
४ - अभ्यासी। ५ - नीचे मुकामों का। ६ - ब्रह्मांडी। ७ - पैदाइश।
८ - ठहराव।

काल हद्द से परे न कोई।
देश दयाल कोइ नहिं जोई।।१४८।।
आवागवन न काहू छूटा।
देर अबेर सभी जम लूटा।।१४९।।
सतगुरु बिना न कोई बाचा।
सत्तनाम पद मिला न साँचा।।१५०।।
फल करनी तो सबने पाया।
सुखी हुए पर फिर भरमाया।।१५१।।
ताते सतगुरु पद को सेवो।
बिन सतलोक न छूटे फेरो।।१५२।।
सुरत शब्द के मारग चलो।
सत्त शब्द से चढ़ कर मिलो।।१५३।।

।। चौथा प्रश्न।।

यह कि संतों के निज स्थान और उस के मार्ग का भेद क्या है

तब सूरत पूछे इक बाता।
स्वामी देव भेद विख्याता[1]।।१५४।।

।। उत्तर।।

तब स्वामी ने बचन सुनाया।
मारग का यों भेद लखाया।।१५५।।

१ - प्रगट।

पाँच नाम का सुमिरन करो।
श्याम सेत में सूरत धरो।।१५६।।
प्रथमे सुनो गगन में बाजा।
घंटा संख छाँट धुन गाजा।।१५७।।
सहस कँवल दल जोत लखाई।
बंकनाल में जाय समाई।।१५८।।
बंक पार त्रिकुटी में गई।
ओंकार और राद[1] धुन लई।।१५९।।
आगे पहुँची सुन्न मँझार।
ररंकार धुन सुनी पुकार।।१६०।।
किंगरी और सारंगी सुनी।
मान सरोवर चढ़ चढ़ गुनी।।१६१।।
आगे महासुन्न मैदाना।
जहाँ चार धुन तिमिर[2] समाना।।१६२।।
भँवर गुफा ता ऊपर देखी।
सोहं बंसी बजती पेखी[3]।।१६३।।
ता के परे धाम सत नामा।
बीन बजे सतलोक ठिकाना।।१६४।।
सुनत सुरत फिर आगे चढ़ी।
अलख लोक में जा कर धरी।।१६५।।

१ - बादल की गरज। २ - अँधेरा। ३ - परख लिया।

कोटिन अरब सूर उजियारा।
अलख पुरुष छबि अद्भुत धारा।।१६६ ।।
तहँ से अगम लोक को चली।
अगम पुरुष से जाकर मिली।।१६७ ।।
खरबन सूर चाँद परकाशा।
धुन का व्हाँ की अगम बिलासा।।१६८ ।।
धुन का वर्णन कैसे गाऊँ।
जग में कोइ दृष्टांत न पाऊँ।।१६९ ।।
ता के आगे रहत अनामी।
निज घर संतन बरना स्वामी।।१७० ।।
सुन कर सूरत अति हरखानी।
चलो सुवामी मैं सब जानी।।१७१ ।।
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे।
सतगुरु सो यह देश लखावे।।१७२ ।।
सतगुरु की महिमा अति भारी।
कोई न जाने पच पच हारी।।१७३ ।।
जा पर कृपा दृष्टि वे करें।
वह जाने और निश्चय धरे।।१७४ ।।
कोइ कोइ जीव करें विश्वासा।
कर प्रतीत वे धारें आसा।।१७५ ।।

संत बचन जो सच्चा मानें।
इस बानी को सो सच जानें।।१७६।।

।। पाँचवाँ प्रश्न।।

यह कि संत और साध और भेख और पाखंडी की पहिचान क्या है

इक संशय मेरे मन आई।
सो निर्णय कर कहो सुनाई।।१७७।।
संत नाम तुम किसका गावो।
साध भेख दोउ भेद बतावो।।१७८।।

।। उत्तर अंग पहिला।।

।। पहिचान संत की।।

तब स्वामी बोले सुन लीजे।
कान लगाय चित्त अब दीजे।।१७९।।
संत कहें हम उनको भाई।
सत्तलोक जिन सुरत समाई।।१८०।।
चौथा लोक तीन के पारा।
सत्तनाम सतगुरु दरबारा।।१८१।।
संत सुरत व्हाँ करे बिलास।
सत्तपुरुष सत शब्द निवास।।१८२।।

तिरलोकी के आगे सुन्न।
सुन्न के आगे है महासुन्न।।१८३।।
महासुन्न के पार ठिकाना।
भँवरगुफा ताहि करत बखाना।।१८४।।
ता के परे लोक है चौथा।
बिन व्हाँ पहुँचे सब है थोथा।।१८५।।
संत बिना कोई वहाँ न पहुँचा।
बिन व्हाँ पहुँचे संत न होता।।१८६।।

।। उत्तर अंग दूसरा।।

।। पहिचान साध की।।

संत भेद सब निर्णय कीन्हा।
साध भेद अब तुम लो चीन्हा।।१८७।।
संत मते का निश्चय करे।
सुरत शब्द के मारग चले।।१८८।।
जाय त्रिवेणी मंजन[1] करे।
सुन्न सरोवर त्रिकुटी परे।।१८९।।
साध नाम हम या को गाई।
बिन साधे यह साध न भाई।।१९०।।

१ - स्नान।

।। अंग तीसरा।।

।। पहिचान भेख की।।

भेख संत अब बर्न सुनाऊँ।
यह भी छान तोहि समझाऊँ।।१९१।।
संतन की बानी जो पढ़ते।
सुरत शब्द का निश्चय करते।।१९२।।
संत सरन जिन दृढ़ कर पकड़ी।
कर विश्वास सुरत निज जकड़ी।।१९३।।
बिना संत नहिं और भरोसा।
करम भरम तज चित को पोसा[१]।।१९४।।
सुरत शब्द मारग कुछ साधें।
जितना बने उतना आराधें।।१९५।।
इन का नाम भेख तुम जानो।
प्रीत करो इन सेवा ठानो।।१९६।।
चहे बस्तर रँग घर को छोड़ें।
चाहे घर रहें मन को मोड़ें।।१९७।।

।। अंग चौथा।।

।। पहिचान पाखंडी की।।

जिन की नहीं धारना ऐसी।
घर को छोड़ें होयँ परदेसी।।१९८।।

१ - शांति दी, सहारा दिया।

कपड़े रँग बातें बहु सीखी।
जग को ठगें कहावें भेखी।।१९९।।
कर्म लिखी वह भोगें अपनी।
भरमत फिरें पहिन कर कफ़नी[1]।।२००।।
उनका नाम भेख नहिं होई।
वह पाखंडी जानो सोई।।२०१।।
दीन गँवाया दुनिया खोई।
ना गिरही ना त्यागी दोई।।२०२।।
जम के द्वारे धक्के खावें।
नर्क पड़ें चौरासी जावें।।२०३।।
गिरही जीवन बहुत सतावें।
खावें पीवें और धमकावें।।२०४।।
पूजा अपनी बहुत करावें।
धन खैंचें व्यापार बढ़ावें।।२०५।।
साध संत अपने को कहें।
गृहस्थ बिचारे उन की सहें।।२०६।।
यह भी निर्णय तोहि सुनाया।
साध संत और भेख लखाया।।२०७।।
चौथे पाखंडी कह गाये।
जिन जग में बहु फंद लगाये।।२०८।।

१ - साधू का कपड़ा।

।। उपदेश।।

सुनो सुरत अब कहूँ बखानी।
खोजो साध संत तुम जानी।।२०९ ।।
सतगुरु कर उन सेवा ठानो।
चित्त लगाय चरन में आनो।।२१० ।।
चरनामृत परशादी लेना।
दर्शन पर तन मन सब देना।।२११ ।।
उनकी सेवा फल अति देई।
सत्तलोक तू इक दिन लेई।।२१२ ।।
सतसंग उनका तुम नित करना।
बचन सुनो और चित में धरना।।२१३ ।।
तीन लोक सब माया चेले।
ब्रह्मा विष्णु महादेव पेले।।२१४ ।।
तीन लोक अंतर और बाहर।
काल बियापा देखा ज़ाहिर[1]।।२१५ ।।

।। दोहा।।

बिन सतगुरु सतनाम बिन,
कोई न बाचे जीव।
सत्तलोक चढ़कर चलो,
तजो काल की सीव[2]।।२१६ ।।

१ - प्रकट। २ - सीमा, हद।

वर्णन भेद पाँच नाम यानी पाँच शब्द का विस्तार करके मय नाम और रूप और लीला और धाम एक एक शब्द के

।। शब्द स्थान पहिला।।

सुन री सखी तोहि भेद बताऊँ।
प्रथम अस्थान खोल कर गाऊँ।। १ ।।
सहस कँवल दल नाम सुनाऊँ।
जोत निरंजन बास लखाऊँ।। २ ।।
करता तीन लोक यह ठाऊँ[1]।
वेद चार इन रचे जनाऊँ।। ३ ।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनो।
पुत्र इन्हीं के हैं यह चीन्हो।। ४ ।।
कुल बैराट[2] रचा इन मिल के।
जीवन घेर लिया इन पिल के।। ५ ।।
जाल बिछाया जग में भारी।
इनकी पूजा जीव सम्हारी।। ६ ।।
फँसे जाल में पचे कर्म में।
धोखा खाया पड़े भरम में।। ७ ।।
अब जो इन को कोइ समझावे।
सत्तपुरुष का भेद लखावे।। ८ ।।

१ - स्थान। २ - पसारा।

तो नहिं मानें झगड़ा ठानें।
पक्षपात[1] कर ढिंग नहिं आवें।। ९ ।।
या ते मैं तो को समझाऊँ।
यह सब ठग खुल कर जतलाऊँ[2] ।।१० ।।
इनके मारग तू मत जाय।
तू संतन की सरन समाय।।११ ।।
सतगुरु कहें सोई तुम मानो।
इनका बचन न कर परमानो।। १२।।
राह रकाना[3] देऊँ दरसाई।
पता भेद अब कहूँ जनाई।।१३ ।।
मन और सुरत जमाओ तिल पर।
घेर घुमर घट आओ पिल कर[4] ।।१४ ।।
निरखो खिड़की देखो चौका।
चित्त लगाओ राखो रोका।।१५ ।।
पचरंगी फुलवारी निरखो।
दीपदान घट भीतर परखो।।१६ ।।
कोइ दिन ऐसी लीला देखो।
नील चक्र ता आगे पेखो।।१७ ।।
बिरह प्रेम बल ताको फोड़ो।
जोत निहारो मन को मोड़ो।।१८ ।।

१ - तरफ़दारी। २ - बतलाऊँ। ३ - भेद, तरकीब। ४ - धस कर।

अनहद घंटा सुन सुन रीझो।
शंख बजाओ रस में भीजो।।१९ ।।
यह पहिला अस्थान बताया।
राधास्वामी बरन सुनाया।।२० ।।

।। शब्द स्थान दूसरा।।

अब चलो सजनी दूसर धाम।
निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम[1]।। १ ।।
ओंकार धुन जहँ बिसराम।
गरजे बादल और घनश्याम।। २ ।।
सूरज मंडल लाल मुक़ाम।
गुरु ने बताया गुरु का नाम।। ३ ।।
पंचम वेद नाद यहि गाया।
चहुँ दल कँवल संत बतलाया।। ४ ।।
घंटा शंख तजी धुन दोई।
गरज मृदंग सुनाई सोई।। ५ ।।
सुरत चली और खोला द्वार।
बंकनाल धस हो गई पार।। ६ ।।
ऊँची नीची घाटी उतरी।
तिल की उलटी फेरी पुतरी।। ७ ।।

१ - स्थान।

गढ़ भीतर जाय कीन्हा राज।
भक्ति भाव का पाया साज।। ८ ।।
करम बीज अब दिया जलाई।
आगे को फिर सुरत बढ़ाई।। ९ ।।
नौबत झड़ती आठों जाम।
सूरत पाया मूल कलाम[१]।।१० ।।
महाकाल और कुरम[२] बखाना।
उत्पति बीजा य्हाँ से जाना।। ११ ।।
सूरज चाँद अनेकन देखे।
तारा मंडल बहु विधि पेखे।। १२।।
पिंड अंड से न्यारी खेली।
ब्रह्मंड पार चली अलबेली[३]।।१३ ।।
वन और परवत बाग़ दिखाई।
चमन चमन फुलवारी छाई।।१४ ।।
नहरें नदियाँ निरमल धारा।
समुँदर पुल चढ़ हो गइ पारा।।१५ ।।
मेर सुमेर देख कैलासा।
गई सुरत जहँ विमल बिलासा।। १६ ।।
राधास्वामी कहत पुकारी।
दूसर मंज़िल करली पारी।।१७ ।।

१ - शब्द। २ - कछुआ। ३ - सुरत मतवाली।

।। शब्द स्थान तीसरा।।

अब चली तीसर परदा खोल।
सुन्न मँडल का सुन लिया बोल।। १ ।।
दसवाँ द्वार तेज परकाश।
छोड़े नीचे गगन अकाश।। २ ।।
मानसरोवर किये अश्नान।
हंस मंडली जाय समान।। ३ ।।
सुन्न शिखर चढ़ी सूरत घूम।
किंगरी साराँगी डाली धूम।। ४ ।।
सुन सुन सूरत हो गइ सार।
पहुँची जाय त्रिवेनी पार।। ५ ।।
महासुन्न का नाका लीन्ह।
गुप्त भेद जाय लीन्हा चीन्ह।। ६ ।।
अंध घोर जहँ भारी फेर।
सत्तर पालँग[1] जा का घेर।। ७ ।।
बानी चार गुप्त जहँ उठती।
सुरत रागिनी नइ नइ सुन्ती।। ८ ।।
झन्कारें अद्‌भुत कहा बरनूँ।
सुन सुन धुन मन में अति हरखूँ।। ९ ।।

१ - यह तिरलोकी एक पालंग के बराबर है।

पाँच अंड रचना तहँ कीन्ही।
ब्रह्म पाँच ता में हुए लीनी।।१० ।।
अंडन सोभा बरनूँ कैसी।
सब्ज़ सेत कोइ पीत बरन सी।।११ ।।
लख लख अरब तासु परमाना।
यह अंडा अति तुच्छ दिखाना।।१२ ।।
या में ब्रह्म वियापक जोई।
ता की गति कहो कितनी होई।।१३ ।।
ताका ज्ञान पाय यह ज्ञानी।
फूलें मन में होय अभिमानी।।१४ ।।
मेंडक सी गति इन की जानी।
कूप समुद्र जान मगनानी।।१५ ।।
कहा करें यह हैं लाचार।
वह तो देश न देखा सार।।१६ ।।
बिन देखे कैसे परतीत।
उन नहिं जानी अचरज रीत।।१७ ।।
इसी ब्रह्म को जान अपार।
भूले मारग करें विचार।।१८ ।।
अब इन को कैसे समझाऊँ।
वह नहिं माने चुप्प रहाऊँ।।१९ ।।

राधास्वामी कही सुनाय।
तीनों परदे दिये लखाय।।२० ।।

।। शब्द स्थान चौथा।।

अब चौथे की करी तयारी।
चल री सुरत तू शब्द सम्हारी।। १ ।।
नाल हंसनी घाटा फाँदा।
रुकमिन नाल सुरत को साधा।। २ ।।
पाँजी[१] निरखी जहँ गंभीर।
सुरत निरत दोउ धारी धीर।। ३ ।।
दायें रचे दीप परचंड[२]।
बायें रचाये बहुतक खंड।। ४ ।।
मोती महल और रतन अटारी।
हीरे लाल जड़े जहँ भारी।। ५ ।।
गुप्त भेद यह दिया जनाई।
जानेंगे कोइ संत सिपाही।। ६ ।।
भँवरगुफा का परवत निरखा।
सोहं शब्द जाय जहँ परखा।। ७ ।।
धुन मुरली जहँ उठत करारी[३]।
सेत सूर सूरत निरखा री।। ८ ।।

१ - रास्ता। २ - बड़े। ३ - तेज़।

तेज पुंज[1] वह देश भला री।
धुन अपार तहँ होत सदा री।। ९ ।।
हंस अखाड़ा[2] लीला चौक।
भक्त मंडली खेलें थोक[3]।।१० ।।
लोक अनंत भक्त जहँ बसें।
नाम अधार अमी रस रसें।।११ ।।
राधास्वामी यह भी गाई।
चौथा परदा लीन्हा जाई।।१२ ।।

।। शब्द स्थान पाँचवाँ।।

पंचम क़िला तख़्त सुल्तानी।
बादशाह सच्चा निज जानी।। १ ।।
चली सुरत देखा मैदाना।
अजब शहर अद्भुत चौगाना[4]।। २ ।।
अमृत कुंड अमी की खाई।
महल सुनहरी रचे बनाई।। ३ ।।
चौक चाँदनी दीप अनूपा।
हंसन शोभा अचरज रूपा।। ४ ।।
खोड़स[5] भान चंद्र उजियारा।
सुरत चढ़ी देखा निज द्वारा।। ५ ।।

१ - समूह। २ - झुंड। ३ - इकट्ठा। ४ - चौक। ५ - सोलह।

द्वारपाल जहँ बैठे हंस।
कहिं कहिं अंस कहीं कहिं बंस।। ६ ।।
सहज सुरत तहँ बचन सुनाये।
कहो भेद तुम यहँ कस आये।। ७ ।।
सुरत नवीन कही तब बानी।
संत मिले उन कही निशानी।। ८ ।।
इतना कह तब भीतर धसी।
सत्तनाम दर्शन कर हँसी।। ९ ।।
पुहप[१] मध्य से उठी अवाज़ा।
को तुम हो आये केहि काजा।।१० ।।
सतगुरु मिले भेद सब दीन्हा।
तिन की कृपा दरस हम लीन्हा।। ११ ।।
दरशन कर अति कर मगनानी।
सत्तपुरुष तब बोले बानी।।१२ ।।
अलख लोक का भेद सुनाया।
बल अपना दे सुरत पठाया।।१३ ।।
अलख पुरुष का रूप अनूपा।
अगम पुरुष निरखा कुल भूपा।।१४ ।।
देखा अचरज कहा न जाई।
क्या क्या शोभा बरनूँ भाई।।१५ ।।

१ - फूल। कँवल।

तीन पुरुष और तीनों लोक।
देखे सूरत पाया जोग।।१६ ।।
प्रेम बिलास जहाँ अति भारी।
राधास्वामी कहत पुकारी।।१७ ।।

।। बचन सत्ताईसवाँ ।।

वर्णन हाल विरह और खोज सतगुरु का और उनके सतसंग का

।। पहला शब्द ।।

मैं सतगुरु सँग करूँगी आरती।
मो विरहन को कोइ मत हटको[1]।। १ ।।
जिगर[2] जले का दीपक बारूँ।
मन बट कर मैं बाती डारूँ।। २ ।।
जोत जगाऊँ दर्द प्रेम की।
आरत फेरूँ सोज[3] मरम की।। ३ ।।
वेदन[4] मेरी सतगुरु जाने।
बिन दीदार नहीं मन माने।। ४ ।।
दुष्ट दूत अब अधिक सतावें।
दर्शन राधास्वामी नाहिं दिखावें।। ५ ।।

१ - मना करो। २ - कलेजा। ३ - तपन। ४ - कष्ट।

कौन उपाव करूँ मैं सजनी।
ज़ोर ज़ुल्म इन कब लग सहनी॥ ६ ॥
जल बल ख़ाक किया मैं अंगा।
जस जोती पर जले पतंगा॥ ७ ॥
कौन सुने मेरी किस पै रोऊँ।
जैसी बिथा मेरी मैं ही सहऊँ॥ ८ ॥
आह आह कर निस दिन दैहूँ[1]।
सबर न आवे फिर पछतैहूँ॥ ९ ॥
बिन राधास्वामी अब कोइ नहिं मेरा।
दुक्ख दर्द ने अति कर घेरा॥ १० ॥
अब घबराय करूँ मैं बिनती।
पल पल राधास्वामी चित में धरती॥ ११ ॥
दाद[2] फ़र्याद[3] सुनो मेरी सतगुरु।
कँवल बिना जैसे तड़पे मधुकर[4]॥ १२ ॥
मैं तड़पूँ जस जल बिन मीना।
जिगर फटे को कैसे सीना॥ १३ ॥
तुम सब विधि हो समरथ स्वामी।
तुमहिं जतन करो अन्तरजामी॥ १४ ॥
मैं अजान कुछ जानत नाहीं।
जैसे बने तैसे काटो फाहीं[5]॥ १५ ॥

१ - तपूँगी। २ - प्रार्थना। ३ - पुकार। ४ - भँवरा। ५ -बन्धन।

तब सतगुरु इक जुक्ति बताई।
सुरत शब्द की करो कमाई।।१६ ।।
और आरत यह नित प्रति गाओ।
घर में बैठो सुरत लगाओ।।१७ ।।
मौज निहारो करो विश्वासा।
इक दिन होगी पूरन आसा।।१८ ।।
अस अस सतगुरु दीन्ह दिलासा।
अब मन अंतर होत हुलासा।।१९ ।।
यह अरज़ी अब मानो मेरी।
मैं दुखिया तुम चरनन चेरी।।२० ।।
उमँग उमँग कर आरत गाई।
नित्त करूँ अस आरत आई।।२१ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

दर्द दुखी मैं विरहिन भारी।
दर्शन की मोहिं प्यास करारी।। १ ।।
दर्शन राधास्वामी छिन छिन चाहूँ।
बार बार उन पर बल जाऊँ।। २ ।।
वह तो ताड़ मार फटकारें।
मैं चरनन पर सीस चढ़ाऊँ।। ३ ।।
निर्धन निर्बल क्रोधिन मानी।
मैं गुन अपने अब पहिचानी।। ४ ।।

स्वामी दीन दयाल हमारे।
मो सी अधम को लीन्ह उबारे।। ५ ।।
मैं ज़िद्दिन[1] दम दम हठ करती।
मौज हुक्म में चित नहीं धरती।। ६ ।।
दया करो राधास्वामी प्यारे।
औगुन बख़्शो लेव उबारे।। ७ ।।

।। तीसरा शब्द ।।

कैसी करूँ कसक[2] उठी भारी।
मेरी लगी गुरू सँग यारी।। १ ।।
दम दम तड़पूँ छिन छिन तरसूँ।
चढ़ रही मन में विरह ख़ुमारी[3]।। २ ।।
सुलगत जिगर फटत नित छाती।
उठन लगी हिये से चिनगारी।। ३ ।।
नैनन नीर बहत जस नदियाँ।
डूब मरी माया मतवारी।। ४ ।।
ठंडी आह उठे पल पल में।
छाय गई अब प्रीत करारी।। ५ ।।
तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे।
काल करम पच हारी।। ६ ।।

१ - हठ करने वाली। २ - पीर। ३ - नशा।

सुरत निरत दोउ क़ासिद[1] कीन्हे।
बिथा[2] लिखूँ अब सारी।। ७ ।।
पतियाँ भेजूँ गुरु दरबारा।
अब लो ख़बर हमारी।। ८ ।।
नगर उजाड़ देश सब सूना।
तुम बिन जग अँधियारी।। ९ ।।
कौन सुने और कौन सम्हारे।
सब मोहिं दीन निकारी।। १० ।।
बही जात नइया मँझधारा।
तुम बिन कौन उबारी।। ११ ।।
खेवटिया क्यों देर लगाई।
क्यों कर करूँ पुकारी।। १२ ।।
मैं मरी जाउँ जिऊँ अब कैसे।
तुम मेरी सुधि न सम्हारी।। १३ ।।
डालो जान देव सरजीवन[3]।
मैं तुम पर बलिहारी।। १४ ।।
बचन सुनाओ दरस दिखाओ।
हरो पीर मेरी सारी।। १५ ।।
राधास्वामी सुनो हमारी।
मैं तुम्हरे आधारी।। १६ ।।

* * * * *

१ - दूत। २ - तकलीफ। ३ - अमृत बूटी।

।। चौथा शब्द ।।

पिया बिन कैसे जिउँ मैं प्यारी।
मेरा तन मन जात फुका री।। १ ।।
कोइ संत मिलें अब भारी।
जो पिया को मिलावें आ री।। २ ।।
मैं चढ़ूँ गगन में सारी।
दिन रात लगे मेरी तारी[1]।। ३ ।।
मैं विरहिन लगी कटारी।
मैं घायल फिरूँ उजाड़ी।। ४ ।।
सतगुरु अब करें सम्हारी।
तब हिरदे घाव पुरा[2] री।। ५ ।।
मोहिं नाम देहिं निज सारी।
यह मरहम नित्त लगा री।। ६ ।।
राधास्वामी करें दवा री।
मैं उन पै जाउँ बलिहारी।। ७ ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

दर्द दुखी जियरा नित तरसे।
तन मन में पीर घनेरी।। १ ।।
कोइ सतगुरु संत दया कर हेरें।
तो मिटे बिथा घट मेरी।। २ ।।

१ - ध्यान। २ - पुरना = भरना। घाव अच्छा होना।

मैं अति दीन अनाथ अचेती।
उन बिन को मोहिं गहे री।। ३ ।।
क्या क्या कहूँ काल जस कसियाँ[1]।
फँसियाँ आन अँधेरी।। ४ ।।
मन की बात मनहि पुनि जाने।
मुख से क्यों कहत बने री।। ५ ।।
अंतरजामी वैद मिलें जब।
तब दुख दूर टले री।। ६ ।।
आपहि आप रोग मेरा बूझें।
आपहि दें कुछ दवा भली री।। ७ ।।
मैं तो अजान निपट कर मूढ़ा।
भूला गैल गली री।। ८ ।।
तुम दयाल कस ढील करोगे।
जल्दी से अब कर्म दले री।। ९ ।।
सतसँग सार न बूझे चंचल।
ठहरत नहिं छिन एक पली री।। १० ।।
रा धा स्वा मी अचरज धामी।
आन मिले सब पीर हरी री।। ११ ।।

* * * * *

१ - बाँधा।

।। छठा शब्द ।।

चुनर मेरी मैली भई।
अब का पै जाउँ धुलान।। १ ।।
घाट घाट मैं खोजत हारी।
धुबिया मिला न सुजान।। २ ।।
नैहर[1] रहुँ कस पिया घर जाऊँ।
बहुत मरे मेरे मान।। ३ ।।
नित नित तरसूँ पल पल तड़पूँ।
कोइ धोवे मेरी चूनर आन।। ४ ।।
काम दुष्ट और मन अपराधी[2]।
और लगावें कीचड़ सान।। ५ ।।
का से कहूँ सुने नहि कोई।
सब मिल करते मेरी हान।। ६ ।।
सखी सहेली सब जुड़ आईं।
लगीं भेद बतलान।। ७ ।।
रा धा स्वा मी धुबिया भारी।
प्रगटे आय जहान।। ८ ।।

।। सातवाँ शब्द ।।

सुर्त चली धुलावन काज।
चुनरिया मैल भरी।। १ ।।

१ - माँ का घर। २ - पापी।

गई सतसँग के घाट।
सुरत गुरु चरन धरी।। २ ।।
पाया शब्द अगाध।
हुई घट बीच खरी[1]।। ३ ।।
चली सुरत आकाश।
उड़ी ज्यों उड़त परी।। ४ ।।
हुआ काम बल छीन[2]।
तिरिष्णा सकल जरी।। ५ ।।
पाया प्रथम ठिकान।
मिली पद आन हरी[3]।। ६ ।।
खोला बंक दुवार।
सुफल हुइ देह नरी[4]।। ७ ।।
सुन्न सरोवर पाय।
सेत हुइ अब चुनरी।। ८ ।।
महा सुन्न के पार।
लगी झाँकन झँझरी।। ९ ।।
भँवरगुफा ढिंग पहुँच।
सुनी बंसी मधुरी।। १० ।।
परसे पुरुष पुरान।
गई अमरा नगरी।। ११ ।।

१ - निर्मल। २ - नाश। ३ - निरंजन। ४ - नर की।

खोला अलख दुवार।
अमी सँग भरी गगरी।। १२।।
अगम पुरुष दरबार।
देख लीला सगरी[१]।।१३ ।।
राधास्वामी महल दिखान।
हुई सुर्त अज अजरी।। १४।।

।। बचन अट्ठाईसवाँ।।

वर्णन आनंद विलास प्राप्ति सतगुरु का

।। पहला शब्द ।।

जाग री उठ खेल सुहागिन।
पिया मिले बड़े भाग।। १ ।।
लाग री उन चरनन।
फिर न मिले अस दाव।। २ ।।
सखी सहेली सब जुड़ आईं।
गावत मंगल राग।। ३ ।।
शोभा भारी रूप निहारी।
बढ़ा प्रेम अनुराग।। ४ ।।
बजी बधाई हर्ष समाई।
भाग चला बैराग।। ५ ।।

१ - सब।

भक्ति भावनी निरमल करनी।
खेलत निज कर फाग।। ६ ।।
सत्त सरोवर मंजन कीन्हा।
धोये कल मल दाग़।। ७ ।।
सतगुरु सरन हंस होय बैठी।
छूटी संगत काग।। ८ ।।
राधास्वामी मगन हुए जब।
दुर्मत दीन्ही त्याग।। ९ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

सोया भाग मेरा जागा आज सखी
सोया भाग मेरा जागा।
परम पुरुष गुरु पाया।। १ ।।
कर्म कला सब फूँक जलाई।
सुरत शब्द हम पाया।। २ ।।
सतगुरु दया द्वार घट खोला।
सुखमन जाय बसाया।। ३ ।।
नाल काल तज शब्द समानी।
सुन्न सरोवर न्हाया।। ४ ।।
माया ममता सब धर खाई।
सुन्न शिखर चढ़ आया।। ५ ।।

गुरु दयाल मोहिं हिम्मत दीन्ही।
महासुन्न के पार कराया।। ६ ।।
भँवरगुफा रस अगम पिलाया।
शब्द शोर जहँ अधिक सुनाया।। ७ ।।
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख।
अलख अगम दरसाया।। ८ ।।
राधास्वामी धाम अजब गत।
काहू भेद न गाया।। ९ ।।
वेद पुरान क़ुरान न जाने।
वह गति अगम अथाया।।१० ।।
जोत निरंजन मर्म न जाना।
अक्षर लग सब वार रहाया।। ११ ।।
ज्ञानी जोगी सब थक बैठे।
वह पद किनहुँ न पाया।।१२ ।।
यह पद सार भेद निज सारा।
बिरले संत जनाया।।१३ ।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव गोरख।
इन को माया खाया।।१४ ।।
इस पद का कोइ भेद न जाने।
रा धा स्वा मी अब प्रगटाया।।१५ ।।

* * * * *

।। तीसरा शब्द ।।

मोहिं मिला सुहाग गुरू का।
मैं पाया नाम गुरू का।। १ ।।
मैं सरना लिया गुरू का।
मैं किंकर हुआ गुरू का।। २ ।।
मेरे मस्तक हाथ गुरू का।
मैं हुआ ग़ुलाम गुरू का।। ३ ।।
मैं पाया अधार गुरू का।
मैं पकड़ा चरन गुरू का।। ४ ।।
मैं सरबस हुआ गुरू का।
मैं हो गया अपने गुरु का।। ५ ।।
कोइ और न मुझसा गुरु का।
गुरु का मैं गुरु का गुरु का।। ६ ।।
राधास्वामी नाम यह धुर का।
मैं पाया धाम उधर का।। ७ ।।

।। चौथा शब्द ।।

आज घड़ी अति पावन[1] भावन[2]।
राधास्वामी आये जगत चितावन।। १ ।।
जाके गिरह[3] प्रेम पग धारन।
तिन जीवन का करें उबारन।। २ ।।

१ - पवित्र। २ - प्यारी। ३ - घर।

आनंद मंगल हर्ष सुहावन।
जुड़ मिल हंस लगे गुनगावन।। ३ ।।
शोभा अधिक न जाय बखानन।
कहँ लग कहूँ वार नहिं पारन।। ४ ।।
राधास्वामी शब्द मनावन[१]।
सुरत चढ़ी देखा घट चाँदन।। ५ ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

गुरु चरन गिरह मेरे आये।
भाग मेरे सोते दिये जगाये।। १ ।।
पौद[२] मेरी सूखी हरी कराये।
देश मेरा सूना आन बसाये।। २ ।।
कहूँ क्या आनंद उर न समाये।
फूलती फिरूँ देह बिसराये।। ३ ।।
गुरू सँग सतसंगी चल आये।
हंस आकाशी देख लजाये।। ४ ।।
अजब यह औसर कहा न जाये।
देव और मुनि जन गये लुभाये।। ५ ।।
कोटि तेतीसों रहे पछताये।
दरस नहिं पाया रहे भुलाये।। ६ ।।

१ - मनाते हैं। २ - छोटे पेड़।

आरती ऐसी कौन सुनाये।
अगम गति संत कौन कह गाये।। ७ ।।
निरंजन जोत थके गुन गाये।
ओं और अक्षर भेद न पाये।। ८ ।।
सोहँ सतनाम राह में आये।
अलख और अगम द्वार पर छाये।। ९ ।।
महल राधास्वामी ऊँच दिखाये।
कहन में शोभा बरनी न जाये।। १० ।।
बिना गुरु भेदी कौन लखाये।
सुरत बिन शब्द कभी नहीं जाये।। ११ ।।
पलँग पर बैठे सतगुरु आये।
आरती अद्‌भुत लीन सजाये।। १२ ।।
द्वार सब घट के गये खुलाये।
विहंगी[1] सुरत चढ़ी गुन गाये।। १३ ।।
दया अस कीन्ही राधास्वामी आये।
पड़ी मैं उनके चरनन धाये।। १४ ।।
प्रेम और प्रीत लगी अधिकाये।
नहीं सुध तन मन गई भुलाये।। १५ ।।

* * * * *

१ - पक्षी की सी गति है जिसकी।

।। छठा शब्द ।।

कौन करे आरत सतगुरु की।।टेक।।
ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं।
मिली नहीं यह पदवी।। १ ।।
कोटि तेतीसों राग बैरागी।
इंद्र मुनिंदर[1] भटकी।। २ ।।
सतगुरु बिना खोज नहिं पाया।
करम भरम बिच अटकी।। ३ ।।
बड़े भाग जानो अब उन के।
जिन को सरन परापत गुरु की।। ४ ।।
गुरु समान समरथ नहिं कोई।
जिन धुर घर की आन ख़बर दी।। ५ ।।
मेरे भाग बड़े अब जागे।
मिल सतगुरु सँग आरत करती।। ६ ।।
भाव भक्ति क्या क्या दिखलाऊँ।
मैं सतगुरु बिन और न रखती।। ७ ।।
गुरु की दया सहसदल पाया।
त्रिकुटी चढ़ कर सुन्न परखती।। ८ ।।
महासुन्न और भँवरगुफा लख।
सत्तलोक चढ़ अधिक हरखती।। ९ ।।

१ - बड़े मुनि।

अलख अगम दरसे पद दोनों।
आगे राधास्वामी चरन परसती।। १० ।।

।। बचन उन्तीसवाँ।।

प्रार्थना सतगुरु के चरन कँवल में

।। पहला शब्द ।।

सतगुरु सँग आरत करना।
भव में क्यों दुख सुख सहना।। १ ।।
मन चित का थाल सजाऊँ।
सम सुरत जोत जगवाऊँ।। २ ।।
चढ़ अधर गगन पर धाऊँ।
अनहद धुन सदा बजाऊँ।। ३ ।।
गुरु किरपा करो बनाई।
अब मुझ पै रहो सहाई।। ४ ।।
मैं दुखिया बहु दुख पाई।
तन मन को रोग सताई।। ५ ।।
सतसंग भी किया न जाई।
ज़ुल्मी[1] बहु ज़ोर चलाई।। ६ ।।
अब मेरी कुछ न बसाई।
कोइ चले न मोर उपाई।। ७ ।।

१ - दुख देने वाला यानी काल।

तुम दाता समरथ दाना[1]।
जो चाहो करो निदाना।। ८ ।।
मोहिं निश्चय टेक तुम्हारी।
तुम करिहो भौजल पारी।। ९ ।।
इक विनती सुनो हमारी।
मोहिं लीजे सरन सम्हारी।।१० ।।
गुन गाऊँ चरन धियाऊँ।
तुम बिन कोइ और न गाऊँ।। ११ ।।
मैं अधम दीन गति मेरी।
तुम चरन गहे होय चेरी।।१२ ।।
अब छिन छिन मुझे सम्हारो।
मन भटक भटक अब हारो।।१३ ।।
भक्ती की रीत सिखाओ।
घट में मेरे प्रेम बढ़ाओ।।१४ ।।
दृढ़ पकड़ूँ चरन तुम्हारे।
तुम बिन नहिं और अधारे।।१५ ।।
मेरे मन आसा भारी।
मुझ को भी लेहैं उबारी।।१६ ।।
राधास्वामी गुरू हमारे।
कर दया दास भव तारे।।१७ ।।

* * * * *

१ - अन्तरजामी।

।। दूसरा शब्द ।।

मेरी पकड़ो बाँह हे सतगुरु।
नहिं बह्यो धार भव सागर।। १ ।।
मैं बचूँ जाल से क्यों कर।
तुम बिन कोई और न आसर[1]।। २ ।।
अब मिला अजायब औसर।
जम काल बड़ा है फनधर[2]।। ३ ।।
कोइ मंत्र सिखाओ आ कर।
लो चरन ओट किरपा कर।। ४ ।।
मैं थका चौरासी फिर फिर।
अब कैसे मिले अमर घर।। ५ ।।
तब सतगुरु कहा दया कर।
अब सुरत चढ़ाओ गगन पर।। ६ ।।
वह घाटी है अति अड़बड़[3]।
मन इन्द्री खैंच उधर धर।। ७ ।।
तब मिले शब्द तोहि इस्थिर।
तन मन धन आज अरप धर।। ८ ।।
गुरु प्रीत करो चित सम कर।
यह आरत करो अधर चढ़।। ९ ।।

१ - सहारा। २ - साँप। ३ - ऊँची नीची।

राधास्वामी सरन तू दृढ़ कर।
फिर छोड़ न कभी उमर भर।।१० ।।

।। तीसरा शब्द ।।

गुरू मैं गुनहगार[1] अति भारी।।टेक ।।
काम क्रोध और छल चतुराई।
इन सँग है मेरी यारी।। १ ।।
लोभ मोह अहंकार ईर्षा।
मान बड़ाई धारी।। २ ।।
कपटी लम्पट[2] झूठा हिंसक[3]।
अस अस पाप करा री।। ३ ।।
दुक्ख निरादर सहा न जाई।
सुख आदर अभिलाख भरा री।। ४ ।।
बिंजन स्वाद अधिक रस चाहे।
मन रसना यही चाट पड़ा री।। ५ ।।
धन और कामिन चित्त बसाये।
पुत्र कलित्तर[4] आस भरा री।। ६ ।।
नाना विधि दुख पावत पापी।
तो भी यह करतूत न छाँड़ी।। ७ ।।
यह मन दुष्ट काल का चेरा।
नित भरमावत निडर हुआ री।। ८ ।।

१ - पापी। २ - विषयी। ३ - हत्यारा, कष्ट पहुँचाने वाला। ४ - स्त्री।

जब जब चोट पड़ी दुक्खन की।
तब डर डर कर भजन करा री।। ९ ।।
देखो दया मेहर सतगुरु की।
उसी भजन को मान लिया री।।१० ।।
बुधि चतुराई बचन बनावट।
हार जीत की चर्चा धारी।।११ ।।
शेख़ी बहुत प्रीत नहिं अंतर।
भोले भक्तन धोख दिया री।।१२ ।।
नर नारी बहुतक बस कीन्हे।
मान प्रतिष्ठा[1] भोग किया री।।१३ ।।
गुरु सँग प्रीत कपट कुछ डर की।
कभी थोड़ी कभी बहुत किया री।।१४ ।।
कहँ लग औगुन बरनूँ अपने।
याद न आवत भूल गया री।।१५ ।।
चोर चुग़ल[2] इन्द्री रस माता।
मतलब की सब बात विचारी।।१६ ।।
ख़ुद मतलबी निर्दई मानी।
बहुतन का अपमान किया री।।१७ ।।
कोटिन पाप किये बहुतेरे।
कहूँ कहाँ लग वार न पारी।।१८ ।।

१ - इज़्ज़त। २ - निन्दक।

हे सतगुरु अब दया विचारो।
क्या मुख ले मैं करूँ पुकारी।।१९ ।।
नहिं परतीत प्रीत नहिं रंचक[1]।
कस कस मेरा करो उबारी।।२० ।।
मो सा कुटिल और नहिं जग में।
तुम सतगुरु मोहिं लेव सुधारी।।२१ ।।
जतन करूँ तो बन नहिं आवत।
हार हार अब सरन पड़ा री।।२२ ।।
यह भी बात कही मैं मुँह से।
मन से सरना कठिन भया री।।२३ ।।
सरना लेना यह भी कहना।
झूठ हुआ मुँह का कहना री।।२४ ।।
तुम्हरी गति मति तुमहीं जानो।
जस तस मेरा करो उबारी।।२५ ।।
मैं तो नीच निपट संशय रत।
लगे न चरनन प्रीत करारी।।२६ ।।
मेरे रोग असाध भरे हैं।
तुम बिन को अस करे दवा री।।२७ ।।
जब चाहो जब छिन में टारो।
मेहर दया की मौज निरारी[1]।।२८ ।।

१ - कुछ। २ - निराली।

बारम्बार करूँ मैं बिनती।
और प्रार्थना करूँ तुम्हारी।।२९।।
तुम बिन और न कोई दीखे।
तुमहीं हो मेरे रखवारी।।३०।।
बुरा बुरा फिर बुरा बुरा हूँ।
जैसा तैसा आन पड़ा री।।३१।।
अब तो लाज तुम्हें है मेरी।
राधास्वामी खेवो[1] बला[2] री।।३२।।

।। बचन तीसवाँ।।

आरती सतगुरु के चरन कँवल में

।। पहला शब्द ।।

आरत गाउँ स्वामी अगम अनामी।
सत्तपुरुष सतगुरु राधास्वामी।। १ ।।
सहज का थाल अचिंत की गादी[3]।
कँवल कटोरी घिय अमी डराई।। २ ।।
मूल नाम की जोत जगाई।
दोऊ हाथ ले सन्मुख आई।। ३ ।।
टोपी कमरी[4] धोती पटका[5]।
मुख पोछन रूमाल चढ़ाई।। ४ ।।

१ - दूर करो। २ - आफ़त। ३ - गद्दी। ४ - मिरजई।
५ - जो कमर में बाँधा जाय।

केसर तिलक माल फूलन की।
धूप दीप[1] और भोग धराई।। ५ ।।
अब आरत ले फेरन लागी।
सुन्न मँडल अनहद धुन आई।। ६ ।।
दृष्टि जोड़ चित चरन लगाई।
कृपा दृष्टि गुरु कीन्ह बनाई।। ७ ।।
भान चन्द्र छबि घट उजियारी।
देखत देखत दृष्टि समाई।। ८ ।।
सब हंसन मिल आरत गाई।
समरथ सब को लिया अपनाई।। ९ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

आरत गाऊँ पूरे गुरू की।
महिमा बरनूँ गगन शिखर की।। १ ।।
धुन पकड़ूँ मैं अनहद घर की।
सैर करूँ मैं सुन्न नगर की।। २ ।।
बात कहूँ मैं अगम डगर की।
पीर[2] हरूँ मैं अपने जिगर की।। ३ ।।
दीद[3] करूँ मैं पुरुष अधर की।
दूर करूँ मैं ममता धर[4] की।। ४ ।।

१ - दीपक। २ - दर्द। ३ - दर्शन। ४ - देह।

जोति जगाऊँ प्रेम बिरह की।
थाली धारूँ सुरत निरत की।। ५ ।।
मैं तो छोटा यह पद मोटा।
कैसे चढ़ूँ स्वामी यह मन खोटा।। ६ ।।
कृपा दृष्टि का दीजे झोटा[1]।
तो जावे बुधि बल का टोटा[2]।। ७ ।।
अब मन तुम चरनन पर लोटा।
काल करम सिर मारा सोटा[3]।। ८ ।।
खेल कूद सब मैंने छोड़ा।
चित्त चरन में निस दिन जोड़ा।। ९ ।।
अब कीजे मो पै दया अपारी।
मैं जाऊँ स्वामी तुम बलिहारी।।१० ।।
मैं किंकर हूँ दीन अधीना।
नहिं अब तक मैं तुम को चीन्हा।। ११ ।।
क्या आरत मैं करने जोगा।
अपनी दया से मोको पोखा[4]।।१२ ।।
अब रक्षा मेरी तुम कीजे।
बिछड़ूँ न कभी सरन में लीजे।।१३ ।।
दामन[5] तुम्हरा पकड़ा स्वामी।
तुम हो अगम अपार अनामी।।१४ ।।

१ - झूले का झोंका। २ - नुकसान। घाटा। ३ - डंडा।
४ - सम्हाला। ५ - पल्ला यानी आसरा

प्रेम भक्ति और सेवा ध्याना।
यह सब दीजे मुझ को दाना[१]।।१५ ।।

।। तीसरा शब्द ।।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी गाऊँ।
नाम पदारथ नाम पदारथ नाम पदारथ पाऊँ।।१।।
जोत जगाय दृष्टि भर देखूँ।
अगम अगाध रूप हिय पेखूँ[२]।। २ ।।
महिमा ता की बरनी न जाई।
प्रत्यक्ष सतगुरु दिया दिखाई।। ३ ।।
चरन सरन वर[३] माँगूँ दाता।
हो मेरे तुम पित और माता।। ४ ।।
करी आरती हित चित लाई।
अमृतसर अश्नान कराई।। ५ ।।
सुन्न महल जाय बासा कीन्हा।
धुन किंगरी सुन मन हुआ लीना[४]।। ६ ।।
सुरत सखी जहँ करे बिलासा।
हंस मंडली अजब तमाशा।। ७ ।।
लीला देखी यहाँ अति भारी।
आगे की अब करी तयारी।। ८ ।।

१ - बख़्शिश। २ - निरखूँ। ३ - बरदान। ४ - मगन, सरशार।

महासुन्न में लगन लगाई।
गुप्त भेद ले सुरत चढ़ाई।। ९ ।।
घाटा[1] भारी सो अब तोड़ा।
भँवरगुफा सुनी सोहं घोरा[2]।।१० ।।
सत्तनाम धुन निज कर पाई।
राधास्वामी भेद जनाई।।११ ।।

।। चौथा शब्द ।।

गुरु आरत मैं करने आई।
दुक्ख भरम सब दूर नसाई।। १ ।।
थाल लिया मैं सील छिमा का।
पाया भेद मैं गुरु महिमा का।। २ ।।
जोत जगाई विरह अगिन की।
करी आरती प्रेम उमंग की।। ३ ।।
भोग लगाया अपने भाव का।
फल पाया हम देह दाव का।। ४ ।।
दृष्टि जोड़ कर सन्मुख ठाढ़ी[3]।
सतगुरु दया दृष्टि जब डारी।। ५ ।।
राधा राधा नित नित गाऊँ।
स्वामी स्वामी सदा मनाऊँ।। ६ ।।

१ - घाटी। २ - आवाज़। ३ - खड़ी हुई।

राधास्वामी फिर दोउ एका।
जुगल[१] रूप की निस दिन टेका।। ७ ।।
कहँ लग बरनूँ शोभा उन की।
कोटि सूर चँद छबि इक अंग की।। ८ ।।
देखत देखत मन बिगसाना[२]।
कँवल सूर जस प्रीत पुराना।। ९ ।।
कहँ लग आरत करूँ बनाई।
मन नहिं माने चित न अघाई।।१० ।।
प्रेम उमंग अपनी अब रोकूँ।
पूरन आरत कर हिया पोखूँ[३]।।११ ।।
राधास्वामी मगन होय कर।
दें परशादी लेउँ गोद भर।।१२ ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

गाऊँ आरती ले कर थाली।
गगन शिखर सूरत मेरी चाली।। १ ।।
उलट दृष्टि देखूँ मैं जोती।
छिन छिन मन को तहाँ परोती।। २ ।।
सुरत निरत कर सुनती बाजा।
बना आरती का सब साजा।। ३ ।।

१ - दोनों। २ - खिला। खुश हुआ। ३ - शांति दूँ।

कर आरत लीन्हा फल पूरा।
उदय हुआ घट में अब सूरा।। ४ ।।
सूर चाँद दोउ देख उजाली।
शब्द पौद सींचे मन माली।। ५ ।।
कँवलन क्यारी जाय सम्हारी।
सुरत मालिनी फूल सँवारी।। ६ ।।
गूँथ गूँथ स्वामी ढिंग लाई।
आरत कर गल हार चढ़ाई।। ७ ।।
फूल फूल कर सन्मुख ठाढ़ी।
आरत फेरूँ दृष्टि निहारी।। ८ ।।
चाह चमेली मन किया मरुवा[१]।
भरा अमी से तन का चरुवा[२]।। ९ ।।
मोह जाल का धागा तोड़ा।
रोग सोग संशय अब छोड़ा।। १० ।।
खैंच खाँच मन चरनन जोड़ा।
ज्यों त्यों कर यह जग से मोड़ा।। ११ ।।
तन सीतल और मन भया सीतल।
नहिं भावे कुछ काँसा पीतल।। १२ ।।
प्रेम प्रीत स्वामी से लागी।
और काम सब दीन्हा त्यागी।। १३ ।।

१ - एक फूल का नाम। २ - बड़ा मटका।

आरत पूरन कीन्ही अबही।
राधास्वामी दया करी पुनि जबही।।१४ ।।

।। छठा शब्द ।।

आरत गावे स्वामी दास तुम्हारा।
प्रेम प्रीत का थाल सँवारा।। १ ।।
ज्ञान ध्यान का दीपक बारा।
भक्ति जोग धुन सुन झनकारा।। २ ।।
झुनक झुनक झनकार झुमावा[१]।
सुरत शब्द धुन आन समावा।। ३ ।।
अब आरत स्वामी मानो मेरी।
गुनहगार भूला बहुतेरी।। ४ ।।
छिमा करो अपराध सुवामी।
आगे न चूकूँ पाइ हैरानी।। ५ ।।
दया करो दाता प्रभु मेरे।
मैं सेवक निज चरनन चेरे।। ६ ।।
दृष्टि करो भरपूर अपारा।
पद पाऊँ जा का वार न पारा।। ७ ।।
नाम तुम्हार धुन्ध[२] उजियारा।
गुन गाऊँ धुन अगम अपारा।। ८ ।।

१ - घुमाया। २ - अँधेरा।

दया करो अब राधास्वामी।
देव प्रसाद मोहिं अंतरजामी।। ९ ।।

।। सातवाँ शब्द ।।

गुरु मेरे दाता मैं भई दासी।
जनम जनम की काटी फाँसी।। १ ।।
दुर्लभ नर देही अब पाई।
करूँ भक्ति गुरु लेउँ रिझाई।। २ ।।
रटना नाम करूँ मैं निस दिन।
गुन गाऊँ अब स्वामी छिन छिन।। ३ ।।
दर्शन पाऊँ मन उमगाऊँ।
नैन जोड़ कर सुरत लगाऊँ।। ४ ।।
तब अनहद धुन अद्‌भुत पाऊँ।
गगन मंडल में जाय समाऊँ।। ५ ।।
त्रिकुटी जाय सिंहासन बैठी।
करे राज घट घट में पैठी।। ६ ।।
आरत विधि अब कीन्हा साजा।
धुन धधकार गगन का बाजा।। ७ ।।
धुन आई इक धुर से भारी।
अधर पदारथ पाया सारी[1]।। ८ ।।

१ - सार, जौहर।

बरसे अमी की धार अखंडा।
भींजे सुरत तजा नौखंडा[१]।। ९ ।।
हंस चाल अब चली सरोवर।
पहुँची जाय अचिंत बरोबर।।१० ।।
अगम[२] निगम[३] से हो गइ पारा।
फोड़ा जाय सत्त का द्वारा।।११ ।।
सत्तनाम पद पाया नूरा।
काल देख अब छिन छिन झूरा[४] ।।१२ ।।
मैं भी भई नाम रस माती।
आरत सतगुरु नित प्रति गाती।।१३ ।।
तुम दयाल देओ मोहिं दाना।
चित्त रहे तुम चरन समाना।।१४ ।।
कभी न बिछड़ूँ ज्यों जल मीना।
बार बार तुम चरन अधीना।।१५ ।।

।। आठवाँ शब्द ।।

आरत गाऊँ पाँच कड़ी की।
पाँच तत्त्व[५] संग आन पची री।। १ ।।
पाँच प्राण[६] की डोर बँधी री।
पाँच दुष्ट[७] संग आन अड़ी री।। २ ।।

१ - पिंड ब्रह्मांड। २ - दसवाँ द्वारा। ३ - महासुन्न। ४ - सूख गया। ५ - पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन, आकाश। ६ - पाँच वायु यानी अपान, व्यान, समान, प्राण, उदान। ७ - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

सतगुरु पूरे दया करी री।
खुली गाँठ और गगन चढ़ी री।। ३ ।।
काया मद्धे खूब लड़ी री।
धुन के मोती पोये लड़ी री।। ४ ।।
सुन्न मंडल की धुन पकड़ी री।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी री।। ५ ।।

।। नवाँ शब्द ।।

सात कड़ी की आरत फेरूँ।
सुरत चढ़ाय शब्द संग घेरूँ।। १ ।।
मन को मोड़ गगन को फोड़ूँ।
चित को रोक चरन में जोड़ूँ।। २ ।।
सतगुरु मुखड़ा छिन छिन निरखूँ।
विविध भाँत अनहद धुन परखूँ।। ३ ।।
मैं मृगनी सुनी नाद गुरू की।
सुनत नाद तन मन सुध बिसरी।। ४ ।।
इन्द्री पाँच सुरत मन दोई।
सातों सँग ले गगन समोई[1]।। ५ ।।
आँख दिखाऊँ और झुँझलाऊँ।
सतगुरु के बल ज़ोर चलाऊँ।। ६ ।।

१-प्रवेश किया।

यह आरत मैं नित्त करूँगी।
अब नहिं रूठूँ[1] सच्च कहूँगी।। ७ ।।

।। दसवाँ शब्द ।।

आरत गाऊँ सत्तनाम की।
जोत जगाऊँ अधर नाम की।। १ ।।
लीला देखूँ कंज श्याम की।
सैर करूँ मैं सेत धाम की।। २ ।।
जड़ काटूँ अब दुष्ट काम की।
मैं चेरी गुरु बिना दाम की।। ३ ।।
सेवा धारूँ आठ जाम[2] की।
त्याग दई धुन दिशा बाम[3] की।। ४ ।।
प्रीत लगी जस अलिफ़ लाम[4] की।
नाद सुनी चढ़ ला-मुक़ाम[5] की।। ५ ।।
संगत छोड़ी ख़ासो आम की।
रही न लज्जा नंगो नाम[6] की।। ६ ।।
शोभा देखी गगन बाम[7] की।
हुइ मस्तानी अजर जाम[8] की।। ७ ।।
जगह नहीं अब कुछ कलाम[9] की।
आरत राधास्वामी अब तमाम की।। ८ ।।

* * * * *

१ -ख़फ़ा हूँ। २ - पहर। ३ - बाँया। ४ - प्रीति जो कभी न टूटे।
५ - अधामी। ६ - बदनामी और नेकनामी। ७ - अटारी।
८ - प्याला। ९ - बचन।

।। ग्यारहवाँ शब्द ।।

दया गुरू की अब हुइ भारी।
मैं भी आरत करन विचारी।। १ ।।
ज्ञान गुरू का थाल सिंगारी।
भक्ति जोत ले कर[1] में धारी।। २ ।।
खड़ी हुई जब गुरु के आगे।
मद और मोह काम उठ भागे।। ३ ।।
दृष्टि लकुटिया[2] गुरु की लागी।
ममता कुतिया भोंकत भागी।। ४ ।।
मंत्र बताया गुरु ने ऐसा।
लोभ भूत छोड़ा तन देसा।। ५ ।।
सुरत चढ़ी अब गगन मंडल में।
नौ छोड़े गइ अष्ट कँवल में।। ६ ।।
राधास्वामी नाम सम्हारा।
रूप अनूप हृदे में धारा।। ७ ।।

।। बारहवाँ शब्द ।।

एक आरती और बनाऊँ।
राधास्वामी आगे आन सुनाऊँ।। १ ।।
जुक्ति जतन कर विरह जगाऊँ।
प्रेम प्रीत का थाल सजाऊँ।। २ ।।

१ - हाथ। २ - लकड़ी।

कुल कुटुम्ब से नाता तोड़ा।
चरन कँवल में मन को जोड़ा।। ३ ।।
काल चक्र डाला बहुतेरा।
छोड़ दिया सब मेरा तेरा।। ४ ।।
मन उमँगा चरनन में भारी।
सुध नहिं को नर है को नारी।। ५ ।।
शब्द भेद जो गुरु दरसाया।
सुरत चढ़ाय द्वार पर आया।। ६ ।।
गगन माहिं धस दास कहाया।
स्वामी चरन निपट लिपटाया।। ७ ।।
घट में दर्शन सतगुरु पाया।
रूप अनूप देख हरखाया।। ८ ।।
गुंजत भँवर सरोज[1] सेत में।
लेत सुगंध और मगन हेत[2] में।। ९ ।।
धुन की ख़बर जनावत न्यारी।
लगी सुरत जहँ अधिक करारी।। १० ।।
राधास्वामी दया विचारी।
मो सी अधम को लिया उबारी।। ११ ।।

* * * * *

१ - कँवल। २ - प्यार।

।। तेरहवाँ शब्द ।।

अगम आरती राधास्वामी गाऊँ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाऊँ।। १ ।।
छत्त बुहारूँ[1] छज्जे झाड़ूँ।
नीच नीच मैं सेवा धारूँ।। २ ।।
दया करो अब स्वामी मेरे।
जन्म जन्म पड़ी काल के घेरे।। ३ ।।
अब दयाल ने मुहर[2] लगाई।
कंटक[3] काल सब दूर पराई।। ४ ।।
देव प्रसाद मोहिं राधास्वामी।
पद पाऊँ सतनाम अनामी।। ५ ।।
मैं चेरी स्वामी तुम्हरे घर की।
साफ़ करूँ बुधि मायावर[4] की।। ६ ।।

।। चौदहवाँ शब्द ।।

घामर घूमर[5] करूँ आरती।
स्वामी हुए दयाल जी।। १ ।।
खाउँ परशादी ओढ़ूँ परशादी।
नाम तुम्हारा लिये जाउँगी।। २ ।।

---

१ - झाड़ू लगाऊँ। २ - छाप। ३ - दुक्ख। ४ - माया का पति यानी काल।
५ - परिक्रमा देकर।

देखो चाहे मत देखो स्वामी।
मैं अपनी सी करे जाउँगी।। ३ ।।
देउँ परिकर्मा पिऊँ चरनामृत।
बँदगी कर कर चरन गहूँगी।। ४ ।।
काल करम का माथा फोड़ूँ।
सुरत चरन में जोड़ रहूँगी।। ५ ।।
ऐसी दुर्लभ भक्ति कमाऊँ।
उमँग उमँग गुन गाऊँगी।। ६ ।।
पूजा भेट धरूँ नहिं कौड़ी।
आरत गाऊँ नौड़ी नौड़ी[1]।। ७ ।।
ख़फ़ा होव तो रूसूँ नाहीं।
चरन तुम्हारे पकड़ रहूँगी।। ८ ।।

।। पंद्रहवाँ शब्द ।।

करे आरता सेवक भोला।
नेह[2] नगर का फाटक खोला।। १ ।।
चौक अकाश साफ़ अब कीन्हा।
शब्द गुरू का दर्शन लीन्हा।। २ ।।
कर कर दरस मगन हुआ मन में।
सुरत सखी पहुँची इक छिन में।। ३ ।।

१ - झुक कर। २ - प्रीति।

लगन लगी और प्रीति अब जागी।
राधास्वामी दर्शन सूरत पागी[1]।। ४ ।।
पाँच तत्त्व फुलवारी देखी।
प्रकृत पचीसों क्यारी पेखी।। ५ ।।
सहन[2] चौतरा सुन्न मँझारा।
तहँ राधास्वामी सिंहासन धारा।। ६ ।।
हिया परात हाथ अब लीन्ही।
बाला जोता[3] धुन्ध टलीनी।। ७ ।।
अगम नगर ला भेट चढ़ाया।
अमी सजीवन बूटी[4] लाया।। ८ ।।
किया आरता उमँग प्रेम का।
फोड़ा माथा काल अधम का।। ९ ।।
धारा राधास्वामी नाम विहंगम[5]।
दम दम तोड़े दाँत धरमजम[6]।। १० ।।
फूल पान और केसर टीका।
भोग भाव धरा प्रीत रीत का।। ११ ।।
पाउँ प्रसाद अब राधास्वामी का।
गाऊँ गीत पल पल प्रीतम का।। १२ ।।
किया आरता पूरा आज।
जन्म अष्टमी पाया साज।। १३ ।।

१ - दृढ़ हुई। २ - आँगन। ३ - बड़ी जोत। ४ - जान देने वाली जड़ी।
५ - पक्षी। ६ - धर्मराय।

।। सोलहवाँ शब्द ।।

जाग रे मन छोड़ बखेड़ा।
त्याग रे मन जगत अँधेरा।। १ ।।
अब खोजो साँझ सबेरा।
फिर क़ाबू[1] चले न तेरा।। २ ।।
तब सतगुरु करें निबेड़ा[2]।
तू करे न भौजल फेरा।। ३ ।।
काल यह डाला घेरा।
सब खायँ जीव भटभेड़ा[3]।। ४ ।।
सतगुरु पद सेवो मेरा।
छूटे सब मेरा तेरा।। ५ ।।
मत कर तू बहुत अबेरा।
अब बाँध अगम का बेड़ा[4]।। ६ ।।
घाट घट भीतर हेरा।
पद मिला आज बहु नेड़ा[5]।। ७ ।।
मैं किया गगन में डेरा।
जहँ संत करें नित फेरा।। ८ ।।
तसकर[6] सब मारे घेरा।
सुख पाया आज घनेरा।। ९ ।।

१ - उपाय। २ - निस्तार। ३ - भटकना।
४ - नाव। ५ - पास। ६ - चोर।

संतन का चौकी पहरा।
मैं करूँ अचिंत बसेरा।।१० ।।
आरत की उमँग उठाऊँ।
सामान कहाँ से लाऊँ।।११ ।।
मन भूखा सूरत भूखी।
इन्द्री तन भीतर सूखी।।१२ ।।
तब सतगुरु दीन्ही टेरा।
तू चढ़ आ छोड़ अँधेरा।।१३ ।।
त्रिकुटी का देख उजेरा।
धुन से कर व्हाँ की नेहरा[१]।।१४ ।।
सुन में जाय चौकी डारी।
अब मिल गइ सामाँ भारी।।१५ ।।
अब आरत करूँ सिंगारी।
सतगुरु पै जाऊँ बलिहारी।।१६ ।।
उमँगी अब सुरत करारी।
यहि कर में लीन्ही थारी।।१७ ।।
जहँ सीतल जोत जगाई।
झारी भर अमृत लाई।।१८ ।।
अमी मूर का भोग धराई।
कँवलन गल हार पहराई।।१९ ।।

१ - प्रीति

सतगुरु की शोभा भारी।
मैं निरखूँ दृष्टि पसारी।।२० ।।
महासुन्न ग़लीचा डारा।
जहँ गगन धरन नहिं तारा।।२१ ।।
जहँ दीप रचे अति भारी।
हंसन गति क्या कहुँ न्यारी।।२२ ।।
भक्तन के जूथ[१] बसाये।
उपमा उन कही न जाये।।२३ ।।
आरत विधि देखन आये।
सब भँवरगुफा ढिंग छाये।।२४ ।।
सचखंड बना सिंहासन।
सतपुरुष किया तहिं आसन।।२५ ।।
अनहद धुन बीन बजाई।
हंसन मिल आरत गाई।।२६ ।।
जहँ आरत कीन्ही भारी।
फिर अलख लोक पग धारी।।२७ ।।
आरत की धूम समाई।
धुर अगम लोक तक आई।।२८ ।।
यह आरत बहुत बढ़ाई।
परताप कहा नहिं जाई।।२९ ।।

१ - झुँड।

राधास्वामी घर में आई।
क्या भाग सराहूँ भाई।। ३० ।।
आरत अब हो गइ पूरी।
मैं राधास्वामी चरनन धूरी।। ३१ ।।

।। सत्रहवाँ शब्द ।।

दम्पत[1] आरत करुँ राधास्वामी।
प्रेम सहित गाऊँ गुन नामी।। १ ।।
कर पकवान मिष्ठान भोग धर।
और बस्तर गोटन के सज कर।। २ ।।
लाय भेट स्वामी के राखे।
तब स्वामी अस आज्ञा भाखे।। ३ ।।
करो आरती प्रेम सिंगारी।
बार बार अस आरत धारी।। ४ ।।
हम भी आरत करें बनाई।
राधास्वामी रहो सहाई।। ५ ।।
सुरत शब्द भाँवर[2] अब लीन्ही।
सदा सुहाग अचल गुरु दीन्ही।। ६ ।।
गुरु दयाल तो कुल्ल दयाला।
सतगुरु पूरे करें निहाला।। ७ ।।

१ - जोड़ा। २ - परिक्रमा।

उन चरनन पर जाउँ बलिहारी।
उन बिन कौन करे उपकारी।। ८ ।।
मैं किंकर तुम चरन अधारा।
तुम बिन को अब करे उबारा।। ९ ।।
मस्तक हाथ धरो अब हमरे।
प्रीत लगे अब चरनन तुम्हरे।।१० ।।
ऐसी कृपा करो राधास्वामी।
भक्ति जुक्ति मोहिं देव अनामी।। ११ ।।
मन और सुरत दोउ मिल आये।
नूर तुम्हार हिये में लाये।।१२ ।।
अब दोनों को लेकर सरना।
मारग अगम लखाओ अपना।।१३ ।।
सुरत चढ़ाओ सहसकँवल में।
रूप निहारूँ जोत अब तिल में।।१४ ।।
फिर आगे को चढ़ूँ बंक में।
लखूँ तिरकुटी धाम उमँग में।।१५ ।।
सुन्न शिखर चढ़ पहुँचूँ छिन में।
महासुन्न का धारूँ पन[१] मैं।।१६ ।।
भँवरगुफा बैठूँ सुन धुन मैं।
बीन बजाऊँ जा सतपुर में।।१७ ।।

१ - इरादा। प्रतिज्ञा।

अलख अगम की दया समाई।
राधास्वामी नाम सुनाई।।१८ ।।
सुनूँ नाम और धारूँ चित में।
करम भरम काटूँ इक पल में।।१९ ।।
कर सतसंग मलिनता नासी।
घट में चेतन कीन्ह प्रकासी।।२० ।।
अन्ध घोर अज्ञान नसाना[1]।
घोर अनाहद मिला ठिकाना।।२१ ।।
सुन सुन धुन मगनानी ऐसी।
मीन मगन रहे जल में जैसी।।२२ ।।
दासी दास जुगल सरनाये।
करके ब्याह आरती लाये।।२३ ।।
भेट चढ़ावें अब अति गहरी।
तन मन धन तो तुच्छ भये री।।२४ ।।
मैं अजान कुछ मर्म न जानूँ।
राधास्वामी नाम बखानूँ।।२५ ।।
तुम दयाल मेरी आरत मानो।
हम अजान तुम गति न पिछानो।।२६ ।।
राधास्वामी दरस भाग से पाया।
राधास्वामी सरन चित्त अब आया।।२७ ।।

१ - नाश हुआ।

।। अट्ठारहवाँ शब्द ।।

आज आरती करूँ सुहावन।
भावन पावन मन ललचावन।। १ ।।
गावन लावन[1] प्रीत बढ़ावन।
छावन उमँग हटावन धावन[2]।। २ ।।
सुरत चलावन शब्द मिलावन।
सहज समावन रंग चढ़ावन।। ३ ।।
अघ[3] रावण कुल नाश करावन।
सीता राम अजुध्या लावन।। ४ ।।
सुरत सिया मन राम कहावन।
दसवाँ द्वार अजुध्या गावन।। ५ ।।
मानसरोवर घाट अन्हावन।
महासुन्न में जाय चढ़ावन।। ६ ।।
भँवरगुफा लीला दरसावन।
सत्तलोक गति बीन सुनावन।। ७ ।।
अलख अगम जा शब्द जगावन।
राधास्वामी धाम दिखावन।। ८ ।।

।। उन्नीसवाँ शब्द ।।

उठी अभिलाखा इक मन मोर।
करूँ अब आरत गुरु की जोर।। १ ।।

१ - सुन्दर। २ - चंचलता। ३ - पाप।

प्रेम की थाली लूँगी हाथ।
शब्द की जोत जगाऊँ साथ॥ २ ॥
सुरत को बाँधूँगी अब तान।
रूप गुरु निरखूँगी अब आन॥ ३ ॥
बचन कर महिमा करूँ बखान।
चरन गुरु हिरदे लाऊँ ध्यान॥ ४ ॥
गुरू बिन और न काहू मान।
सरन में उनके पड़ी निदान[1]॥ ५ ॥
करें गुरू खेवा मेरा पार।
बचावें डूबत हूँ मँझधार॥ ६ ॥
पकड़ अब लेना भुजा पसार।
जगत का मेटो सभी ग़ुबार॥ ७ ॥
सुरत को लीजे आज सम्हार।
चढ़ूँ और झाँकूँ नभ का द्वार॥ ८ ॥
निरंजन जोत लखूँ उजियार।
सहसदल छोड़ बंक के पार॥ ९ ॥
घाट फिर त्रिकुटी लेउँ निहार।
सुन्न चढ़ खोलूँ बज्र किवाड़॥ १० ॥
महासुन पहुँचूँ सतगुरु लार।
भँवर चढ़ पकड़ूँ बंसी धार॥ ११ ॥

१ - आख़िरकार।

सच्चखंड आई बीन सम्हार।
अलख और अगम किया दरबार।।१२ ।।
किया राधास्वामी मुझ से प्यार।
हुई मैं उन पर अब बलिहार।।१३ ।।
करूँ मैं आरत लूँ आनन्द।
मिला मोहिं आज परमानन्द।।१४ ।।

।। बीसवाँ शब्द ।।

क्योंकर करूँ आरती सतगुरु।
बल नहिं धरूँ प्रेम का निज उर।। १ ।।
तुम हो दीन दयाल कृपाला।
बंधन काट करो प्रतिपाला।। २ ।।
मैं किंकर अति अधम उदासी।
तुम्हरी गति सब पर अबिनासी।। ३ ।।
मैं कहा जानूँ भेद तुम्हारा।
विषय भोग मेरा सदा अहारा।। ४ ।।
काल कला की धारा भारी।
या ते पार उतारो तारी।। ५ ।।
मन तन मोर करत नहिं काजा।
सेवा भजन करत करे लाजा।। ६ ।।
संत समागम दुर्लभ भाई।
सो किरपा से मिल्यो मोहिं आई।। ७ ।।

कौन भाग अब उदय हमारा।
या ते दर्शन पायो तुम्हारा।।८ ।।
दूर देश से चल कर आयो।
और काल बहु बिघन लगायो।।९ ।।
मन उचाट कर चित भरमावत।
बारम्बार देश को धावत।।१० ।।
सतसँग में रहना नहिं चाहत।
धन तिरिया की याद बढ़ावत।।११ ।।
ताते सतगुरु मत को फेरो।
तुम चरनन कर निस दिन चेरो।।१२ ।।
सुरत चढ़ाओ गगन शब्द में।
निरत जमाओ धुनन अवध[1] में।।१३ ।।
सहसकँवल त्रिकुटी लख लीला।
सुन्न महासुन खेलत सीला।।१४ ।।
भँवरगुफा सतलोक दिखाई।
अलख अगम की छबि चित भाई।।१५ ।।
राधास्वामी दीन अवाज़ा।
चलो सुरत घर अपना पा जा।।१६ ।।

* * * * *

१ - दसवाँ द्वार।

।। इक्कीसवाँ शब्द ।।

धूम धाम से आइ इक सजनी।
पति[१] को संग पुत्र दोउ[२] मगनी।। १ ।।
आय सरन सतगुरु की लीन्ही।
तन मन सहित प्रीति परबीनी।। २ ।।
आरत करन विचारत गुरु की।
उमँग प्रेम दिखलावत उर की।। ३ ।।
गुरु सँग प्रीति करी नहिं थोड़ी।
सुरत निरत निज चरनन जोड़ी।। ४ ।।
प्रेम जगावत कर्म सुलावत।
भजन भक्ति में धीर बढ़ावत।। ५ ।।
नित्त नवीन प्रीति अधिकाई।
शोभा गुरु देखत मुसकाई।। ६ ।।
गुरु की महिमा कही न जाई।
कोटिन सूर इक रोम लजाई।। ७ ।।
गति उनकी उनहीं की जानी।
कौन कहे यह अकथ कहानी।। ८ ।।
सतसँग उनका जो कोइ पावे।
शब्द माहिं वह छिन छिन धावे।। ९ ।।

१ - मन। २ - वैराग और अनुराग।

तातें सरन गही राधास्वामी।
तुमही रक्षा करो निदानी।। १० ।।
मैं आरत कुछ करन न जानी।
अपनी दया से लगन लगानी।। ११ ।।

।। बाईसवाँ शब्द ।।

सतगुरु की अब करूँ आरती।
जगा भाग और रहूँ जागती।। १ ।।
दिन दिन प्रीत पदारथ लाती।
बढ़ी उमँग अब कहाँ छिपाती।। २ ।।
देख सारदा[1] निपट लजाती।
सतगुरु महिमा कही न जाती।। ३ ।।
जब जब दरस गुरू का पाती।
तन मन धन सब अर्प धराती।। ४ ।।
अस आरत मैं करूँ बनाई।
संत सरन मैं निज कर पाई।। ५ ।।
काल दुष्ट इक विघन लगाई।
उलटी मो को देश पठाई।। ६ ।।
मैं गुरु मूरत हिरदे धारी।
पल पल छिन छिन करूँ अधारी।। ७ ।।

१ - सरस्वती।

तब तो काल रहे मुरझाई।
विरह प्रेम बल मार गिराई।।८ ।।
दूर रहूँ सतगुरु उर धारूँ।
काल विघन सब दूर निकारूँ।।९ ।।
मैं सतगुरु बल लीन्हा हाथा।
फोड़ूँ काल करम का माथा।।१० ।।
अब छिन छिन यह आरत गाऊँ।
सतगुरु चरनन नित बल जाऊँ।।११ ।।
तन तो रहे देश के माहीं।
मन तो रहे चरन की छाहीं।।१२ ।।
यों दम दम गुरु पास बसानी।
अब क्या विघन करे मेरी हानी।।१३ ।।
राधास्वामी मूरत हिरदे धारी।
छिन छिन देखूँ नैन उघारी।।१४ ।।

।। तेईसवाँ शब्द ।।

करूँ री इक आरत अद्‌भुत भारी।
चरन गुरु सेवूँ होकर न्यारी।।१ ।।
सुरत मेरी लागी धुन में पागी।
निरत मेरी जागी ममता भागी।।२ ।।
हंस गति पाई पानी त्यागी।
रही मैं अब तक बहुत अभागी।।३ ।।

गुरु ने अब दीन्हा मोहिं सुहागी।
मैं गुरु के चरन की हुई अनुरागी।। ४ ।।
भोग सब छूटे चित बैरागी।
गाउँ अब निस दिन सतगुरु रागी।। ५ ।।
कहूँ कहा मैं अब बड़ भागी।
शब्द माहिं सूरत मेरी लागी।। ६ ।।
करम धरम बिच दीन्ही आगी।
मान अपमान दोउ मैं त्यागी।। ७ ।।
सतगुरु चरन हुई मैं दाग़ी।
नाम दान सतगुरु से माँगी।। ८ ।।
गगन चढ़ूँ देखूँ पद आगी[1]।
सत्त शब्द में सुरत समागी[2]।। ९ ।।
छूट गई संगत सब कागी।
हंसन साथ रला मेरा भागी।। १० ।।
मन को जीता ममता भागी।
राधास्वामी चरन परस परसागी।। ११ ।।

।। चौबीसवाँ शब्द ।।

गुरु के चरन पर चित बलिहारी।
मन परतीत करूँ दृढ़ सारी[3]।। १ ।।

१ - आगे का। २ - समा गई, धस गई। ३ - पूरी।

कर अभिलाख दूर से आयो।
अचरज दरस नैन भर पायो।। २ ।।
काल करी अपनी ठगियाई।
मन बिच नाना भरम उठाई।। ३ ।।
कभी प्रतीत प्रीत दृढ़ ताई।
कभी सरन से देत कचाई।। ४ ।।
कभी झकोले मोह दिखाई।
कुटुँब देश की याद कराई।। ५ ।।
चरन गुरू ज्यों त्यों दृढ़ करता।
फिर भरमाय जगत में धरता।। ६ ।।
क्या क्या कहूँ काल की लीला।
तपन उठावत खोवत सीला।। ७ ।।
लीक पुरानी कुल मरजादा[1]।
तीरथ बर्त धर्म को साधा।। ८ ।।
भरम उठावत अस अस भारी।
दूर हटावत प्रेम विचारी[2]।। ९ ।।
मैं बलहीन दीन सरनागत।
जस जानो तस टारो आफ़त।। १० ।।
यह मन चोर कठोर हमारो।
लोभ लहर में बहतो सारो।। ११ ।।

१ - रीति। २ - विचार।

आस भरोस और विश्वासा।
गुरु चरनन में करे न बासा।।१२ ।।
क्यों कर इस मन को समझाऊँ।
गुरु की दया बिन ठौर न ठाऊँ।।१३ ।।
ता ते बिनती करूँ तुम्हारी।
ज्यों त्यों मन को लेओ सुधारी।।१४ ।।
तुम चरनन में रहूँ सदा री।
कभी न छोड़ूँ देओ क़रारी[1]।।१५ ।।
चरन भेद गुरु दिया बताई।
नैन निरख जहँ सुरत लगाई।।१६ ।।
दो तिल छूट एक तिल दरसा।
जोत निरंजन का पद परसा।।१७ ।।
आगे सुखमन घाट सुहाई।
द्वार बंक में जाय समाई।।१८ ।।
घंटा शंख रही लौ लाई।
छोड़ ताहि फिर त्रिकुटी आई।।१९ ।।
गरजा बादल मृदंग सुनाई।
ओंकार गुरु शब्द जनाई।।२० ।।
लीला देख सुरत हरखाई।
आगे सुन्न सरोवर धाई।।२१ ।।

१ - दृढ़ता।

हंसन साथ उमंग बढ़ाई।
मान सरोवर बिमल अन्हाई।।२२ ।।
महासुन्न की करी चढ़ाई।
सतगुरु संग खेप निभ आई[१]।।२३ ।।
तिमिर छाँट परकाश दिखाई।
भँवरगुफा बंसी सुन पाई।।२४ ।।
सच्चखंड सत शब्द लखाई।
धुन अनंत और बीन बजाई।।२५ ।।
अलख अगम दर्शन दरसाई।
रा धा स्वा मी धाम समाई।।२६ ।।
आरत कर लीन्हा घट भेदा।
भई परापत सर्व उमेदा।।२७ ।।
सकल मनोरथ पूरन हुए।
रतन पदारथ राधास्वामी दिये।।२८ ।।

।। पच्चीसवाँ शब्द ।।

आरत आगे राधास्वामी के कीजे।
बिमल प्रकाश अमी रस पीजे।। १ ।।
चित कर चंदन हित कर माला।
आन चढ़ाऊँ स्वामी दीनदयाला।। २ ।।
गगन का थाल सुरत की बाती।
शब्द की जोत जगे दिन राती।। ३ ।।

१ - निर्विघ्न पार हुई।

सहस कँवल दल घंटा बाजे।
बंकनाल धुन शंख सुनीजे।। ४ ।।
ओंकार धुन त्रिकुटी बाजे।
सुन्न शिखर अक्षर धुन गाजे।। ५ ।।
भँवरगुफा ढिंग सोहं बासा।
सत्तलोक सतनाम निवासा।। ६ ।।
दास तुम्हारे स्वामी आरत गावें।
चरन कँवल में बासा पावें।। ७ ।।

।। बचन इकतीसवाँ ।।

वर्णन मन और इन्द्रियों के विकार और काल के विघ्नों का अभ्यास की हालत में

।। पहला शब्द ।।

घट औघट झाँका री सजनी।।टेक।।
मन मतिमन्द कहन नहिं माने।
शब्द सुरत नहिं ताका री।। १ ।।
घर घर फिरे स्वान[1] मति लीये।
झूठ झूठ विष खाता री।। २ ।।
धन सम्पत सुख चाह उठाई।
मान मनी मद माता री।। ३ ।।

१ - कुत्ता।

कुल कुटुम्ब जग झूठ पसारा।
तिन सँग बाँधा नाता री।।४ ।।
घाट बाट सतगुरु नहिं चीन्हे।
खान चार नित जाता री।।५ ।।
क्यों कर कहूँ बूझ नहिं माने।
फिर फिर भरम भुलाता री।।६ ।।
छल और कपट ईर्षा निन्दा।
दम दम पाप बढ़ाता री।।७ ।।
गुरु का बचन सात्विकी[1] रहनी।
इन में चित न समाता री।।८ ।।
कहँ लग कहूँ हार अब मानी।
गुरु बिन कौन बचाता री।।९ ।।
गुरु चरनन पर प्रेम बढ़ाओ।
पिरथम सीढ़ी गाता री।।१० ।।
दूसर सीढ़ी सुरत शब्द की।
मन अन्तरगत न्हाता री।।११ ।।
राधास्वामी कहत बुझाई।
जीवन काज सुनाता री।।१२ ।।

* * * * *

१ - सतोगुणी।

।। दूसरा शब्द ।।

छूटूँ मैं कैसे इस मन से।
सुरत यह कहती निज मन से।। १ ।।
जाल इन डाला बहु रस से।
छुटाया मोहिं धुर घर से।। २ ।।
बँधी मैं आय इन दस[१] से।
किया परपंच[२] इन मुझ से।। ३ ।।
द्वार मैं आन नौ परसे।
गिराया मोहिं दस दर[३] से।। ४ ।।
लगी अब लाग भोगन से।
छुटूँ क्यों हाय इस फँद से।। ५ ।।
गुरू बिन कोइ नहीं दरसे।
निकाले मोहिं इस वन से।। ६ ।।
काँपती मैं फिरूँ जम से।
छुड़ावे कौन इस डर से।। ७ ।।
पशू सम हो गई नर से।
करी नहिं प्रीत मैं गुरु से।। ८ ।।
डार ज्यों टूट गई जड़ से।
पड़ी मैं दूर निज घर से।। ९ ।।

१ - दस इन्द्रिय। २ - उपाधि। ३ - द्वार।

करूँ फ़र्याद सतगुरु से।
लगाओ मोहिं चरनन से।।१० ।।
दूर करो मैल सतसंग से।
होय फिर भिन्न इस तन से।। ११ ।।
मिले तब जाय सुन धुन से।
अमी रस पाय तब सरसे[1]।।१२ ।।
शब्द से जाय कर परसे।
मिटे दुख फिर नहीं तरसे[2]।।१३ ।।
लगूँ मैं आय राधा से।
करूँ मैं प्रीत स्वामी से।।१४ ।।
करो राधास्वामी तुम अपना।
पड़ी मैं आय तुम सरना।।१५ ।।

।। तीसरा शब्द ।।

गई आज सोच में।।टेक ।।
मेरी सुरत कुचालन चाल।
गई आज सोच में।। १ ।।
अनहद बाजे बजें गगन में।
धरे न धुन पर ख़्याल।। २ ।।
सतगुरु पूरे भेद बतावें।
यह भरमे भौ जाल।। ३ ।।

१ - ख़ुश हो। २ - तृष्णा करे।

सतसंग सार निकार न जाने।
पड़ी बहुत जंजाल।। ४ ।।
कैसे कहूँ बूझ नहिं लावे।
अति भरमाया काल।। ५ ।।
बिन सतगुरु बिन नाम सम्हारे।
कौन करे प्रतिपाल।। ६ ।।
छिन छिन फाँसी पड़े गुनन की।
कोइ काटें दीन दयाल।। ७ ।।
काम क्रोध आशा और तृष्णा।
यह घट भारी पाल[1]।। ८ ।।
विरह अगिन उठ उठ बुझ जावे।
क्यों कर करूँ सम्हाल।। ९ ।।
दूत दुष्ट अब मोहिं सतावें।
अपनी छाया डाल।।१० ।।
सुरत शब्द मारग बिन पाये।
कैसे होय निहाल।।११ ।।
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आवे।
न्हाय मानसर ताल।।१२ ।।
महासुन्न चढ़ भँवरगुफा तक।
सत्तनाम पावे निज माल।।१३ ।।

१ - परदा।

दया करो अब राधास्वामी।
मेटो यह दुख साल[1]।।१४ ।।

।। चौथा शब्द ।।

मन चंचल कहा न माने।
मैं कौन उपाय करूँ।। १ ।।
गुरु नित समझावें साध बुझावें।
सतसँग में चित जोड़ धरूँ।। २ ।।
सुन सुन बचन बहुत पछताऊँ।
बहुर भुलावे भर्म रहूँ।। ३ ।।
अपनी सी बहु जुक्ति सम्हारी।
कैसे मन को मार मरूँ।। ४ ।।
सुरत शब्द का घाट न पाया।
फिर क्योंकर मैं गगन भरूँ।। ५ ।।
डावाँडोल रहे संशय में।
जगत आस से नाहिं टरूँ।। ६ ।।
सतगुरु सरन पकड़ कर बैठूँ।
तो इस मन की व्याधि हरूँ।। ७ ।।
जगत जाल यह अति दुखदाई।
इसी अगिन में नित्त जरूँ।। ८ ।।

१ - दर्द।

बिना मेहर कुछ काज न सरिहै।
अब राधास्वामी की सरन पड़ूँ॥ ९ ॥

॥ पाँचवाँ शब्द ॥

चमरिया[1] चाह बसी घट माहिं।
गुरू अब कैसे धारें पायँ॥ १ ॥
दुक्ख सुख नितही आवें जायँ।
करम फल भोगत मन के माहिं॥ २ ॥
शुद्धता सब ही भागी जायँ।
प्रेम और भक्ति नहीं ठहरायँ॥ ३ ॥
विरह अनुराग निकासे जायँ।
करूँ क्या कोइ जतन अब नाहिं॥ ४ ॥
बहुरि फिर गुरु ही लेयँ बचाय।
नाम बिन करे न कोइ सहाय॥ ५ ॥
करूँ अब सतसंग सरन समाय।
शब्द में निस दिन लगन लगाय॥ ६ ॥
राधास्वामी कीन्ही दृष्टि झुमाय[2]।
चमरिया घट से भागी जाय॥ ७ ॥

॥ छठा शब्द ॥

गुज़र मेरी कैसे होय सहेली।
इस मन साथ॥ १ ॥

१ - चमड़े से जिसकी प्रीति है। २ - घुमा कर।

यह तो चोर चुग़ल छल कपटी।
कभी न आवे हाथ।। २ ।।
गुरु समझावें मैं समझाऊँ।
पुनि पुनि करता अपनी घात।। ३ ।।
काम न छोड़े क्रोध न छोड़े।
लोभ मोह सँग अति दुख पात।। ४ ।।
मान बड़ाई जगत वासना।
नित्त बढ़ावत जात।। ५ ।।
खान पान और भोग बिलासा।
इन में सदा फँसात।। ६ ।।
सतगुरु दाता शब्द लखावें।
सो नहिं लेता दात।। ७ ।।
ऐसा दुष्ट कहा नहिं माने।
छोड़त नहिं उतपात।। ८ ।।
जम नगरी के दुक्ख सुनाऊँ।
तो भी भय नहिं खात।। ९ ।।
सत्तलोक के सुख दरसाऊँ।
सो भी कुछ परतीत न लात।।१० ।।
कहूँ कहाँ लग नेक न माने।
मैं तो हारा जात।। ११ ।।

कैसी करूँ उपाय न सूझे।
नहिं या ते बसियात[1]।।१२ ।।
जो कुछ करें करें राधास्वामी।
और न कोई दृष्टि आत।।१३ ।।

।। सातवाँ शब्द ।।

हुआ मन आज दुखदाई।
कहूँ मैं चाल इस गाई।। १ ।।
न डर गुरु का न भय जम का।
गिरे नित पाप में जाई।। २ ।।
करे सतसँग सुने बानी।
समझ तो भी नहीं लाई।। ३ ।।
स्वान की पूँछ ज्यों जानो।
कभी छोड़े न टेढ़ाई।। ४ ।।
मिरग सम होय सदा चंचल।
कभी लेवे न थिरताई।। ५ ।।
नाद घट में घुरे[2] निस दिन।
सुने नहिं एक छिन भाई।। ६ ।।
कर्म और भर्म में पचता।
भोग में रहे लौ लाई।। ७ ।।

१ - वश चलता। २ - बजे।

भोग और रोग में खपता।
नाम रस लेत नहिं आई।। ८ ।।
रहे अभिमान में भूला।
गुरू सँग करत चतुराई।। ९ ।।
कही राधास्वामी गति मन की।
दया बिन हाथ नहिं आई।।१० ।।

।। आठवाँ शब्द ।।

गुरू को ऊपर ऊपर गाता।
गुरू को दिल भीतर नहिं लाता।। १ ।।
गुरू का दर्शन बाहर करता।
चित्त में दर्शन कभी न धरता।। २ ।।
काज तेरा कैसे होवे भाई।
ऊपरी गुरु सँग लगन लगाई।। ३ ।।
भीतरी धन और मान विराजा।
ऊपरी नाम ग़रीबी साजा।। ४ ।।
भीतरी काम और क्रोध बसाये।
ऊपरी सील छिमा दिखलाये।। ५ ।।
भीतरी लगन न गुरु से लागी।
ऊपरी लगन करे क्या पाजी।। ६ ।।
गुरू कस तेरे होयँ सहाई।
शब्द की प्रीति न अन्तर आई।। ७ ।।

कौन विधि कहूँ तोहि समझाई।
भाग कुछ ओछा ही तैं पाई।। ८ ।।
तमोगुन छाय रहा घट तेरे।
सतोगुन कभी न आवे नेरे[१]।। ९ ।।
भजन तू करे न कब ही सच्चा।
सरन में गुरु की है तू कच्चा।। १० ।।
ज़रा सी ताड़ मार नहिं सहता।
निरादर करें जगत में बहता।। ११ ।।
दुखों से डर कर कुछ कुछ लगता।
गये दुख वोहीं तुर्त फड़कता[२]।। १२ ।।
नाम रस पाया नहिं अविनासी।
जगत से हुआ न कभी उदासी।। १३ ।।
जतन कोइ समझ नहीं अब आता।
गुरू की मेहर बिना क्या पाता।। १४ ।।
गुरू की मरज़ी कभी न परखी।
मेहर कहो आवे कैसे धुर की।। १५ ।।
ख़बर नहिं पाई तैं निज घर की।
शब्द में सुरत न तेरी सरकी[३]।। १६ ।।
मरम यह मन का सबही गाया।
सुनो राधास्वामी कहत सुनाया।। १७ ।।

१ - निकट। २ - बे रोक टोक बरतता है। ३ - आगे बढ़ी।

।। नवाँ शब्द ।।

अरे मन नहिं आई परतीत।
गुरू की नहिं आई परतीत।
अब तक नहिं आई परतीत।। १ ।।
बहुतक भरमा जगत भर्म में।
नहिं कीन्हा मन मीत।। २ ।।
गुरु सँग रहता सतसँग करता।
चरनामृत पी खाता सीत।। ३ ।।
अब जो देखी हालत मन की।
लगी न गुरु सँग प्रीत।। ४ ।।
धोखा देत रहा मन पाजी।
गही न गुरु की रीत।। ५ ।।
गुरु ने परख करी कुछ मन की।
छोड़ चला संगीत[1]।। ६ ।।
मन मूरख यह कहा न माने।
सोता रहे कपट नहिं जीत।। ७ ।।
क्योंकर मन को देउँ सचौटी।
कुटुम्ब जगत की लज्जा कीत।। ८ ।।
कुटुम्ब जगत सँग सच्चा बरते।
झूठा सतसँग लीत[2]।। ९ ।।

१ - संगत। २ - लिया।

जब देखो तब रूखा सूखा।
गुरु दर्शन में नहिं हुलसीत।। १० ।।
सतसँगियन से हेल मेल नहिं।
जग जीवन सँग रखता प्रीत।। ११ ।।
दारा[1] सुत परिवार सकल सँग।
हँस हँस खेलत नीत[2]।। १२ ।।
गुरु से सीधे मुँह नहिं बोले।
सतसँगियन से टेढ़ा चीत।। १३ ।।
गुरु सतसंगी दोउ हितकारी।
तिन का हित जाने न पलीत[3]।। १४ ।।
जग बिच्छू तिरिया है नागिन।
इन सँग रहत मिलीत।। १५ ।।
ज़हर हलाहल[4] नित ही खावत।
डंक सहत फिर फिर पछतीत।। १६ ।।
गुरु के बचन अमी की धारा।
तिन में न्हात न हो मगनीत।। १७ ।।
ऐसा नीच कुबुद्धी यह मन।
गुरु को अपना जाने न मीत।। १८ ।।
गुरु सँग प्रीत लगावत ऐसी।
जस धागा कच्चा चटकीत[5]।। १९ ।।

१ - जोरू। २ - नित्त। ३ - नापाक। अपवित्र। ४ - मार डालने वाला। ५ - टूट जाता है।

जो कोइ बचन कहें वे कड़वा।
और करें अपमान भलीत।।२० ।।
तो मन फेरे घर को भागे।
बैर करे कुछ करे अनीत।।२१ ।।
गुरु को दुख पहुँचावन चाहे।
क्यों नहिं मेरा आदर कीत।।२२ ।।
जोरू लड़के गाली देवें।
मूँछ पकड़ वह खैंच खिंचीत।।२३ ।।
उनकी ताड़ मार नित सहता।
उन से तो भी मन न फिरीत।।२४ ।।
उनकी प्रीत लगी अस दृढ़ होय।
लोहे की सँगलीत[1]।।२५ ।।
अब तो चेत ज़रा तू हे मन।
त्याग पशू की रीत।।२६ ।।
खान पान और लोभ लहर में।
क्यों बहता तज भीत[2]।।२७ ।।
राधास्वामी कहत बुझाई।
इस से बढ़ क्या गाऊँ गीत।।२८ ।।

* * * * *

१ - जंजीर। २ - भय, छर।

।। दसवाँ शब्द ।।

डगर मेरी रोक लई।
या ज़ुल्मी काल।। १ ।।
मैं पनिहारी अमी अधारी।
सतगुरु करो सम्हाल।। २ ।।
गगरी सुरत डोर निज करनी।
छूट गया जंजाल।। ३ ।।
उर्धमुखी कुइया[1] चढ़ झाँकी।
भरत अधर रस हाल।। ४ ।।
भेद गुप्त इक सतगुरु दीन्हा।
पहुँची हंसन ताल।। ५ ।।
राधास्वामी अगम अनामी।
मुझ पर हुए दयाल।। ६ ।।
सुरत शब्द मारग दरसाया।
काटा मन का जाल।। ७ ।।

।। ग्यारहवाँ शब्द ।।

गूजरी[2] चली भरन गगरी।
श्याम[3] ने रोकी पनघटवा।। १ ।।
सखियन साथ उमँग से जाती।
खोज लगाती धुन घटवा।। २ ।।

१ - ऊपर मुख वाला कुआँ यानी मस्तक। २ - सुरत। ३ - काल।

अब क्या करूँ ज़ोर नहिं चाले।
कैसे खोलूँ घट पटवा[1]।। ३ ।।
मारग रोक भुलावत सबको।
कला दिखावत ज्यों नटवा।। ४ ।।
धूम धाम कर फिर बगदावत[2]।
ठहरन देत न काहु तटवा।। ५ ।।
ऐसा छलिया कान्ह न माने।
छोड़त नाहीं निज हटवा।। ६ ।।
गुरु बिन कौन बचावे या ते।
खोल सुनावें धुन छँटवा[3]।। ७ ।।
राधास्वामी खेली लीला।
दूर हटाया अब झटवा।। ८ ।।

।। बारहवाँ शब्द ।।

फैल रही सुर्त बहु विधि जग में।
बिन पिया भटक गई या मग में।। १ ।।
इन्द्री रस अधिक सतावें।
मन तरँग बहुत भरमावें।। २ ।।
राधास्वामी दया करावें।
मन उलट फेर बदलावें।। ३ ।।

१ - पाट। परदा। २ - लौटा देता है। ३ - छँटी हुई।

रस शब्द अधर चखवावें।
तब तन मन शांति धरावें।। ४ ।।

।। बचन बत्तीसवाँ ।।

प्रार्थना सुरत की मन से और जवाब देना उसका

।। पहला शब्द ।।

मन रे मान बचन इक मेरा।। टेक।।
मैं तेरी दासी जनम जनम की।
तू हुआ स्वामी मेरा।। १ ।।
तीन लोक का नाथ कहावे।
तीन देव तेरा चेरा।। २ ।।
ऋषि मुनि सब पर हुकुम चलावे।
जती सती सब घेरा।। ३ ।।
तेरे बस सुर नर और जोगी।
कोइ तेरा हुकम न फेरा।। ४ ।।
जिस चाहे तिस जगत फँसाए।
और चाहे तिस करे निबेरा।। ५ ।।
ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी।
ताते तुम पै करूँ निहोरा[1]।। ६ ।।

१ - बिनती, प्रार्थना।

इस तन नगरी तुच्छ देश में।
क्यों क़ैदी होय पड़े अँधेरा।। ७ ।।
सतगुरु मोसे कहा बचन इक।
मन को सँग ले चलो सबेरा।। ८ ।।
ता ते तुम पै करूँ बीनती।
चढ़ो गगन क्यों करो अबेरा।। ९ ।।
इन्द्री द्वार विषय अब त्यागो।
करो अभी सुलझेरा[1]।। १० ।।
तुम सा संगी और न कोई।
मैं तुम्हरी और तुम ही मेरा।। ११ ।।
मुझ दासी का कहना मानो।
गगन मँडल चढ़ बाँधो डेरा।। १२ ।।
जैसे थे तैसे फिर होइ हो।
क्यों दुख सुख यहाँ सहो घनेरा।। १३ ।।
सतगुरु पूरे भेद बताया।
मन को सँग ले कर घर फेरा।। १४ ।।
मैं हूँ सुरत पड़ी बस तेरे।
बिन तुम मदद शब्द नहिं हेरा।। १५ ।।
जो यह कहन न मानो मेरी।
तो चौरासी करें बसेरा।। १६ ।।

१ - निबेड़ा, फ़ैसला, सुलझाना।

अब तुम दया करो मेरे ऊपर।
सुन बिनती खोजो धुन नेरा।।१७ ।।
हम तुम दोनों चढ़ें अधर में।
जाकर बसें पहाड़ सुमेरा।।१८ ।।
तुम वहाँ रहना राज कमाना।
हम पहुँचें जहँ राधास्वामी डेरा।।१९ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

मन बोला सुर्त से फिर ऐसे।
विषय स्वाद मोसे जात न छोड़ा।। १ ।।
कैसी करूँ बचन कस मानूँ।
मैं इन्द्री बस हुआ न थोड़ा।। २ ।।
बल पौरुष मैं सब ही हारा।
अब इन से मेरा चले न ज़ोरा।। ३ ।।
मैं चाहूँ छोड़ूँ भोगन को।
देख भोग बस चले न मोरा।। ४ ।।
आगे पीछे बहु पछताऊँ।
समय पड़े पर होवत चोरा।। ५ ।।
कैसे चढ़ूँ गगन को प्यारी।
मैं चंचल ज्यों दौड़त घोड़ा।। ६ ।।
ताते तोसे कहूँ जतन मैं।
चल सतगुरु पै करो निहोरा।। ७ ।।

सरन पड़ें अब मिल कर हम तुम।
कर सतसंग होयँ कुछ पोढ़ा[१]।। ८ ।।
दया करें सतगुरु जब अपनी।
पल पल राखें मोको मोड़ा।। ९ ।।
मैं अपने बल चढ़ूँ न कब ही।
जब लग मिलें न गुरु बंदी छोड़ा।। १० ।।
सुन कर सुरत अधिक हरखानी।
चल जल्दी वह बन्धन तोड़ा।। ११ ।।
सतसँग सरन गही अब दोनों।
भर भर पीवत अमी कटोरा।। १२ ।।
दोनों मिल कर चढ़े गगन को।
शब्द शब्द रस हुए चटोरा।। १३ ।।
दया करी राधास्वामी उन पर।
हीरा मोती लाल बटोरा।। १४ ।।
राधास्वामी ऐसी मौज दिखाई।
मार लिया अब काल कठोरा।। १५ ।।

* * * * *

१ - मज़बूत।

।। बचन तेंतीसवाँ ।।

फ़र्याद और पुकार करना सतगुरु से और माँगना मेहर और दया का वास्ते चढ़ने सुरत के और प्राप्ति दर्शन शब्द स्वरूप सतगुरु की

।। पहला शब्द ।।

अब मन आतुर दरस पुकारे।
कल नहिं पकड़े धीर न धारे।। १ ।।
दम दम छिन छिन दर्द दिवानी।
सोउँ न जागूँ अन्न न पानी।। २ ।।
बेकल तड़पूँ पिया तुम कारन।
डस डस खावत चिंता नागिन।। ३ ।।
कौन उपाय करूँ अब सजनी।
भौजल से अब काहे को तरनी।। ४ ।।
याहि सोच में दिन दिन जलती।
कोइ न सम्हारे आली पल २ गलती।। ५ ।।
पिया तो बसें मेरे लोक चतुर में।
मैं तो पड़ी आय मृत्यु नगर में।। ६ ।।
बिन मिलाप प्रीतम दुख भारी।
राह चलूँ नहिं जात चला री।। ७ ।।

घाट बाट जहँ अति अँधियारी।
कोई न सुने मेरी बहुत पुकारी।। ८ ।।
जतन न सूझे हिम्मत हारी।
अपने पिया की मैं ना हुई प्यारी।। ९ ।।
जो पिया चाहें तो दम में बुलावें।
शब्द डोर दे अभी चढ़ावें।। १० ।।
भाग हीन मैं धुन नहिं पकड़ी।
काम क्रोध माया रही जकड़ी।। ११ ।।
सुरत शब्द मारग जो पाया।
सो भी मुझ से गया न कमाया।। १२ ।।
मैं तो सब विधि हीन अधीनी।
मन नहिं निर्मल सुरत मलीनी।। १३ ।।
तुम समरथ स्वामी अति परबीना[१]।
मैं तड़पूँ जैसे जल बिन मीना।। १४ ।।
काज करो मेरा आज सम्हारी।
तुम्हरी सरन स्वामी मैं बलिहारी।। १५ ।।
हार पड़ी अब तुम्हरे द्वारे।
तुम बिन अब मोहिं कौन निहारे।। १६ ।।
तब स्वामी बोले अस बानी।
मौज निहारो रहो चुप ठानी।। १७ ।।

१ - जानकार

धीरज धरो करो विश्वासा।
अब करूँ पूरन तुम्हरी आसा।।१८ ।।
सुनत बचन अब सीतल भई।
चरन सरन स्वामी निश्चल गही।।१९ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

अब मैं कौन कुमति उरझानी।
देश पराया भई हूँ बिगानी[१]।। १ ।।
अब की बार मोहिं लेव सुधारी।
मैं चरनन पर निस दिन वारी।। २ ।।
रहुँ पछताय झुरूँ मन अपने।
कैसे लगूँ मैं सँग पिया अपने।। ३ ।।
मैं धरती पिया बसें अकासा।
बिन पाये पिया रहूँ उदासा।। ४ ।।
हे सतगुरु सुनो मेरी टेरा।
काल करम अब मारो घेरा।। ५ ।।
दीन दुखी होय करत पुकारी।
सुन स्वामी यह बिनती हमारी।। ६ ।।
तुम दयाल सब को देओ दाना।
मैं ही अभागिन भइ दुख खाना।। ७ ।।

१ - परदेसिन, पराई।

क्या कहुँ अब मैं अपनी पीर की।
जस कोइ छेदत भाल तीर की।। ८ ।।
तब स्वामी ने दियो दिलासा।
प्रेम पंख ले उड़ो अकासा।। ९ ।।
दया हुई अब मिली पिया से।
हरी पीर दुख दूर जिया से।। १०।।

।। तीसरा शब्द ।।

करत हूँ पुकार, आज सुनिये गुहार[1], मैं दीन हूँ अधीन, तुम दाता दयार हो।। १ ।।
अब करिये सम्हार, मेरी नाव है मँझधार, मैं दुखिया अति भार, तुम खेवट अगार[2] हो।। २ ।।
दूत और दुष्ट मोहिं, घेर लिया वार, दुख देत हैं अपार, भय दिखावत जम-द्वार, तुम रक्षक हुशियार हो ।। ३ ।।
लेना अब ख़बर मोर, मैं तो हूँ सरन तोर, काल किया बहुत ज़ोर, धूम धाम करत शोर, तुम सूरन प्रधान हो ।। ४ ।।

१ - पुकार। २ - सब से भारी।

मेरी बुद्धि है मलीन, मन सुरत है अलीन[1], बल पौरुष सब छीन, तुम सतगुरु प्रबीन[2] हो ।। ५ ।।

मोहिं दीजे इक दान, मैं माँगत हूँ निदान[3], सुर्त शब्द का निशान, तुम समरथ सुजान हो ।। ६ ।।

विरह नाहिं, प्रेम नाहिं, भक्ति भाव चाव[4] नाहिं, सरधा परतीत नाहिं, काम क्रोध लोभ माहिं, कैसे करोगे निर्वाह हो।। ७ ।।

रोग सोग नित सतायँ, भजन सुमिरन बनत नाहिं, भोग बास घटत नाहिं, चिंता डर अधिक दाहिं[5], और कोइ सुनत नाहिं, तुम ही मेरे बैद हो।। ८ ।।

संतन बिन कोइ नाहिं, सतगुरु बिन ठीक[6] नाहिं, करम भरम नीक नाहिं, शब्द बिना सीख नाहिं, यही भीख दीजिये।। ९ ।।

सुरत को चढ़ाओ आज, शब्द का दिखाओ साज, सहसकँवल जाय भाज, देखे व्हाँ का समाज, मन को तब होय

१ - अपवित्र। २ - जानकार। ३ - निश्चय। ४ - शौक़। ५ - जलाने वाले। ६ - ठिकाना।

लाज, यही काज कीजिये।। १० ।।
बंक परे त्रिकुट घाट, खुले फिर सुन्न बाट, महासुन्न खोल पाट, भँवरगुफा बाँध ठाट, सत्त शब्द पाय चाट, सतपुर पहुँचाइये।। ११ ।।
जहँ से परे अलख देख, लोक एक अगम पेख, राधास्वामी पद अलेख, पंडित न जाने भेख, क़ाज़ी न मुल्ला शेख़, संत बिन न जाइये।। १२ ।।
एक कहूँ सीख मान, मन की तू छोड़ ठान[1], गुरु की गति अगम जान, शब्द भेद ले पहिचान, तेरी बुद्धि है अजान, काम क्रोध त्यागिये।। १३ ।।
सतसँग की क़दर जान, नर शरीर दुर्लभ मान, नाम रस करो पान, गुरु स्वरूप धरो ध्यान, इंद्री मन कसो आन, पर्ख पर्ख चालिये।। १४ ।।
मित्र तेरा कोइ नाहिं, कुल कुटुंब लूट खाहिं, जोबन धन साथ नाहिं, जक्त भर्म फाँस माहिं, काल कर्म खोस खाहिं,

१ - हठ, ज़िद। २ - पूरी हो।

खान चार जाइये।। १५ ।।
जन्म जन्म नर्क बास, जम दिखावे अधिक त्रास, तड़पे तू स्वाँस स्वाँस, पुजवे[1] न कहीं आस, पावे न सुख निवास, कष्ट बहु भोगाइये।। १६ ।।
जक्त भोग छोड़ चाह, सब से तू हो अचाह, संतन को खोज जाय, सतगुरु की सरन आय, बचन उनके मन समाय, बंद से छुड़ाइये ।। १७ ।।
गुरु का तू बचन पाल, मन की मति तुर्त टाल, बुद्धि के साँचे में ढाल, मनमुख का संग जाल, गुरुमुख की यही चाल, काल हाल जारिये।। १८ ।।
सूरत नैना सम्हाल, तिल अकाश फाड़ डाल, निरखो जोती जमाल, द्वारे धस बंकनाल, अनहद पर धरो ख़्याल, गगन में चढ़ाइये।। ९ ।।
सुन्न शिखर चन्द्र देख, दसम द्वार सेत पेख, सरवर में मुक्ति लेख[2], किंगरी धुन सुन बिसेख, कर्म की मिटाओ रेख, हंस

१ - पूरी हो। २ - पहिचान।

रूप धारिये।। २० ।।

महासुन्न अंध घोर, घाट अगम सुगम तोड़, सूरत जहँ कीन पोढ़, सतगुरु सँग चली दौड़, भँवरगुफा सुना शोर, सोहँग में समाइये।। २१ ।।

आगे की गली लीन्ह, धुन अनन्त शब्द चीन्ह, हंस मिले अति प्रबीन, प्रेम भाव बहुत कीन्ह, सत्तलोक द्वार लीन्ह, बीन धुन बजाइये।। २२ ।।

वहाँ से फिर चली पार, अलख लोक जा निहार, अलख पुरुष धुन सम्हार, देखा अचरज उजार, किया जाय धुन अधार, अलख दर्श पाइये।। २३ ।।

अगम लोक ख़बर पाय, ऊपर को चढ़ी धाय, अगम पुरुष दर्श पाय, तेज पुँज अजब जाय, अमी सिंध पहुँची आय, अगम रूप धारिये।। २४।।

यहाँ से भी चली सुर्त, किया जाय वहाँ निर्त, जस समुद्र नदी रलत, चरनन पर सीस धरत, राधास्वामी संग मिलत, निज घर अपना पाइये।। २५ ।।

कहूँ कहा बहुत कही, यही बात है सही, जन्म जन्म भूल रही, चरन धूर धार लई, करम भरम सभी बही, राधास्वामी गाइये।। २६ ।।

लाओ अब प्रेम प्रीत, सतसंग में धरो चीत, पाओ फिर सत्त रीत, गाओ यह अगम गीत, बाज़ी यह लेव जीत, जग में कोइ नाहिं मीत, मेरी तू कर प्रतीत, दिया सब बुझाइये।। २७।।

।। चौथा शब्द ।।

गुरु गहो आज मेरी बहियाँ।
मैं बसूँ तुम्हारी छइयाँ।। १ ।।
कलमल सब मेरे दहियाँ[1]।
मैं छोड़ी मन परछइयाँ[2]।। २ ।।
फिर चलूँ तुम्हारी रहियाँ।
तुम बिन मेरा कोइ न गुसइयाँ।। ३ ।।
उजड़ा घर तुमहिं बसइयाँ।
दुख जन्म जन्म मैं सहियाँ।। ४ ।।
अब करूँ सोई तुम कहियाँ।
मेटो जग भूल भुलइयाँ।। ५ ।।

१ - जला दिया। २ - परछाई।

कर्मन से खूँट[1] छुड़इयाँ।
शब्दा रस सार पिलइयाँ।। ६ ।।
मैं दुख सुख बहुतक सहियाँ।
कुल लाज तजी नहिं जइयाँ।। ७ ।।
इन्द्री बस आन पड़इयाँ।
भोगन में बहुत फँसइयाँ।। ८ ।।
ऐसी कोई कहन न कहियाँ।
जैसी तुम बात सुनइयाँ।। ९ ।।
गगना में सुरत चढ़इयाँ।
मन माया दोऊ पचइयाँ[2]।। १० ।।
सतपुरुष भेद बतलइयाँ।
चौथा पद अगम दिखइयाँ।। ११ ।।
नइया मेरी पार लगइयाँ।
फिर अलख अगम दरसइयाँ।। १२ ।।
राधास्वामी चरन समइयाँ।
छिन छिन में लेउँ बलैयाँ[3]।। १३ ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

मौत डर छिन छिन व्यापे आई।
काल भय पल पल मोहिं सताई।। १ ।।

१ - पल्ला। २ - थक गये। ३ - वार दूँ।

सुरत मन बहुत चढ़ाऊँ भाई।
गगन में टिके न छिन इक जाई।। २ ।।
कहो कस काटूँ बड़ी बलाई[1]।
गुरू मोहिं कहें नित्त समझाई।। ३ ।।
सुरत मन नेक नहीं ठहराई।
करूँ क्या कैसे पाऊँ राही।। ४ ।।
गुरू से यह फ़र्याद सुनाई।
शब्द में कभी न जाय समाई।। ५ ।।
भरोसा दम का है नहिं भाई।
मर्म मैं अब तक कुछ नहिं पाई।। ६ ।।
करूँ क्या चले न कोई उपाई।
सरन गुरु गहूँ यही ठहराई।। ७ ।।
प्रीत का घाटा बहुत दिखाई।
सरन भी मो से गही न जाई।। ८ ।।
दोऊ में एक न अब बन आई।
मरूँ क्या अब मैं माहुर[2] खाई।। ९ ।।
गुरू तब बचन सुनाया सार।
मरे मत बौरी[3] धीरज धार।। १० ।।
नाम रट मन से बारम्बार।
रूप गुरु धारो हिये मँझार।। ११ ।।

१ - आफ़त, बला। २ - विष, ज़हर। ३ - पागल।

करो तुम नित प्रति यह करतूत।
टलें तब तेरे घट के दूत।।१२ ।।
जुगत से बस कर मन का भूत।
लगे तब धुन से तेरा सूत।।१३ ।।
तजे मत नित कर यह अभ्यास।
गुरू का सँग कर रह कर पास।।१४ ।।
मिटे तब जग की तेरी आस।
लगे तब घट में करन बिलास।।१५ ।।
भोग सब त्यागो होहु निरास।
सुरत तब पावे गगन निवास।।१६ ।।
शब्द रस पीवे स्वाँसो स्वाँस।
महल में जावे पावे बास।।१७ ।।
मौज को ताको कर विश्वास।
नहीं कुछ जतन नहीं परियास[1]।।१८ ।।
होहु अब राधास्वामी दास।
करें वह पूरन इक दिन आस।।१९ ।।

।। छठा शब्द ।।

नाम दान अब सतगुरु दीजे।
काल सतावे स्वाँसा छीजे[2]।। १ ।।

१ - परिश्रम। मेहनत। २ - घटती हैं।

दुख पावत मैं निस दिन भारी।
गही आय अब ओट तुम्हारी।। २ ।।
तुम समान कोइ और न दाता।
मैं बालक तुम पित और माता।। ३ ।।
मो को दुखी आप कस देखो।
यह अचरज मोहिं होत परेखो[१]।। ४ ।।
मैं हूँ पापी अधम विकारी।
भूला चूका छिन छिन भारी।। ५ ।।
अवगुन अपने कहँ लग बरनूँ।
मेरी बुधि समझे नहिं मरमूँ।। ६ ।।
तुम्हरी गति मति नेक न जानूँ।
अपनी मति अनुसार बखानूँ।। ७ ।।
तुम समरथ और अंतरजामी।
क्या क्या कहूँ मैं सतगुरु स्वामी।। ८ ।।
मौज करो दुख अंतर हरो।
दया दृष्टि अब मो पै धरो।। ९ ।।
माँगूँ नाम, न माँगूँ मान।
जस जानो तस देव मोहिं दान।। १० ।।

१ - विचार करने से।

मैं अति दीन भिखारी भूखा।
प्रेम भाव नहिं सब विधि रूखा।।११ ।।
कैसे दोगे नाम अमोला।
मैं अपने को बहु विधि तोला।।१२ ।।
होय निरास सबर कर बैठा।
पर मन धीरज धरे न नेका।।१३ ।।
शायद कभी मेहर हो जावे।
तो कहुँ नाम नोक मिल जावे।।१४ ।।
बिना मेहर कोइ जतन न सूझे।
बख़शिश होय तभी कुछ बूझे।।१५ ।।
किनका नाम करे मेरा काज।
हे सतगुरु मेरी तुमको लाज।।१६ ।।
अब तो मन कर चुका पुकार।
राधास्वामी करो उधार।।१७ ।।

।। सातवाँ शब्द ।।

नाम रस पीवो गुरु की दात।
शब्द सँग भींजो मन कर हाथ।। १ ।।
चरन गुरु पकड़ो तन मन साथ।
मान मद मारो आवे शांत।। २ ।।
परख कर समझो गुरु की बात।
निरख कर चलियो माया घात।। ३ ।।

जगत सब डूबा भौजल जात।
नाम बिन छुटे न जम का नात[१]।। ४ ।।
घाट घट उलटो दिन और रात।
मोह की बाज़ी होगी मात।। ५ ।।
सुरत से करो शब्द विख्यात[२]।
गगन चढ़ देखो जा साक्षात[३]।। ६ ।।
मिटे फिर मन की सब उत्पात[४]।
राधास्वामी परखी और परखात।। ७ ।।

।। आठवाँ शब्द ।।

गुरु करो मेहर की दृष्टि
दास पल पल दुख पावत।
मैं आरत करूँ बनाय
रोग सब ही घट जावत।। १ ।।
निज औगुन देखूँ आय
मनहिं मन में पछतावत।
क्यों कर करूँ पुकार
काल अब बहु भरमावत।। २ ।।
काम क्रोध अति ज़ोर
जीव इन में झख मारत[५]।

१ - बन्धन, रिश्ता। २ - परख। ३ - प्रत्यक्ष। ४ - उपद्रव।
५ - अबस रहता है।

राधास्वामी लेओ बचाय
रहूँ मैं अति घबरावत।। ३ ।।
सुनिये दीनदयाल, तुम्हें मैं टेर[1] सुनावत।
तुमको समरथ जान, कहूँ यह दर्द बुझावत।४ ।
खोलो प्रेम दुआर,नहीं मोहिं कर्म बहावत।
शब्द माहिं दृढ़ करो,रहूँ छिन२ गुन गावत।५ ।
रसिक[2] रहूँ धुन माहिं,और कछु नाहिं सुहावत।
दुख पाये मैं बहुत,नीच मन कहा मनावत।६ ।
कैसे करूँ पुकार, शब्द में नहीं लगावत।
आज बने तो बने, बहुर यह दाव न पावत।७ ।
मैं हूँ दीन अधीन, ईर्षा बहुत जरावत।
मेटो कलह[3] अपार, काहे को नित्त बढ़ावत।८ ।
तुमही करो सहाय,मोर कुछ नाहिं बसावत[4]।
डरत रहूँ दिन रात,काल से जान छिपावत।९ ।
मैं नित करूँ पुकार,ख़्याल तुम क्यों नहिं लावत।
मर्म न जानूँ नेक, मौज तुम कहा करावत।१० ।
कहँ लग कहूँ जनाय,नेक मन बस नहिं आवत।
सदा रही तुम साथ,तऊ तुम क्यों न बचावत।११ ।
अचरज भारी होत, समझ में नेक न आवत।
गुरु बिन रक्षक नाहिं, कहें सब यही कहावत।१२ ।

१ - पुकार। २ - रसीला। ३ - विघ्न। ४ - बस चलता है।

कौन कर्म मैं किये,नित्त यह भुगतूँ आफ़त।
हार पड़ी अब द्वार,बहुरि मैं तुमहिं मनावत।१३।
जस तस दीजे दान,और कोई चित न समावत।
राधास्वामी नाम, पहर आठों अब गावत।१४।

।। नवाँ शब्द ।।

सतगुरु मेरी सुनो पुकार।
मैं टेरत[१] बारम्बार।। १ ।।
दुर्मत मेरी दूर निकारो।
मुझे कर लो चरन अधारो।। २ ।।
मोहिं भौजल पार उतारो।
मेरी पड़ी नाव मँझधारो।। ३ ।।
तुम बिन अब कोइ न सहारो।
अपना कर मुझे सम्हारो।। ४ ।।
मैं कपटी कुटिल तुम्हारो।
तुम दाता अपर अपारो।। ५ ।।
मैं दीन दुखी अति भारो।
जब चाहो तब निस्तारो।। ६ ।।
मैं आरत करूँ तुम्हारी।
तन मन धन तुम पर वारी।। ७ ।।

१ - प्रार्थना करती हूँ।

अब मिला सहारा भारी।
मैं नीच अजान अनाड़ी।। ८ ।।
घट भेद नाद समझाया।
मन बैरी स्वाद न पाया।। ९ ।।
दुख सुख में बहु भरमाया।
जग मान बड़ाई चाहा।। १०।।
उल्टूँ मैं इसको क्यों कर।
बिन दया तुम्हारी सतगुरु।। ११ ।।
अब खैंचो राधास्वामी मन को।
मैं विनय सुनाऊँ तुमको।।१२ ।।

।। दसवाँ शब्द ।।

तुम धुर से चल कर आये।
अब क्यों ऐसी ढील[1] लगाये।। १ ।।
जल्दी से काज सम्हारो।
तुम दाता देर न धारो।। २ ।।
मैं आतुर[2] तुम्हें पुकारूँ।
चित में कोइ और न धारूँ।। ३ ।।
मेरा जीवन मूर अधारा[3]।
जस सीपी स्वाँत निहारा।। ४ ।।

१ - विलंब। २ - दुखी। घबराई हुई। ३ - असली सहारा।

अब मुक्ता[1] नाम जमाओ।
मेरे जी की आस पुराओ।। ५ ।।
मन सूरत अधर चढ़ाओ।
अब के मेरी खेप निबाहो।। ६ ।।
भौसागर वार न पारा।
डूबे सब उसकी धारा।। ७ ।।
है मिथ्या झूठ पसारा।
धोखे को सच सा धारा।। ८ ।।
सतगुरु बिन धोख न जाई।
बिन शब्द सुरत भरमाई।। ९ ।।
या ते तुम सरना ताकूँ।
सोवत मैं क्यों कर जागूँ।। १० ।।
बिन मेहर जतन सब थाके।
मैं कर कर बहु विधि त्यागे।। ११ ।।
बल पौरुष मोर न चाले।
मैं पड़ी काल जंजाले।। १२ ।।
बिनती अब करूँ बनाई।
तुम सतगुरु करो सहाई।। १३ ।।
मैं दीन अधीन तुम्हारी।
तुम बिन अब कौन सम्हारी।। १४ ।।

१ - मोती।

कुछ करो दिलासा मेरी।
भरमों की पड़ी अँधेरी।।१५ ।।
परकाश करो घट भाना।
मिटे भर्म तिमिर अज्ञाना।।१६ ।।
तुम तज अब किस पै जाऊँ।
मैं कह कह तुम्हें सुनाऊँ।।१७ ।।
जब चाहो जब ही देना।
तुम बिन मोहिं किससे लेना।।१८ ।।
मैं द्वारे पड़ी तुम्हारे।
धीरज धर रहूँ सम्हारे।।१९ ।।
मन आतुर दुख न सहारे।
उठ बारंबार पुकारे।। २०।।
मैं सरन दयाल तुम्हारी।
कर जल्दी लो निस्तारी।।२१ ।।
घर तुम्हरे कमी न कोई।
कहिं भाग ओछ[१] मेरा होई।।२२ ।।
यह भी सब तुम्हरे हाथा।
तुम चाहो करो सनाथा।।२३ ।।
अब कहँ लग करूँ पुकारी।
मैं हार हार अब हारी।।२४ ।।

१ - छोटा।

तुम दाता दीन दयाला।
राधास्वामी करो निहाला।।२५ ।।
मैं आरत कीन्ह अधारी।
तुम राधास्वामी सब पर भारी।।२६ ।।

।। ग्यारहवाँ शब्द ।।

माँगूँ इक गुरु से दाना।
घट शब्द देव पहिचाना।। १ ।।
मन साथ सदा भरमाना।
कर किरपा कर्म छुड़ाना।। २ ।।
सुर्त चढ़े सुने धुन ताना।
मन मारो कर्म नसाना।। ३ ।।
सब छूटे बान कुबाना[१]।
सत शब्द मिले दृढ़ थाना।। ४ ।।
अब कर दो नाम दिवाना।
मैं ताकूँ शब्द निशाना।। ५ ।।
कोइ करे न मेरी हाना।
मोहिं तुम पर बल बल जाना।। ६ ।।
कल धारा मुझे न बहाना।
मोहिं देना शब्द ठिकाना।। ७ ।।

१ - बुरी आदत।

मन हो गया बहुत निमाना[1]।
अब राधास्वामी चरन समाना।। ८ ।।

।। बारहवाँ शब्द ।।

मैं लिखूँ गुरू को पाती।
मन कीन्ही बहु उतपाती।। १ ।।
मेरी धड़के छिन छिन छाती।
नहिं धीरज बहु दुख पाती।। २ ।।
विरह अगिन मोहिं नित्त जलाती।
मैं पल पल गुरु गुन गाती।। ३ ।।
मेरे दर्द उठा बहु भाँती।
मैं किस को वर्ण सुनाती।। ४ ।।
अब छोड़ी कुल और जाती।
गुरु चरन सुरत मेरी राती[2]।। ५ ।।
मैं रहूँ लगन बिच माती[3]।
अब सुरत गगन को जाती।। ६ ।।
व्हाँ शब्द अमी रस खाती।
गुरु प्रेम हिये में लाती।। ७ ।।
दर्शन बिन होय न शान्ती।
उलटी फिर तन में आती।। ८ ।।

१ - दीन अधीन। २ - रत हुई। हर्षित। महव। मस्त। ३ - मतवाली।

कोइ सुने न मेरी बाती।
मैं रहूँ सदा घबराती।। ९ ।।
मैं रोती दिन और राती।
मन मारे बहु विधि लाती।। १० ।।
गुरु करो दया की दाती।
तो टले काल की घाती।। ११ ।।
मन आवे मेरे हाथी।
तो मारे सिंह[१] को हाथी[२]।। १२ ।।
मेरे लगी प्रेम की काती[३]।
हिरदे में धीर न लाती।। १३ ।।
अब हर दम उमँग जगाती।
मैं देखूँ गुरू कराँती[४]।। १४ ।।
मारूँ अब माया ताती[५]।
गुरु मूरत चित में ध्याती।। १५ ।।
अब छूटी सकल भराँती[६]।
मैं पाई नाम दराँती[७]।। १६ ।।
अब काटूँ कर्म सनाती[८]।
गुरु बिन क्यों और मनाती।। १७ ।।

१ - काल। २ - मन। ३ - कटारी। ४ - प्रकाश। ५ - अग्नि रूप।
६ - भरम। ७ - हँसिया, काटने वाला। ८ - पुराना।

गुरु को सब भेद जनाती।
मैं पाये दुख बहु भाँती।।१८ ।।
कस मानसरोवर न्हाती।
मैं उल्टी धार बहाती।।१९ ।।
जुग बँधे जो गुरु के साथी।
तो मर्म सभी दरसाती।। २०।।
गुरु चरन सदा परसाती।
मैं सुरत पतंग उड़ाती।। २१ ।।
मन चादर नाम रँगाती।
घट भीतर नाद बजाती।।२२ ।।
जन्म मरन दुख दूर कराती।
ममता मैं सकल खपाती।।२३ ।।
राधास्वामी सरन पराती[1]।
राधास्वामी दास कहाती।।२४ ।।

।। तेरहवाँ शब्द ।।

गुरू मोहिं दीजे अपना धाम।।टेक ।।
मैं तो निकाम भर्म बस रहता।
तुम दयाल लो मोको थाम।। १ ।।
ना जानूँ क्या पाप कमाये।
गहे न सूरत नाम।। २ ।।

१ - प्राप्त हुई या पड़ी।

कैसी करूँ ज़ोर नहिं चाले।
मन नहिं पावे दृढ़ विश्राम।। ३ ।।
हे दयाल अब दया विचारो।
मैं दुख में रहूँ आठों जाम।। ४ ।।
ना सुर्त चढ़े न मन ठहरावे।
शब्द महातम नहिं पतियाम[1]।। ५ ।।
संत मता ऊँचा सुन पकड़ा।
क्यों नहिं संत करें मेरी साम[2]।। ६ ।।
संत मते को लज्जा आवे।
जो मेरा नहिं पूरन काम।। ७ ।।
अपनी मति ले करूँ पुकारा।
मौज तुम्हारी मैं नहिं जाम[3]।। ८ ।।
बार बार मैं विनय पुकारूँ।
जस जानो तस देव निज नाम।। ९ ।।
राधास्वामी कहें निज नामी।
दर्दी को चहिये आराम।। १०।।

।। चौदहवाँ शब्द ।।

सुरत मेरी धोय डालो।
नहिं मरिहों रोय।। १ ।।
कर्म मेरे खोय डालो।
मैं सरना तोय[4]।। २ ।।

१ - प्रतीत करती। २ - सहायता। ३ - जानती। ४ - तुम्हारी।

भर्म मेरे सब टारो।
मैं दासी तोय।। ३ ।।
मर्म अब दे डारो।
तुम सतगुरु मोय[1]।। ४ ।।
काल को धर मारो।
तुम सूरा होय।। ५ ।।
परन को धर धारो।
नहिं हरकत[2] होय।। ६ ।।
सरम[3] यह कर डालो।
जो बख़शिश होय।। ७ ।।
मोह को ले डारो।
तुम समरथ सोय।। ८ ।।
जाल से अब काढ़ो।
लगी फाँसी मोय।। ९ ।।
राधास्वामी गुरु न्यारो।
अस लखा न कोय।।१० ।।

।। पंद्रहवाँ शब्द ।।

गुरू मोहिं अपना रूप दिखाओ।।टेक ।।
यह तो रूप धरा तुम सर्गुण।
जीव उबार कराओ।। १ ।।

१ - मेरे। २ - नुक़सान। ३ - श्रम। कोशिश।

रूप तुम्हारा अगम अपारा।
सोई अब दरसाओ।। २ ।।
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ।
अभय दान दिलवाओ।। ३ ।।
यह भी रूप पियारा मो को।
इस ही से उसको समझाओ।। ४ ।।
बिन इस रूप काज नहिं होई।
क्यों कर वाहि लखाओ।। ५ ।।
ता ते महिमा भारी इसकी।
पर वह भी लखवाओ।। ६ ।।
वह तो रूप सदा तुम धारो।
या ते जीव जगाओ।। ७ ।।
यह भी भेद सुना मैं तुम से।
सुरत शब्द मारग नित गाओ।। ८ ।।
शब्द रूप जो रूप तुम्हारा।
वा में भी अब सुरत पठाओ।। ९ ।।
डरता रहूँ मौत और दुख से।
निर्भय कर अब मोहिं छुड़ाओ।। १० ।।
दीनदयाल जीव हितकारी।
राधास्वामी काज बनाओ।। ११ ।।

* * * * *

।। सोलहवाँ शब्द ।।

देख पियारे मैं समझाऊँ।
रूप हमारा न्यारा।। १ ।।
वह तो रूप लखे नहिं कोई।
जब लग देउँ न सहारा।। २ ।।
करनी करो मार मन डालो।
इन्द्री रोक दुआरा।। ३ ।।
सुरत चढ़ाय गगन पर धाओ।
सुन्न शिखर के पारा।। ४ ।।
सत्त पुरुष का रूप दिखाऊँ।
अलख अगम दर सारा।। ५ ।।
ता के आगे राधास्वामी।
वह निज रूप हमारा।। ६ ।।
धीरज धरो करो सतसंगत।
मेहर दया से लेउँ सुधारा।। ७ ।।
वह तो रूप दिखा कर छोड़ूँ।
तुम जल्दी क्यों करो पुकारा।। ८ ।।
तुम्हरी चिंता मैं मन धारी।
तुम अचिंत रह धरो पियारा।। ९ ।।
संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीती।
और परतीत सँवारा।। १० ।।

यह करनी मैं आप कराऊँ।
और पहुँचाऊँ धुर दरबारा।। ११ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
जब जब जैसी मौज विचारा।।१२ ।।

।। सत्रहवाँ शब्द ।।

सुरत की आज लगा दे तारी।
गगन चढ़ पीऊँ अमृत धारी।। १ ।।
शब्द धुन उठती जहाँ क़रारी[1]।
नाम सुन तन मन लिया पखारी[2]।। २ ।।
गुरू का रूप निहार निहारी।
मैं किंकर अधम अनाड़ी[3]।। ३ ।।
तुम सतगुरु पतित उधारी।
तुम्हरी गति तुमहिं विचारी।। ४ ।।
मैं छिन २ पल २ विषय अहारी।
तुम किरपा अमृत धार बहा री।। ५ ।।
अब लीजे मोहिं निस्तारी।
घट दीजे नाम सम्हारी।। ६ ।।
मैं भूला भूल फँसारी।
तुम काढ़ो मोहिं निकारी।। ७ ।।

१ - तेज। २ - धोया। ३ - मूढ़।

मैं दास दासन पनिहारी।
मैं तुम चरन जाऊँ बलिहारी।। ८ ।।
अब मारग देव उघाड़ी[1]।
मेरा मन करो शांत सुखारी।। ९ ।।
मेरा कोई नहीं अपना री।
मेरे तुम हो मैं भी तुम्हारी।। १० ।।
क्या क्या कहूँ वर्ण सुना री।
मन जैसे नाच नचा री।। ११ ।।
इन्द्री मोहिं नित्त सता री।
भोगन की चाह बढ़ा री।। १२ ।।
रोगन में सदा गिरसा[2] री।
भव कूप पड़ा गहरा री।। १३ ।।
कस निकसूँ कौन उबारी।
सुर्त हुई न शब्द पियारी।। १४ ।।
बिन शब्द बहुत भरमा री।
जल पत्थर जगत पुजारी।। १५ ।।
इन भर्मन रहा भरमा री।
तुम मिल अब कीन सुधारी।। १६ ।।
राधास्वामी चरन दुलारी।
अब नाम देव कर न्यारी।। १७ ।।

* * * * *

१ - खोल। २ - फंसा।

।। अट्ठारहवाँ शब्द ।।

घट का पट खोल दिखाओ ।।टेक ।।
यह मन जूझ जूझ कर हारा ।
लगे न एक उपाओ ।। १ ।।
तुम समरत्थ कहा नहिं तुम्हरे ।
क्यों एती देर लगाओ ।। २ ।।
मैं दुख सुख में खाउँ झकोले[1] ।
क्यों न पड़ा मेरा अब तक दाओ ।। ३ ।।
अब ही दया करो मेरे दाता ।
मन और सूरत गगन चढ़ाओ ।। ४ ।।
मन तो दुष्ट विरह नहिं लावे ।
प्रेम प्रीत का दान दिलाओ ।। ५ ।।
यह तो सुख झूठे ही चाहे ।
सच्चे की परतीत न लाओ ।। ६ ।।
भोग बिलास जगत के माँगे ।
सुरत शब्द का रस नहिं पाओ ।। ७ ।।
क्यों कर कहुँ किस विधि समझाऊँ ।
गुरु का बचन न हृदे समाओ ।। ८ ।।
इस मन की कुछ गढ़त अनोखी ।
शब्द माहिं कुछ प्रेम न भावो ।। ९ ।।

१ - झटका।

कैसे बचे पचे चौरासी।
यह नहिं चढ़ता गुरु की नावो।। १०।।
संसारी के धक्के खावे।
फिर जमपुर में पिटता जाओ।। ११ ।।
ऐसे दुक्ख सहेगा बहुतक।
अब नहिं माने गया भुलाओ।।१२ ।।
सब घट में गुरु तुम ही प्रेरक।
मुझ दुखिया को क्यों न बुलाओ।।१३ ।।
तुम बिन और न कोई मेरा।
चार लोक में तुमहिं दिखाओ।।१४ ।।
अब तो दया करो राधास्वामी।
जैसे बने तैसे घाट चढ़ाओ।।१५ ।।

।। उन्नीसवाँ शब्द ।।

सतगुरु से करूँ पुकारी।
संतन मत कीजे जारी।। १ ।।
जीवन का होय उधारी।
मैं देखूँ यही बहारी।। २ ।।
मैं मौज करूँ फिर भारी।
सब आरत करें तुम्हारी।। ३ ।।
मैं हरखूँ खेल निहारी।
मानो यह अर्ज़ हमारी।। ४ ।।

मैं राखूँ पक्ष तुम्हारी।
अब कीजे दया विचारी।। ५ ।।
मैं बालक सरन अधारी।
मैं करूँ बीनती भारी।। ६ ।।
जो मौज न हो यह न्यारी।
तो फेरो सुरत हमारी।। ७ ।।
घट भीतर होय क़रारी[1]।
शब्दारस करे अहारी।। ८ ।।
दोउ में से एक सुधारी।
जो दोनों करो दया री।। ९ ।।
मैं राज़ी रज़ा तुम्हारी।
मैं राधास्वामी गोद पड़ा री।। १० ।।

।। बीसवाँ शब्द ।।

लगाओ मेरी नइया सतगुरु पार।
मैं बही जात जग धार।। १ ।।
तुम बिन नाहीं को कढ़ियार[2]।
लगा दो डूबी खेप किनार।। २ ।।
सहेली मत तू मन में हार।
दिखाऊँ जग का वार और पार।। ३ ।।

१ - स्थिर। २ - निकालने वाला।

चढ़ाऊँ सूरत उल्टी धार।
शब्द सँग खेय उतारूँ पार।। ४ ।।
गुरू को धर ले हिये मँझार।
नाम धुन घट में सुन झनकार।। ५ ।।
तरंगें उठतीं बारम्बार।
भँवर जहँ पड़ते बहुत अपार।। ६ ।।
मेहर से पहुँची दसवें द्वार।
राधास्वामी दीन्हा पार उतार।। ७ ।।

।। इक्कीसवाँ शब्द ।।

दर्शन की प्यास घनेरी[1]।
चित तपन समाई।। १ ।।
जग भोग रोग सम दीखें।
सतसँग में सुरत लगाई।। २ ।।
गति अगम तुम्हारी समझी।
पर दरस बिना तिरपत नहिं आई।। ३ ।।
गुरुमुखता बन नहिं पड़ती।
फिर कैसे परत्यक्ष पाई।। ४ ।।
तुम गुप्त रहो जीवन से।
संग सब के दूर न भाई।। ५ ।।
बिन किरपा सतगुरु पूरे।
निज रूप न तुम दिखलाई।। ६ ।।

१ - भारी

अब तरसूँ तड़पूँ बहु विधि।
तुम निकट न होत रसाई[1]।। ७ ।।
हो समरथ दाता सब के।
मुझ को भी खैंच बुलाई।। ८ ।।
मैं कैसे देखूँ तुम को।
कोई जतन न अब बन आई।। ९ ।।
घट का पट खोलो प्यारे।
यह बात न कुछ कठिनाई।। १० ।।
तुम चाहो तो छिन में कर दो।
नहिं जन्म जन्म भटकाई।। ११ ।।
अब दरस दिखादो जल्दी।
मैं रहूँ नित्त मुरझाई।। १२ ।।
अब दया विचारो ऐसी।
मैं रहूँ चरन लौ लाई।। १३ ।।
तुम बिन कोई और न जानूँ।
तुमहीं से रहुँ लिपटाई।। १४ ।।
यह आरत अद्‌भुत गाई।
सूरत मेरी शब्द समाई।। १५ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
मैं दासन दास कहाई।। १६ ।।

* * * * *

१ - पहुँच।

।। बाईसवाँ शब्द ।।

सोचत रही री बेचैन,
रैन दिन बहु पछतानी।
मेरी लगी न प्रीत सँग शब्द,
कहन मेरी सभी कहानी।।१।।
झुरत रहूँ मन माहिं,कौन से करूँ बखानी।
सुननहार नहिं सुने,कहो मेरी कहा बसानी।।२।।
मौज बिना क्या होय,मौज की सार न जानी।
सबर न आवे चित्त,दर्द में रैन बिहानी[१]।।३।।
दिवस करूँ फ़र्याद,गुरू मेरे अन्तरजामी।
अपनी चूक विचार,रहूँ मैं अति घबरानी।।४।।
दीनानाथ दयाल,सुनो जल्दी मेरी बानी।
चरन पकड़ हठ करूँ,मेहर कर देओ दानी।।५।।
मैं तो अजान अभाग,
कुटिल मोहिं सब जग जानी।
जो अपना कर लिया,
लाज अब तुम्हें समानी।।६।।
राधास्वामी कह रहे, यह अचरज बानी।
सौदा पूरा मिले, होय नहिं तेरी हानी।।७।।

* * * * *

१ - बीती।

।। तेईसवाँ शब्द ।।

धीरज धरो बचन गुरु गहो।
अमृत पियो गगन चढ़ रहो।। १ ।।
दूर न जानो सतगुरु पास।
निस दिन करो चरन विश्वास।। २ ।।
सागर मेहर दया की मौज।
राधास्वामी दीन्ही अचरज चौज[1]।। ३ ।।
खेल खिलावें बाल समान।
देखे मात हरख मन आन।। ४ ।।
रक्षक शब्द जान और प्रान।
सो पहलू छोड़े न निदान।। ५ ।।
मन की गढ़त करावें दम दम।
वह हैं मित्र वही हैं हमदम[2]।। ६ ।।
भूल चूक बख़्शें[3] वह छिन छिन।
संग रहें इसके वह निस दिन।। ७ ।।
यह मन कच्चा बूझ न जाने।
उनकी गति कैसे पहिचाने।। ८ ।।
जगत जाल में रहा भुलाई।
सुरत शब्द में नहीं जमाई।। ९ ।।

१ - ख़ूबसूरती। बिलास। २ - गहरे साथी। ३ - क्षमा करें।

या से सोग वियोग सतावे।
मन का घाट हाथ नहिं आवे।। १०।।
गुरु कुंजी जो बिसरे नाहीं।
घट ताला छिन में खुल जाई।। ११ ।।
खुले घाट तब सुन में देखे।
धुन की ख़बर रूप निज पेखे।।१२ ।।
चढ़े अधर जब नाम समावे।
रस पावे सूरत घर आवे।।१३ ।।
रतन खान घट में जब खुले।
दुक्ख दर्द और दुर्मत टले।।१४ ।।
मौज निहारो सबर सम्हारो।
भर्म अँधेरा कौतुक[१] टारो।।१५ ।।
अमल अचल पकड़ो गुरु चरना।
सुक्ख पिरापत दुख सब हरना।।१६ ।।
यह संसार अगिन भंडार।
सीतल जल सतगुरु आधार।।१७ ।।
बड़े भाग जिन सतगुरु पाये।
चौरासी से तुरत हटाये।।१८ ।।
दुक्ख सुक्ख जो व्यापत होई।
पिछले कर्म भोग हैं सोई।।१९ ।।

१ - खेल।

कोइ दिन सोग रोग हट जावें।
देर नहीं जल्दी भुगतावें।। २०।।

।। दोहा ।।

राधास्वामी रक्षक जीव के,जीव न जाने भेद।
गुरु चरित्र[1] जाने नहीं,रहे कर्म के खेद[2]।।२१।।
खेद मिटे गुरु दरस से,और न कोई उपाय।
सो दर्शन जल्दी मिलें,बहुत कहा मैं गाय।।२२।।

।। दोकड़िया छन्द।।

धीरज धरना, मत घबराना, चित ठहराना,
रूप समाना, नित गुन गाना, नहीं बहाना,
यही निशाना, ज्यों पपिहा स्वाँती आस।।२३।।
घट में रहना, कहीं न बहना, मन में सहना,
रस ही लेना, धीरज गहना, मर्म न कहना,
ज्यों जल मीना, राधास्वामी पास।।२४।।

आगे दया मेहर सतगुरु की।
वहीं दरसावें वह अब धुर की।।२५ ।।
राधास्वामी बचन सुनाया।
जीवन की हठ से लिखवाया।। २६।।

१ - लीला। २ - दुख।

।। दोहा।।

सुरत बसाओ शब्द में, शब्द गगन के माहिं।
विरह बसाओ हिये में, हिया तिरकुटी माहिं।।१।।
सुरत शब्द इक अंग कर,देखो बिमल बहार।
मध्य सुखमना तिल बसे, तिल में जोत अकार।।२।।
शब्द स्वरूपी संग हैं, कभी न होते दूर।
धीरज रखियो चित्त में, दीखेगा सत नूर।।३।।
सत्तनाम सतपुरुष का, सत्तलोक में पूर।
सुरत चढ़ाओ शब्द में, दर्शन हाल हुज़ूर।।४।।
प्रेम प्रीत राचे रहो, कुमति कुटिल से दूर।
मन सूरत से जूझ कर, रहो शब्द में सूर।।५।।

।। बचन चौंतीसवाँ।।

प्राप्ति मेहर और दया सतगुरु की और पहुँचना सुरत का चढ़ कर स्थानों पर और वर्णन महिमा शब्द और सतगुरु की और भेद लीला स्थानों की।।

।। पहला शब्द।।

जीव चितावन आये राधास्वामी।
बार बार तिन करूँ प्रनामी।। १ ।।

आरत उनकी करूँ सजाई।
चित्त शुद्ध कर थाल बनाई।। २ ।।
अब जीवों को चहिए ऐसा।
चल कर अर्पें तन मन सीसा।। ३ ।।
जोत जगावें प्रथम विरह की।
बाती जोड़ें बिर्त[1] लगन की।। ४ ।।
जब आरत अस लई सँजोइ[2]।
सतगुरु दया दृष्टि कर जोई[3]।। ५ ।।
दीन्हा दीन जान उपदेशा।
सुरत शब्द में करो प्रवेशा।। ६ ।।
खोलो जाकर गगन किवाड़ी।
श्याम कंज तब लागी ताड़ी।। ७ ।।
सेत कँवल फिर मन ठहराना।
प्रगटी जोत सुन्न में जाना।। ८ ।।
सेत श्याम दल दोनों छोड़े।
तीसर दल में मन को जोड़े।। ९ ।।
बंकनाल का द्वारा सोई।
तन की सुद्धि वहाँ गइ खोई।। १०।।
मन और सुरत चेत कर जागी।
त्रिकुटी शब्द गुरू में लागी।। ११ ।।

१ - धार। २ - तैयार की। ३ - देखा।

अब पाया विश्राम ठिकाना।
आरत पूरन करी बखाना।।१२ ।।
इतना धाम सुरत ने पाया।
राधास्वामी चरन समाया।।१३ ।।

।। दूसरा शब्द।।

आज काज मेरे कीन्हें पूरे।
बाजे घट में अनहद तूरे।। १ ।।
भाग उदय आज हुए हमारे।
राधास्वामी चरन सीस पर धारे।। २ ।।
बिमल आरती अब मैं गाऊँ।
परस चरन और बल बल जाऊँ।। ३ ।।
कोटि जन्म से धोखा खाया।
बिन स्वामी जोनी भरमाया।। ४ ।।
दाव पड़ा मेरा अब के ऐसा।
राधास्वामी चरन आय मैं परसा।। ५ ।।
अब पाया मैंने अजर विलासा।
क्या कहुँ महिमा अधिक हुलासा।। ६ ।।
रोम रोम रग रग मेरी बोली।
राधास्वामी राधास्वामी घुँडी[1] खोली।। ७ ।।

१ - गाँठ।

रंग रँगी मेरे तन की चोली[1]।
सुन सुन धुन अब भइ हुँ अमोली।। ८ ।।
घूम चली अब गगन मँझारा।
सुन्न शिखर का झाँका द्वारा।। ९ ।।
मानसरोवर किये अश्नाना।
सत्तनाम सूँ[2] लागा ध्याना।। १०।।
महासुन्न घाटी चढ़ भागी।
सत्तपुरुष के चरनन लागी।। ११ ।।
हंसन साथ करूँ अब आरत।
प्रेम मगन होय दुक्ख बहावत।।१२ ।।
अमी अहार किया मैं भारी।
छिन छिन दर्शन पुरुष निहारी।।१३ ।।
शोभा बरनी न जाय अपारी।
आरत पूरन हो गइ सारी।।१४ ।।
धन धन धन धन क्या कहुँ महिमा।
राधास्वामी २ पल २ कहना।।१५ ।।

।। तीसरा शब्द।।

भइ है सुरत मेरी आज सुहागिन।
लगी है सुरत मेरी छिन २ जागन।। १ ।।

१ - पहनने का कपड़ा। २ - से।

स्वामी स्वामी लगी है पुकारन।
राधा राधा नाम सम्हारन।। २ ।।
गगन मँडल अब लागा गर्जन।
भाग गये मेरे घट से दुर्जन।। ३ ।।
तन मन मैंने कीन्हा अर्पन।
लगी सुरत अब सतगुरु चरनन।। ४ ।।
नाम थाल और बाती सुमिरन।
जुक्ति जोत बाली मैं निज तन।। ५ ।।
आरत फेर चढ़ाया निज मन।
गगन जाय सुनता अनहद धुन।। ६ ।।
संत कृपा पाया पद पूरन।
करम भरम डाले कर चूरन।। ७ ।।
साफ़ किया मैं मन का दर्पन।
ममता माया कीन्ही मर्दन।। ८ ।।
नूर निरंजन जगत सम्हारन।
सहसकँवल चढ़ कीन्हा दर्शन।। ९ ।।
सुई द्वार नाका लगी झाँकन।
पाप अनंत हुए जहँ खंडन।। १०।।
बंकनाल धस त्रिकुटी धावन।
ओंकार धुन करी अब सरवन।। ११ ।।

सुन्न मँडल धुन पाई रारँग।
किंगरी सुनी और बाजी सारँग।।१२ ।।
चन्द्र चौक जहँ देखा चाँदन।
हंसन रूप धरे मन भावन।।१३ ।।
महासुन्न सागर चली न्हावन।
सूरत मिली जाय महा चेतन।।१४ ।।
भँवरगुफा द्वारा अति पावन[1]।
धुन मुरली जहँ बजत सुहावन।।१५ ।।
हंसन शोभा मन बिगसावन[2]।
सुन सुन धुन अति प्रेम बढ़ावन।।१६ ।।
चौक अगाध साध कर चालन।
गइ सतपुर लगी पुरुष मनावन।।१७ ।।
चौथा लोक त्रिलोकी कारन।
संत बसें जिव करें उबारन।।१८ ।।
अलख लोक इक पुरुष बिराजन।
बैठे अचरज धार सिंहासन।।१९ ।।
तिस आगे फिर अगम निहारन।
अगम पुरुष ढिंग शोभा पावन।। २०।।
लगी सुरत निज भेद सुनावन।
मिल गये राधास्वामी पतित उधारन।। २१ ।।

१ - पवित्र। २ - प्रफुल्लित करने वाली।

अब अनाम का क्या करूँ छानन[१]।
सैन कही यह अकह अपारन।।२२।।
भई आरती अब सम्पूरन।
छोड़ दई मैं सभी गुनावन[२]।।२३।।

।।चौथा शब्द।।

संत दास की आरती, सुनो राधास्वामी।
मैं अति दीन अधीन हूँ, सेवक बिन दामी।।१।।
जन्म जन्म सरनागती, तुम पुरुष अनामी।
दया करो अपना करो, मुझे अन्तरजामी।।२।।
मैं अन-समझ अबूझ हूँ, तुम चरन नमामी।
तुम दाता पद अधर के, मैं दास निकामी[३]।।३।।
तुम्हरी गति मति को कहे, तुम अगम ठिकानी।
मुझ पर अस किरपा करी, कुछ मिली निशानी।।४।।
अनहद धुन बाजे बजें, मन होय अकामी।
सरन गही सतगुरू की, तज लाज लोकानी[४]।।५।।
त्रिकुटी घाट सूरत चढ़ी, मिला पद निरबानी।
अब आगे का भेद यह, सुन अचरज बानी।।६।।
मानसरोवर घाट, करें हंसा बिसरामी।
धुन किंगरी और साराँगी, तामें सुरत समानी।।७।।

१ - निर्णय। २ - चिन्ता। ३ - नीच। ४ - लोक यानी संसार की।

यह पद है निज ब्रह्म का, लक्ष वाच प्रमानी।
पार ब्रह्म तिस ऊपरे, महासुन्न पुरानी।।८।।
भँवरगुफा सतलोक को, सब संत बखानी।
दो पद आगे और हैं, सो गुप्त कहानी।।९।।
ता पर अगत[1] अगाध हैं, तिस रूप न नामी।
संत बिना नहिं पाइये, यह भेद मुदामी[2]।।१०।।
अब आरत फेरन लगा, धर धीरज थाला।
दृष्टि जोड़ सन्मुख खड़ा, काटा जंजाला।।११।।
विरह जोत जगमग हुई, और काल निकाला।
दया करी राधास्वामी, अगम कर दिया निहाला।।१२।।

।। पाँचवाँ शब्द।।

सतगुरु संत मिले राधास्वामी।
आरत करने की विधि ठानी।। १ ।।
अधर थाल और अक्षर जोती।
प्रेम सुरत से दृष्टि परोती।। २ ।।
निरत नाम धुन माला डारूँ।
सीतल तिलक केसरी धारूँ।। ३ ।।
बस्तर भाव प्रीत पहिराऊँ।
अमी मूर मय[3] भोग धराऊँ।। ४ ।।

१ - जिसकी गति न जानी जाय। २ - अविनाशी। ३ - सहित।

तन मन निज मन भेंट चढ़ाऊँ।
नौ निधि नौछावर करवाऊँ।। ५ ।।
नओं द्वार पर नीत बिठाऊँ।
चित्त जोड़ मुख आरत गाऊँ।। ६ ।।
मैं अति दीन अधम तुम दासा।
आरत देखन उपजी आसा।। ७ ।।
दूर देश से आयो अबही।
आरत करूँ रिझाऊँ गुरु ही।। ८ ।।
मो पर कृपा दृष्टि अब कीजे।
दीनबन्धु मोहिं सरना लीजे।। ९ ।।
भेद तुम्हारा अति कर सारा।
सुरत शब्द मारग मैं धारा।। १०।।
पकड़ूँ शब्द चढ़ाऊँ सूरत।
नभ निरखूँ और देखूँ मूरत।। ११ ।।
सहसकँवल धस घंट बजाऊँ।
बंकनाल चढ़ शंख सुनाऊँ।।१२ ।।
त्रिकुटी घाट किया जाय फेरा।
ओंकार धुन से मन घेरा।।१३ ।।
मन हुआ लीन सुरत अब चीन्ही।
कान पड़ी धुन झीनी झीनी।।१४ ।।

मानसरोवर पैठ अन्हाई।
निर्मल होय निर्मल पद पाई।।१५ ।।
सुन्न शिखर जाय फेरा दीन्हा।
कोट महासुन चढ़ कर लीन्हा।।१६ ।।
भँवरगुफा सोहं धुन सुनी।
सत्तनाम धुन छिन छिन गुनी।।१७ ।।
सत्तलोक जाय बैठक पाई।
सत्त सुरत सत शब्द समाई।।१८ ।।
अलख अगम के पार अनामी।
यह भी पद दरसे मोहिं स्वामी।।१९ ।।
महिमा सतगुरु कहँ लग कहूँ।
आरत कर अब चुप हो रहूँ।। २०।।
देओ परसाद रहूँ चरनन में।
गुन गाऊँ पल पल छिन छिन में।। २१ ।।

।। छठा शब्द।।

गुरू पै डालूँ तन मन वार।
गुरू पै जाऊँ अब बलिहार।। १ ।।
गुरू ने नाम सुनाया सार।
गुरू ने दीन्हा भेद अपार।। २ ।।
सुरत से सेऊँ नाम सम्हार।
सहसदल मध्य होत झनकार।। ३ ।।

दामिनी दमकत नैन निहार।
रूप का खुला जहाँ भंडार।। ४ ।।
छाँट धुन घंटा बारम्बार।
और धुन त्यागो सबही झाड़।। ५ ।।
शंख धुन पकड़ो उसके पार।
बंक का खोलो जाकर द्वार।। ६ ।।
गहो फिर व्हाँ से धुन ओंकार।
गरज मिरदंग है तिस लार[१]।। ७ ।।
ररंग धुन होवत दसवें द्वार।
सुनो तुम जाकर अति कर प्यार।। ८ ।।
मानसर न्हाओ निर्मल धार।
हंस हुइ छूटा काग अकार।। ९ ।।
महासुन पहुँची शोभा धार।
शब्द सँग कीन्हा जाय विहार।। १० ।।
भँवर चढ़ बैठी होय हुशियार।
नाम घर आई सुरत सुधार।। ११ ।।
अलख लख अगम करा दरबार।
मिले फिर राधास्वामी यार।। १२ ।।

* * * * *

१ - साथ।

।। सातवाँ शब्द।।

गुरु मिले अमी रस दाता।
मैं अधम विषय मद माता।। १ ।।
मैं नीच अजान अनाड़ी।
सुर्त कीन्ही शब्द दुलारी।। २ ।।
गुरु महिमा छिन छिन गाता।
मन निज मन चरन लगाता।। ३ ।।
घट में नित आरत करता।
सुर्त सहसकँवल में धरता।। ४ ।।
जहँ जोत जगाई न्यारी।
तिल तोड़ा गगन सिहारी[1]।। ५ ।।
धुन अनहद शोर मचाई।
सुखमन में सुरत जमाई।। ६ ।।
गढ़ बंका तोड़ा भाई।
धुन ओंकार सुन पाई।। ७ ।।
आगे को निरत बढ़ाई।
श्यामा तज सेत समाई।। ८ ।।
चंदा जहँ नूर दिखाई।
हंसन की पाँत जुड़ाई।। ९ ।।
मुक्ता जहँ चुन चुन खाई।
आतम निज अक्षर पाई।। १०।।

१ - गई।

सतगुरु फिर किरपा धारी।
हुइ महासुन्न धस पारी।।११ ।।
अनहद धुन मुरली बाजी।
ढिंग भँवरगुफा सुर्त गाजी।।१२ ।।
बल सतगुरु सचखँड आई।
यहँ आरत अद्‌भुत गाई।।१३ ।।
चढ़ आगे अलख दिखाई।
गुरु अगम पुरुष दरसाई।।१४ ।।
लीला कुछ अचरज कही न जाई।
ज्ञानी और जोगी भेद न पाई।।१५ ।।
सब काल देश में गये भुलाई।
द्याल देश यह संत जनाई।।१६ ।।
राधास्वामी महल अजब मैं पाया।
रूप अगाध जाय नहिं गाया।।१७ ।।

।। आठवाँ शब्द।।

आज मैं देखूँ घट में तिल को।
लगीं यह बतियाँ प्यारी दिल को।। १ ।।
गुरु अपनाया छिन छिन हम को।
मर्म मैं पाया चढ़ कर नभ को।। २ ।।
सहसदल चढ़ कर मिली अलख को।
जोत लख पाई छोड़ ख़लक़[1] को।। ३ ।।

१ - संसार।

श्याम तज पहुँची सेत नगर को।
चली और निरखा त्रिकुटी घर को।। ४ ।।
बहुर चल निरखा सरवर तट को।
खोल वह द्वारा फाड़ा पट[१] को।। ५ ।।
महासुन पा गइ गुप्त समझ को।
भँवर चढ़ परखा पुरुष रमज़[२] को।। ६ ।।
सत्त पद आगे मिला सुरत को।
सुनी धुन बीना धार निरत को।। ७ ।।
अलख लख पहुँची जाय अगम को।
मिला अब राधास्वामी धाम अधम को।। ८ ।।

।। नवाँ शब्द।।

प्रेमिन दूर देश से आई।
चलो सतगुरु की हाट।। १ ।।
विरह बिमल अनुराग बढ़ाई।
लगो अब सतगुरु घाट।। २ ।।
दर्द दिवानी हो मस्तानी।
खोलो गगन कपाट।। ३ ।।
गुरु की महिमा अगम बखानी।
समझ समझ मुसक्यात।। ४ ।।

१ - परदा। २ - भेद।

बचन बान गुरु अधिक चलाये।
गया कलेजा फाट।। ५ ।।
कहँ लग कहूँ खोट इस मन की।
चले न सतगुरु बाट।। ६ ।।
अमृत सागर गुरु बतलाया।
यह नित विषया[1] खात।। ७ ।।
शब्द निशानी पूरन बानी।
सो गुरु कीन्ही दात।। ८ ।।
मन बौराना विषय दिवाना।
उलटा भरमा जात।। ९ ।।
कौन सुने अब गुरु बिन मेरी।
उन बिन को कर्म काट।। १० ।।
सेवा करूँ सरन दृढ़ पकड़ूँ।
तो धरें मेहर का हाथ।। ११ ।।
चले सुरत फिर शब्द सम्हारे।
सुने सुन्न विख्यात[2]।। १२ ।।
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आवे।
गया दसम दर[3] फाट।। १३ ।।
महासुन्न से भँवरगुफा तक।
सत्तनाम की पाई चाट।। १४ ।।

१ - ज़हर। २ - बानी। शब्द। ३ - द्वार।

अलख अगम का लगा ठिकाना।
राधास्वामी निरखा ठाट।। १५ ।।
आरत करूँ प्रेम से पूरी।
काल बली की कीन्ही घात।। १६ ।।

।। दसवाँ शब्द।।

गुरु के दर्शन कारने, हम आये अब दूर से।
आये अब दूर से, चल आये हम दूर से।।१।।
दीन अनाथ भिखारी दर के।
हुए मंगता हम धुर धर के।
गुरू मिलावें मूर[1] से।। २ ।।
और आस विश्वास न कोई।
चरन गुरू के पकड़े सोई।
वही छुड़ावें कूड़[2] से।। ३ ।।
सुरत डोर चरनन में लागी।
चित चंचलता सबही भागी।
वही लगावें तूर[3] से।। ४ ।।
अनहद बाजे बजें गगन में।
सुरत चढ़ी और लागी धुन में।
दृष्टि मिली अब नूर से।। ५ ।।

१ - मूल। २ - झूठा (पंजाबी बोली) ३ - एक प्रकार का बाजा।

कायरता अब मन से भागी।
सुरत शब्द में छिन छिन लागी।
डरे काल गुरु सूर से।। ६ ।।
सहसकँवल तज त्रिकुटी आई।
सुन्न परे महासुन्न चढ़ाई।
भेद मिला गुरु पूर से।। ७ ।।
भँवरगुफा का ताला तोड़ा।
अमर नगर जा सूरत जोड़ा।
मिल गइ सत्त ज़हूर[1] से।। ८ ।।
अलख पुरुष की प्रीत समानी।
अगम लोक जा बैठक ठानी।
हुइ पावन गुरु धूर से।। ९ ।।
राधास्वामी चरन निहारे।
लगे मोहिं अब अति कर प्यारे।
आरत करूँ शऊर[2] से।। १०।।

।। ग्यारहवाँ शब्द।।

करूँ मैं आरत सखियन साथ।
गहूँ मैं थाली सम चित हाथ।। १ ।।
जोत मैं धारूँ विरह अनुराग।
प्रेम सँग गाऊँ गुन और राग।। २ ।।

१ - प्रकाश। २ - विधि।

सजाऊँ आरत पाऊँ लाभ।
सुरत खिंच पहुँची नभ[१] तज नाभ[२]।। ३ ।।
कुलाहल[३] होत गगन में आज।
प्रेम सँग भींजा सकल समाज।। ४ ।।
छोड़ नौ आई दसवें द्वार।
खोलिया ताला सुन्न मँझार।। ५ ।।
धुनों की होत जहाँ झनकार।
सुरत जहँ देखत रूप अपार।। ६ ।।
महासुन पहुँची सतगुरु लार।
भँवर चढ़ खुला शब्द भंडार।। ७ ।।
सत्त पद पाया अधर अधार।
अलख का लिया जाय दरबार।। ८ ।।
अगम का पाया वार और पार।
रही अब राधास्वामी रूप निहार।। ९ ।।
सुरत अब शब्द लखा निज सार।
दिया अब राधास्वामी भेद विचार।। १० ।।
साध सँग कीन्हा तज अहंकार।
गुरू सँग मेल किया बहु प्यार।। ११ ।।
नाम धन पाया विरह सम्हार।
गुरू ने मर्म लखाया पार।। १२ ।।

१ - सहसदल कँवल। २ - त्रिकुटी। ३ - शोर।

कँवल चढ़ झाँकी मन को मार।
घाट अब देखा घट में सार।।१३ ।।
चरन राधास्वामी हिरदे धार।
रहूँ मैं दम दम चरन सम्हार।।१४ ।।
हुए राधास्वामी आज दयार।
नाम रस पाया परखी धार।।१५ ।।

।। बारहवाँ शब्द।।

गुरु आरत तू कर ले सजनी।
दिवस गया आई अब रजनी[1]।। १ ।।
मन को तोड़ चढ़ो निज गगनी।
सुरत शब्द रस पीवत मगनी।। २ ।।
हिर्स हवस[2] जग छिन छिन तजनी।
नाम ओर[3] अब पल पल भजनी[4]।। ३ ।।
जोत नाद संग दम दम रँगनी।
लख पिया रूप बढ़ावत लगनी।। ४ ।।
बिन गुरु कौन करावत करनी।
सुख अकाश तज गिरती धरनी।। ५ ।।
छूट गया मेरा जन्म और मरनी।
सतगुरु दया सुरत नभ भरनी।। ६ ।।

१ - रात। २ - तृष्णा और वासना। ३ - तरफ़। ४ - भागना।

अमर लोक अब लागी चढ़नी।
धुन अपार हिरदे में जरनी।। ७ ।।
सत्तनाम सतगुरु हुइ सरनी।
अलख अगम के चरनन पड़नी।। ८ ।।
गुरु पद परस परख घट चलनी।
माया ममता तृष्णा दलनी।। ९ ।।
सुआ[१] समान फँसा जग नलनी[२]।
गुरु प्रताप मेरे दुख टलनी।। १०।।
राधास्वामी दृष्टि करी मन गलनी।
बाल समान गोद गुरु पलनी।। ११ ।।

।। तेरहवाँ शब्द।।

आओ री सिमट हे सखियो।
मैं आरत करूँ गुरू की।। १ ।।
तुम जुड़ मिल बैठो गाओ।
मैं आरत करूँ गुरू की।। २ ।।
तुम अपने संग लगा लो।
मैं आरत करूँ गुरू की।। ३ ।।
तुम प्रेम बढ़ा दो मेरा।
मैं आरत करूँ गुरू की।। ४ ।।

१ - तोता। २ - तोता फँसाने की कल।

तुम करो मदद मेरी मिल कर।
मैं आरत करूँ गुरु की।। ५ ।।
तुम बिन मेरे बल नहिं पौरुष।
मैं आरत करूँ गुरु की।। ६ ।।
तुम सेवक साँचे गुरु की।
मैं आरत करूँ गुरु की।। ७ ।।
अब बिनती सुनो अधम की।
मैं आरत करूँ गुरु की।। ८ ।।
तुम ढंग सिखाओ रँग से।
मैं आरत करूँ गुरु की।। ९ ।।
यह औसर मिले न कबही।
मैं आरत करूँ गुरु की।। १०।।
अस औसर फिर न मिलेगा।
मैं आरत करूँ गुरु की।। ११ ।।
मन विरह जोत अब बाली।
मैं आरत करूँ गुरु की।।१२ ।।
कर[१] उमँग थाल ले आई।
मैं आरत करूँ गुरु की।।१३ ।।
सामाँ सब हुई इकट्ठी।
मैं आरत करूँ गुरु की।।१४ ।।

१ - हाथ

सुर्त श्याम कंज चढ़ झाँकी।
मैं आरत करूँ गुरू की।।१५ ।।
फिर बंकनाल धस आई।
मैं आरत करूँ गुरू की।।१६ ।।
त्रिकुटी की सिला[1] हटाई।
मैं आरत करूँ गुरू की।।१७ ।।
सुन सेत हंस गति पाई।
मैं आरत करूँ गुरू की।।१८ ।।
महासुन्न निरखती चाली।
मैं आरत करूँ गुरू की।।१९ ।।
मुरली धुन गुफा सम्हारी।
मैं आरत करूँ गुरू की।। २०।।
सचखंड बीन धुन जागी।
मैं आरत करूँ गुरू की।।२१ ।।
लख अलख पुरुष पद पागी।
मैं आरत करूँ गुरू की।।२२ ।।
अब अगम गम्म कर धाई।
मैं आरत करूँ गुरू की।।२३ ।।
राधास्वामी धाम दिखाई।
मैं आरत करूँ गुरू की।।२४ ।।

१ - बज्र कपाट।

राधास्वामी सतगुरु पूरे।
मैं आरत करूँ गुरू की।।२५ ।।

।। बचन पैतींसवाँ।।

चढ़ कर पहुँचना सुरत का आकाश में और भेद और लीला मुक़ामात की जो कि सुरत ने रास्ते में देखी है

।। पहला शब्द।।

करूँ आरती नाना विधि से।
देखो स्वामी मेहर बेहद से।। १ ।।
घट का थाल चित्त की बाती।
नाम चेतना[1] जोत जगाती।। २ ।।
भाव भक्ति का भोग धराऊँ।
सुरत दृष्टि का जोग मिलाऊँ।। ३ ।।
बाजे अनहद नित्त बजाऊँ।
अमी धार रस अगम चुवाऊँ।। ४ ।।
रूप अनूपम गगन गंभीरा।
झलकें जहँ तहँ मोती हीरा।। ५ ।।
सूरज मंडल तेज उजारा।
चन्द्र मंडली खोला द्वारा।। ६ ।।

१ - याद करना।

सुखमन नाली सुरत चढ़ाई।
बंकनाल में सहज समाई।। ७ ।।
धुन धधकार सुनी ओंकारा।
लाल रंग जहँ सूर निहारा।। ८ ।।
त्रिकुटी घाट सुरत अब जागी।
मानसरोवर चालन लागी।। ९ ।।
सेत सेत मैदान अनूपा।
हंसन का जहँ देखा रूपा।। १० ।।
द्वादस सूर कला जिन केरी।
हंस हंस प्रति ऐसी हेरी।। ११ ।।
शोभा वहाँ की अगम अगाधा[१]।
नहिं पावे कर जोग समाधा।। १२ ।।
सुरत जोग से पहुँचे कोई।
जा पर दया राधास्वामी की होई।। १३ ।।
आगे भेद गुप्त हम राखा।
अधिकारी को कहिं कहिं भाखा।। १४ ।।
यह आरत अब पूरन होई।
स्वामी देओ प्रसादी मोहीं।। १५ ।।

* * * * *

१ - अथाह।

।। दूसरा शब्द।।

लाई आरती दासी सज के।
नाम राधास्वामी का छिन २ भज के।। १ ।।
सील छिमा की ओढ़ चदरिया।
काम क्रोध की छाँट बदरिया।। २ ।।
नाम थाल लिया हाथ पसारी।
विरह अग्नि से जोत सँवारी।। ३ ।।
अमी सरोवर भर लइ झारी।
राधास्वामी सन्मुख कर कर ढारी[1]।। ४ ।।
अगम लोक के बिंजन लाई।
राधास्वामी आगे भोग धराई।। ५ ।।
अम्बर चीर पिताम्बर जोड़े।
भेंट किये मैंने हाथी घोड़े।। ६ ।।
पाँच तत्त्व गुन तीन सिपाही।
मार लिये राधास्वामी की दुहाई।। ७ ।।
चढ़ी गगन पर कीन्हा धावा।
सुरत निरत दोउ शब्द समावा।। ८ ।।
बंकनाल की तोप चलाई।
विरह अग्नि की चिनगी लाई।। ९ ।।

१ - गिराया।

धर्मराय की फ़ौज भगाई।
धूम धाम मैंने बहुत मचाई।। १०।।
घंटा शंख मृदंग बजाई।
धौंसा[1] धमक अजब धुन आई।। ११ ।।
गगन मँडल का घाटा[2] रोका।
काल मंडली खाया झोका।।१२ ।।
अब चढ़ गई सुरत शशि[3] द्वारे।
तीन लोक के हो गइ पारे।।१३ ।।
भान किरन जहँ झलकन लागी।
अगम रूप अद्‌भुत जहँ पागी।।१४ ।।
खुली दृष्टि जब झिरना झाँकी।
क्या कहुँ शोभा अब मैं वहाँ की।।१५ ।।
कोटिन भान रोम इक लागी।
देख सुरत अचरज अस जागी।।१६ ।।
सुरत शब्द का हो गया मेला।
अगम पुरुष अब रहा अकेला।।१७ ।।
एक दोय कुछ कहा न जाई।
ऐसे पद में जाय समाई।।१८ ।।
आरत का मैं यह फल पाया।
दुक्ख भर्म सब दूर बहाया।।१९ ।।

१ - बड़ा नक़्क़ारा। २ - रास्ता। ३ - चन्द्रमा।

परम शाँति में आन समानी।
क्या कहुँ महिमा अचरज बानी।।२० ।।
अब कीजे स्वामी पूरन किरपा।
तन मन मैं सब तुम पर अरपा।।२१ ।।
राधास्वामी २ अब नित गाऊँ।
और बचन कुछ याद न लाऊँ।।२२ ।।
देओ प्रसाद अगमपुर धामी।
भक्ति सहित तुम चरन नमामी।।२३ ।।

।। तीसरा शब्द।।

हे सहेली आली मौज करी अब भारी।
चरन कँवल प्रीतम जिया धारी।। १ ।।
जगी है जोत हिये भई उजियारी।
गगन मंडल धुन भई धधकारी।। २ ।।
चाँद सुरज दोउ झाँक झरोका[1]।
सुखमन खिड़की द्वार जाय रोका।। ३ ।।
प्राण पवन जहँ देती झोका[2]।
सुरत अड़ी अब माने न नेका।। ४ ।।
शब्द गुरु जाय कीन्हा ठेका।
त्रिकुटी महल पर पग अब टेका।। ५ ।।

१ - सूराख़। २ - धक्का।

मानसरोवर हंस समीपा।
अक्षर का जहँ है निज दीपा।। ६ ।।
चार भान कामिन[१] जहाँ क्रांती[२]।
द्वादस भान हंस की भाँती।। ७ ।।
लीला अद्‌भुत बरनी न जाई।
देख देख मन जहँ बिगसाई।। ८ ।।
इकटक[३] ठाढ़ी सुरत निहारी।
धुन किंगरी जहँ सुनत सम्हारी।। ९ ।।
महासुन्न होय सचखंड आई।
अलख अगम में जाय समाई।। १० ।।
मौज अनामी क्या कहुँ लेखा।
बरना न जाय रूप जस देखा।। ११ ।।
सोई रूप धारा राधास्वामी।
जीव काज आये निज धामी।। १२ ।।
उन चरनन पर तन मन वारूँ।
छबि उनकी पल पल हिये धारूँ।। १३ ।।
आरत फेरूँ प्रेम उमँग से।
सुधि बुधि बिसरी अब मोरे तन से।। १४ ।।
फल पाया मैं ने अगम अपारा।
अमी अहार करूँ नित सारा।। १५ ।।

१ - हंसनी। २ - प्रकाश। ३ - एक तरफ़ दृष्टि जोड़ कर।

।। चौथा शब्द।।

प्रेम प्रीत घट भीतर आई।
दास आरती नई बनाई।। १ ।।
तिल का थाल मर्दुमक[1] बाती।
सहसकँवल दल सन्मुख लाती।। २ ।।
चक्र फेर कर जोत जगाती।
सोत पोत[2] लख ऊपर जाती।। ३ ।।
सुन्न निरख फिर धुन को सुनती।
घाटी बंक मध्य होय धसती।। ४ ।।
तहाँ संखनी[3] करें पुकारा।
और डंकनी[3] अमल[4] पसारा।। ५ ।।
शब्द कमान हाथ लइ जबही।
धुन के बान छुटे बहु तबही।। ६ ।।
झुंड झुंड उनके सब भागे।
सुरत शब्द ले चाली आगे।। ७ ।।
ब्रह्म देश जहँ नाद अस्थाना।
धुन अनंत जहँ वेद ठिकाना।। ८ ।।
नाग फाँस डाली जहँ काला।
गरुड़ शब्द से काटा जाला।। ९ ।।

१ - आँख की पुतली। २ - भण्डार। ३ - माया की शक्तियाँ।
४ - हुक्म। दख़ल।

फिर सतगुरु जब भये सहाई।
बिघन अनेकन दूर बहाई।। १० ।।
चौक चाँदनी घट के पारा।
पारब्रह्म का रूप निहारा।। ११ ।।
महासुन्न सागर गंभीरा।
पार किया दइ सतगुरु धीरा।। १२ ।।
भँवरगुफा जाय द्वारा खोला।
सत्तपुरुष तब बानी बोला।। १३ ।।
सुन सुन बानी सुरत समानी।
अलख अगम की फिर गति जानी।। १४ ।।
पद अनाम कुछ कहा न जाई।
देश संत का निज कर पाई।। १५ ।।
अब आरत यह पूरन करहूँ।
राधास्वामी छिन छिन भजहूँ।। १६ ।।

।। पाँचवाँ शब्द।।

पश्चिम[1] तज पूरब[2] चल आया।
सतगुरु आरत सामाँ लाया।। १ ।।
दीन ग़रीबी भक्ति सिंगारी।
उमँग थाल चित जोत सँवारी।। २ ।।

१ - नीचे। २ - ऊपर।

गुरु दर[१] झाँक झुकाया माथा।
घेर घार मन चरनन लाया।। ३ ।।
आरत कीन्ही विविध भाँत से।
शुद्ध किया मन भर्म भ्रांत से।। ४ ।।
काल हटाया जुक्ति घात से।
निर्मल किया मन अष्ट धात[२] से।। ५ ।।
गिरा[३] सुनी इक त्रिकुटी घाट से।
सुरत चढ़ाई नैन बाट से।। ६ ।।
दो दल[४] मोड़े अजब ठाट से।
सुरत हटाई नऊ हाट[५] से।। ७ ।।
वज्र किवाड़ दूसरा खोला।
चार कँवल दल[६] अन्दर मोड़ा।। ८ ।।
खट दल कँवल[७] सुन्न में फूला।
अष्ट कँवल दल[८] आगे झूला।। ९ ।।
द्वादस दल[९] में सुरत समानी।
दल तेरह[१०] से निकसी बानी।। १०।।
दस दल महासुन्न के नाके।
झार झरोखा धस कर ताके।। ११ ।।

१ - दरवाज़ा। २ - पाँच तत्त्व और तीन गुन। ३ - आवाज़। ४ - आँख।
५ - नव द्वार। ६ - तीसरा तिल। ७ - तीसरे तिल के ऊपर का सुन्न।
८ - सहसदल कँवल। ९ - त्रिकुटी। १० - सुन्न।

संतोष दीप अमृत जहँ झिरना।
सुरत निरत दोनों जहँ भरना।।१२ ।।
आगे सत मत ताला खोला।
पुरुष सत्त बानी सत बोला।।१३ ।।
लौ लागी गइ अलख अगम में।
सुरत समानी अधर पदम में।।१४ ।।
रा धा स्वा मी नाम अनामी।
बार बार चरनन परनामी।।१५ ।।

।। छठा शब्द।।

गुरु का अगम रूप मैं देखा।
सतगुरु सत्तनाम सम पेखा।। १ ।।
बल सतगुरु अब काल पछाड़ा।
कर्म काट सतगुरु पद धारा।। २ ।।
सहसकँवल का थाल सुधारा।
जोत रूप का दीपक बारा।। ३ ।।
धुन घंटा और शंख बजाई।
बंक नाल में दृष्टि जमाई।। ४ ।।
दृष्टि सम्हारत मन हुलसाना।
गगन मंडल धुन गरज पिछाना।। ५ ।।
देख रूप सूरज परकाशा।
मिटा अँधेरा झलक अकाशा।। ६ ।।

पाया आतम पद[1] अब भारी।
ररंकार धुन जहाँ सम्हारी।। ७ ।।
चंद्र चाँदनी चौक निहारा।
सेत सेत पद श्याम निकारा।। ८ ।।
इकटक सुरत लगी वहि द्वारे।
हंस जूथ[2] बहु लगे पियारे।। ९ ।।
राधास्वामी लीला धारी।
आरत कर मन बिगसा भारी।।१० ।।
दया मेहर परशादी पाऊँ।
रज चरनन की सीस चढ़ाऊँ।। ११ ।।

।। सातवाँ शब्द।।

गुइयाँ[3] री लख मरम जनाऊँ।
अब भेद अगम घट गाऊँ।। १ ।।
सुर्त सहसकँवल पर लाऊँ।
लख नैन सैन दरसाऊँ।। २ ।।
जोती की झलक झकाऊँ।
श्यामा तज सेत मिलाऊँ।। ३ ।।
फिर बंकनाल चढ़ आऊँ।
त्रिकुटी का राग सुनाऊँ।। ४ ।।

१ - सुन्न। २ - झुंड। ३ - सखी, सहेली।

सुन्नी[१] जाय सुन्न समाऊँ।
सरवर में धमक चढ़ाऊँ।। ५ ।।
हंसन से प्यार बढ़ाऊँ।
किंगरी अब नित्त बजाऊँ।। ६ ।।
राधास्वामी नाम जपाऊँ।
नौका अब पार लगाऊँ।। ७ ।।

।। आठवाँ शब्द।।

बहुरिया[२] धूम मचावत आई।
चढ़न को सतगुरु धाम।। १ ।।
भाव भक्ति और प्रेम दिवानी।
आरत लीन्ही साम[३]।। २ ।।
करुणानिधि[४] गुरु फूल बिराजे।
करें भजन निज नाम।। ३ ।।
शोभा भारी कहूँ सम्हारी।
बिसर गये सब काम।। ४ ।।
तन मन की सुधि भूल गई है।
पाया अब आराम।। ५ ।।
सुरत चढ़ाय गगन पर आई।
कौन जपे मुख राम।। ६ ।।

१ - सुरत। २ - दुलहिन। ३ - सामान। ४ - दया के भण्डार।

हम सतगुरु अब पूरे पाये।
भेद दिया सतनाम।। ७ ।।
देखा तिल तोड़ा वह द्वारा।
खिला कंज घट श्याम।। ८ ।।
जोत जगमगी थाली उस की।
पाया काल मुक़ाम।। ९ ।।
घंटा शंख धूम अति डारी।
हार गया अब जाम[1]।। १० ।।
नाली पार चढ़ी सुर्त विरहिन।
बसी तिरकुटी ग्राम।। ११ ।।
सुन्न शिखर जा डंका दीन्हा।
पाई सीतल छाम[2]।। १२ ।।
महासुन्न पर गाजन लागी।
भँवरगुफा कीन्हा बिसराम।। १३ ।।
बंसी अधर बजावन लागी।
लज्जित कोटिन श्याम[3]।। १४ ।।
सत्तलोक में जाय समानी।
बीन बजे जहाँ आठों जाम।। १५ ।।
अलख अगम का दर्शन पाया।
जहाँ ख़ास नहिं आम।। १६ ।।

१ - जमराय। २ - छाँह। ३ - कृष्ण।

आगे चली मिले राधास्वामी।
अब पाया विश्राम ।।१७ ।।
आरत कर कर मगन हुई अति।
भागा लोभ और काम ।।१८ ।।

।। नवाँ शब्द।।

सुरत सहेली नभ पर खेली।
परखी मूरत जोत निशान ।। १ ।।
आगे पेली[1] धुन सँग मेली।
शब्द गुरू का पाया ज्ञान ।। २ ।।
सुन में जाय धुन अक्षर पाई।
लखा चंद्र अस्थान ।। ३ ।।
हंसन साथ करे कंतूहल[2]।
मान सरोवर कर अश्नान ।। ४ ।।
महासुन्न चढ़ झाँकी गुरु बल।
देखा अति मैदान ।। ५ ।।
भँवरगुफा पर आसन डारा।
वहाँ लगाया ध्यान ।। ६ ।।
सत्तलोक जा सतगुरु पाये।
सुनी बीन धुन तान[3] ।। ७ ।।

१ - धसी। २ - बिलास। ३ - स्वर, राग।

अलख पुरुष का दर्शन पाया।
पहुँची अगम ठिकान।। ८ ।।
राधास्वामी धुन सुन पाई।
करी बहुत पहिचान।। ९ ।।
अब आरत ले सन्मुख आई।
भेंट चढ़ाई अपनी जान।। १०।।
प्रेम प्रीत चरनन में लागी।
देख रूप मैं हुइ हैरान।। ११ ।।
कहनी कथनी सब अब थाकी।
देखे ही परमान[1]।। १२ ।।
यह आरत मैं अचरज कीन्ही।
बूझें बिरले संत सुजान।। १३ ।।
यह गति मति है सबसे न्यारी।
ज्ञानी जोगी मर्म न जान।। १४ ।।
रतन पदारथ घट में पाया।
राधास्वामी दीन्हा दान।। १५ ।।

।। दसवाँ शब्द।।

चल सुरत देख नभ गलियाँ।
जहँ सहसकँवल की पसरीं[2] कलियाँ।। १ ।।

१ - प्रतीत। २ - फैंलीं।

कली कली में देखीं नलियाँ।
नली नली मध जोती बलियाँ।। २ ।।
जोत निरंजन करते रलियाँ।
नाना रँग फुलवारी खिलियाँ।। ३ ।।
देखत छबि मन जगत उगलियाँ।
अनहद सुन धुन में सुर्त पिलियाँ[1]।। ४ ।।
सुख अगाध क्या कहुँ जो मिलियाँ।
कर्म कला जहाँ छिन २ जलियाँ।। ५ ।।
काम क्रोध आसा जहँ दलियाँ।
फिर आगे सूरत चढ़ चलियाँ।। ६ ।।
बंक तिरकुटी सुखमन खुलियाँ।
देख सूर शशि चमक बिजलियाँ।। ७ ।।
सुन्न शिखर पर जाय सम्हलियाँ।
सेत वर्ण जहँ देख कँवलियाँ।। ८ ।।
महासुन्न महाकाल मिलनियाँ।
भँवरगुफा पर सुरत चलनियाँ।। ९ ।।
सत्तनाम जा मर्म खुलनियाँ।
अलख अगम पद मिले जुगलियाँ[2]।। १०।।
राधास्वामी चरन परस मल धुलियाँ।
आनंद अधिक मोहिं अब मिलियाँ।। ११ ।।

१ - प्रवेश किया। २ - दोनों।

।। ग्यारहवाँ शब्द।।

मेरे उर में भरे दुख साल।
कब काटोगे दीन दयाल।। १ ।।
मैं भरम रही भौजाल।
अचरज खेल दिखावत काल।। २ ।।
कभी करत चाँदना दीवा बाल।
कभी घोर अँधेरा बाँधत पाल[१]।। ३ ।।
कभी पाँच तत्त्व के रंग दिखाल।
कभी शब्द सुनावत डारत जाल।। ४ ।।
बहु भटकावत जोग सम्हाल।
जोगी भूले ऐसे ख़्याल।। ५ ।।
मैं भी भटका बहुतक काल।
क्या क्या कहूँ मैं अपना हाल।। ६ ।।
अब सतगुरु मोहिं मिले दयाल।
कुंजी दे खोला तिल ताल[२]।। ७ ।।
रूप निहारूँ अजब विशाल।
शब्द सुनूँ चढ़ बंकी नाल।। ८ ।।
त्रिकुटी घाट भेद दरसाल।
सुन्न मँडल अक्षर परसाल।। ९ ।।

१ - परदा। २ - ताला।

देखी नदी चमकती चाल।
अचरज लहरें करत बेहाल।। १० ।।
बजत जहाँ छिन छिन करताल।
सुनत सुरत काटा जंजाल।। ११ ।।
महरम[1] महल न को अटकाल।
सतगुरु दया सुफल हुइ घाल[2] ।। १२ ।।
अब आरत गुरु करूँ सम्हाल।
राधास्वामी किया निहाल।। १३ ।।
सेत पदम चढ़ मारा काल।
मूल मिली और छूटी डाल।। १४ ।।

।। बारहवाँ शब्द।।

मन और सुरत चढ़ाओ त्रिकुटी।
खेलो गगन और करो आरती।। १ ।।
निरख नाम पोओ धुन मोती।
गरज गरज झलके जहँ जोती।। २ ।।
हाथ झाड़ माया तब रोती।
पाया ररंकार निज गोती[3] ।। ३ ।।
आसा मंसा यहाँ रही सोती।
घाट त्रिबेनी चढ़ मल धोती।। ४ ।।

१ - जानकार। २ - खेप। ३ - गोत्र, जाति।

आलस नींद भूख सब खोती।
ममता विपता सब भई थोथी[1]।। ५ ।।
छिन छिन प्रेम मगन सुर्त होती।
कँवलन की जहाँ माल परोती।। ६ ।।
अब चली सत्तनाम पद न्योती[2]।
सुरत शब्द की क्यारी बोती।। ७ ।।
धन धन राधास्वामी मेरे सतगुरु।
जिन यह मौज दिखाई चढ़ कर।। ८ ।।
क्या आरत मैं उनकी गाऊँ।
महिमा अगम अगाध सुनाऊँ।। ९ ।।
कहत कहत मैं कभी न अघाऊँ[3]।
उमँग प्रेम अब कहाँ समाऊँ।। १० ।।
चरन कँवल बिन और न आसा।
मन भँवरा वहिं करत बिलासा।। ११ ।।
राधास्वामी २ उठी धुन हिय से।
सुरत सुहागिन अब मिली पिय से।। १२ ।।

।। तेरहवाँ शब्द ।।

चेत चली आज सुरत रँगीली।
छूट गई मति बुधि सब मैली।। १ ।।

१ - खाली। २ - जिसको न्योता दिया गया हो। ३ - संतुष्ट होऊँ।

हाथ लगी अनहद धुन थैली।
होय गई निज घर की चेली।। २ ।।
द्वारा फोड़ गगन को पेली।
अब सूरत भइ अति अलबेली[१]।। ३ ।।
इड़ा थाल पिंगला कर जोती।
करी आरती सुखमन सेती।। ४ ।।
बंकनाल धुन शंख बजाई।
त्रिकुटी घाट ओं धुन पाई।। ५ ।।
बाजे मृदँग गाजे तम्बूरा।
सुन सुन धुन अब मन भया सूरा।। ६ ।।
सूर होय कर काल पछाड़ी।
माया चादर छिन में फाड़ी।। ७ ।।
फाँद[२] पिंड और तोड़ा अंडा।
खंड खंड कीन्हा ब्रह्मंडा।। ८ ।।
भर छलाँग[३] पहुँची सचखंडा।
पाय गई पद अमर अखंडा।। ९ ।।
अब अनाम पद जाय समानी।
आरत की विधि पूरी जानी।। १० ।।
राधास्वामी दया करी अब भारी।
मैं अपना पद लिया सम्हारी।। ११ ।।

१ - अनोखी। २ - लांघ करके। ३ - उछाल।

।। चौदहवाँ शब्द ।।

चली सुरत अब गगन गली री।
मिली जाय अब पिया से अली री।। १ ।।
दली जाय मंसा सब मैली।
सुन्न शिखर पर खुल खुल खेली।। २ ।।
भई सुरत सत नाम की चेली।
गगन फोड़ अब आई सहेली।। ३ ।।
अब पाया पद ऐसा हेली[1]।
खिल गई घट में पौद चमेली।। ४ ।।
पहिर लई गल धुन की सेली[2]।
चरन धूर सतगुरु अब ले ली।। ५ ।।
अगम अटारी चढ़ी अकेली।
जहँ से यह रचना सब फैली।। ६ ।।
अब याकी विधि क्या कहुँ खोली।
संत बिना को समझे बोली।। ७ ।।
यह आरत है परम पुरुष की।
धुन पकड़ी मैं अधर अर्श[3] की।। ८ ।।
सतगुरु ने अब दया विचारी।
पद अपना दे काल बिडारी[4]।। ९ ।।

१ - हे आली, सखी। २ - गुलूबन्द। ३ - आकाश। ४ - दूर किया।

शब्द अगम का सौदा कीन्हा।
सरन पड़ी सतगुरु पद लीन्हा।। १० ।।
दीनदयाल दयानिधि स्वामी।
काढ़ लिया मोहिं अंतरजामी।। ११ ।।

।। पन्द्रहवाँ शब्द।।

गगन नगर चढ़ आरत करहूँ।
पिंड देश अब छिन छिन तजहूँ।। १ ।।
सुनूँ गगन में अनहद रागा।
बढ़त जाय पल पल अनुरागा।। २ ।।
रूप अनूप देख हिये माहीं।
कहत न बने कहा कहुँ भाई।। ३ ।।
मथ मथ शब्द जोत परकाशी।
सुन सुन धुन भइ सुर्त अविनाशी।। ४ ।।
दुन्द[1] धुन्ध[2] से निकसी पारा।
सत्तनाम का खोला द्वारा।। ५ ।।
अंस हंस सँग कीन्ह बिलासा।
देखा जाय बंस परकाशा।। ६ ।।
सुरत सम्हार सुनी धुन बीना।
कौन कहे वह अचरज चीन्हा।। ७ ।।

१ - दुई। २ - अँधेरा।

जोगी थके समाध लगाई।
ज्ञानी रहे आतम गति पाई।। ८ ।।
यह संतन का भेद अमोला।
बिना संत काहू नहिं तोला।। ९ ।।
संतन की गति अगम अपारा।
क्योंकर कहूँ वार नहिं पारा।। १० ।।
संत मौज से जा पर हेरा।
दिया अमर पद मिट गया फेरा[१]।। ११ ।।
यह आरत कही उमँग प्रेम से।
पाठ करूँ और करूँ नेम से।। १२ ।।

।। सोलहवाँ शब्द ।।

आरत गाउँ स्वामी सुरत चढ़ाऊँ।
गगन मँडल में धूम मचाऊँ।। १ ।।
श्याम सुन्दर पद निरख निहारूँ।
सेत पदम पर तन मन वारूँ।। २ ।।

---

१ - जन्म-मरण।

कड़ी १ — आरती राधास्वामी दयाल की गाऊँ और सुरत को गगन मँडल में चढ़ा कर धूम मचाऊँ यानी बिलास करूँ।

कड़ी २ — और चढ़ाई के वक़्त श्यामसुन्दर पद यानी श्याम पद जो अति सुन्दर है, और वहीं सुन्न यानी चैतन्य मंडल का द्वारा है, देखती चलूँ और सेत पदम यानी सत्तलोक में पहुँचकर सत्तपुरुष पर तन मन वारूँ यानी इन दोनों से न्यारी होकर पहुँचूँ।

बिन्द्रावन मथरा पद लीन्हा।
गोकुल जीत कालिन्द्री छीना।। ३ ।।
सुन्न महावन गिरवर चीन्हा।
महासुन्न जा अमृत पीना।। ४ ।।
धीरज थाल प्रेम की जोती।
धुन विवेक घट मोती पोती।। ५ ।।
विरह राग तज रंग लगाऊँ।
सुरत निरत ले शब्द समाऊँ।। ६ ।।
रास मंडल घट लीला ठानी।
कालीनाथ निरख नभ जानी।। ७ ।।

कड़ी ३ – बिन्द्राबन, यानी देह को जो बिन्द से बनी है, मथ कर रकार पद यानी सुन्न में पहुँची और गोकुल यानी इन्द्रियों के देश से न्यारी हुई, और काल की शक्ति क्षीण हुई यानी जाती रही।

कड़ी ४ – सुन्न मंडल की जो कि महाबन है, और वही ऊँचा देश यानी पहाड़ है, पहचान करी, और वहाँ से आगे महासुन्न में पहुँच कर अमृत पान किया।

कड़ी ५ – धीरज का थाल लेकर यानी चित्त में धीरज कर और प्रेम की जोत जगाकर यानी प्रेम तेज़ करके मोती रूप धुनों को घट में छाँट कर पोती हुई यानी सुनती हुई चली।

कड़ी ६ – संसारी भोगों की विरह छोड़ कर प्रेम बढ़ाऊँ और सुरत और निरत को जगाकर और संग लेकर शब्द में लगूँ।

कड़ी ७ – घट में रास मंडल की लीला करके और काल अंग को नीचे डाल कर सुरत रास्ते की सैर करती हुई आकाश में पहुँची।

घोर उठा अब गगन कुंज में।
मगन हुई लख तेज पुंज में।। ८ ।।
मद और मोह हने और सूदे।
मोहन मुरली बजी मन बोधे।। ९ ।।
गोपी धुन और शब्द ग्वाल मिल।
सुरत गूजरी आई चल चल।। १०।।
खेलत कूदत शोर मचावत।
दधि अकाश सब मथ मथ लावत।। ११ ।।
पी पी चहुँ दिश होत पुकारा।
सुन सुन राधा मगन विहारा।।१२ ।।

कड़ी ८ – आकाश में चढ़ कर आवाज़ गगन मंडल की सुनाई दी और वहाँ पहुँच कर त्रिकुटी में जो स्वरूप है, उसका दर्शन करके ख़ुश हुई।

कड़ी ९ – और मद और मोह दूर हुए और निहायत रसीली बाँसुरी की आवाज़ सुन कर मन को नया बोध हुआ।

कड़ी १०– शब्द की धुनें और शब्द सुनती हुई जो कि गोपी और ग्वाल हैं, सुरत गूजरी यानी इन्द्रियों की जलाने वाली ऊपर को चढ़ती चली जाती है।

कड़ी ११–गोपी और ग्वाल यानी मन इन्द्रिय वग़ैरा बिलास और शोर करते हुए और आकाश में से दधि यानी चैतन्य को समेटते और छाँटते हुए मगन हो रहे हैं।

कड़ी १२–और सब चारों तरफ से अपने प्रीतम शब्द गुरु को पुकारते हैं और राधा यानी सुरत चलने वाली इस बिलास को देखकर मगन होती है।

स्वामी स्वामी धुन अब जागी।
उमँग हिये में छिन छिन लागी।।१३ ।।
जगत वासना सब हम त्यागी।
मन हुआ मेरा सहज वैरागी।।१४ ।।
कृपा करो अब राधास्वामी।
करत रहूँ तुम चरन नमामी।।१५ ।।
मन को फेरो दीनदयाला।
छिन छिन निरखूँ दरस विशाला।।१६ ।।
अब तो लिये जात मोहिं खींचे।
मानत नाहिं डार मोहिं भींचे।।१७ ।।
भक्ति पौद जो तुमहिं लगाई।
मेहर दया से सींचो आई।।१८ ।।

कड़ी १३– फिर स्वामी नाम की धुन सुनती हुई नवीन उमंग हिरदे में बढ़ाती जाती है।

कड़ी १४– यह कैफ़ियत देखकर जगत की चाह और बासना बिलकुल छोड़ दी और मन सहज में बैरागी यानी उदासीन हो गया।

कड़ी १५– हे राधास्वामी दयाल ऐसी ही कृपा मेरे ऊपर जारी रक्खो, और मैं तुम्हारी वंदना करती रहूँ।

कड़ी १६– और मेरे मन को इस तौर से फेर दीजिये कि छिन २ आपका दर्शन करती रहूँ।

कड़ी १७– इस वक़्त तो यह मन मुझको अपनी तरफ खींचे लिये जाता है और कहना नहीं मानता और मुझको तंग कर रहा है।

कड़ी १८– भक्ति की पौद जो आपने लगाई है उसको आप ही अपनी मेहर और दया से सींचो यानी बढ़ाओ और तरक़्क़ी दो।

मेरा बस मन से नहिं चाले।
बहुत लगाये इन जंजाले।।१९ ।।
पर तुम समरथ पुरुष अपारा।
काटोगे हम निश्चय धारा।।२० ।।
अब आरत सब विधि हुइ पूरी।
राधास्वामी रहूँ हज़ूरी।।२१ ।।

।। सत्रहवाँ शब्द ।।

हिरदे में गुल[1] पौद खिलानी।
मैं बुलबुल सम भइ मस्तानी।। १ ।।
प्रेम प्रीत का लगा बग़ीचा।
मन माली ताहि दम दम सींचा।। २ ।।
अमर बेल फैली चहुँ दिस में।
भींज रही वह अमृत रस में।। ३ ।।
बाजे अनहद बजे गगन में।
सुध भूली तन उसी लगन में।। ४ ।।

कड़ी १९– क्योंकि मेरा मन मेरे क़ाबू में नहीं है और बहुत संसारी जाल इसने फैला रक्खा है।

कड़ी २०– लेकिन आप सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल समर्थ हो और मुझको यक़ीन है कि आप दया करके इस जंजाल को काटोगे।

कड़ी २१– अब यह आरती सम्पूर्ण हुई और मेरी अर्ज और माँग यही है कि राधास्वामी दयाल के सदा सन्मुख रहूँ।

१ - फूल।

दृष्टि खुली और झाँकी पाई।
सूरत मूरत अगम दिखाई।। ५ ।।
माणिक मोती शब्द नाद के।
नीलम पन्ना धुन अगाध के।। ६ ।।
रतन जड़ित सुन चौकी पाई।
देखत छबि मन गया भुलाई।। ७ ।।
मान सरोवर हंस बिलासा।
केल करें मिल अजब तमाशा।। ८ ।।
हंस हंसनी नाचें गावें।
तूर तँबूरा अधिक बजावें।। ९ ।।
अस वेदी रच लीला ठानी।
सुरत शब्द मिल बोले बानी।। १०।।
दुलहा दुलहिन दोऊ बिठाये।
भाँवर फेरे दोउ गठियाये।। ११ ।।
ब्याह भया और निज घर आये।
सत्तपुरुष का दर्शन पाये।। १२ ।।
अजर चौतरा अमर अटारी।
सेज अजूनी[1] लीन्ह सिंगारी।। १३ ।।

१ - जूनी से रहित।

अटल सुहाग सुरत अब लीन्हा।
पति मिलाप अनहद धुन बीना।।१४ ।।
राधास्वामी लगन धराई।
तब हम ऐसा दुलहा पाई।।१५ ।।
अजब तमाशा नहीं तिरासा[1]।
मौज चौज[2] जहाँ अधिक दिलासा।।१६ ।।

।। अट्ठारहवाँ शब्द ।।

सुरत चढ़ी घट में अब दौड़ी।
सुन कर शब्द भई अब पौढ़ी।। १ ।।
आसा मनसा जग की छोड़ी।
लाज कान कुल की सब तोड़ी।। २ ।।
सतसँग रंग पाया भई बौरी।
सेत द्वार में निज कर जोड़ी।। ३ ।।
श्याम नगर गइ परदा फोड़ी।
गगन खंड फिर सूरत मोड़ी।। ४ ।।
गगन नगर पहुँची सुन्दर में।
खिला चमन अब हिये अन्दर में।। ५ ।।
सहन[3] मिला चौड़ा अब सुन में।
मगन हुई पहुँची निज धुन में।। ६ ।।

१ - डर। तकलीफ़। २ - बिलास। ३ - चौक।

रस पाया अब अगम अधर में।
पाया चैन आय गइ घर में।। ७ ।।
घट घट भीतर यही बिलासा।
देख देख मैं पाऊँ हुलासा।। ८ ।।
जीव अचेत न चेते भाई।
घर सुख तज बन बन भटकाई।। ९ ।।
जा के घर सुख का भंडारा।
क्यों भरमे फिरे दर दर[1] मारा।। १० ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
कर सतसंग बूझ तब पाई।। ११ ।।

।। उन्नीसवाँ शब्द ।।

घट झूम रही अब सुरत रँगीली।
पट घूम गई सुन शब्द छबीली[2]।। १ ।।
उलट नैन तिल डाला पेली।
जोत जगमगी झलके हेली।। २ ।।
सुन सुन धुन निरते[3] अलबेली।
गगन मँडल चढ़ त्रिकुटी ले ली।। ३ ।।
धोय धोय निर्मल हुई मैली।
छोड़ गई गुन तीन की फ़ेली[4]।। ४ ।।

१ - दरवाजा। २ - सुन्दर। ३ - नाचे। ४ - करतूत।

सुन्न सरोवर गई अकेली।
सिमट गई धुन में नहिं फैली।। ५ ।।
महासुन्न चढ़ अद्‌भुत खेली।
सत्तनाम धुन छिन में ले ली।। ६ ।।
शब्द पेड़ पर चढ़ी सुर्त बेली[१]।
नाम अगम गल डाली सेली[२]।। ७ ।।

।। बीसवाँ शब्द ।।

सुरत मेरी हुई शब्द रस माती।
गुरु महिमा अब छिन छिन गाती।। १ ।।
धन्य गुरू जिन भेद लखाया।
धुन अन्तर मन राती[३]।। २ ।।
राग रागिनी बाहर बाजें।
यह सब तुच्छ बुझाती।। ३ ।।
निरत सखी को अगुआ करके।
पल पल शब्द समाती।। ४ ।।
शब्द फोड़ सुन शब्द को जाती।
माया ममता कूटत छाती।। ५ ।।
धुन धुन सिर अब काल पुकारे।
यह सूरत मेरे हाथ न आती।। ६ ।।

१ - लताबेल। २ - गुलूबन्द। ३ - लवलीन हो गया।

पहुँची जाय सत्त दरबारा।
अगम पुरुष का दर्शन पाती।। ७ ।।
हंसन साथ आरती गावे।
अमी अहार सदा नित खाती।। ८ ।।
और नहीं कुछ कहने जोगी।
राधास्वामी के बल बल जाती।। ९ ।।

।। इक्कीसवाँ शब्द ।।

सुरत अब जाना निज घर अपना।
शब्द खोज हम पाया अपना।। १ ।।
जगत अब भासा[1] हमको सुपना।
छूट गया सब भरम कल्पना[2]।। २ ।।
कहा करे ले जप और तपना।
या में काल करे जग ठगना।। ३ ।।
संत भेद पर डाला ढकना।
जीवन पाया बहुत भटकना।। ४ ।।
अब यामें कोई कभी न अटकना।
जैसे बने तैसे मन को झटकना।। ५ ।।
सुरत शब्द ले गगन सटकना[3]।
वहाँ जाय कर बहुत मटकना[4]।। ६ ।।

१ - मालूम पड़ा। २ - ख़याल। ३ - जाना। ४ - ख़ुशी का इज़हार करना।

करम धरम से दूर फटकना[1]।
सतगुरु चरनन माहिं लिपटना।। ७ ।।

।। बाईसवाँ शब्द ।।

गाओ री सखी जुड़ मंगल बानी।
आज पिया मेरे दीन्ह निशानी।। १ ।।
घट में घाट द्वार मैं चीन्हा।
प्रेम पदारथ छिन छिन लीन्हा।। २ ।।
मन चढ़ चला छोड़ तन थाना।
गगन महल पर उमँग समाना।। ३ ।।
तहाँ से सुरत चली होय न्यारी।
सुन्न नगर का शब्द पिछाना।। ४ ।।
क्या कहुँ महिमा बरनी न जाई।
काल करम दोउ हुए दिवाना।। ५ ।।
मैं पिया की अपने सुध पाई।
घाट घाट पर जोत जगाई।। ६ ।।
भागा तिमिर हुआ उजियारा।
चौक चाँदनी द्वार निहारा।। ७ ।।
शोभा महल कहाँ लग बरनूँ।
कँगुरे कँगुरे सूर हज़ाराँ।। ८ ।।

१ - अलग हो जाना।

आगे बाट चली नहिं मेरी।
राधास्वामी करो निबेड़ा[1]।। ९ ।।

।। तेईसवाँ शब्द ।।

प्रेम भरी मेरी घट की गगरिया।
छूट गई मो से मलिन नगरिया।। १ ।।
नौ दूतन मो से धूम मचाई।
दसवें ने मोहिं खैंच चढ़ाई।। २ ।।
हंस मंडली फ़ौज लड़ाई।
काल दुष्ट अब पीठ दिखाई।। ३ ।।
माया आई मोहिं लुभावन।
कनक कामिनी बान छुड़ावन।। ४ ।।
मैं भी उमँग नवीन सम्हारी।
मार लिया दल उसका भारी।। ५ ।।
भागी माया छोड़ा देश।
मैं सतगुरु को करूँ आदेश[2]।। ६ ।।
सतगुरु पकड़ी अब मोरी बहियाँ।
खैंच चढ़ाया गगन मँझइयाँ।। ७ ।।
धुन सुन कर अब भई निहाल।
सत्तपुरुष मेरे दीन दयाल।। ८ ।।

१ - निपटारा। २ - प्रणाम।

दया करी मोहिं अंग लगाई।
चरन ओट गह सरन समाई।। ९ ।।
कोटि जन्म की ख़बर जनाई।
जन्म मरन अब दूर नसाई।।१० ।।
प्रेम प्रीत का मिला ख़ज़ाना।
जीत रीत गुरु शब्द पिछाना।।११ ।।
शब्द पाय सत शब्द पुकारी।
चली सुरत और निज धुन धारी।।१२ ।।
राधास्वामी अन्तरजामी।
गति उनकी कस करूँ बखानी।।१३ ।।

।। चौबीसवाँ शब्द ।।

शब्द धुन सुनी असमानी।
सुरत मेरी हुई हैरानी।। १ ।।
विहंग की चाल चलानी।
मीन मत मारग जानी।। २ ।।
मकर के तार समानी।
लक़ा ज्यों उलट दिखानी।। ३ ।।
गगन ज्यों धरन पिछानी।
नाम फुलवार खिलानी।। ४ ।।
जोत में जोत मिलानी।
जोत जोती सँग आनी।। ५ ।।

सुरत मेरी हुई निमानी[1]।
शब्द की लखी निशानी।। ६ ।।
नाम की हुई दिवानी।
भेद अब करूँ बखानी।। ७ ।।
सुन्न की धुन दरसानी।
मानसर किये अश्नानी।। ८ ।।
सुरत अब अति हरखानी।
गुप्त पद बात छिपानी।। ९ ।।
खोल कस कहूँ कहानी।
अकह की सैन[2] प्रमानी।। १० ।।
राधास्वामी अगम ठिकानी।
चलो अब होय न हानी।। ११ ।।

।। पच्चीसवाँ शब्द ।।

अली री मथूँ निज पिंडा।
राधास्वामी दीन्हा भेद अखंडा।। १ ।।
प्रेम का धारूँ झंडा।
गगन में फोड़ूँ अंडा।। २ ।।
द्वार दल नाका खंडा।
चढ़ी और लिया ब्रह्मंडा।। ३ ।।

१ - दीन। २ - इशारा।

जगी वहँ जोत प्रचंडा[1]।
काल सिर मारा डंडा।। ४ ।।
बंक नल द्वार समानी।
शब्द गुरु गही निशानी।। ५ ।।
सुन्न धुन लीन्ह सम्हारी।
हंस सँग कीन्ही यारी।। ६ ।।
सुरत की लागी तारी।
शब्द घट हुइ उजियारी।। ७ ।।
महासुन तिमिर दिखाना।
पार हुइ भँवर समाना।। ८ ।।
सत्त पद अपना जाना।
अलख गति अगम पिछाना।। ९ ।।
राधा यह कहत बखानी।
स्वामी निज कीन्ह प्रमानी।। १० ।।

।। छब्बीसवाँ शब्द।।

सुरत आज मगन भई।
उन पाया शब्द का भेद।। १ ।।
धर्मराय अब सिर धुन मारे।
मिटा कर्म का खेद।। २ ।।

१ - तेज़।

जन्म मरन की त्रास नसाई।
अहंमेव[1] मम डाला छेद।। ३ ।।
अविनाशी पद अगम निहारा।
अमर पदारथ मिला अभेद।। ४ ।।
अब की बार दाव हम पाया।
लाल भई पद पाया सेत।। ५ ।।
नर्द[2] बचाई जुग गुरु बाँधा।
सत्तपुरुष पद धरी उमेद।। ६ ।।
चढ़ी सुरत और पिंड छिपाना।
गही शब्द की टेक।। ७ ।।
खुला देश भंडार भक्ति का।
सतगुरु दाता छिन छिन देत।। ८ ।।
मैं अति दीन दुखी जन्मन की।
भूल गई दुख सब सुख लेत।। ९ ।।
धन्य धन्य अब भाग हमारा।
निभ गइ अब के मेरी खेप।। १०।।
गुरु किरपा और साध की संगत।
सोया मनुवाँ जागा चेत।। ११।।
मूल मिला और भूल मिटाई।
पाया बीज वृक्ष नापैद।। १२।।

१ - अहंकार। २ - गोट।

राधास्वामी खेल दिखाया।
हैरत हैरत हैरत हेत।।१३ ।।
अब क्या कहूँ कहन में नाहीं।
अचरज भारी अद्भुत नेत।।१४ ।।

।। सत्ताईसवाँ शब्द।।

सुखमन जाय मन हुलसाना।
सतगुरु सँग कीन्ह पयाना[1]।। १ ।।
चाँद सूर्य दोउ सम कर राखे।
तब सतगुरु यों कह कर भाखे।। २ ।।
अब सुन धुन होत नफ़ीरी।
तेरी सुरत करूँ मैं भँभीरी।। ३ ।।
तब सुन धुन अति हरखानी।
महिमा नहिं जात बखानी।। ४ ।।
मैं आरत कीन्हा साजा।
सतगुरु घट माहिं बिराजा।। ५ ।।
थाल सोसील[2] धराया।
सोमत[3] की जोत जगाया।। ६ ।।
तन भीतर आरत फेरी।
मन लीन्हा चहुँ दिश घेरी।। ७ ।।

१ - यात्रा। २ - शान्त स्वभाव। ३ - सुमत।

अंबर[1] का चीर पिन्हाया।
सतगुरु अचरज रूप दिखाया।। ८ ।।
दरशन कर तिरपत आई।
मन इन्द्री तहाँ जमाई।। ९ ।।
अब जन्म सुफल कर लीन्हा।
आरत फल ऐसा चीन्हा।।१० ।।
घट बाजे अनहद तूरा।
पट खोला निरख ज़हूरा।।११ ।।
अंतर हुई अजब सफ़ाई।
गगना पर बजी बधाई।।१२।।
सुन और महासुन देखा।
धुर अगम लोक तक पेखा।।१३ ।।
निज भेद अधर रस पाई।
अस आरत राधास्वामी गाई।।१४ ।।

।। अट्ठाईसवाँ शब्द।।

मुरलिया बाज रही।
कोइ सुने संत धर ध्यान।। १ ।।
सो मुरली गुरु मोहिं सुनाई।
लगे प्रेम के बान।। २ ।।

१ - आकाश यानी नूर।

पिंडा छोड़ अंड तज भागी।
सुनी अधर में अपूरब तान।। ३ ।।
पाया शब्द मिली हंसन से।
खैंच चढ़ाई सुरत कमान।। ४ ।।
यह बंसी सतनाम बंस की।
किया अजर घर अमृत पान।। ५ ।।
भँवरगुफा ढिंग सोहं बंसी।
रीझ रही मैं सुन सुन कान।। ६ ।।
इस मुरली का मर्म पिछानो।
मिली शब्द की खान।। ७ ।।
गई सुरत खोला वह द्वारा।
पहुँची निज अस्थान।। ८ ।।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई।
अद्भुत जिनकी शान।। ९ ।।
जिन जिन सुनी आन यह बंसी।
दूर किया सब मन का मान।। १० ।।
सुरत सम्हारत निरत निहारत।
पाय गई अब नाम निशान।। ११ ।।
अलख अगम और राधास्वामी।
खेल रही अब उस मैदान।। १२ ।।

।। उनतीसवाँ शब्द ।।

बोल री राधा प्यारी बंसी।
क्यों तरसावत जान।। १ ।।
तड़प रही मैं कारन तोरे।
सतगुरु मर्म लखाया आन।। २ ।।
विरह बान की वर्षा कीन्ही।
खैंच लिये मन प्रान।। ३ ।।
हुई दिवानी मिली निशानी।
लिया मर्म सब छान।। ४ ।।
खान पान तन सुध बिसराई।
सुरत समानी तान।। ५ ।।
सुन सुन धुन अब सूर भई है।
मारा काल निदान।। ६ ।।
राधास्वामी देस दिखाना।
कौन जुगत से करूँ बखान।। ७ ।।

।। तीसवाँ शब्द ।।

गुरु नाम रसायन[1] दीन्हा।
दारिद्र[2] हुआ सब छीना।। १ ।।
सुख रास[3] मिली घट अंतर।
धुन शब्द गही गगनन्तर।। २ ।।

१ - कीमिया। २ - निर्धनता। ३ - भंडार।

सुख सागर ग़ोता मारा।
भौसागर त्यागा भारा।। ३ ।।
धुन नाम मिले जहाँ मोती।
सूरत अब लड़ियाँ पोती।। ४ ।।
श्रृंगार किया सुर्त अपना।
पति मिला छोड़ जग सुपना।। ५ ।।
अनहद धुन अजपा जपना।
सुन सुन इस तन से हटना।। ६ ।।
कामादिक मन से तजना।
गुरु शब्द माहिं नित लगना।। ७ ।।
नभ द्वारा लागा फटने।
लगी नींद भूख अब घटने।। ८ ।।
अमृत रस मिला अधर में।
पहुँची अब सुन्न शिखर में।। ९ ।।
लीला अब देखी न्यारी।
वर्णन सब करूँ सम्हारी।। १० ।।
रतनन के भरे ख़ज़ाने।
अमृत के कुंड दिखाने।। ११ ।।
हीरों की खान खुलानी।
लालन की देख निशानी।। १२ ।।

सूरज और चाँद अनंता।
तारों का मंडल बँधता।। १३ ।।
रंभा[1] जहाँ गावे बानी।
हंसन गति अजब कहानी।।१४ ।।
सुर्त देख देख हरखानी।
महिमा क्या करूँ बखानी।।१५ ।।
यह भेद सार बतलाया।
राधास्वामी सब दिखलाया।।१६ ।।

।। इकतीसवाँ शब्द ।।

मौज इक धारी सतगुरु आज।
कहूँ क्या कहते आवे लाज।। १ ।।
गगन में देखा अजब समाज।
सुरत ने पाया अद्‌भुत साज।। २ ।।
सिंह ने मारा गउवन गाज।
मिरग[2] इक आया नभ में भाज।। ३ ।।
अमी रस चाखा छोड़ा नाज।
सुरत गइ त्रिकुटी पाया राज।। ४ ।।
प्रेम का दुलहिन पाया दाज[3]।
सुन्न में दुलहा मिला अगाज।। ५ ।।

१ - अप्सरा। २ - हिरन। ३ - दहेज।

सुरत ने कीन्हा अपना काज।
शब्द सँग कीन्हा आन समाज।। ६ ।।
गुरू ने दीन्ही इक आवाज़।
प्रेम की पाई बड़ी रिवाज।। ७ ।।
राधास्वामी सरन गही मैं भाज।
काज सब हो गया पूरा आज।। ८ ।।

।। बत्तीसवाँ शब्द ।।

घूँघट खोल चली सुर्त दुलहिन।
दुलहा शब्द मिला अब चढ़ सुन।। १ ।।
करत बिलास एक हुइ छिन छिन।
देख रूप अब होत मगन मन।। २ ।।
लीला अद्‌भुत होत न वर्णन।
अजब अखाड़ा रचा सेत धुन।। ३ ।।
काल पछाड़ा कीन्हा मरदन।
माया ममता भागी सिर धुन।। ४ ।।
चली सुरत और पहुँची महासुन।
सेज बिछाई जा चौथे खन।। ५ ।।
सत्तपुरुष मुख सुनी बीन धुन।
अलख अगम को कीन्हा परसन।। ६ ।।
वहाँ से चली देख कुछ अगमन।
राधास्वामी रूप निहारत दिरगन।। ७ ।।

देख देख फूली अब निज तन।
कौन कहे वह गति राधास्वामी बिन।। ८ ।।

।। तेंतीसवाँ शब्द ।।

सुरत अब चली ऐन[1] में पैन[2]।
लखा जाय अचरज रूप अनैन[3]।। १ ।।
त्याग गुन तीनों और दस धैन[4]।
अधर में पहुँची पाया चैन।। २ ।।
कहूँ क्या घट की परखी सैन।
चुका अब काल करम का दैन[5]।। ३ ।।
खुले अब सुन में हिरदे नैन।
समझ तब आये वहाँ के बैन।। ४ ।।
सुरत अब लागी वहाँ रस लेन।
शब्द की परखी अद्‌भुत कहन।। ५ ।।
चाँद और सूरज गहे दोउ गहन।
सुखमना लागी सूरत रहन।। ६ ।।
राधास्वामी सूरत कीन्हीं पहन[6]।
दई मोहिं पदवी अब अति महन[7]।। ७ ।।

* * * * *

१ - आँख। २ - धसकर। ३ - अगोचर। ४ - इन्द्रिय। ५ - क़रजा।
६ - चौड़ी। ७ - बड़ी।

।। चौतीसवाँ शब्द ।।

चमकन अब लागी घट में बिजली।
यह घाट लखे कोइ सूरत बिरली।।
सतगुरु ने दृष्टि करी मुझ पर अब सगली[१]।
तिल तोड़ लिया, नभ पार चढ़ी,
जहाँ छाय रही, नित बदली।। १ ।।
दृग झाँक रही, सुर्त सूर भई,
छेदा दल कदली।
तन छोड़ चली, जड़ गाँठ खुली।
अब पाय गई, अपना गुरु अदली[२]।। २ ।।
धुन सार मिली, सुन पार चली,
पाया पद अमली[३]।
खोला सुन द्वारा, झाँका घर न्यारा।।
डार लई चौकी अब सँदली[४]।। ३ ।।
बैठी घर जानी, धुन माहिं समानी।
देख हंसन मँडली।
पिया अमृत प्याला, घट हुआ उजाला,
छाँट दई माया सब गदली।। ४ ।।
पद आदि मिली, धुन साथ रली,
बुधि दूर हुई कमली[५]।

१ - सब। २ - न्यायकार। मुन्सिफ़। ३ - निर्मल। ४ - चंदन की।
५ - पगली, पंजाबी ज़बान।

महासुन्न मिली, लख भँवर गली,
अब होय गई सत पद अचली।। ५ ।।
लख अलख सही, घर अगम रही।
कुल काल दली, फिर चाल चली,
पा कँवल कली।
राधास्वामी चरन पर जा मचली।। ६ ।।

।। पैंतीसवाँ शब्द ।।

चढ़ो री घट देखो मौज भली।
अमी रस पाओ आज अली।। १ ।।
नाम धुन अंतर ख़ूब खुली।
खोइ जमा मानो फेर मिली।। २ ।।
चढ़ गगन शिखर खुली बंक नली।
त्रिकुटी में बैठी शब्द पिली।। ३ ।।
फिर वहाँ से पहुँची सुन्न गली।
सुन में जा हंसन साथ रली।। ४ ।।
सब आधि[1] बियाधि[2] उपाधि[3] टली।
कर्मन की रसरी अगिन जली।। ५ ।।
महाकाल जाल भी जार चली।
सोहं धुन पकड़ी मूर[4] मिली।। ६ ।।

१ - मन का दुख। २ - तन का दुख। ३ - बाहर का दुख यानी लड़ाई, झगड़ा, सरदी गरमी वग़ैरा। ४ - जड़।

सतनाम लखा दुख दूर टली।
अलख अगम धुन चित्त खली[१]।। ७ ।।
राधास्वामी चरन में आन हिली।
महिमा उन पाई सुरत घुली।। ८ ।।

।। छत्तीसवाँ शब्द ।।

दमिनियाँ[२] दमक रही घट माहिं।
धुबिनियाँ[२] धोय रही मल नाहिं।। १ ।।
रँगिनियाँ[२] रंग दई चटकाहिं।
कँवल की खिल गईं कलियाँ आहिं।। २ ।।
सुरतिया झूम रही मुसक्याहिं।
तपनियाँ दूर भई मिली छाहिं।। ३ ।।
गगनियाँ फोड़ गई धुन पाहिं।
निरतियाँ छान लई छकियाहिं।। ४ ।।
ठगनियाँ नाश भई बल नाहिं।
मगनियाँ मगन भई सुन माहिं।। ५ ।।
सरनियाँ सरन पई गुरु पाँय।
धुनन की धुनियाँ धुन धुन लाय।। ६ ।।
गवनियाँ गान सुनावन जाय।
कहनियाँ राधास्वामी नाम सुनाय।। ७ ।।

१ -चुभी। २ - सुरत।

।। सैंतीसवाँ शब्द ।।

खिज़ाँ तज देखो मूल बहार।
घूम चल देखो तिल का द्वार।। १ ।।
खिला जहाँ अजब सदा गुलज़ार[1]।
पाँच रँग देखे पाँचों सार।। २ ।।
चमन जहाँ नूरी खिले अपार।
नूर की क्यारी निर्मल धार।। ३ ।।
उतरता अमी लखा हर बार।
फूल रही अद्भुत जहाँ गुलनार।। ४ ।।
सुरंगी[2] सरवर भरे अपार।
सुरत और शब्द करें जहाँ प्यार।। ५ ।।
महल जहाँ देखे खुले दुवार।
नीलगूँ कँगुरे लगे क़तार।। ६ ।।
सैर यह देखी तन मन वार।
गुरू ने मौज दिखाई सार।। ७ ।।
मेहर से दूर हुए सब ख़ार[3]।
तजा फिर मन ने निज अहंकार।। ८ ।।
गुरू मिल पहुँची गुरु दरबार।
पड़ी अब राधास्वामी चरन मँझार।। ९ ।।

१ - चमन। २ - खुश रंग। ३ - काँटे।

।। अड़तीसवाँ शब्द ।।

सुर्त पनिहारी सतगुरु प्यारी।
चली गगन के कूप।। १ ।।
प्रेम डोर ले पनघट आई।
भरी गगरिया ख़ूब।। २ ।।
शब्द पिछान अमी रस पागी।
देखा अद्‌भुत रूप।। ३ ।।
नगर अजायब मिला डगर में।
जहाँ छाँह नहिं धूप।। ४ ।।
पहुँची जाय अगमपुर नामी।
दरस किया राधास्वामी भूप।। ५ ।।

।। बचन छत्तीसवाँ ।।

प्राप्ति शब्द और मुक़ामात की और वर्णन आनंद और बिलास और महिमा सतगुरु की

।। पहला शब्द ।।

उमँड रही घट में घटा अपार।।टेक।।
चमक बीजली प्यार बढ़ावत।
और घंटा झनकार।। १ ।।
शोभित अधर घाट सुर्त प्यारी।
शब्द खुला भंडार।। २ ।।

देख रही जहाँ कँवल कियारी।
फूल रही फुलवार।। ३ ।।
यह अन्तरगत खेल न देखे।
भटके बारम्बार।। ४ ।।
कौन कहे बिन राधास्वामी।
यह संतन मत सार।। ५ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

गोरी[१] खिलीं श्याम दल कलियाँ।
मन भँवर करत जहाँ रलियाँ।। १ ।।
माया जहाँ अधिक लगावत छलियाँ।
सिध जोगी बहुत निगलियाँ।। २ ।।
मेरी गुरु मिल बात सम्हलियाँ।
नाम बल सकल उपाधी टलियाँ।। ३ ।।
काल जहाँ डारत सब को दलियाँ।
मैं वहीं शब्द सँग मिलियाँ।। ४ ।।
मैं चली गगन की गलियाँ।
घट खोली अंतर नलियाँ।। ५ ।।
फिर शब्द गुरू में पिलियाँ।
पहुँची सुन सेत कँवलियाँ।। ६ ।।

१ - सखी ।

धुन सुनी अधिक निर्मलियाँ।
गहे राधास्वामी चरन अमलियाँ[1] ।। ७ ।।

।। तीसरा शब्द।।

शब्द सँग लगी सुरत की डोर।
सुहागिन करे आरती जोड़।। १ ।।
भौ सागर में तुलहा[2] बाँधा।
जम के जाल लिये सब तोड़।। २ ।।
प्रेम प्रीत घट थाली धारी।
जोत जगाई मन को मोड़।। ३ ।।
सुरत लगाई शब्द समाई।
नित नित धुन में होती पोढ़[3] ।। ४ ।।
गगन द्वार धस ताला खोला।
अनहद शब्द मचावत शोर।। ५ ।।
करम भरम सब दूर निकारे।
सतगुरु घट में कीन्हा दौर[4] ।। ६ ।।
जन्म जन्म का सोया मनुवाँ।
जाग उठा सुन अनहद घोर।। ७ ।।
पिंजर छोड़ उड़ा पंखेरू।
चला गगन की ओर।। ८ ।।

१ - निर्मल। २ - तैरने को मल्लाह लोग फूस का बनाते हैं।
३ - मज़बूत। ४ - दौरा

त्रिकुटी जाय शब्द फल पाया।
छूटा मोर और तोर।। ९ ।।
सुन्न शिखर जा रैन बिहानी।
उदय हुआ घट भोर।। १०।।
सुन्न महासुन भँवरगुफा पर।
सुरत चढ़ी सब नाके तोड़।। ११ ।।
सत्त अलख और अगम ठिकाना।
राधास्वामी धाम मिला चित चोर।। १२ ।।

।। चौथा शब्द।।

गुरु चरन धूर हम हुइयाँ।
तुम सुनो हमारी गुइयाँ।। १ ।।
क्या क्या सुख कहूँ गुसइयाँ।
बिन भाग नहीं कोइ पइयाँ।। २ ।।
अब ध्यान कमान खिंचइयाँ।
सुर्त बान चलावत गइयाँ।। ३ ।।
नभ शब्द निशान धरइयाँ।
फोड़ा और आगे चलइयाँ।। ४ ।।
सत शब्द मिलाप करइयाँ।
राधास्वामी धाम समइयाँ।। ५ ।।

।। पाँचवाँ शब्द।।

सतगुरु मैं पूरे पाये।
मन घाट लिया बदलाये।। १ ।।
सूरत ने शब्द जगाये।
घट मोती चुन चुन खाये।। २ ।।
हंसन के जूथ दिखाये।
मिल उन सँग प्रेम लगाये।। ३ ।।
घाटी चढ़ बाटी धाये।
फिर सुन्न शिखर चढ़ आये।। ४ ।।
सतलोक सुरत को लाये।
फिर जोनी बास न आये।। ५ ।।
सत रूप अजब दरसाये।
कोटिन रवि[1] चंद्र लजाये।। ६ ।।
हंसन छबि क्या कहुँ गाये।
खोड़स[2] शशि[3] भान[4] दिखाये।। ७ ।।
राधास्वामी कहत बुझाये।
सुन सेवक अति हरखाये।। ८ ।।

।। छठा शब्द।।

सुरत अब घूम चली तन छोड़ निदान।
चरन गुरु आन अड़ी गहि नाम ठिकान।।१।।

१ - सूरज। २ - सोलह। ३ - चन्द्रमा। ४ - सूरज।

धुन बाजे अनहद परख निशान।
सतगुरु दई कुंजी कुफ़ल[१] खुलान।। २ ।।
सुन सागर झाँकी कर अश्नान।
शब्द घट जागा सुरत समान[२]।। ३ ।।
पोढ़ भइ नभ में कँवल खिलान।
जोत लख पाई तिल परमान।। ४ ।।
काल की कला थकी अब जान।
लखी गुरु मूरत शब्द पिछान।। ५ ।।
तीन गुन टारे छोड़ा थान[३]।
लखी मैं राधास्वामी अचरज शान।। ६ ।।
रही नहीं अब कुछ जग की कान।
गही अब राधास्वामी पूरन आन[४]।। ७ ।।

।। सातवाँ शब्द।।

मन सोधो घट में शब्द संग।
तज काम क्रोध और मोह रंग।। १ ।।
अब औसर पाया अजब ढंग।
मिली देही उत्तम गुरू संग।। २ ।।
नित बचन सुनूँ मैं विहंग अंग[५]।
अब होत सफ़ाई मिटत ज़ंग[६]।। ३ ।।

१ - ताला। २ - समाई। ३ - ठहराव की जगह। ४ - हुक्म।
५ - ऊँचे चढ़ कर। ६ - काई।

क्या उपमा बरनूँ साध संग।
निर्मलता पाई अंग अंग।। ४ ।।
तन दूत हुए सब आप तंग।
घट भीतर लागी होने जंग[१]।। ५ ।।
गुरु प्रेम समाना मिट तरंग।
गुन बिर्त हटाई चित अपंग[२]।। ६ ।।
सेत मिला हट श्याम रंग।
धुन शब्द सुनाई भरम भंग।। ७ ।।
फिर निरत जगाई उड़ विहंग।
राधास्वामी पाये काल दंग।। ८ ।।

।। आठवाँ शब्द।।

मौज करूँ अब घट में बैठ।
देवर[३] मारा मारा जेठ[४]।। १ ।।
खोली हाट अधर की पैंठ।
धुन को सुना गई वहाँ पैठ[५]।। २ ।।
चाँद सुरज दोउ देखे हेठ[६]।
सीस किया सतगुरु की भेट।। ३ ।।
लोभ मोह सब डारे मेट।
पाप पुन्न सब सोये लेट।। ४ ।।

१ - युद्ध। २ - निश्चल । ३ - पिंडी मन। ४ - निज मन।
५ - ठहर गई। ६ - नीचे।

इन्द्री भोग गये सब ऐंठ।
राधास्वामी मिल गये भारी सेठ।। ५ ।।

।। नवाँ शब्द।।

मेरे घट का दिया गुरु ताला खोल।
मैं सुनत रहूँ नित बाला बोल।। १ ।।
क्या कहुँ सुरत शब्द की तोल।
पहुँची जाय नाम के कोल[1]।। २ ।।
अधिक हुलास मिला जहँ चोल।
माया की सब निकसी पोल।। ३ ।।
का से कहूँ यह भेद अमोल।
बिन गुरु कोई न कहता खोल।। ४ ।।
जीव बिचारे डावाँडोल।
बिन गुरु भरे न मन का डोल।। ५ ।।
मैं विरहिन मेरे हिरदे हौल[2]।
काल चढ़ाई मुझ पर रौल[3]।। ६ ।।
मैं पकड़ी अब धुन की रोल।
मार दिया सब माया ग़ोल[4]।। ७ ।।
जो गुरु भाखें मुझ से क़ौल[5]।
मन मूरख सिर मारी धौल।। ८ ।।

१ - पास। २ - डर। धड़का। ३ - रौला। हल्ला। ४ - समूह।
५ - बचन।

कौन करे उस धुन का मोल।
उसके आगे सभी कुबोल।। १ ।।
बजे सुहावन घट में ढोल।
सुन सुन बोझ गिरा हुइ हौल[१]।। १०।।
पाई यह धुन करी टटोल।
पहर लिया अब प्रेम पटोल[२]।। ११ ।।
अब नित झूलूँ गगन हिंडोल।
राधास्वामी अमी पिलाया झकझोल।। १२ ।।

।। दसवाँ शब्द।।

इन्द्री उलट लाओ अब तन में।
मन को खैंच चढ़ाओ गगन में।। १ ।।
सुरत लगाओ जा उस धुन में।
सहस कँवल चढ़ देखो सुन में।। २ ।।
जोत जगाय देख तू घन में।
बंकनाल चढ़ पहुँच निर्गुन में।। ३ ।।
अक्षर लखो जाय दरपन में।
महासुन्न चढ़ रहो अमन[३] में।। ४ ।।
भँवरगुफा धुन पड़ी श्रवन में।
देख रूप सतपुरुष अपन में।। ५ ।।

१ - हलकी। २ - वस्त्र। ३ - बे-ख़टके।

धुन सुन पहुँची अलख अगम में।
राधास्वामी रूप बसा नैनन में।। ६ ।।
आरत करी गुरू चरनन में।
पाय दया गुरु हुई मगन मैं।। ७ ।।
प्रेम प्रतीत लगी अब उन में।
कहूँ कहा महिमा चुन चुन मैं।। ८ ।।
तन मन सीस करूँ अर्पन मैं।
चरन सरन गहि गाऊँ गुन मैं।। ९ ।।
खोल न कहूँ भेद सबहिन में।
नहीं समावत बचन रसन[1] में।। १० ।।
आनँद होत सदा छिन छिन में।
राधास्वामी सँग अब करूँ रमन[2] मैं।। ११ ।।

।। ग्यारहवाँ शब्द ।।

सुरत को मिला ख़ज़ाना नाम ।।टेक ।।
सुरत निमानी हुई दिवानी।
दिया गुरू अस जाम[3] ।। १ ।।
उमँग उमँग कर नभ पर पहुँची।
मिला निरंजन धाम ।। २ ।।
आगे चली बंक पट खोला।
मिला गुरू का नाम ।। ३ ।।

१ - ज़बान, जिह्वा। २ - बिलास। ३ - प्याला।

सुन्न द्वार दस द्वार समानी।
पाया अब आराम।। ४ ।।
महासुन्न से भँवरगुफा पर।
जाय मिली सतनाम।। ५ ।।
अलख अगम से भेटा कीन्हा।
राधास्वामी मिला मुक़ाम।। ६ ।।
मन्सा पूरन हो सब आई।
रहा न कोई काम।। ७ ।।
उमँग बढ़ी सूरत में भारी।
आरत करूँ मुदाम[1]।। ८ ।।
राधास्वामी मर्म लखाया।
यह सब का अंजाम[2]।। ९ ।।
समझ बूझ कर भाख सुनाया।
अब सबको यह दिया पयाम[3]।। १० ।।

।। बारहवाँ शब्द।।

उलट घट झाँको गुरु प्यारी।
नैन दोउ तानो हो न्यारी।। १ ।।
देख नभ मंडल उजियारी।
अनेकन चंद्र सूर तारी।। २ ।।

१ - हमेशा। २ - अन्त। ३ - सँदेसा।

खिली जहाँ पचरँग फुलवारी।
नदी जहाँ बहती इक भारी।। ३ ।।
लाल और मानिक पन्ना री।
झालरें मोती लख झारी।। ४ ।।
झिलमिलि दामिन चमका री।
दमक जहाँ जोत लखी भारी।। ५ ।।
सहसदल मध्य घनकारी।
धुनन की होत झनकारी।। ६ ।।
सुना यह अनहद बाजा री।
करे जहाँ माया सिंगारी।। ७ ।।
ठगे बहु जोगी मुनि भारी।
टिके मत आगे चल प्यारी।। ८ ।।
चढ़ो अब घाटी बंका री।
निरख सब त्रिकुटी लीला री।। ९ ।।
गगन में परखो ओंकारी।
गरज जस बादल गरजा री।। १० ।।
लाल जहँ सूरज दरसा री।
मृदँग और मुँहचंग बजता री।। ११ ।।
तख़्त जहाँ शाही बिछता री।
त्रिलोकी नाथ बैठा री।। १२ ।।

जोगेश्वर ध्यान धारा री।
परे इस शुद्ध गाया री।।१३ ।।
व्यास यह मत चलाया री।
संत उस तान मारा री।।१४।।
राह बिच रहा अटका री।
संत घर उस न पाया री।।१५ ।।
राम और कृष्ण औतारी।
वशिष्ठ और शंकराचारी।।१६ ।।
थके जहाँ शेष नारद री।
रहे जहाँ सनक सारद री।।१७ ।।
वेद भी नेत कहता री।
कँवलसुत[1] विष्णु शिव हारी।।१८ ।।
साध सँग सुन्न में आ री।
संत जहाँ कहत दस द्वारी।।१९ ।।
अगम परकाश धुन न्यारी।
रकार अक्षर परख सारी।। २०।।
महासुन चल करो यारी।
संत अब हुए अगुवा री।।२१ ।।
भँवर पर जा चढ़ी पारी।
सुनी धुन बाँसुरी कारी[2]।।२२ ।।

१ - ब्रह्मा। २ - कारगर।

क़दम वहाँ से उठाया री।
सत्त पद यही पाया री।।२३ ।।
अलख और अगम धाया री।
आरती राधास्वामी गाया री।।२४ ।।

।। तेरहवाँ शब्द।।

घट में अब शोर मचाय रही।।टेक ।।
ऊँचे चढ़ी सुरत सुन घोरा।
प्राण पिंड से छूट गई।। १ ।।
जीते मुक्ति मिली सतगुरु से।
क्या कहूँ महिमा चुप्प रही।। २ ।।
घट में खेल पसारा अद्‌भुत।
देखे ही परतीत भई।। ३ ।।
सुन सुन अचरज करती पहिले।
बुद्धि ख़राबा भुगत रही।। ४ ।।
क्या क्या कहूँ बुद्धि की विपता।
करनी प्रेम बहाय दई।। ५ ।।
विद्या बुद्धि चतुरता बैरन।
अहंकार में डूब रही।। ६ ।।
विद्या बुद्धि चतुरता बैरन।
गुरु सेवा मन त्याग दई।। ७ ।।

भक्ति पदारथ महिमा जानी।
सुरत चढ़ी और सुन्न गई।। ८ ।।
महासुन्न और भँवरगुफा की।
लीला अद्भुत कौन कही।। ९ ।।
सत्तलोक सतपुरुष पियारा।
रूप निहारा मगन भई।। १० ।।
अलख अगम और राधास्वामी।
उन को देखत मौन रही।। ११ ।।

।। चौदहवाँ शब्द।।

घट चमन खिला उजियारी।
गुरु ज्ञान मिला अब भारी।। १ ।।
सुर्त नदी चली धधकारी।
पहुँची जाय सिंध सम्हारी।। २ ।।
धुन अनहद निरत निरारी[1]।
घंटा जहाँ शंख बजा री।। ३ ।।
मन पहरा द्वार लगा री।
तसकर[2] सब दूर निकारी।। ४ ।।
दे सील छिमा की बाड़ी।
सत की फुलवार खिला री।। ५ ।।

१ - निराली। २ - चोर।

धीरज का कूप खुदारी।
जल प्रेम सींच रही क्यारी।। ६ ।।
भक्ती रस प्रीत पिया री।
चढ़ गगन ग़ैब फल खा री।। ७ ।।
दल कँवल सहस फुलवारी।
पचरंगी रंग बहारी।। ८ ।।
नौबत जहँ बजती न्यारी।
खुल खेली सुरत हमारी।। ९ ।।
सुन में चढ़ धुन लइ सारी।
किंगरी गति अगम विचारी।। १० ।।
गइ महासुन्न पद पारी।
जहाँ बंसी बजत करारी[1]।। ११ ।।
सतनाम मिला पद चारी।
गति अलख अगम धर धारी।। १२ ।।
राधास्वामी चरन सम्हारी।
पाई गति आज अपारी।। १३ ।।
कर आरत हुइ गुरु प्यारी।
घर अजर अमर पाया री।। १४ ।।
सुर्त मारग दूर चला री।
हद बेहद पार सिधारी।। १५ ।।

१ - तेज़।

ज्ञानी थक जोग थका री।
श्रुति सिम्रित पार न पा री।।१६ ।।
संतन मत ऊँच निकारी।
मानी जिन भाग बड़ा री।।१७ ।।
ब्रत तीरथ जगत पचा री।
जप तप में वृथा खपा री।।१८ ।।
विद्या पढ़ मान अहारी।
तिरपत नहिं बुद्धि बिगाड़ी।।१९ ।।
भक्ती और प्रेम गया री।
दासातन अब न रहा री।।२० ।।
घट में क्यों जाय चढ़ा री।
मन हुआ सुतंतर[1] भारी।।२१ ।।
मनमुखता अजब सँवारी।
गुरुमुखता दूर निकारी।।२२ ।।
राधास्वामी कहत पुकारी।
हे सतगुरु लेव सम्हारी।।२३ ।।
इन से मोहिं लेव बचा री।
यह रूखे प्रेम न धारी।।२४।।
मैं राधास्वामी सरन पड़ा री।
तुम रक्षा करो हमारी।।२५ ।।

* * * * *

१ - ख़ुद-मुख़्तार।

।। पन्द्रहवाँ शब्द ।।

सूरत सरकत पार, वार त्याग देही तजत।
घट का घोर सुनाय, रात दिवस लागी रहत।। १ ।।
नाम अमोलक पाय,गगन गिरा गरजी चलत।
धाम लिया सत जाय,पुरुष दरस पाई सुगत।। २ ।।
मेरे गृह अति रंग,बोलत मोर पपीहरा।
स्वाँती बरसत अंग,मेघ बरस तन मन हरा।। ३ ।।
ज्यों हरियावल भूमि,खोल दृष्टि देखत रहूँ।
बिच २ उठत तरंग,मन तन सीतलता सहूँ।। ४ ।।
खोलत वज्र किवाड़,सुरत जहाँ टक लावई।
सतगुरु लिया सम्हार,सुरत शब्द सँग न्हावई।।५ ।।
झूलत गगन हिंडोल,सखियाँ निकट झुलावहीं।
मैं अब किया सिंगार,पिया रिझावत धावही।। ६ ।।
अब आरत घट धार,अन्तर पट खोलत चली।
दीपक जोत सम्हार,सूर चाँद गगना गली।। ७ ।।
गावत राग मलार,धुन अनहद शोभा अधिक।
होत जहाँ झनकार,ढोल दमामा[1] अति धमक।। ८ ।।
बिन सतगुरु परताप,यह लीला नहीं को लखे।
देखेंगे निज दास,पी पी अमृत नित छके[2]।। ९ ।।

१ - नक़्कारा। २ - अघाये।

पूरन पद विश्राम,सेत पदम पर जा चढ़ी।
राधास्वामी नाम,गावत है सन्मुख खड़ी॥१०॥

।। सोलहवाँ शब्द।।

गुमठ[1] चढ़ी मन बरजती[2]।
काल अटक तुड़वाय।। १ ।।
गुरु पासा[3] अद्‌भुत लिया।
गति मति कही न जाय।। २ ।।
बोलत तूती[4] अधर में।
तोता[5] दिया है जगाय।। ३ ।।
देश बिराना छुट गया।
पिंजरा दूर पराय।। ४ ।।
खुला उड़े आकाश में।
तूती संग मिलाय।। ५ ।।
महल अजब गत चाँदना।
सूरज ना ठहराय।। ६ ।।
धुन धधकार अनाहदी।
बिरले गुरुमुख पाय।। ७ ।।
लख तिरबेनी घाट को।
ता में पैठ अन्हाय।। ८ ।।

१ - शिखर। २ - रोकती। ३ - तरफ़। ४ -धुन। ५ -मन।

सुन समाधि जाको मिली।
अनहद माहिं समाय।। ९ ।।
अमी बरस बुँदियन झड़ी।
रसिया रहे लुभाय।। १०।।
राधास्वामी चाख कर।
वर्णन किया बनाय।। ११।।

।। बचन सैंतीसवाँ।।

दशा सुरत और मन की और प्राप्ति शब्द की और शुकराना सतगुरु का

।। पहला शब्द।।

गुरु ने अब दीन्हा भेद अगम का।
सुरत चली तज देश भरम का।। १ ।।
बल पाया अब विरह मरम का।
भटकन छूटा दैरो[1] हरम[2] का।। २ ।।
वर्षन लागा मेघ करम का।
संशय भागा जनम मरन का।। ३ ।।
तोड़ दिया सब जाल निगम[3] का।
सुख पाया अब हम दम दम का।। ४ ।।
फल पाया आज हम सम दम का।
भँवर हुआ मन सेत पदम का।। ५ ।।

१ - मन्दिर। २ - मक्का। ३ - वेद।

फूँक दिया घर लाज शरम का।
काटा फंदा नेम धरम का।। ६ ।।
ज्ञान ध्यान बाचक हम छोड़ा।
भक्ति भाव का पहिना जोड़ा।। ७ ।।
भक्ति भाव की महिमा भारी।
जानेंगे कोइ संत विचारी।। ८ ।।
सत्तनाम सतपुरुष अपारा।
चौथे माहिं करें दरबारा।। ९ ।।
सुरत शब्द मारग कोइ पावे।
सो हंसा चढ़ लोक सिधावे।। १०।।
सो मारग अब राधास्वामी गाई।
कोइ कोइ प्रेम भक्ति से पाई।। ११ ।।

।। दूसरा शब्द।।

गुरु मारा बचन का बान।
मेरा गया कलेजा छान।। १ ।।
मैं सुनी सुन्न की तान।
मर गये काल के मान।। २ ।।
तन छूट गया अभिमान।
मैं करी शब्द पहिचान।। ३ ।।
मुरदे के पड़ गई जान।
मेरी करे न कोई हान।। ४ ।।

मुझे सतगुरु दीन्हा दान।
मैं पहुँची अधर अमान।। ५ ।।
मेरी सुरत चढ़ी खरसान।
मैं मारा काल निदान।। ६ ।।
मैं किया अमी रस पान।
घट खुली रतन की खान।। ७ ।।
क्या महिमा करूँ बखान।
अचरज का खेल दिखान।। ८ ।।
मैं पाया नाम निशान।
अब झूठा लगा जहान।। ९ ।।
मेरा छूटा आवन जान।
मुझे मिला शब्द परमान।। १०।।
जग फिरे भरमता खान।
कोइ सुने न अनहद कान।। ११ ।।
कोइ करे न गुरु की कान।
घर घेर लिया शैतान।।१२ ।।
अब करो जीव कल्यान।
धरो राधास्वामी ध्यान।।१३ ।।

।। तीसरा शब्द।।

गुरू मोहिं दीन्ही अमृत रास।
बुझी मेरी जन्म जन्म की प्यास।। १ ।।

सुरत अब चढ़ गई फोड़ अकाश।
मिली जाय शब्द लखा परकाश।। २ ।।
जगत की छूटी सब ही आस।
गई अब तृष्णा बल हुआ नास।। ३ ।।
काल मोहिं देखत करे तिरास।
कर्म भी भागा छोड़ा बास।। ४ ।।
दूर की वस्तु मिली मोहिं पास।
छुटी तन मन से हुई निरास।। ५ ।।
गई अमरापुर किया निवास।
गाउँ गुरु महिमा स्वाँसो स्वाँस।। ६ ।।
हुई मैं राधास्वामी चरनन दास।
ज्ञानी और जोगी खोदें घास।। ७ ।।

।। चौथा शब्द।।

घोर सुन चढ़ी सुरत गगना।
भेद लख हुई अजब मगना।। १ ।।
रूप उन पाया अब अपना।
जगत हुआ झूठा ज्यों सुपना।। २ ।।
चली अब गुरु पद सो लखना।
काल पर पड़ा कठिन तपना।। ३ ।।
कर्म का छूट गया खपना।
सहज सुख मिला शब्द तकना।। ४ ।।

मेट मन कपट छुटा ठगना।
अमर पद मिला जुगन जुगना।। ५ ।।
टेक गुरु बाँध ध्यान धरना।
चरन गुरु पकड़ पड़ो सरना।। ६ ।।
सहसदल कँवल जाय लगना।
तिरकुटी चढ़ो चाल पकना।। ७ ।।
सुन्न में नहीं नैन झपना।
मान लो राधास्वामी गुरु कहना।। ८ ।।

।। पाँचवाँ शब्द।।

नाल नभ तकी होय न्यारी।
सुरत के लगी अब विरह करारी।। १ ।।
मन बैठा भोग बिसारी।
जिव छोड़ी कृत[१] संसारी।। २ ।।
क्या कहूँ मिले गुरु भारी।
उन भेद दिया पद चारी।। ३ ।।
मैं पीऊँ शब्द रस सारी।
मेरे लगा जख़्म अब कारी[२]।। ४ ।।
मन तन पर फिरती आरी।
क्यों जीऊँ जिवना हारी।। ५ ।।

१ - करतूत। २ - गहरा।

तब दया करी गुरु न्यारी।
अब दीन्हा शब्द सम्हारी।। ६ ।।
मैं चढ़ गई गगन अटारी।
वहाँ खेलूँ नित्त शिकारी।। ७ ।।
धुन सुन कर बहुत पुकारी।
चढ़ भागी खोल किवाड़ी।। ८ ।।
राधास्वामी चरन निहारी।
लख पाया भेद अपारी।। ९ ।।

।। छठा शब्द।।

गुरु की गति अगम अपार।
मैं कैसे बरनूँ पार।। १ ।।
सतगुरु मोहिं अंग लगाया।
सतगुरु मोहिं नाम दृढ़ाया।। २ ।।
बैरागिन भइलो सतगुरु चरना।
अनुरागिन भइलो नाम अनामा।। ३ ।।
सतगुरु मेरे दया विचारी।
भौजल से पार उतारी।। ४ ।।
ब्रह्मंडी खेल दिखाया।
अनहद धुन तार बजाया।। ५ ।।
घट तिमिर पुराना नाशा।
शब्द उजास किया परकाशा।। ६ ।।

गुरु ऊपर बल बल जाऊँ।
राधास्वामी नाम धियाऊँ।। ७ ।।

।। सातवाँ शब्द।।

मैं भई अगम की दासी।
मेरी सुरत हुई अविनासी।। १ ।।
मैं शब्द किया घट मंजन।
मन हारा डरा निरंजन।। २ ।।
जोती अब चरन पखारे।
संतन की ओट पुकारे।। ३ ।।
गुरु दया अनोखी कीन्ही।
मोहिं चरन सरन गति दीन्ही।। ४ ।।
तन भीतर उल्टी धाई।
राधास्वामी हुए सहाई।। ५ ।।

।। आठवाँ शब्द ।।

सुर्त भरी अगम जल गगरी।
मैं देखी राधास्वामी तेरी नगरी।। १ ।।
मेरी प्रीत लगी अब जिगरी।
मैं चढ़ी गगन की डगरी।। २ ।।
मेरी दूर हुई ममता अब मगरी[1]।
मैं पहुँची सतगुरु मग री।। ३ ।।

१ - माया।

गुरु कहा शब्द जा पग[1] री।
हँगता की उतरी पगड़ी।। ४ ।।
माया की इज़्ज़त बिगड़ी।
राधास्वामी चरन तू तक री।। ५ ।।

।। नवाँ शब्द ।।

गुरु नाम रटूँ अँग २ से।
गुरु आरत करूँ उमँग से।। १ ।।
मैं रँगी प्रेम के रँग से।
दुख दूर हुए दिल तँग से।। २ ।।
मैं छूटी जगत कुरँग से।
मन शोभित नाम सुरँग से।। ३ ।।
मैं हटी नाम और नँग से।
मैं तरी आज गुरु सँग से।। ४ ।।
मेरा काज किया गुरु ढँग से।
मैं पहुँची चाल विहँग से।। ५ ।।
मैं जीती काल निहँग[2] से।
मैं मिली जाय ओअं से।। ६ ।।
अब निकसी जाल उचँग[3] से।
सुर्त साफ़ हुई कुल ज़ंग[4] से।। ७ ।।

१ - मिल। २ - मगर। ३ - तरंगे। ४ - मैल।

सुर्त लगी जाय सोहं से।
राधास्वामी छुड़ाया अहं से।। ८ ।।

।। दसवाँ शब्द ।।

गुरु चरन प्रीत मन रंगा।
अब सब से हुई असंगा।। १ ।।
मन मारा संशय भंगा।
चित शुद्ध हुआ अब चंगा[१]।। २ ।।
अब मिटा काल का दंगा।
डर रहा न नाम और नंगा[२]।। ३ ।।
आरत अब सजूँ अभंगा।
मेरे प्रेम भरा अंग अंगा।। ४ ।।
मेरी परखे न कोइ उमंगा।
मैं पकड़ा सतगुरु संगा।। ५ ।।
मैं भौजल पार उलंघा[३]।
मेरी सुरत उड़ी जस चंगा[४]।। ६ ।।
मैं घट में न्हाया गंगा।
मैं छोड़ा मन परसंगा[५]।। ७ ।।
मन घोड़ा बाँधा तंगा।
अब मिट गइ ममता पंगा[६]।। ८ ।।

१ - अच्छा। २ - लाज। ३ - छलाँग मार गया। ४ - पतंग।
५ -साथ। ६ - लँगड़ी।

सब मेटी चित्त उचंगा।
हौं[१] जाली जस जोत पतंगा।। ९ ।।
गुरु चरन मिला आलंबा[२]।
सतगुरु का सीखी ढंगा।। १०।।
गुरु चरन प्रेम मैं मंगा[३]।
राधास्वामी दीन्ह उतंगा।। ११ ।।

।। ग्यारहवाँ शब्द।।

मन बनिया बनत[४] बनाई।
घट भीतर तोल तुलाई।। १ ।।
नैनन के पलड़े धारे।
सुर्त निरत डोर गठिया रे।। २ ।।
नभ डंडी पकड़ धरा रे।
सुखमन का फुंदन लगारे।। ३ ।।
जहाँ शब्द जिन्स तोला रे।
मैं पाया आज नफ़ा रे।। ४ ।।
गुरु कीन्ही दात अपारे।
अस बनिज किया जग आ रे।। ५ ।।
मेरी हटिया माल भरा रे।
मैं करूँ यही व्योपारे।। ६ ।।

१ - अहंकार। २ - सहारा। ३ - माँगा। ४ - बनाव।

मोहिं बाँट मिले गुरु द्वारे।
मैं तोलूँ वस्तु सम्हारे।। ७ ।।
मेरे सतगुरु शाह पियारे।
मेरी साख बढ़ी सब हारे।। ८ ।।
राधास्वामी खरा करा रे।
खोटा घट दूर निकारे।। ९ ।।

।। बारहवाँ शब्द।।

गुरु का मैं दामन पकड़ा।
छोड़ूँ नहिं अब तो जकड़ा।। १ ।।
तू मत कर मुझ से रगड़ा।
मैं छोड़ा जग का झगड़ा।। २ ।।
मैं मारा मन और पकड़ा।
मेरे गुरु ने किया मोहि तकड़ा[1] ।। ३ ।।
मैं छोड़ा काया छकड़ा[2]।
फिर कर्म द्वार से निकरा।। ४ ।।
मैं मारा मन का मकड़ा।
तब काल देख बहु अकड़ा[3]।। ५ ।।
अब कटा क्रोध का लकड़ा।
और मरा लोभ का बकरा।। ६ ।।

१ - बलवान। २ - गाड़ी। ३ - ऐंठा।

मैं देखा गगन दमकड़ा[१]।
राधास्वामी नाम चमकड़ा।। ७ ।।

।। तेरहवाँ शब्द।।

गुरू मोहिं भेद दिया पूरा।
सुरत सँग बाजा घट तूरा।। १ ।।
हुआ मन तन में अब सूरा।
लखूँ मैं नभ चढ़ शशि सूरा।। २ ।।
खुला अब घाट अगम नूरा।
हटाया काल करम दूरा।। ३ ।।
दिखाया राधास्वामी पद मूरा।
तियागा जगत लगा कूड़ा।। ४ ।।

।। चौदहवाँ शब्द।।

मै सुनूँ कथा नित घट की।
गुरु भेद दिया धुन में अब अटकी।। १ ।।
अब सुरत चढ़ी पहुँची नभ सटकी।
मेरी फूट गई कर्मन की मटकी।। २ ।।
फिर काम क्रोध डारे सब पटकी।
सुर्त सहस कँवल चढ़ झटकी[२]।। ३ ।।
मन माया धर धर झटकी[३]।
आशा और तृष्णा जग की पटकी।। ४ ।।

१ - चमकीला। २ - बढ़ाई। ३ - गिराई।

गुरु ख़बर जनाई अंतर पट की।
सुर्त जग से छिन छिन हटकी।।५ ।।
गुरु की मति धारी दुर्मत खटकी[1]।
सुर्त मगन हुई धुन सुन सर[2] तट[3] की।।६ ।।
मन खेली कला उलट ज्यों नट की।
राधास्वामी गाई गति उलट पलट की।।७ ।।

।। पंद्रहवाँ शब्द।।

सोच ले प्यारी अस मिला जोग।
गुरु दया करी सब मिटे रोग।। १ ।।
सुर्त मिली शब्द से तज वियोग।
यह मिला भाग से सहज जोग।। २ ।।
गुरु बिन कब मिलता अस सँजोग।
अब करले निस दिन शब्द भोग।। ३ ।।
मन की मत त्यागी गया सोग।
राधास्वामी किरपा करी जोग[4]।। ४ ।।
जो होना था सो हुआ होग।
को सुने हमारी भूले लोग।। ५ ।।

।। सोलहवाँ शब्द।।

गुरु ने मोहिं दीन्हा नाम सही।
तृष्णा सकल दही।। १ ।।

१ - अलग हुई। २ - मानसरोवर। ३ - किनारा। ४ - लायक।

सतसँग करूँ सार रस पीऊँ।
दृढ़ कर नाम गही।। २ ।।
गुरु की महिमा कही न जावे।
चरनन पकड़ रही।। ३ ।।
जिस पर दृष्टि पड़ी मेरे गुरु की।
सोई पार गई।। ४ ।।
धारा शब्द चली नित आवे।
कूड़ा कर्म बही।। ५ ।।
काल टार मन मार निकारा।
सहज सुहाग दई।। ६ ।।
मैं प्यारी सतगुरु अपने की।
सत्तनाम की लार लई।। ७ ।।
धर को छोड़ अधर चढ़ चाली।
सुरत हंसनी आज भई।। ८ ।।
काम क्रोध मद लोभ बिडारे।
ममता खोय गई।। ९ ।।
धुर पद पहुँच शब्द सँग पागी।
मान ईर्षा सकल दही।। १०।।
राधास्वामी नाम दिवानी।
अस्तुत कौन कही।। ११ ।।

* * * * *

।। सत्रहवाँ शब्द।।

आले[१] मैं देखा ताक उजाला।।टेक।।
सेत दीप में श्याम किवाड़ी।
सो मैं खोला ताला।। १ ।।
घट में जाय गगन में पैठी।
पिया अमी रस प्याला।। २ ।।
चढ़ा अमल घट भीतर झूमी।
भूमी[२] भार निकाला।। ३ ।।
अद्‌भुत ख़्याल दिखाया गुरु ने।
मन मौजी का किया निवाला[३]।। ४ ।।
चढ़ कर खोली सुन्दर खिड़की।
झाँका गगन शिवाला।। ५ ।।
मूरख जीव जगत में भटकें।
पूजें ईंट दिवाला।। ६ ।।
सतगुरु के हम चरन पखारे।
सुन्न नगर में फेरें माला।। ७ ।।
तसबी[४] माला कसबी डाला।
हम तो दूर निकाला।। ८ ।।
सतगुरु पूरे पाये हम ने।
हम निज नाम सम्हाला।। ९ ।।

१ - ताक। २ - धरती यानी देह। ३ - ग्रास। ४ - माला।

राधास्वामी गुरु हमारे।
वे हैं दीन दयाला।। १० ।।
काल जाल से तुरत निकाला।
कीन्हा मोहिं निहाला।। ११ ।।

।। अट्ठारहवाँ शब्द।।

सुरत ने शब्द गहा निज सार।
आज घट कुल का हुआ उधार।। १ ।।
नाम का पाया रंग अपार।
जीव ने धरा हंस औतार।। २ ।।
दूध और पानी कीन्हा न्यार।
दूध फिर पीया तन मन वार।। ३ ।।
छोड़िया पानी विपत बिडार।
नित्त मैं पीती रहूँ सुधार।। ४ ।।
काल को डाला बहुत लताड़।
चरन गुरु पकड़े आज सम्हार।। ५ ।।
नाम सँग हो गइ सूरत सार।
मानसर न्हाई मैल उतार।। ६ ।।
चूगूँ मैं मोती शब्द विचार।
गुरू ने खोला घाट दुवार।। ७ ।।
धुनन को छाँट लिया मन मार।
घाट घट भीतर पड़ी पुकार।। ८ ।।

नाम गुरु लीन्हा मोहिं निकार।
छोड़िया सारा जगत लबार[१]।। ९ ।।
किया अब राधास्वामी जगत उधार।
जिऊँ मैं राधास्वामी चरन पखार।। १०।।

।। उन्नीसवाँ शब्द।।

मालिनी लाई हरवा गूँथ।
पिरेमन डाले फुलवा जूँथ।। १ ।।
गुरुन से पाई नाम विभूत[२]।
आरती जोड़ी लागा सूत।। २ ।।
हुआ मन गगन माहिं अवधूत[३]।
करे अस सेवा होय सपूत।। ३ ।।
भगाये गुरु ने घट के दूत।
चरन गुरु पकड़े अब मज़बूत।। ४ ।।
काल को डाला छिन छिन कूट।
मोह दल भागा लीन्हा लूट।। ५ ।।
गया सब तन से नाता टूट।
काल बल डाला सब ही कूत[४]।। ६ ।।
गुरू ने दीन्हा अमृत क़ूत[५]।
राधास्वामी दूर किया कलबूत[६]।। ७ ।।

१ - झूठा। २ - बड़ी कला। ३ - साधू। ४ - तौल।
५ - अहार। ६ - देह से।

।। बीसवाँ शब्द।।

दिखाया रूप मनोहर गुरु ने।
मेरी दृष्टि खुली पहुँची धुर घर में।। १ ।।
निज भेद दिया सतगुरु ने।
धुन धमक सुनी नभपुर में।। २ ।।
मेरे हरख हुई अति उर में।
मैं उलट चली अब सुर[1] में।। ३ ।।
चढ़ घोर सुना अन्दर में।
मैं झाँकी जा मंदिर में।। ४ ।।
मैं पाइ मौज सुन्दर में।
गुरु चरन धरे अब सिर में।। ५ ।।
मैं धाई सुन्न शिखर में।
अब पाये पुरुष अजर मैं।। ६ ।।
लग राधास्वामी हुई अमर मैं।
मैं न्हाई अमी नहर में।। ७ ।।

।। इक्कीसवाँ शब्द।।

धुबिया गुरु सम और न कोय।
चदरिया धोई सूरत जोय[2]।। १ ।।
मैल सब काढ़ा निर्मल होय।
कहूँ क्या गुरु की महिमा सोय।। २ ।।

१ - धुन। २ - स्त्री।

घाट पर बैठे दीखे मोहिं।
सुरत मैं डारी चरन समोय।। ३ ।।
धार अब आई कसमल[1] खोय।
चटक कर दीन्ह चदरिया धोय।। ४ ।।
शब्द सँग लागी प्रेमी होय।
भेद राधास्वामी पाया गोय[2]।। ५ ।।

।। बाईसवाँ शब्द।।

चलो री सखी अब आलस छोड़।
सुनो अब चढ़ कर घट में घोर।। १ ।।
काल जो देवे कुछ झकझोर।
भुजा उस डारो तुरत मरोड़।। २ ।।
दया गुरु सुन लो घट का शोर।
अमी रस पीवो नभ में जोर।। ३ ।।
बोल जहाँ परखो दादुर मोर।
मेघ जहाँ गरजत घोरम घोर।। ४ ।।
शब्द धुन परखी सूरत जोड़।
करम का कलसा डाला फोड़।। ५ ।।
द्वार अब खोला ताला तोड़।
मिला भंडार अगम का मोर[3]।। ६ ।।

१ - मैल। २ - गुप्त। ३ - मुझे।

भगाये घट के सब ही चोर।
गही मैं निज धुन की अब डोर।। ७ ।।
राधास्वामी डारा मन को तोड़।
चरन मैं परसे दोउ कर जोड़।। ८ ।।

।। तेईसवाँ शब्द।।

सूरमा सुरत हुई गुरु देख प्रताप।।टेक ।।
सुरत शब्द की करूँ कमाई।
पाऊँ अपना आप।। १ ।।
गगन मँडल अब झाँकन लागी।
कर कर सूरत साफ़।। २ ।।
चढ़ी अधर में देख उधर में।
परमातम को आतम पात।। ३ ।।
करम कटाने भरम नसाने।
जन्म जन्म के छूटे पाप।। ४ ।।
सुन्न शिखर पर पहुँची सूरत।
करती अजपा जाप।। ५ ।।
अजब धाम पाया मैं सजनी।
कौन करे यहाँ तौल और नाप।। ६ ।।
राधास्वामी खेल दिखाया।
वोही हैं मेरे माँ और बाप।। ७ ।।

।। चौबीसवाँ शब्द।।

कुमतिया दूर हुई, गुरु हुए दयाल।
सुमतिया दान दई, गुरु किया निहाल।। १ ।।
सरन गुरु आन लई, तज मन का जाल।
मूल को पकड़ लिया, तज डाली डाल।। २ ।।
नाम धन पाय गई, तज झूठा माल।
गुरू सँग लाग रही, देख अचरज ख़्याल।। ३ ।।
परम पद पाय गई, चढ़ सुखमन नाल।
भर्म सब काट दिये, और मारा काल।। ४ ।।
काल अब थकित हुआ, अब पाया हाल[1]।
राधास्वामी दूर किये, मेरे सब दुख साल।। ५ ।।

।। पच्चीसवाँ शब्द।।

सुरत उठ जागी चरन सम्हार।
गुरू सँग लागी रूप निहार।। १ ।।
बचन सुन त्यागी मनसा ख़्वार।
सुरत हुई रागी[2] शब्द सम्हार।। २ ।।
अमीरस पीवत नभ के द्वार।
छोड़ कर भागी जगत लबार।। ३ ।।
पकड़ कर आई गुरु दरबार।
सरन गह बैठी तन मन वार।। ४ ।।

१ - अन्तर की हालत। २ - अनुरागी।

हंस होय चुगती मुक्ता सार।
नाम रस पागी सूरत नार।। ५ ।।
काल सँग तोड़ा नाता झाड़।
द्याल घर पहुँची सतगुरु लार।। ६ ।।
मिले राधास्वामी किरपा धार।
छुटे सब संशय गया संसार।। ७ ।।

।। छब्बीसवाँ शब्द।।

मंगल मूल आज की रजनी[1]।
महिमा कहूँ कौन सुन सजनी।। १ ।।
आनँद छाय रहा नभ धरनी।
रोम रोम अमृत रस भरनी।। २ ।।
तिमिर हटावन धारे चरनी।
रूप सुहावन पाइ मैं सरनी।। ३ ।।
अमी धार लागी अब झिरनी।
सुरत निरत लागी घट घिरनी।। ४ ।।
गगन मँडल लागी अब चढ़नी।
बिन गुरु कौन करे यह करनी।। ५ ।।
ता ते सरन गुरू की पड़नी।
मिर्ग टले और भागी हिरनी।। ६ ।।

१ - रात।

भान मध्य पहुँची जा किरनी।
सुरत अड़ी जा अब नहिं गिरनी।। ७ ।।
राधास्वामी भेद दिया कर निरनी।
मैं नहिं उन चरनन से फिरनी।। ८ ।।

।। सत्ताईसवाँ शब्द।।

शोभा देखूँ मैं अब गुरु की।
नैन निहारूँ खिड़की धुर की।। १ ।।
ख़बर जनाऊँ फिर सुर[1] सुर की।
जान गई गति अब उर उर की।। २ ।।
मो को कहें सभी दुर दुर[2] की।
मैं गही टेक गुरु गुरु की।। ३ ।।
राधास्वामी गति गाई ऊपर की।
सुरत तजी मैं इस मरपुर[3] की।। ४ ।।

।। अट्ठाईसवाँ शब्द।।

दौड़त गई गगन के घेर।
तन को छोड़ लिया मन फेर।। १ ।।
जहाँ शब्द अनाहद लीन्हा हेर।
ज़ीना[3] चढ़ कर सुनी इक टेर।। २ ।।
काल करम दोउ कीन्हे ज़ेर।
चढ़ आई मैं आज सुमेर।। ३ ।।

१ - धुन। २ - फटकार। ३ - मृत्यु लोक। ४- सीढ़ी।

धुन पाई मैं अब अति नेर[१]।
जल्दी करी लगी नहिं देर।। ४ ।।
गीदड़ से गुरु कीन्हा शेर।
हेर हेर धुन घट में हेर।। ५ ।।
छोड़ी मन की सभी लगेड़।
सुरत हुई अब धुन की चेर[२]।। ६ ।।
अंतर दृष्टी लाई फेर।
दूर हटाया पापन ढेर।। ७ ।।
अब सतगुरु की हो गई मेहर।
मिट गया आज काल का क़हर[३]।। ८ ।।
लगी नहीं कुछ मुझे अबेर।
मैं चढ़ पहुँची बहुत सबेर।। ९ ।।
तन मन झगड़ा सभी निबेड़[४]।
मिला भक्ति भंडार कुबेर।। १० ।।
बैरियन की लई खाल उधेड़।
मान सरोवर न्हाई नहर।। ११ ।।
मन का सभी मिटाया फेर।
राधास्वामी लिया मन घेर।। १२ ।।

* * * * *

१ - पास। २ - चेली। ३ - डंड। ४ - निबटा कर।

।। उनतीसवाँ शब्द।।

गुरू सँग खेलूँ निस दिन पास।
करूँ मैं अचरज बिमल बिलास।। १ ।।
सुखी होय करती चरन निवास।
हुआ मोहिं गुरु का अति विश्वास।। २ ।।
गुरू बिन और नहीं कोइ आस।
मिली अब नाम रतन की रास।। ३ ।।
धियाऊँ पल पल स्वाँसो स्वाँस।
काल और कर्म हुए दोउ नास।। ४ ।।
जगत से रहती सहज उदास।
मिली अब पदवी दासन दास।। ५ ।।
करे अब सूरत नभ पर बास।
शब्द का पाया परम प्रकाश।। ६ ।।
लगन अस रहती बारह मास।
चरन मैं पकड़े गुरु के ख़ास।। ७ ।।
द्वार घट खोला चढ़ आकाश।
काल मुरझाया सूखा मास।। ८ ।।
हुआ अब घर में दीप उजास।
मिला निज सूरज संग आभास[१]।। ९ ।।

१ - छटा। झलक।

कहूँ क्या महिमा शब्द ख़वास[1]।
गहे जो पावे अमर अवास[2]।। १० ।।
करूँ अब आरत राधास्वामी रास।
शब्द का दीपक कीन्हा चास[3]।। ११ ।।

।। तीसवाँ शब्द।।

गुरु मूरत मेरे मन बस गइयाँ।
तन धन वारूँ बल बल जइयाँ।। १ ।।
अस पिया संग सुहागिन भइयाँ।
अटल सुहाग नाम धुन पइयाँ।। २ ।।
करम भरम सब दूर बहइयाँ।
जगत जाल जंजाल कटइयाँ।। ३ ।।
अब चढ़ सुरत श्याम घर अइयाँ।
सेत दीप की दमक दिखइयाँ।। ४ ।।
सहस कँवल दल मोह दलइयाँ।
काम क्रोध मद दूर करइयाँ।। ५ ।।
घंटा शंख नाद सुन लइयाँ।
पाँच तत्त्व रंग सूक्षम पइयाँ।। ६ ।।
लीला अद्भुत गुरू लखइयाँ।
अब आगे को डगर चलइयाँ।। ७ ।।

१ - गुन। २ - घर। ३ - जगाया।

बंकनाल का द्वार खुलइयाँ।
त्रिकुटी घाट मौज दरसइयाँ।। ८ ।।
गुरु मूरत जहाँ सूर ललइयाँ[1]।
सुन्न शिखर चढ़ कर्म जलइयाँ।। ९ ।।
महासुन्न महिमा क्या कहियाँ।
भँवरगुफा चढ़ बंस बजइयाँ।।१० ।।
सत्तनाम धुन बीन सुनइयाँ।
अलख अगम जा सुरत नचइयाँ।। ११।।
निज कर राधास्वामी दास कहइयाँ।
अब आरत पूरन करवइयाँ।।१२ ।।

।। इकतीसवाँ शब्द।।

सोच रही री मौज की बतियाँ।
सुर्त रतियाँ[2] कँवल बिलास।। १ ।।
उमँग प्रेम छबि लखियाँ।
अब हियरे बढ़त हुलास।। २ ।।
निमख[3] २ अटकी दृग शोभा।
निरख रही परकाश।। ३ ।।
भीजत मन सीझत नृत न्यारी।
धावत निज आकाश।। ४ ।।
आवत घोर सुनत निस[4] बासर[5]।
उलट फिराया स्वाँस।। ५ ।।

१ - लाल। २ - रत रही है। ३- पल। ४ - रात। ५ - दिन।

चेतन होत सोख तम सागर।
पावत अगम निवास।। ६ ।।
चंद चकोर मगन प्रीतम रस।
ज्यों जल मीना बास।। ७ ।।
जगे भाग कल[1] कालख[2] नासे।
पाया सुख विश्वास।। ८ ।।
अधर पियारी चढ़ी अटारी।
छूट गई जम फाँस।। ९ ।।
राधास्वामी दरस दिवानी।
बैठी चरनन पास।। १० ।।

।। बत्तीसवाँ शब्द।।

मेरे पिया की अगम हैं गतियाँ।
मैं कैसे कैसे गाऊँ।। १ ।।
कोइ मर्म न पावत रतियाँ[3]।
क्योंकर मन लाऊँ।। २ ।।
धुन ध्यान लगावत रतियाँ[4]।
चुन चुन धुन लाऊँ।। ३ ।।
तिल ताक़त[5] फेर उलटियाँ।
घट दीप[6] जगाऊँ।। ४ ।।

१ - काल के। २ - कालौंच। दुख। ३ - रत्ती भर।
४ - प्रेम के साथ। ५ - देख कर। ६ - जोत।

लिख भेजूँ पिया को पतियाँ[1]।
क़ासिद[2] पहुँचाऊँ।। ५ ।।
बिरह अग्नि जलावत नितियाँ।
घर घाट न पाऊँ।। ६ ।।
राधास्वामी भाग पलटियाँ।
कर्म काट जलाऊँ।। ७ ।।

।। तेतीसवाँ शब्द।।

पिया दरसत भइ री निहाल।
हाल क्या बरनूँ अपना।। १ ।।
काल गति दूर निकारी।
जग लागा सुपना।। २ ।।
घट में धुन अवगत जागी।
खोया तन तपना।। ३ ।।
सुर्त सीतल सरवर पाया।
शब्दारस मगना।। ४ ।।
बिन साध न कोई जाने।
नित घट में जगना।। ५ ।।
तन धरती अब हम त्यागी।
पहुँची चढ़ गगना।। ६ ।।
अब लाज तुम्हें राधास्वामी।
मैं हो गइ सरना।। ७ ।।

१ - चिट्ठी। २ - चिट्ठी ले जाने वाला।

।। बचन अड़तीसवाँ।।

।। बारहमासा।।

।। असाढ़ मास पहला।।

हाल दुख सुख सहने जीव का संसार में मन और माया के संग भरम कर

प्रथम असाढ़ मास जग छाया।
आसा धर जिव गर्भ समाया।। १ ।।
आस आड़ ले जीव भुलाया।
घर को भूल दुक्ख अति पाया।। २ ।।
कर्म वेग[1] ने बाहर डाला।
माया कीन्हा बहु जंजाला।। ३ ।।
बाल अवस्था अति दुख पावे।
वेदन[2] भारी नित्त सतावे।। ४ ।।
मुख बोले ना सैन चलावे।
काहू दुख अपना न जनावे।। ५ ।।
दुख में रोवे अति बिल्लावे।
मात पिता बुधि काम न आवे।। ६ ।।
दुख कुछ है औषधि कुछ करि हैं।
उलट पलट संतापे दे हैं।। ७ ।।

१ - जोर। २ - दुक्ख। दर्द।

बालपना अति दुख में बीता।
भई किशोर खेल मति लीता।। ८ ।।
मात पिता चाहें पढ़वाना।
यह रहे निस दिन खेल दिवाना।। ९ ।।
मार पीट पितु मात घनेरी।
वह भी दुख की भारी ढेरी।। १० ।।
यह भी दिन दुख ग़फ़लत बीते।
सुक्ख न पाया रहे अब रीते।। ११ ।।
तरुन अवस्था आवन लागी।
मन तरंग अब छिन छिन जागी।। १२ ।।
चाह उठी तब करी सगाई।
ब्याह हुआ घर नारी आई।। १३ ।।
नारि देख मन अति हरखाना।
बेड़ी भारी सो नहिं जाना।। १४ ।।
मात पिता का हक़ सब भूले।
दिन और रात नारि सँग झूले।। १५ ।।
घटती चली लगन पितु माता।
नारि पुत्र सँग मन अति राता।। १६ ।।
फ़िकर पड़ा उद्यम का जबही।
दर दर भरमे दुख अति सहही।। १७ ।।

स्वान समान करी गति अपनी।
धन का सुमिरन धन की जपनी।।१८ ।।
धन पाया तो हुआ अनंदा।
अन-मिलते पड़ा दुख का फंदा।।१९ ।।
गृह कारज अब नित्त सतावें।
कुल और जाति बहुत भरमावें।।२० ।।
सब का बोझ भार सिर लीन्हा।
अब तड़पे जस जल बिन मीना।।२१ ।।
मूरख ने यह भार उठाया।
अब दुक्खन से बहु घबराया।।२२।।
भरमत फिरे सुक्ख के कारन।
सुख नहिं मिला हुआ दुख दारुन।।२३ ।।
किये अपने को बहु पछतावे।
पर अब कछू पेश नहिं जावे।।२४ ।।
कल कलेश बहु वर्षन लागे।
वर्षा ऋतु असाढ़ अब जागे।।२५ ।।
मोर पपीहा भर्म त्रास के।
रोग सोग दुख मोह आस के।।२६ ।।
बोलन लागे चहुँ दिस घेरी।
उमड़ी घटा मानो रात अँधेरी।।२७ ।।

भक्ति चन्द्रमा सूरज ज्ञाना।
छिप गये दोनों घोर समाना।।२८ ।।
अज्ञान अँधेरा अति घट छाया।
लोक गया परलोक गँवाया।।२९ ।।
यह भी बीते दुख में सब दिन।
वृद्ध अवस्था आई छिन छिन।।३० ।।

।। दोहा ।।

वृद्धाई बादल उमँड,
घेर लिया तन खंड।
लोभ नदी बाढ़न लगी,
तृष्णा अति परचंड।।३१ ।।
बुद्धि हीन बल छीन होय,
वर्षा तन से होत।
नैन नीर मुख नासिका,
बहन लगे जस सोत।।३२ ।।

।। सावन मास दूसरा ।।

वर्णन कष्ट और क्लेश का जो कि बिना सतगुरु और नाम भक्ति के अंत समय में जमदूतों के हाथ से सहता है

सावन आया मास दूसरा।
सास[1] मरी घर आया ससुरा[2]।। १ ।।
काली घटा श्याम मन हूआ।
श्याम कंज में यह मन मूआ।। २ ।।
गरजे बादल चमके बिजली।
मनसा मोड़ी आसा बदली[3]।। ३ ।।
सुरत निरत की झड़ियाँ लागीं।
धुन अनंत शब्दन से चालीं।। ४ ।।
वृद्ध अवस्था चेतन लागी।
काल आय जब सिर पर गाजी।। ५ ।।
जमपुर से अब सतगुरु राखें।
बहुतक जीव मौत दर ताकें।। ६ ।।
काल घटा जब आकर छाई।
धारा मौत अधिक बरसाई।। ७ ।।
जीव अनेक रहें घबराई।
काया गढ़ उन दीन्ह ढवाई।। ८ ।।
जमपुर जाय जीव पछतावें।
जम के दूत तिन बहुत सतावें।। ९ ।।
नाना कष्ट देयँ पल पल में।
फिर फाँसी डालें गल गल में।। १० ।।

१ - माया, इच्छा। २ - ब्रम्ह । ३ - बदल गई।

कुम्भी नर्क माहि दें ग़ोते।
जीव सहें दुख अति कर रोते।। ११।।
वे निरदई[१] दया नहिं लावें।
अति तिरास से जिव मुरझावें।।१२ ।।
अगिन खंभ से फिर लिपटावें।
हाय हाय कर तब चिल्लावें।।१३ ।।
सुने न कोई मुश्किल भारी।
सर्पन माला ले गल डारी।।१४ ।।
मार मार चहुँ दिस से होई।
पति गति अपनी सब विधि खोई।।१५ ।।
नर्कन में अति त्रास दिखावें।
फिर चौरासी ले पहुँचावें।।१६ ।।
गुरु भक्ती बिन यह गति पाई।
नर देही सब बाद गँवाई[२]।।१७ ।।
जो जो भजन भक्ति से चूके।
तिन के मुख जम पल पल थूके।।१८ ।।
ऐसी कुगति होयगी सब की।
जो नहिं धारें सतगुरु अब की।।१९ ।।
सतगुरु बिना कोई नहिं बाचे।
नाम बिना चौरासी नाचे।। २०।।

१ - कठोर। बे-रहम। २ - बे-फ़ायदा खोई।

धन्य भाग हम सतगुरु पाया।
चढ़ी सुरत मन गगन समाया।।२१ ।।
सुन्न मँडल जाय झूला झूली।
सावन मास लिया फल मूली।।२२ ।।
सखियाँ सब मिल गावन लागीं।
माया ममता देखत भागीं।।२३ ।।
सभी सुहागिन झूलें घर घर।
पिया अपने को हिरदे धर धर।।२४ ।।
पिया विमुख तरसें बहु नारी।
जिनके पति परदेश सिधारी।।२५ ।।
तिनको सावन काला नागा।
डस डस खावे लागे आगा।।२६ ।।
बाहर वर्षा रिमझिम होई।
घट में उनके अग्नि समोई।।२७ ।।
अग्नि लगी मानो तन मन फूँका।
उनके भावें पड़ गया सूखा।।२८ ।।
तीज त्योहार कछू नहिं भावे।
मन में दुख, नहिं हर्ष समावे।।२९ ।।
पिया बिन सावन कैसा आया।
जेठ तपन जस जीव जलाया।। ३०।।

।। दोहा।।

जीव जले विरह अग्नि में,
क्योंकर शीतल होय।
बिन वर्षा पिया बचन के,
गई तरावत खोय।। ३१ ।।
जिन को कंथ मिलाप है,
तिन मुख बरसत नूर।
घट सीतल हिरदा सुखी,
बाजे अनहद तूर।।३२ ।।

।। भादों मास तीसरा।।

चेतावनी जीवों को कि मनमत कर्म और धर्म और जप तप और मूर्ति पूजा और तीर्थ व्रत से जीव की चौरासी नहीं छूटेगी जब तक कि संत सतगुरु और साध का संग और उनसे भेद नाम का लेकर अंतरमुख अभ्यास न करेंगे और वर्णन जुक्ति और भेद सुरत शब्द मार्ग का

भादों मास तीसरा जारी।
दौं[1] लागी सब जग को भारी।। १ ।।

१ - आग।

तीन ताप का बड़ा पसारा[१]।
इक इक जीव घेर कर मारा।। २ ।।
काम क्रोध मद लोभ सतावें।
माया ममता आग लगावें।। ३ ।।
जल जल जीव पड़े घबरावें।
छूटन की कोइ जुगत न पावें।। ४ ।।
कोई कर्म कोइ धर्म सम्हारे।
कोइ विद्या कोइ जप तप धारे।। ५ ।।
कोइ मंदिर जा मूरत पूजे।
कोइ तीरथ कोइ बर्त में जूझे।। ६ ।।
यह सब भूले भटका खावें।
कोई न इनकी भूल मिटावें।। ७ ।।
क्या पंडित क्या भेख गृहस्ती।
यह सब बसे काल की बस्ती।। ८ ।।
चौरासी में बहु भरमावें।
नर्क स्वर्ग के धक्के खावें।। ९ ।।
जो कोइ उन से कहे समझाई।
उल्टी मानें करें लड़ाई।। १० ।।
कलजुग कर्म धर्म नहिं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई।। ११ ।।

१ - फैलाव।

नाम भेद है अति कर झीना[1]।
बिन सतगुरु काहू नहिं चीन्हा।।१२ ।।
जपने में सब गये भुलाई।
नाम अगम कोई भेद न पाई।।१३ ।।
जो सतगुरु पूरे मिल जाते।
तो वे भेद नाम का गाते।।१४ ।।
नाम रहे चौथे पद माहीं।
यह ढूँढ़ें तिरलोकी माहीं।।१५ ।।
तीन लोक में नाम न पावें।
चौथे लोक में संत बतावें।।१६ ।।
तीन लोक में बसता काल।
चौथे में रहे नाम दयाल।।१७ ।।
सोई नाम संतन से पावे।
बिना संत नहिं नाम समावे।।१८ ।।
अब मारग का भेद बताऊँ।
आँख खुले तो भेद लखाऊँ।।१९ ।।
पहिले सुर्ती नैन जमावे।
घेर फेर घट भीतर लावे।।२० ।।
विरह होय तो यह बन आवे।
मेहनत करे तो कुछ फल पावे।।२१ ।।

१ - बारीक।

देखे तिल पिल जोत समावे।
अनहद सुन मन बस में आवे।।२२ ।।
मन बस होय तो सूरत जागे।
निरख अकाश आत्मा पागे।।२३ ।।
शब्द पकड़ परमातम निरखे।
आतम जाय परमातम परखे।।२४ ।।
परमातम से आगे जाई।
सुन्न महल में बैठक पाई।।२५ ।।
सुन्न के परे महासुन लेखा।
महासुन्न पर खिड़की देखा।।२६ ।।
खिड़की आगे चौक अपारा।
चौक परे निरखा सत द्वारा।।२७ ।।
सत्तपुरुष सतनाम कहाई।
सत्तलोक निज पाया आई।।२८ ।।
यह मारग संतन ने भाखा।
भेद प्रगट कुछ गोय[१] न राखा।।२९ ।।
लोक वेद बस जो जिव होई।
सो परतीत न लावे कोई।। ३०।।

१ - गुप्त।

।। दोहा ।।

लोक वेद में जो पड़े,
नाग पाँच डस खायँ।
जन्म २ दुख में रहें,
रोवें और चिल्लायँ।। ३१ ।।
जिन सतगुरु के बचन की,
करी नहीं परतीत।
नहिं संगत करी संत की,
वे रोवें सिर पीट।। ३२ ।।

।। क्वार मास चौथा ।।

आसक्त होना जीवों का मन और इन्द्रियों के भोगों में और भूलना अपने सत्त कुल को और प्रगट होना सत्त पुरुष दयाल का संत सतगुरु रुप धारन करके वास्ते उनके उद्धार के और उपदेश करना सुरत शब्द मार्ग का।

क्वार महीना चौथा आया।
जिव भौसागर वार रहाया।। १ ।।
पार न जावे वार रहावे।
साध संत संग प्रीत न लावे।। २ ।।

जगत भोग में रहे अधीना।
रोग सोग दुख सुक्ख मलीना।। ३ ।।
ज्ञान बैराग भक्ति नहिं धारी।
मोह राग हंकार पचा री।। ४ ।।
क्वारी सुरत करे व्यभिचारा।
मन इन्द्री सँग फिरती लारा।। ५ ।।
काम क्रोध में भरमत डोले।
जड़ चेतन की गाँठ न खोले।। ६ ।।
सतसँग करे न सतगुरु सेवे।
भाव भक्ति में मन नहिं देवे।। ७ ।।
काल चक्र का पड़ा हिंडोला।
ऊँच नीच खावे झकझोला।। ८ ।।
जन्म अनेक झूलते बीते।
जम झोटन के सहे फ़ज़ीते[1]।। ९ ।।
धर्मराय नित करे ख़ुवारी[2]।
नर्कन में भोगे दुख भारी।। १०।।
कर्म भार सिर ऊपर लादा।
घेरे फिरे काल का प्यादा।। ११ ।।
प्यादों के सँग इज़्ज़त खोती।
सत्तनाम कुल की थी गोती।।१२ ।।

१ - मुसीबतें। २ - कुगत।

गोत लजाया जाति गँवाई।
तो भी मन में लाज न आई।।१३ ।।
लाज करी तो मन के कुल की।
सुध भूली सब अपने कुल की।।१४ ।।
कुल इसका है सब से ऊँचा।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा।।१५ ।।
शेष महेश रहे सब नीचे।
ब्रह्म और पारब्रह्म रहे बीचे।।१६ ।।
सत्तपुरुष को लज्जा आई।
संत औतार धरा जग माँही।।१७ ।।
संत रूप धर जिव उपदेशें।
बानी नाव बना जिव खेवें।।१८ ।।
सुरत अजान न बूझे बानी।
फिर फिर डूबे कहा न मानी।।१९ ।।
भौसागर में ग़ोते खावे।
मनमत ठान चौरासी धावे।। २०।।
संत बतावें सत की रीत।
यह नहिं माने कुछ परतीत।। २१ ।।
बिन परतीत रीत नहिं पावे।
जन्म जन्म चौरासी जावे।।२२ ।।
चौरासी से संत बचावें।
उनका बचन न मन ठहरावे।।२३ ।।

मन के रंग फिरे बहुरंगी।
ढंग न सीखे बड़ी कुढंगी।।२४ ।।
साध संत का ढंग नहीं सीखे।
भोगे दुख रस चाखे फीके।।२५ ।।
रस फीके संसार के सबही।
अंतर का रस अगम न लेही।।२६ ।।
स्वाँति बदरिया अंतर बरसे।
सुरत लगावे तो मन सरसे[1]।।२७ ।।
शरद चन्द्रमा अंतर दरसे।
सुन की धुन्न जाय जब परसे।।२८ ।।
मोती चुने मानसरवर के।
भोगे भोग मराल[2] नगर के।।२९ ।।
जो संतन के बचन सम्हाले।
जाय त्रिबेनी होय निहाले।। ३०।।

।। दोहा।।

होय निहाल सुन्दर लखे,
सुने किंगरी नाद।
नाद सुनत होवत मगन,
फिर खोजत पद आद।। ३१ ।।

१ - खुश हो। २ - हंस।

संत दया सतगुरु मया[1],
पाया आद अनाद।
गति मति कहते ना बने,
सुरत भई बिस्माद।।३२ ।।

।। कातिक मास पाँचवाँ।।

वर्णन कँवलों का अंदर काया के और बड़ाई संत मते की

कातिक मास पाँचवाँ चला।
सुरत शब्द गुरु चेला मिला।। १ ।।
तक काया कँवलन विधि भाखी।
कँवल दुवादस काया राखी।। २ ।।
प्रथमे कँवल गनेश बिलासा।
कँवल दूसरे ब्रह्मा बासा।। ३ ।।
कँवल तीसरे विष्णु प्रकाशा।
चतुर्थ कँवल शिव शक्ति निवासा।। ४ ।।
आतम कँवल पाँचवाँ होई।
छठा कँवल परमातम सोई।। ५ ।।
कँवल सातवें काल बसेरा।
जोत निरंजन का वहाँ डेरा।। ६ ।।

१ - कृपा।

कँवल आठवाँ त्रिकुटी माहीं।
सूरज ब्रह्म बसे तेहि ठाहीं।। ७ ।।
नवाँ कँवल है दसवें द्वारे।
पारब्रह्म जहँ बसे निरारे।। ८ ।।
महासुन्न में कँवल अचिंता।
कँवल दसम का वहाँ बरतंता।। ९ ।।
कँवल इकादस भँवरगुफा पर।
द्वादस कँवल सत्तपद अंतर।। १० ।।
खट चक्कर यह पिंड सँवारा।
तीन चक्र ब्रह्मंड अधारा।। ११ ।।
तीन कँवल जो ऊपर रहे।
संत बिना कोइ बरन न कहे।।१२ ।।
खष्ट कँवल तक जोगी आसन।
नवें कँवल जोगेश्वर बासन[1]।।१३ ।।
पिंड ब्रह्मंड का इतना लेखा।
योगी ज्ञानी यहाँ तक देखा।।१४ ।।
आगे का कोई भेद न जाने।
तीन कँवल सो संत बखाने।।१५ ।।

१ - बासा। ठहराव।

कोइ छः तक कोइ नौ तक भाखे।
सर्व मते इन भीतर थाके।।१६ ।।
बड़ा संत मत सब से आगे।
संत कृपा से कोइ कोइ जागे।।१७ ।।
जो पहुँचे द्वादस अस्थाना।
सोई कहिये संत सुजाना।।१८ ।।
संतन का मत सब से ऊँचा।
जो परखे सोई धुर पहुँचा।।१९ ।।
पहुँचे की क्या करूँ बड़ाई।
सब मत उसके नीचे आई।। २०।।
जो मन में परतीत न देखो।
तो कबीर गुरु[१] बानी पेखो।।२१ ।।
तुलसी साहेब का मत जोई।
पलटू जगजीवन कहें सोई।।२२ ।।
इन संतन का देऊँ प्रमाना।
इनकी बानी साख[२] बखाना।।२३ ।।
जोग ज्ञान मत इनहूँ भाखा।
पुनि संतन मत ऊँचा राखा।।२४ ।।
जोगी और वेदान्ती भाई।
संतन मत परतीत न लाई।।२५ ।।

१ - नानक साहब। २ - गवाही।

वेद कतेब[1] न पहुँचे तहँ हीं।
थके बीच में रस्ते माहीं।।२६ ।।
बार बार कह कर समझाऊँ।
संतन का मत ऊँचा गाऊँ।।२७ ।।
जो परतीत न लावे या की।
जानो काल ग्रसी बुधि वा की।।२८ ।।
वे कहा जानें मत संतन को।
एक मिलावें काँच रतन को।।२९ ।।
उनसे यह मत खोल न कहिये।
सैन जनाय मौन गहि रहिये।। ३०।।

।। दोहा।।

संत मता सब से बड़ा,
यह निश्चय कर जान।
सूफ़ी और वेदान्ती,
दोनों नीचे मान।। ३१ ।।
संत दिवाली नित करें,
सत्तलोक के माहिं।
और मते सब काल के,
योंही धूल उड़ाहिं।।३२ ।।

* * * * *

१ - क़ुरान।

।। अगहन मास छठा।।

महिमा सतगुरु की और विधि सतसंग और भक्ति की और चढ़ कर पहुँचना सुरत का सत्तलोक में उन की मेहर और दया से

आया मास अगहन अब छठा।
अघ[1] की हानि हुई मल घटा।। १ ।।
मन हुआ निर्मल चित हुआ निश्चल।
काम क्रोध गये इन्द्री निष्फल।। २ ।।
धरन छोड़ सुर्त चढ़ी अकाशा।
शब्द पाय आई महाकाशा।। ३ ।।
शब्द संग नित करे बिलासा।
देखे अचरज बिमल तमासा।। ४ ।।
छोड़ा यह घर पकड़ा वह घर।
खोया जग को पाया सतगुरु।। ५ ।।
जब से सतगुरु सरना लीन्हा।
सत्त नाम धुन घट में चीन्हा।। ६ ।।
धन सतगुरु धन उनकी संगत।
जिन प्रताप पाई मैं यह गत।। ७ ।।
कर सतसंग काज किया पूरा।
पाप नसे[2] मानो खाया धतूरा।। ८ ।।

१ - पाप। २ - नाश हुए।

पाप पुण्य दोउ गये नसाई।
भक्ति भाव जिव हृदे समाई।। ९ ।।
अब यह सतसंग गुरु का पावे।
हिल मिल चरन माहिं लिपटावे।। १०।।
चरन सेव चरनामृत पीवे।
गुरु परशादी खा नित जीवे।। ११ ।।
दर्शन करे बचन पुनि सुने।
फिर सुन सुन नित मन में गुने।।१२ ।।
गुन गुन छाँट लेय उन सारा।
सार धार तिस करे अहारा।।१३ ।।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई।
जग भौ लाज अब गई नसाई।।१४ ।।
गुरु भक्ती जानो इश्क़ गुरू का।
मन में धसा सुरत में पक्का।।१५ ।।
पक पक घट में गाड़ा थाना।
थान गाड़ अब हुआ दिवाना।।१६ ।।
गुरु का रूप लगे अस प्यारा।
कामिन पति मीना जल धारा।।१७ ।।
सतसँग करना ऐसा चहिये।
सतसँग का फल येही सहि है।।१८ ।।

सतसँग सतसँग मुख से गावें।
करें नित्त फल कछू न पावें।।१९ ।।
सतसँग महिमा है अति भारी।
पर कोइ जीव मिले अधिकारी।। २०।।
अधिकारी बिन प्रगट नहीं फल।
सतसँग तो कीन्हा सब चल चल।।२१ ।।
चल चल आये सतगुरु आगे।
बचन न पकड़ा दरस न लागे।।२२ ।।
सतसँग और सतगुरु क्या करें।
सो जिव भौजल कैसे तरें।।२३ ।।
पत्थर पानी लेखा बरता।
जल मिसरी सम मेल न करता।।२४ ।।
बाहर का सँग जब अस होई।
सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई।।२५ ।।
तब अंतर का सतसँग धारे।
सुरत चढ़े असमान पुकारे।।२६ ।।
बोले अर्श और गरजे गगना।
बैठा कुर्सी मन हुआ मगना।।२७ ।।
ला-मुक़ाम पाया लाहूत।
छोड़ा नासूत मलकूत जबरूत।।२८ ।।

हाहूत का जाय खोला द्वारा।
हूतलहूत और हूत सम्हारा।।२९।।
हूत मुक़ाम फ़क़ीर अख़ीरी।
रूह सुरत जहाँ देती फेरी।।३०।।

।। दोहा।।

अल्लाहू त्रिकुटी लखा,
जाय लखा हा सुन्न।
शब्द अनाहू पाइया,
भँवरगुफा की धुन्न।।३१।।
हक़्क़ हक़्क़ सतनाम धुन,
पाई चढ़ सच खंड।
संत फ़क़र बोली जुगल,
पद दोउ एक अखंड।।३२।।

।। पूस मास सातवाँ।।

वर्णन स्वरूप सुरत और शब्द का और उपदेश सतगुरु भक्ति और सतसंग का जो कि मुख्य उपाय प्राप्ति मेहर और दया का है

पूस महीना जाड़ा भारी।
कर्म भर्म ज्यों फूस जला री।। १ ।।

जल जल ढेर हुआ जब भारी।
प्रेम पवन से तुरत उड़ा री।। २ ।।
मोह सीत[1] ने चित को घेरा।
सूर विवेक[2] किया घट फेरा।। ३ ।।
फेरा करत भक्ति गुरु जागी।
सुरत भई अनहद अनुरागी।। ४ ।।
राग भोग सब दूर निकारा।
विमल विरह बैराग सम्हारा।। ५ ।।
सहज जोग गुरु दिया बताई।
सुरत शब्द मारग लखवाई।। ६ ।।
झीनी सुरत रूप नहिं दरसे।
परसे शब्द जाय मन घर से।। ७ ।।
सुन्न शिखर जाय रूप दिखाना।
गगन मँडल के पार ठिकाना।। ८ ।।
रूप सुरत का दरसा ऐसा।
बिन अनुभव क्यों कर कहुँ कैसा।। ९ ।।
अनुभव से वह जाना जाई।
शब्द बिना अनुभव[3] नहिं पाई।। १०।।
सुरत शब्द दोउ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भर्म के कूपा।। ११ ।।

१ - सरदी। २ - विचार। ३ - प्रत्यक्ष ज्ञान।

करनी कर कर सुरत चढ़ाओ।
शब्द मिले अनुभव घर पाओ।।१२ ।।
बिना शब्द अनुभव नहिं होई।
अनुभव बिन समझे नहिं कोई।।१३ ।।
सुरत शब्द दोउ रूप अमोला।
सुन्न चढ़े जिन निज कर तोला।।१४ ।।
ताते करनी गुरू बताई।
सतगुरु दया लेव सँग भाई।।१५ ।।
मेहर दया करनी करवाई।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई।।१६ ।।
करनी मेहर संग दोउ चलते।
तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते।।१७ ।।
अस संजोग मौज से होई।
मौज उपाव नहीं अब कोई।।१८ ।।
पच पच थक थक सब ही हारे।
मौज बिना क्या करें बिचारे।।१९ ।।
इक उपाय कुछ मन में आया।
पर थोड़ा सा चित्त समाया।। २०।।
जब जब संत जगत में आवें।
ढूँढ़ भाल उनके ढिंग जावें।। २१ ।।

जाय करें नित सेवा दर्शन।
हाज़िर रहें गिरें उन चरनन।।२२ ।।
नित्त हाज़िरी उनकी करते।
मन से दीन लीन होय रहते।।२३ ।।
पर यह बात बड़ी अति झीनी।
संत करावें निंदा अपनी।।२४ ।।
निन्दा चौकीदार बिठाई।
कोई जीव धसने नहिं पाई।।२५ ।।
बिरला जीव होय अनुरागी।
निंदा से वह छिन छिन भागी।।२६ ।।
निंदा सुन सुन चित नहिं धारे।
संतन की यह जुगत विचारे।।२७ ।।
जस जाने तस मन समझावे।
संतन सन्मुख ज्यों त्यों आवे।।२८ ।।
ऐसी दृढ़ता जाकर होई।
तो फिर संत मौज करें सोई।।२९ ।।
संत मौज फिर कोइ न टारे।
ईश्वर परमेश्वर सब हारे।। ३० ।।

।। दोहा ।।

संत डारिया बीज,
घट धरती जेहि जीव के।

को अस समरथ होय,
जो जारे उस बीज को।। ३१ ।।
कोई काल के माहिं,
वह बीजा अंकुर गहे।
जब जब आवें संत,
अंकूरी उन सँग रहे।। ३२।।

।। सोरठा ।।

वह सींचे निज पौद,
होय भक्त वह पेड़ सम।
फल लागें अति से सरस,
भोगें सतगुरु मेहर से।। ३३ ।।
कारज कीन्हा पूर,
संत धूर हिरदे धरी।
सूर हुआ मन चूर,
नूर तूर घट में प्रघट।। ३४।।

।। माघ मास आठवाँ ।।

वर्णन लीला और बिलास मुक़ामात का और उनके रास्ते का अंतर में

माघ महीना अति रस भरा।
काया बन मन गुलशन[1] हरा।। १ ।।

१ - फुलवारी।

चमन[1] चमन फुलवारी खिली।
बाग़ बाग़ नहरें अब चलीं।। २ ।।
गुरु भक्ती और पौद प्रेम की।
क्यारी धीरज दया नेम की।। ३ ।।
अस अस लीला देखी घट में।
मन माली सींचे छिन छिन में।। ४ ।।
नैनन आगे पचरँग फूल।
पल २ निरखत तिल तिल झूल[2]।। ५ ।।
तत्त्व पिर्थवी भिन होय दरसा।
ऋतु बसंत फूली मन सरसा।। ६ ।।
झलके जोत और उमंड घटा की।
रिमझिम बरसे बूँद अमी की।। ७ ।।
सहस धार दल सहस कँवल में।
उठें तरंगें फैलें मन में।। ८ ।।
मन चढ़ चला महल अपने में।
उल्टा पहुँचा गगन मँडल में।। ९ ।।
गगन मँडल लीला इक न्यारी।
शब्द गुरू की खिल रही क्यारी।। १० ।।
मूल नाम और शाखा धुन की।
फूली जहँ फुलवार त्रिगुन की।। ११ ।।

१ - बग़ीचा। २ - झूलती है।

यह लीला घट माहिं निहारी।
महिमा नाम कहा कहुँ भारी।।१२ ।।
सरगुन नाम और सरगुन रूपा।
वहाँ तक देखा मन का सूता।।१३ ।।
अब आगे सूरत चढ़ चाली।
पैठी[1] जाय सुखमना नाली।।१४ ।।
सुखमन में निज मन दरसाना।
निज मन आगे निरगुन जाना।।१५ ।।
यह निरगुन वह सरगुन देखा।
दोनों घाट भिन्न कर पेखा।।१६ ।।
अब आगे पाँजी[2] इक गाऊँ।
गंधर्प नाल के मध्य चढ़ाऊँ।।१७ ।।
नाल भुवंगन बायें त्यागी।
दहने नाल धुन्धरी जागी।।१८ ।।
जागत नाल काल मुख मूँदा।
घाट अठासी नाका रूँधा।।१९ ।।
सिंह पौल[3] ढिंग झँझरी निरखी।
सेत पदमनी जाली परखी।।२० ।।
सुन्न ताल जहँ धुन भंडारा।
छजली कजली दीप निहारा।।२१ ।।

१- धसी। २ - रास्ता। ३ - दरवाजा।

सागर नागर जाकर झाँका।
कुरम शेष अक्षर जहाँ थाका।।२२ ।।
जहाँ सुरंगी दीप झरोखा।
सुरत अड़ी जाय द्वारा रोका।।२३ ।।
सँदली चँदली चौकी डारी।
सुरत मंडली पाट खुला री।।२४ ।।
कुंडल दीप छबीली रमना।
दामिन दीप सोत का झरना।।२५ ।।
नीलम कुंड रतन नल पाल।
महाकाल रचिया जहाँ जाल।।२६ ।।
कंकन घाटी सुरत झुमाई।
जाल काल सब दूर पड़ाई।।२७ ।।
सेत धरन जहाँ लाल अकासा।
हंस छावनी देख बिलासा।।२८ ।।
यह पाँजी निरखी निज धामी।
बिमल दीप बैठे जहाँ स्वामी।।२९ ।।
पोहप नगर जहाँ अमृत धाम।
हंस बसे पावें विश्राम।। ३०।।

।। दोहा ।।

बैठक स्वामी अद्‌भुती,
राधा निरख निहार।

और न कोइ लख सके,
शोभा अगम अपार।।३१ ।।
गुप्त रूप जहाँ धारिया,
रा धा स्वा मी नाम।
बिना मेहर नहिं पावई,
जहाँ कोई विश्राम।।३२ ।।

।। फागुन मास नवाँ ।।

उतरना सुरत का बीच नौ द्वार के और फँस जाना मन और इन्द्रियों का संग करके भोगों में और फिर आना सत्तपुरुष दयाल का संत सतगुरु रूप धार कर और पहुँचाना सुरत का निज घर में शब्द मार्ग की कमाई से

फागुन मास रँगीला आया।
धूम धाम जग में फैलाया।। १ ।।
घर घर बाजे गाजे लाया।
झाँझ मजीरा दफ़्फ़ बजाया।। २ ।।
यह नर देही फागुन मास।
सुरत सखी आइ करन बिलास।। ३ ।।
मन इन्द्री सँग खेली फाग।
उत से सोई इत को जाग।। ४ ।।

जग में आ संजोग मिलाया।
लोक लाज कुल चाल चलाया।। ५ ।।
भोग रोग परिवार बँधानी।
फगुआ खेली होली ठानी।। ६ ।।
धूल उड़ाई छानी ख़ाक।
पाप पुण्य सँग हुइ नापाक।। ७ ।।
इच्छा गुन सँग मैली भई।
रंग तरंग बासना गही।। ८ ।।
फल पाया भुगती चौरासी।
काल देस जहँ बहुत तिरासी।। ९ ।।
आस त्रास माहिं अति फँसी।
देख देख तिस माया हँसी।। १० ।।
हँस हँस माया जाल बिछाया।
निकसन की कोइ राह न पाया।। ११ ।।
तब संतन चित दया समाई।
सत्तलोक से पुनि चलि आई।। १२ ।।
ज्यों त्यों चौरासी से काढ़ा।
नर देही में फिर ले डाला।। १३ ।।
चरन प्रताप सरन में आई।
तब सतगुरु अति कर समझाई।। १४ ।।

तुझको फिर कर फागुन आया।
सम्हल खेलियो हम समझाया।।१५ ।।
सुरत कहे सुनो संत सुवामी।
कस खेलूँ कहो अंतरजामी।।१६ ।।
तब सतगुरु इक भेद लखाया।
सुरत जोग मारग बतलाया।।१७ ।।
सुरत चली अब खेलन होली।
कर सिंगार बैठ धुन डोली।।१८ ।।
विरह अनुराग रंग घट लीन्हा।
मन को संग ले तन तज दीन्हा।।१९ ।।
शब्द गुरू से पहले खेली।
गगन चौक चढ़ त्रिकुटी लेली।। २०।।
त्रिकुटी माहिं बहुत दिन खेली।
ओंकार संग कीन्हा मेली।।२१ ।।
लाल गुलाल रूप सुर्त पाया।
तब सतगुरु सुन शब्द सुनाया।।२२ ।।
आगे बढ़ी चढ़ी ऊँचे को।
उलट न देखे अब नीचे को।।२३ ।।
चल चल पहुँची सत्तलोक में।
फगुवा माँगे सत्तनाम से।।२४ ।।

गई जहाँ से फिर वहिं आई।
पद में अपने आन समाई।।२५ ।।
रंग रंग नित खेलत होली।
जो होना था सो अब होली[1]।।२६ ।।
छोड़ा पिंडा छोड़ा अंडा।
खंड खंड कीन्हा ब्रह्मंडा।।२७ ।।
निज घर अपने जाकर बसी।
सत्त शब्द धुन बीना रसी[2]।।२८ ।।
हंस रूप अब धारा असली।
देह रूप धर बहुतक फँसली[3]।।२९ ।।
काल निरंजन तोड़ी पसली।
हो गइ सत्तनाम गल हँसली[4]।। ३०।।

।। दोहा ।।

जब आवे सुर्त देह में,
देह रूप ले ठान।
जब चढ़ उलटे सुन्न को,
हंस रूप पहिचान।। ३१ ।।
सुरत रूप अति अचरजी,
वर्णन किया न जाय।
देह रूप मिथ्या तजा,
सत्त रूप हो जाय।।३२ ।।

१ - हो गया। २ - रस से भरी। ३ - फँसी। ४ - नाम गहने का।

।। चैत मास दसवाँ ।।

वर्णन भेद रास्ते और मुक़ामात का

चैत महीना आया चेत।
बाँधा सतगुरु भौ में सेत[1]।। १ ।।
जीव चिताये जो थे वार।
भौसागर से कीन्हे पार।। २ ।।
भौसागर अति गहिर गंभीर।
सतगुरु पूरे बाँधी धीर।। ३ ।।
तन मन धन की लई जगात[2]।
शिष्य उतारे गहि कर हाथ।। ४ ।।
सुरत बहे थी नौ की धार।
ताहि चढ़ाया गगन मँझार।। ५ ।।
गगन जाय धुन शब्द सिहारी[3]।
देखा रूप जोत अति भारी।। ६ ।।
जोत निहारे देखे तारा।
बंकनाल का खोला द्वारा।। ७ ।।
संख सुना और धुन ओंकारा।
शब्द गुरू का घाट निहारा।। ८ ।।
छोड़ा मन अब चेती सूरत।
त्रिकुटी चढ़ निरखी गुरु मूरत।। ९ ।।

१ - पुल। २ - महसूल। ३ - पकड़ी।

गुरु चेला मिल आगे चाली।
मानसरोवर शब्द सम्हाली।।१०।।
हंसन साथ करी जाय यारी।
सुरत सखी हुइ सबकी प्यारी।।११ ।।
सुन्न शहर में कुछ दिन बसी।
फिर चढ़ ऊपर आगे धसी।।१२ ।।
महासुन्न इक नगर अपारा।
कहूँ कहा अचरज विस्तारा।।१३ ।।
धुन जहाँ चार गुप्त अति झीनी।
संत बिना कोइ परख न चीन्ही।।१४ ।।
अचिंत दीप ता दायें रहता।
सहज दीप दस पालँग बसता।।१५ ।।
महिमा दीप कहा कहुँ भारी।
संतोष दीप तहाँ बायें सँवारी।।१६ ।।
तहँ इक झिरना अजब रचानी।
सुरत निरत से गही निशानी।।१७ ।।
देख निशान मध्य को धाई।
भँवरगुफा की गली समाई।।१८ ।।
तिस आगे मैदान दिखाना।
सत्त लोक जहाँ पुरुष पुराना।।१९ ।।

निज पद पाय पुरुष से मिली।
देख गली आगे फिर चली।।२०।।
अलख लोक में किया बसेरा।
अगम लोक जाय डाला डेरा।।२१।।
शोभा वहाँ की क्या कह गाऊँ।
अरब खरब शशि सूर लजाऊँ।।२२।।
अब अनाम जहाँ रूप न नामा।
संत करें जा वहाँ विश्रामा।।२३।।
सुरत चेत पाया बिसमाद[१]।
नहिं जहाँ बानी नहिं जहाँ नाद।।२४।।
आदि न अंत अनंत अपार।
संतन का वह निज दरबार।।२५।।
संत सभी वा घर से आवें।
काल देश से जीव चितावें।।२६।।
जो चेते तिस ले पहुँचावें।
सुरत शब्द मारग बतलावें।।२७।।
जीव चेत जो माने कहना।
ताको फिर दुख सुख नहिं सहना।।२८।।
मानो बचन करो कुछ करनी।
सुरत निरत की धारो रहनी।।२९।।

१ - विशेष समाधि अवस्था।

सतसँग करो गहो गुरु रंग।
सुरत चढ़ाओ गगन उमंग।। ३०।।

।। दोहा ।।

सतगुरु संत दया करी,
भेद बताया गूढ़[१]।
अब सुन जीव न चेतई,
तो जानो अति मूढ़।। ३१।।
भौसागर धारा अगम,
खेवटिया गुरु पूर।
नाव बनाई शब्द की,
चढ़ बैठे कोइ सूर।। ३२।।

।। बैसाख मास ग्यारहवाँ ।।

वर्णन भेद काल मत और दयाल मत का

बैसाख महीना सिर पर आया।
साख गई जिव हुआ पराया।। १ ।।
काल पक्ष सब जीवन धारी।
पुरुष दयाल की सुद्धि बिसारी।। २ ।।
सुरत देश अपना बिसराना।
काल देश इन अपना जाना।। ३ ।।

१ - गुप्त।

काल रची तिरलोकी सारी।
द्याल रचा सतलोक सम्हारी।। ४ ।।
तीन लोक काल का थाना।
चौथा लोक द्याल अस्थाना।। ५ ।।
काल दिया जीवन को धोका।
चौथे पद से सब को रोका।। ६ ।।
द्याल पुरुष का भेद न दीन्हा।
कर्मकांड में जीव अधीना।। ७ ।।
अपनी पूजा सब विधि गाई।
जीव चले चौरासी भाई।। ८ ।।
त्रैगुन रसरी जीव बँधाना।
ब्रह्मा विष्णु महेश पुजाना।। ९ ।।
देवी देवा पत्थर पानी।
पाप पुण्य में जिव उरझानी।। १० ।।
काल धरे जग दस औतारा।
कला दिखाय जीव धर मारा।। ११ ।।
आपहि राम आप हुआ रावन।
आपहि कंस आप जसुनन्दन।। १२ ।।
आपहि बल और आपहि बावन।
आपहि कच्छ मच्छ धर धारन।। १३ ।।

परसराम और नरसिंह देख।
प्रहलाद भक्त होय बाँधी टेक।।१४ ।।
खंभ फाड़ बाहर होय निकला।
रक्षक कला दिखाई सकला[१]।।१५ ।।
चाँद सूर्य और गौर गनेशा।
पुजवाये और राहु होय ग्रसा।।१६ ।।
अस अस कला अनंत असंखा।
कहाँ लग बरनूँ भेद सबन का।।१७ ।।
काल लिया सब लोकन घेरी।
द्याल पुरुष कोइ मर्म न हेरी।।१८ ।।
काल कला परचंड दिखाई।
जीव चले सब उसकी राही।।१९ ।।
संतन का कोइ भेद न जाना।
संत मता रहा गुप्त छिपाना।। २०।।
संत मता खुल कर अब गाऊँ।
देकर कान सुनो समझाऊँ।।२१ ।।
नहिं पताल नहिं मृत्त अकाशा।
पाँच तत्त्व नहिं तिरगुन स्वाँसा।।२२ ।।
नहिं शिव शक्ति न पुरुष प्रकिरती।
जोत निरंजन नहिं परकिरती।।२३ ।।

१ - सब।

तारा मंडल सूर न चंदा।
पिंड ब्रह्मंड रचा नहिं अंडा।।२४ ।।
कुरम न शेष नहीं ओंकारा।
माया ब्रह्म न ईश्वर धारा।।२५ ।।
आतम परमातम नहिं दोई।
सुन्न महासुन रचा न सोई।।२६ ।।
अल्ला ख़ुदा रसूल न होते।
पीर मुरीद न दादा पोते।।२७ ।।
वेद पुरान क़ुरान न कहते।
मसजिद काबा बाँग[१] न देते।।२८ ।।
नहि त्रिकाल सन्ध्या न नमाज़ा।
तीरथ बर्त नेम नहिं रोज़ा।।२९ ।।
कर्मी शरई थे नहिं भाई।
जोगी ज्ञानी खोज न पाई।। ३० ।।

।। दोहा।।

तपसी[२] हबसी[३] ज़ाहिदा[४]
नहिं आबिद[५] माबूद[६]।
क़ुतुब पैग़म्बर औलिया,
कोई न थे मौजूद।। ३१ ।।

१ - अज़ान। २ - तप करने वाला। ३ - प्रानों को रोकने वाला।
४ - जती। ५ - भक्त। ६ - भगवंत।

स्वर्ग नर्क दोज़ख़[१] इरम[२],
अर्ज़[३] समा[४] नहिं होय।
मुसलमान हिन्दू नहिं,
जैन न ईसा कोय।।३२ ।।

।। जेठ मास बारहवाँ।।

प्रकट होना सत्तलोक का और रचना तीन लोक की और सबब फैलने काल मत और गुप्त रहने संत मते का

जेठ महीना जेठा भारी।
जीवन हिरदे तपन करारी[५]।। १ ।।
संत दयाल जीव हितकारी।
भेद कहें अब निज कर भारी।। २ ।।
नहिं ख़ालिक[६] मख़लूक़[७] न ख़िल्क़त।
कर्ता कारन काज न दिक़्क़त।। ३ ।।
दृष्टा दृष्टि नहिं कुछ दरसत।
वाच[८] लक्ष[९] नहिं पद न पदारथ।। ४ ।।
ज़ात सिफ़ात न अव्वल आख़िर।
गुप्त न परघट बातिन ज़ाहिर।। ५ ।।

१ - नर्क। २ - स्वर्ग। ३ - पृथ्वी। ४ - आकाश। ५ - सख़्त।
६ - पैदा करने वाला। ७ - रचना। ८ - ज़ाहिर। ९ - पोशीदा।

राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।। ६ ।।
सिम्रित शास्त्र न गीता भागवत।
कथा पुरान न वक्ता कीरत।। ७ ।।
सेवक सेव[१] न दास न स्वामी।
नहिं सतनाम न नाम अनामी।। ८ ।।
कहाँ लग कहूँ नहीं था कोई।
चार लोक रचना नहिं होई।। ९ ।।
जो कुछ था सो अब कह भाखूँ।
उनमुन सुन बिसमाधी राखूँ।। १० ।।
हैरत हैरत हैरत होई।
हैरत रूप धरा इक सोई।। ११ ।।
उनमुन रूप सदा वह रहता।
उनमुन दशा सदा वहि बरता।। १२ ।।
वाकी गति कोई नहिं जाने।
वह अपनी गति आप बखाने।। १३ ।।
संत रूप होय जग में आया।
अपना भेद आप उन गाया।। १४ ।।
आपहि आप न दूसर कोई।
उठी मौज परगट सत सोई।। १५ ।।

१ - जिसकी सेवा की जाय।

तीन देश मौज ने रचे।
अगम अलख सतनाम होय हँसे।।१६ ।।
धुन धधकार उठी इक भारी।
सात सुरत रचना उन धारी।।१७ ।।
साँचा बन जामन पुन दीन्हा।
सुरत परस्पर रचना कीन्हा।।१८ ।।
सोहं सुरत आदि यों बोली।
सोहं सोहं सम्पट खोली।।१९ ।।
सहज धीर जामन तहाँ दीन्हा।
ओं सोहं गर्भ धुन चीन्हा।। २०।।
मूल सुरत जहाँ पर प्रगटाई।
मूल द्वार पर बैठी आई।।२१ ।।
शांत सुरत जहाँ कीन्ह बिलासा।
हंस रचे कर दीप निवासा।।२२ ।।
दीपन शोभा क्या कहुँ भारी।
हंस कुतूहल[१] करें अपारी।।२३ ।।
पुरुष दरस और लीला न्यारी।
देख देख अनुभव गति धारी।।२४ ।।
जुग केते और मुद्दत केती।
कही न जावे उनकी गिनती।।२५ ।।

१ - लीला।

रचना सत्य सत्य वह देशा।
नहिं व्यापे जहाँ काल कलेशा।।२६ ।।
हंस सभा समरथ तहँ बैठे।
लीला देखें रहें इकट्ठे।।२७ ।।
कँवल द्वार दल धारा निकसी।
श्याम रूप अचरज होय दरसी।।२८ ।।
पुरुष देख अचरज लौलीना।
सेत माहिं जस श्याम नगीना।।२९ ।।
सब हंसन मिल अर्ज़ी कीन्हा।
कौन कला यह हम नहिं चीन्हा।।३० ।।
पुरुष कहा तुम करो बिलासा।
यह कल रचिहै और तमासा।।३१ ।।

।। दोहा।।

हंसन मन अचरज भया,
कहा करे विस्तार।
पुरुष सेव नित ही करे,
मन कुछ औरहि धार।।३२ ।।
धारा वह बढ़ती चली,
कला न रोकी ताहि।
पुरुष मौज ऐसी हुई,
बोली कला बनाय।।३३ ।।

रचना रचूँ और मैं न्यारी।
यह रचना मोहिं लगे न प्यारी।।३४ ।।
तीन लोक रचना मैं करूँ।
राज पाय ध्यान तुम धरूँ।।३५ ।।
पुरुष कला को दिया निकासी।
निकस कला कीन्हा अति त्रासी।।३६ ।।
पुरुष दया कर जुगत बनाई।
कला दूसरी और उपाई।।३७ ।।
पीत बरन वह कला सिंगारी।
दीन्ही आज्ञा पुरुष निहारी।।३८ ।।
एक काल कुछ अंस दयाली।
दोनों मिल कीन्हा कुछ ख़्याली।।३९ ।।
आये मानसरोवर तीरा।
अक्षर की देखी वहँ लीला।।४० ।।
लीला देख कला चित त्रासा।
तब अक्षर ने दिया दिलासा।।४१ ।।

।। दोहा ।।

जोत निरंजन दोउ कला,
मिल कर उत्पति कीन।
पाँच तत्त्व और चार खान,
रच लीन्हे गुन तीन।।४२ ।।

गुन तीनों मिल जगत का,
किया बहुत विस्तार।
ऋषि मुनी नरदेव अदेव[१],
रच बाढ़ो हंकार।।४३।।

।। सोरठा ।।

ब्रह्मा विष्णु महेश,
और चौथी जोती मिली।
भर्म जाल की फाँस,
जीव न पावे निज गली।।४४।।

आप निरंजन हुए नियारे।
भार सृष्टि सब इन पर डारे।।४५।।
दीप रचा इक अपना न्यारा।
ता में कीन्हा बहु विस्तारा।।४६।।
पालँग आठ दीप परमाना।
जोग आरंभ कीन्ह विधि नाना।।४७।।
स्वाँस खैंच निज सुन्न चढ़ाये।
धुन प्रगटी और वेद उपाये।।४८।।
वेद मिले ब्रह्मा को आये।
देख वेद ब्रह्मा हरखाये।।४९।।

१ - राक्षस।

मुख चारों से धुन उच्चारी।
ताते वेद हुए पुनि चारी।।५० ।।
ऋषि मुनि मिल फिर किया पसारा।
कर्म धर्म और भर्म सम्हारा।।५१ ।।
सिमृत शास्तर बहु विधि रचे।
कर्म धर्म में सब मिल पचे।।५२ ।।
खोज निरंजन किनहुँ न पाया।
वेदहु नेति नेति गुहराया[१]।।५३ ।।

।। दोहा ।।

दर्श निरंजन ना मिला,
किया ज्ञान अनुमान[२]।
फिर आगे सतपुरुष का,
क्यों कर करें प्रमान।।५४।।
ताते यह मत संत का,
रहा गुप्त जग माहिं।
गुन तीनों मानें नहीं,
जीवहु मानें नाहिं।।५५।।

।। सोरठा ।।

संत पुकारें भेद,
वेद पशू मानें नहीं।

१ - वर्णन किया। २ - क़यास।

अब क्या करें उपाय,
जीव पड़े सब भर्म में।।५६ ।।
तिरलोकी का नाथ कहाया।
सो भी उनके हाथ न आया।।५७ ।।
स्वर्ग नर्क चौरासी फेरा।
जन्म जन्म पड़े काल के घेरा।।५८ ।।
कोइ कोइ चेतन माहिं समाने।
सो भी फिर जनमे भौ आने।।५९ ।।
चौथा लोक संत दरबारा
निश्चय ता का काहू न धारा।।६० ।।
संत दया अपने चित धरें।
जीव न मानें तो क्या करें।।६१ ।।
भेद बतावें बानी कहें।
देह धरें और जग में रहें।।६२ ।।
जीव चितावें किरपा धार।
बहुत उठावें जीवन भार।।६३ ।।
तौ भी कोइ परतीत न लावे।
चौथा पद आसा नहिं धारे।।६४ ।।
बारह मास बखान पुकारे।
कह कह कर अब हम भी हारे।।६५ ।।

हार जीत कुछ हमरे नाहीं।
मूरख पर इक तान चलाई।।६६ ।।
सत्य सत्य सत्य मैं कही।
अब कहने को कुछ नहिं रही।।६७ ।।
राधास्वामी नाम उचारो।
भक्ति भाव अब मन में धारो।।६८ ।।
संतन की जिन मन परतीत।
और धारी जिन सतसँग रीत।।६९ ।।
सतसँग करे नित्त जो आई।
उन प्रति यह बानी हम गाई।।७० ।।

।। मंगल दूसरा ।।

गुरु मेरे दीन दयाल, करी किरपा घनी।
सुन कर बानी सार,(बारहमास)
सुरत धुन में तनी।।१ ।।
प्रेम प्रीत चित धार, दास शोभा बनी।
मैं औगुन की खान, कहूँ कहाँ लग गिनी।।२ ।।
शब्द भेद अति गूढ़, थके जहाँ मुनि जनी।
कोई न पावे भेद, छान ऐसी छनी।।३ ।।
सत्तनाम सतपुरुष, अगम पूरन धनी।
संत बतावें भेद, सार भाखें पुनी।।४ ।।

जीव न माने नेक, काल बुधि उन हनी[1]।
प्रेमी सतसंगी कोई,
जिन खोई मानमनी।।५ ।।
नहिं बूझे संसार, चाल मनमुख सनी।
जौहरी जाने कोय, परख मानिक मनी।।६ ।।
पोत गहे जग मूढ़, छाँड़ हीरा कनी।
क्योंकर कहूँ बुझाय, बात ऐसी बनी।।७ ।।
सुरत हंसनी जाय, शब्द मोती चुनी।
कोइ बिरले गुरुमुख जीव,
ठान ऐसी ठनी।।८ ।।
खोला अगम दुवार, मर्म जाना जिनी।
गई रात अँधियार, हुआ चाँदन दिनी।।९ ।।
सतगुरु किरपा धार, साख ऐसी भनी[2]।
मार लिया मन खेत, सोई सूरा रनी।।१०।।
आदि नाम को भूल,
हुई सब की ऋनी[3]।
ममत चदरिया पहिन,
कर्म ने जो बिनी।।११ ।।
मंत्र दिया गुरु देव, काल मारा फनी।
राधास्वामी नाम, चित्त दे अब सुनी।।१२।।

* * * * *

१ - नाश करी। २ - बयान करी। ३ - देनदार।

।। बचन उनतालीसवाँ ।।

।। बसंत व होली ।।

।। बसंत ।।

।। पहला शब्द ।।

देखो देखो सखी अब चल बसंत।
फूल रही जहाँ तहाँ बसंत।। १ ।।
घट घट बाजत धुन मृदंग।
बीन बाँसरी और मुचंग।। २ ।।
खुल गये परदे अब निसंक।
लागी लगन मेरी होय अभंग।। ३ ।।
मोहिं मिल गये राधास्वामी पूरे संत।
अब बाजत हिये में धुन अनंत।। ४ ।।
मेरे घट में रंभा[1] बहु नचंत।
मानो इन्द्रपुरी आई अचिंत।। ५ ।।
अस औसर बाढ़ी अति उमंग।
मन कूदन लागा जस तुरंग[2]।। ६ ।।
सब घट से निकसे रूप रंग।
पद पायो अगम अनाम अरंग।। ७ ।।
मैं ने मारो काल महा भुजंग।
मो पै बरसन लागे गुल सुरंग।। ८ ।।

१ - अप्सरा। २ - घोड़ा।

मोहिं राधास्वामी दीन्हो ऐसो ढंग।
मैं तो उड़न लगो अब जैसे चंग।। ९ ।।
मेरे घट में धारा बही है गंग।
न्हाओ न्हाओ सिमट कर सबहि संग।। १० ।।
स्वामी किरपा कीन्ही अति उतंग[1]।
मैं तो सब से हो गइ अब असंग।। ११ ।।
अब छुट गया मेरा सब कुसंग।
मैं ने पायो अद्‌भुत आदि रंग।।१२ ।।
मेरा बिछ गया चौ-महले पलंग।
मैं ने छोड़ दिया नौ-महला तंग।।१३ ।।
मेरे नाश हुए मन के कुरंग।
मोहिं मिल गया ऐसा साध संग।।१४ ।।
मुझे पिया ने मिलाया अपने अंग।
मैं ने धारा अपने पिया का रंग।।१५ ।।
कहँ लग बरनूँ यह बसंत।
मेरा पावे न कोई आदि अंत।।१६ ।।
मैं उबारे बहुतक जीव जंत।
मेरा पावे न कोई परम मंत।।१७ ।।
मैं बरनूँ अपना आप तंत[2]।
मैंने कर लिया घट का सब मथंत।।१८ ।।

१ - ऊँचे की। २ - भेद।

कोइ नहिं कथि है अस कथंत।
मैं ने भाखा अपना निज वृतंत।।१९ ।।
मैं ने दूर किया सब नाम नंग।
मेरी सुरत उड़ी जैसे पतंग।।२० ।।
मैं ने मार लई अब मन की जंग[1]।
कोइ कर न सके मेरा बाल बंक।। २१ ।।
मेरी मिट गई अब शीशे की जंग।
अब न रही मेरे कोइ उचंग।।२२ ।।
मैंने पाया अपना पिया निहंग[2]।
अब आऊँ जाऊँ जस विहंग।।२३ ।।
मोहिं काल न परखे होय दंग।
राधास्वामी लगाई यह सुरंग।।२४ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

घट में खेलूँ अब बसन्त।
भेद बताया सतगुरु सन्त।। १ ।।
घर पाया मैं आदि अन्त।
सुन सुन अनहद धुन अनन्त।। २ ।।
कहूँ कहा महिमा अतन्त[3]।
बरनूँ कैसे यह वृतन्त।। ३ ।।

१ - लड़ाई २ - बे - परदा। ३ - अत्यंत। बहुत।

सुरत निरत दोऊ जगन्त।
चली जाँय मारग बेअन्त।। ४ ।।
छुट गइ भीड़ भई इकन्त।
सुरत शब्द का पाया तन्त[1]।। ५ ।।
काल करी बहुतक ठगन्त।
द्याल सुनाया अपना मन्त।। ६ ।।
मन और माया दोउ जरन्त।
सुरत चढ़ी पहुँची निज पन्थ।। ७ ।।
घर छूटा फिर मिला जुगन्त[2]।
पाय गई राधास्वामी कन्त।। ८ ।।

।। तीसरा शब्द ।।

खेल रही मैं नित बसन्त।
सुरत निरत कर मिली हूँ कंत।। १ ।।
राधास्वामी चरन मेरे हिये बसंत।
खेलत उन सँग आदि अन्त।। २ ।।
शब्द शोर घट में उठन्त।
सुन्न शिखर पहुँची तुरन्त।। ३ ।।
उल्टत तिल देखत परंत[3]।
श्याम कंज जोती जगंत।। ४ ।।

१ - तत्त। सार। २ - बहुत काल का। ३ - पार या ऊपर की तरफ़।

गगन मँडल पर बाजत तंत[१]।
घोर उठत छिन छिन अतंत[२]।। ५ ।।
छाय रही जहाँ ऋतु बसंत।
खेल रही सूरत इकंत।। ६ ।।
यह सतगुरु से पावे पंथ।
चढ़ कर पहुँची महले संत।। ७ ।।
अमी धार जहाँ नित गिरंत।
भींजत गुरुमुख होय निचिंत।। ८ ।।
देश अगम बानी वृतंत[३]।
कोई बिरले साधू घट मथंत।। ९ ।।
सोइ सोइ पावे यह रसंत।
राधास्वामी गाया अगम मंत।। १० ।।
खोला पाट रूप दरसंत।
कोटि भान छबि भाखत संत।। ११ ।।
नौका मेरी पार लगंत।
अलख अगम के पार चढ़ंत।। १२ ।।
राधास्वामी नाम गहा निज मंत।
कँवल कियारी शब्द खिलंत।। १३ ।।

* * * * *

१ - बाजा। २ -अत्यन्त। ३ - हाल।

।। चौथा शब्द ।।

देखन चली बसंत अगम घर।
देख देख अब मगन भई।। १ ।।
सखियन साथ चली नभ ऊपर।
शब्द गुरू सँग लगन लगी।। २ ।।
कँवलन क्यारी फूल सँवारी।
पेख पेख अब गगन रही।। ३ ।।
सतगुरु संध[1] परखती पहुँची।
कर्म बीज को अगिन दई।। ४ ।।
ममता मार अहँगता जारी।
सुरत शब्द की सरन लई।। ५ ।।
अनहद राग सुने घट अंतर।
नाम रसायन रसन रसी।। ६ ।।
सुखमन पार सुन्न घर पहुँची।
भक्ति शिरोमन[2] परन[3] गही।। ७ ।।
सतगुरु किरपा सत पद पाया।
राधास्वामी धरन[4] धरी।। ८ ।।

* * * * *

१ - मिलाप। २ -सबसे उत्तम। ३ - प्रतिज्ञा। ४ - धारना।

।। होली ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

अब खेलत राधास्वामी सँग होरी।
धरन गगन बिच शोर मचोरी।। १ ।।
चाँद सुरज तारागन मंडल।
उतर उतर आये घर छोड़ी।। २ ।।
शेषनाग और कुरम साज ले।
चढ़ पताल आये कर जोड़ी।। ३ ।।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण।
चार दिशा सब भई इक ठौरी।। ४ ।।
सुर नर मुनि जोगी बैरागी।
धूम धाम कुछ भइ है न थोड़ी।। ५ ।।
सागर कूप भरे सब रँग से।
मेरु डंड पिचकारी छोड़ी।। ६ ।।
भींज रही सखियाँ सब सँग की।
बार बार रँग प्रेम निचोड़ी।। ७ ।।
समा बँधा लीला अति उमगी।
काल बली अब जात ठगो री।। ८ ।।
सुरत अबीर गुलाल शब्द का।
अब सब के मुख जात मलोरी।। ९ ।।

लोभ मोह अहंकार विकारी।
घर इनका सब आज जलो री।।१०।।
धुन धधकार सुन्न की बरखा।
मुख उनका अब जात न मोड़ी।।११ ।।
अगम ख़ज़ाना मिला शब्द का।
त्याग दिया धन लाख करोड़ी।।१२ ।।
सुन्न महल सतलोक अटारी।
जाय चढ़ी और नाम लखो री।।१३ ।।
नइ नइ शोभा पुरुष पुराना।
कहत न आवे बचन थको री।।१४ ।।
राधास्वामी खेल खिलाया।
अनेक रूप यहाँ एक भयो री।।१५ ।।

।। छठा शब्द ।।

काया नगर में धूम मची है।
खेल रही अब सूरत होली।।१ ।।
छाय रही सतनाम निरख पद।
लाय रही धुन पुरुष अतोली[1]।।२ ।।
आसा मनसा कर पिचकारी।
गुन गुलाल घट भीतर घोली।।३ ।।

१ - जिसकी तोल न हो सके।

हँगता ममता धूर उड़ाई।
प्रेम अबीर लिया भर झोली।। ४ ।।
संपति रंभा[1] नाच नची है।
विपता नटनी अब मुख मोड़ी।। ५ ।।
रोग सोग दुख मार निकाले।
धार लई मन में गुरु बोली।। ६ ।।
जन्म जन्म के फंदा काटे।
खेली काल सँग आँख मिचौली।। ७ ।।
भक्ति भाव रँग माट भराया।
रंग रँगी मेरे मन की चोली।। ८ ।।
कुमति उड़ाय सुमति अब धारी।
मार मार माया सिर धौली।। ९ ।।

।। सातवाँ शब्द ।।

उमंड घुमँड कर खेली होली।
सुमति ज्ञान सँग भर लई झोली।। १ ।।
मार लई मैंने माया पोली।
चढ़के चली अब प्रेम खटोली।। २ ।।
गगन शिखर धुन निजकर तोली।
जड़ चेतन की गाँठ सब खोली।। ३ ।।

१ - अप्सरा।

सुरत निरत मेरी भई है अमोली।
फेरूँ जैसे पान तमोली।। ४ ।।
मन तन लाल भया जस रोली[1]।
सभी विकार डारे मैं ने रोली[2]।। ५ ।।
मोह नींद मैं बहुतक सो ली।
अब राधास्वामी मेरी रँग दी चोली।। ६ ।।
भरी नाम धन से हिये नौली[3]।
अब समझी सतगुरु की बोली।। ७ ।।
आसा मनसा तन से डोली।
अब नहिं करत काल मो से ठोली[4]।। ८ ।।

।। आठवाँ शब्द ।।

मेरे गुरु ने खिलाई प्रेम सँग होरी।
मैं तो होय रही सब जग से बौरी।। १ ।।
सील गुलाल अबीर छिमा का।
ता से मैं भर लई झोरी।। २ ।।
काम क्रोध दोउ खेलन आये।
मार मार उनका मुख मोड़ी।। ३ ।।

१ - लाल रंग। २ - रोल कर। ३ - बसनी, रुपया रखने की।
४ - ठठोली।

सुरत निरत दोउ सखियाँ सँग ले।
शब्द खोज को चाली दौड़ी।। ४ ।।
सुखमन नाका जाय हम घेरा।
बंकनाल पिचकारी छोड़ी।। ५ ।।
त्रिकुटी शब्द जाय हम पकड़ा।
धूम धाम कुछ भइ है न थोड़ी।। ६ ।।
हंस सभा जहँ मान-सरोवर।
प्रकट भई माया की चोरी।। ७ ।।
किंगरी नाद होत धुन भारी।
सुरत तार अपना नहिं तोड़ी।। ८ ।।
राधास्वामी दया रंग घट भरिया।
जनम मरन दुख दूर करो री।। ९ ।।

।। नवाँ शब्द ।।

गुरु आन खिलाई घट में होली।
धुन नाम लई तन अंतर खोली।। १ ।।
मन मार लई तिल ताला तोड़ी।
सुर्त फेर लई दल अंदर जोड़ी।। २ ।।
जुग बाँध लई गुरु से पट फोड़ी।
पद पाय गई त्रिकुटी गढ़ दौड़ी।। ३ ।।
सुन जाय रही सुर्त घर जब मोड़ी।
घर आय गई अपने भइ पोढ़ी।। ४ ।।

पँच इन्द्री पिचकारियाँ,
भर उल्टी छोड़ी।
गुन तीनों की जेवरी,
छिन माहिं जलोरी।। ५ ।।
हौं मैं ममता छोड़ कर,
चढ़ गगन चलोरी।
बिखरी धुनें समेट कर,
सब एक करो री।। ६ ।।
दृष्टि जोड़ नभ में धरो,
तब जोत लखोरी।
जोत फाड़ आगे धसो,
फिर सुन्न तकोरी।। ७ ।।
इस सुन की धुन सोध लो,
जस शंख बजोरी।
राधास्वामी एक पद,
यह कह्यो भलो री।। ८ ।।

।। दसवाँ शब्द।।

मेरी सुरत राधास्वामी जोड़ी।
घट में अब खेलूँगी होरी।। १ ।।
करम भरम की धूर उड़ाई।
दुष्ट दूत सब का सिर फोड़ी।। २ ।।

गगन मँडल में माट भराया।
जुगत जतन कर मन को मोड़ी।। ३ ।।
अनहद धुन अब धमकन लागी।
बिजली चमक और उठी घनघोरी।। ४ ।।
तन मन की सब सुद्ध गई है।
जग से कुल नाता तोड़ी।। ५ ।।
काल जाल के टुकड़े कीन्हे।
सुन्न मँडल तब सुरत बहोरी[१]।। ६ ।।
जम जंदार[२] खड़ा मेरे द्वारे।
पल पल छिन छिन करत निहोरी[३]।। ७ ।।
जड़ चेतन की गाँठ खुलानी।
ममत माया से तिनका तोड़ी।। ८ ।।
सुरत छड़ी[४] अब चढी है अटारी।
पकड़ गही अब धुन की डोरी।। ९ ।।
पंचमुखी पिचकारी छोड़ी।
गई हूँ पिया पै मैं दौड़ी दौड़ी।। १०।।
ऐसी रंगी मेरी सुरत चुनरिया।
अगम पुरुष मोसे करत निठोरी[५]।। ११ ।।
धन राधास्वामी ऐसा खेल खिलाया।
तब ऐसी मैंने खेली है होरी।।१२ ।।

* * * * *

१ - उल्टी। २ - दूत। प्यादा। ३ - ख़ुशामद। ४ - अकेली। ५ - ठठोली।

।। ग्यारहवाँ शब्द ।।

राधास्वामी घर बाढ़ो रंग।
मैं तो खेलूँगी ऐसी होली उमंग।। १ ।।
सुरत निरत की ले पिचकारी।
राधास्वामी पै भर भर डारी।। २ ।।
चाँद सुरज दोउ क़ुमक़ुम कीन्हे।
प्रेम गुलाल से भर भर लीन्हे।। ३ ।।
सुखमन हौज़ भरा अब भारा।
बंकनाल का छुटा फुहारा।। ४ ।।
सहस[1] धार होय त्रिकुटी पारा।
पहुँचा जाया सुन्न के द्वारा।। ५ ।।
हंसन से जाय खेली होरी।
बहन लगी जहँ अमी की मोरी।। ६ ।।
अनहद बाजे अद्भुत बाजें।
राधास्वामी खुल खुल गाजें।। ७ ।।
ऐसी होली खेलो मेरे भाई।
सब संतन के यह मन भाई।। ८ ।।

।। बारहवाँ शब्द।।

आओ री सखी जुड़ होली गावें।
कर कर आरत पुरुष मनावें।। १ ।।

१ - हज़ार।

तन मन क़ुमक़ुम भर भर मारें।
छिड़क रंग राधास्वामी रिझावें।। २ ।।
लाल गुलाल वस्त्र पहिनावें।
देख देख रँग रूप निहारें।। ३ ।।
सुरत अबीर थाल भर लावें।
नैनन की पिचकार छुड़ावें।। ४ ।।
राधास्वामी अपने हिये बिच धारें।
उन सँग निस दिन प्रेम बढ़ावें।। ५ ।।
धरन गगन बिच धूम मचावें।
राधास्वामी अब ऐसी होली खिलावें।। ६ ।।
चाँद सूरज दोउ खैंच मिलावें।
सुखमन नदियाँ रंग बहावें।। ७ ।।
सुरत चुनरिया रंग रँगावें।
भींजत निरत खोज धुन पावें।। ८ ।।
दल बादल अब अधिक सुहावें।
लाल लाल चहुँ दिश घिर आवें।। ९ ।।
रंग भरे रँग ही बरखावें।
अचरज लीला आन दिखावें।। १० ।।
अस होली कहो कौन खिलावें।
राधास्वामी भेद बतावें।। ११ ।।

* * * * *

।। बचन चालीसवाँ।।

।। सावन, हिंडोला व झूला।।

।। पहला शब्द।।

सावन मास आस हुइ झूलन।
गरजत गगन मगन मन फूलन।। १ ।।
सखियाँ सज सज आईं ढँढूलन[१]।
प्रेम भरी सुख सहज अमूलन[२]।। २ ।।
कहा कहूँ बतियाँ नहिं खूलन।
देख देख छबि मन सुध भूलन।। ३ ।।
गर्जन घन और बिजली चमकन।
श्याम घटा मानो अति गज हूलन।। ४ ।।
देखत सुरत चढ़ी पद मूलन।
झूलत शब्द हिंडोल अतूलन।। ५ ।।
सुन सुन धुन काटें सब सूलन।
मान-सरोवर मोती रूलन।। ६ ।।
राधास्वामी कहत सरस यह सावन।
देख देख सब करत ममूलन[३]।। ७ ।।

।। दूसरा शब्द।।

सावन मास सुहागिन आई।
अपने पिया सँग झूलन धाई।। १ ।।

१ - देखने। २ - अनमोल। ३ - आनंद।

श्याम घटा अब चहुँ दिस छाई।
गरज गगन अति धूम मचाई।।२।।
नई रागनी तान सुनाई।
चमक धमक सँग खेल दिखाई।।३।।
अमी धार छिन छिन बरखाई।
सुखमन नदियाँ प्रेम भराई।।४।।
गगन हिंडोला झोका लाई।
सखियाँ सँग की उमगत आई।।५।।
रस भर भर पिया संग लुभाई।
दामिन चमचम अधिक सुहाई।।६।।
मोर पपीहा रटन लगाई।
अचरज बानी घोर सुनाई।।७।।
राधास्वामी छबि निरखत हरखाई।
अजब समा सब देत बधाई।।८।।

।। तीसरा शब्द।।

सुरत तू चेत री, अब सावन आया।
गगन चढ़ झाँक री, गुरु खेल दिखाया॥१॥
जहाँ पड़ा हिंडोला नाम का,धुन डोर बँधाया।
सखी सहेली संग ले,जग काम न आया॥२॥
मैं विरहिन पिय दरस की,कहिं चैन न पाया।
अब खुल खेलूँ सुन्न में,गुरु भेद जनाया॥३॥

रिमझिम वर्षा हो रही,मन मोर बुलाया।
पी की री बतियाँ सुन रही,मन चाव[1] बढ़ाया॥ ४ ॥
घट में कर सिंगार,पिया को आन रिझाया।
सखियन साथ बिलास यह,राधास्वामी गाया॥ ५ ॥

।। चौथा शब्द।।

राधास्वामी झूलत आज हिंडोला।
गगन मँडल धुन अद्‌भुत बोला।। १ ।।
सुरत निरत सखियाँ मिल आईं।
झूमत घूमत रूप समाईं।। २ ।।
नैन निहारत दरस पुकारत।
राधास्वामी २ नाम दृढ़ावत।। ३ ।।
चाँद सुरज दोउ खंभ सजे रे।
सुखमन चौकी लाल जड़े रे।। ४ ।।
चरन धार राधास्वामी बिराजे।
प्रेम मगन सब प्रीतम गाजे।। ५ ।।
अजब समा अचरज यह औसर।
हंस हंसनी छोड़ा सरवर।। ६ ।।
देख बिलास मगन हुए भारी।
सुध बुध भूले देह बिसारी।। ७ ।।

१ - उमंग, शौक़।

धूम मची अब अमर नगर में।
झूलत राधास्वामी बैठ अधर में।। ८ ।।

।। पाँचवाँ शब्द।।

अजब यह बँगला लिया सजाय।
हंस भी रीझे देखत ताहि।। १ ।।
बैठ गये राधास्वामी ता में आय।
करें सब आरत सुर सँग गाय।। २ ।।
आज यह घड़ी सुहावन पाय।
गई अब सब की दूर बलाय।। ३ ।।
हुई मैं पावन[1] सरन समाय।
कहूँ क्या बँगला अजब दिखाय।। ४ ।।
रही मैं राधास्वामी महिमा गाय।
सेत पद बँगला मोहिं सुहाय।। ५ ।।

।। छठा शब्द।।

सुरत मेरी चढ़ गई गगन अटरियाँ।
मैं धीरे धीरे चढ़ गई गगन अटरियाँ।।१।।
मैं लख लिये राधास्वामी सुघड़[2] सुजनियाँ।
मोहिं डार दई गल में प्यारे गल बहियाँ।
मैं धारा निज नैना में ज्ञान अँजनियाँ।।२।।

१ - पवित्र। २ - सुन्दर

।। सातवाँ शब्द ।।

पाय गई राधास्वामी हो गई सुहाग भरी।
खिल गये कँवला मैं पाय गई बन्ना[१]॥१॥
निहार लई शोभा मैं पार गई गगना।
छोड़े विकार पाई सतगुरु सरना॥२॥

।। आठवाँ शब्द ।।

सुरत आज झूल रही।
गुरु मिले झुलावनहार।। १ ।।
वर्षा ऋतु सखियाँ हरखानी।
आईं सहेली लार।। २ ।।
शब्द हिंडोला पड़ा गगन में।
झूल रही सुर्त नार।। ३ ।।
धुन की डोरी खिंची अधर में।
होत जहाँ झनकार।। ४ ।।
सभी सुहागिन गावन लागीं।
कर कर प्रेम सिंगार।। ५ ।।
अजब अखाड़ा रचा सुन्न में।
देखें नित्त बहार।। ६ ।।
गुरु सिंहासन धरा अधर में।
बैठे लीला धार।। ७ ।।

१ - दुलहा

दर्शन करत हिया उमगावत।
खावत अमी अहार।। ८ ।।
भाग सरावत[1] भक्ति बढ़ावत।
भूल गई संसार।। ९ ।।
अधर धाम सतगुरु का डेरा।
पहुँची खोल किवाड़।। १० ।।
करे अनंद सदा सुख सागर।
खोये सभी विकार।। ११ ।।
आरत समा मिला भागन से।
होत जीव उपकार।। १२ ।।
खेलें बिगसें[2] संग गुरू के।
पाया भेद अपार।। १३ ।।
सहस कँवल में खेल जमाया।
खोला त्रिकुटी द्वार।। १४ ।।
सुन्न नगर में धूमा धामी।
बजत सारँगी सार।। १५ ।।
हंस हंसनी रचा अखाड़ा।
अचरज शोभा धार।। १६ ।।
कौन कहे महिमा उस घर की।
अक्षर का दरबार।। १७ ।।

१ - महिमा करती हुई । २ - ख़ुश होवें ।

सुरत हंसनी देख तमाशा।
आगे को पग धार।।१८ ।।
महासुन्न मैदान अनूपा।
पहुँची सतगुरु लार।।१९ ।।
सुन सुन शब्द हुई मस्तानी।
भँवरगुफा बंसी झनकार।।२० ।।
सत्य धाम सतनाम पियारा।
छिन छिन मैं बलिहार।।२१ ।।
अलख पुरुष का खोज लगाया।
कोटि अरब सूरज उजियार।।२२ ।।
अगम नाम का सुमिरन पाया।
चली प्रेम की धार।।२३ ।।
आगे महल अनूप दिखाना।
राधास्वामी अगम अपार।।२४ ।।
कँगुरे कँगुरे नूर अपारा।
बैठे शोभा धार।।२५ ।।
सुरत निरत दोउ जाय समानी।
पहुँची सब के पार।।२६ ।।
राधास्वामी अगम अनामी।
कीन्हा उनसे प्यार।।२७ ।।

* * * * *

।। बचन इकतालीसवाँ।।

।। फुटकल शब्द।।

।। पहला शब्द।।

खोजत रही पिया पंथ,
मर्म कोइ नेक न गाया।
रैन दिवस बेचैन, तरसते जन्म बिताया।। १ ।।
करता रहा पुकार,
दाद[1] को कहीं न पाया।
भेख भिखारी जगत गुरू, सब भरमें माया।। २ ।।
शब्द बिना ख़ाली फिरें, सब धोका खाया।
अब मिल गये पूरे सतगुरू,
उन भेद सुनाया।। ३ ।।
सुरत सार लखवाय के,
फिर गगन चढ़ाया।
गगन मँडल में पहुँच कर,
अनहद बजवाया।। ४ ।।
जपी तपी मौनी बकी,जत जोग चलाया।
यह मारग कोई ना कहे, दुर्लभ दरसाया।। ५ ।।
धन्य संत और सतगुरू,
जिन सार बुझाया।

१ - इन्साफ़ ।

मनमत जग में फैलिया,
गुरु मत नहीं आया।। ६ ।।
सुरतवंत बिरले कोई,
जिन शब्द कमाया।
राधास्वामी भेद दे, सब जीव चिताया।। ७ ।।

।। दूसरा शब्द ।।

सुन्नी सुरत शब्द बिन भटकी।
अटकी मन सँग दुख पाई।। १ ।।
भरमत फिरे चक्र की नाई।
उलट गई तन में छाई।। २ ।।
विष खावत जग में झख मारत।
समझ सोच धुर नहिं लाई।। ३ ।।
सोवत रही मोह अँधियारी।
जागन चौंप नहीं पाई।। ४ ।।

कड़ी १ — जो सुरत कि सुन्न यानी चैतन्य मंडल की बासी थी, शब्द की धार को छोड़ कर इस संसार में भटक गई और मन का संग करके दुख पाती है।

कड़ी २ — और चक्र यानी चकई के मुवाफ़िक़ चंचल होकर भरम रही है और उलटी होकर देह में फैल गई।

कड़ी ३ — और भोगों में जो ज़हर से भरे हुए हैं, बर्त कर जगत में टक्करें खाती है और अपने धुर मुक़ाम की समझ नहीं लाती है।

कड़ी ४ — और मोह के अन्धकार यानी रात में बेहोश सो रही है और जागने का इरादा नहीं करती।

इन्द्री के बस पड़ी विकल होय।
काल कला घट में छाई।। ५ ।।
भोगन में अति कर लिपटानी।
रोग सोग दिन दिन खाई।। ६ ।।
बंधन बँधी जगत में गाढ़ी।
बाढ़ी ममता रस पाई।। ७ ।।
जग व्यवहार लगा अति प्यारा।
धारा उल्टी यहाँ आई।। ८ ।।
बिना मेहर सतगुरु पूरे के।
कस उल्टे कस घर जाई।। ९ ।।

कड़ी ५ – और इन्द्रियों के बस होकर हर वक़्त चंचल और बेकल हो रही है और इस सबब से काल की कला यानी ज़ोर घट में व्याप रहा है।

कड़ी ६ – और भोगों में लिपट कर दिन दिन रोग और सोग सहती है।

कड़ी ७ – इस तरह जगत में बन्धन इसके ख़ूब मज़बूत हो गये और थोड़ा थोड़ा रस पाकर हर एक चीज़ में पकड़ यानी मोह बढ़ गया।

कड़ी ८ – और जगत में बर्ताव प्यारा लग कर जो धार कि सुरत की ऊपर को चढ़नी चाहिये थी, वह उलटी देह और संसार में बहने और बिखरने लगी।

कड़ी ९ – जब ऐसा हाल हो गया तो अब बिना मेहर पूरे सतगुरु के मुख इसका ऊपर यानी निज घर की तरफ़ कैसे मोड़ा जावे।

सुखमन द्वार गगन का नाका।
कठिन हुआ नहिं सुधि पाई।।१०।।
श्याम धाम से हुई न न्यारी।
सेत पदम कस कस पाई।।११ ।।
धुन की छाँट होत नहिं भाई।
कैसे सूरत धुन पाई।।१२ ।।
घट में बैठ निरख दृग द्वारा।
यहाँ से राह अधर जाई।।१३ ।।
घाटा तोड़ काल मति मोड़ो।
कर्म काट ऊँचे जाई।।१४ ।।

कड़ी १०— और इसी सबब से आकाश का द्वारा जो कि पहला सुखमन स्थान है, खुलना कठिन हो गया बल्कि उसकी सुध भी भूल गई।

कड़ी ११— और श्याम स्थान यानी काल के घेर से जुदा न हो सकी। फिर सेत धाम जो उसका निज स्थान है, कैसे पावे ?

कड़ी १२— और इसी सबब से धुन की छाँट भी नहीं हुई। फिर निज धुन को कैसे प्राप्त होवे ?

कड़ी १३— अब चाहिये कि अपने घट में निश्चल होकर और नेत्रों के द्वारे को झाँक कर अन्दर को चले। यही सड़क ऊँचे और निज देश की है।

कड़ी १४— पहली घाटी को कि जिसकी हद त्रिकुटी तक है, तोड़ कर और काल का मुख मोड़ कर और करमों को काटते हुए ऊँचे को चलना चाहिये।

राधास्वामी कहत सुनाई।
समझ समझ पग धर भाई।।१५ ।।

।। तीसरा शब्द।।

सुरत चल बावरी, क्यों घर बिसराया।
सतगुरु के सँग लाग री, धुर ले पहुँचाया।। १ ।।
घट पट पश्चिम खोल कर,पूरब दिखलाया।
अजब खेल अद्भुत दशा, हंसन परसाया।। २ ।।
संत मंडली सेत दीप, जा जोत जगाया।
मौज निहारी सत्तपुरुष, धुन बीन सुनाया।। ३ ।।
अर्ध[1] उर्ध[2] के मध्य में, तीरथ परसाया।
अंतर गति नहिं बूझते, तिन जन्म गँवाया।। ४ ।।
बिन सतगुरु यह बाट,
कहो कोइ कैसे पाया।
मेहर करें जा पर धनी, फिर रंक[3] न राया[4]।। ५ ।।
ग़ोता मार समुद्र में, मुक्ता चुन लाया।
रतन माल हिरदे धरी, बेहद पहुँचाया।। ६ ।।
निरत सखी अगुवा हुई, जा शब्द समाया।
राधास्वामी नाम यह, कोइ गुरुमुख पाया।। ७ ।।

कड़ी १५— राधास्वामी दयाल फरमाते हैं कि इस रास्ते में निरख निरख और परख परख कर क़दम रखना चाहिये।

१ - नीचा। २ - ऊँचा। ३ - कंगाल। ४ - राजा।

।। चौथा शब्द।।

घट भीतर तू जाग री, हे सुरत पुरानी।
बिना देश झाँकत रही, सब मर्म भुलानी।। १ ।।
काल दाव मारत रहा, पर तू न चितानी।
अब सतगुरु की मेहर से, मौसम बदलानी।। २ ।।
नर देही पाई सहज, सतसंग समानी।
सुरत घाट अब पाइया, धुन शब्द पिछानी।। ३ ।।
यह मारग संतन कहा, पंडित नहिं जानी।
जिन यह मारग पाइया, सो छूटे खानी।। ४ ।।
श्याम कंज के घाट से, सूरत अलगानी।
चौथे पद में जा मिली, जहाँ अचरज बानी।। ५ ।।
पंचम षष्टम पाय के, राधास्वामी जानी।
भाग सुहागिन पाइया, को करे बखानी।। ६ ।।

।। पाँचवाँ शब्द।।

सुरत घर खोज री। ऋतु मिलन मिली ।।१ ।।
शब्द घर सोच री। चढ़ महल चली ।।२ ।।
चन्द्र पद पाय अली। ऋतु शरद खिली ।।३ ।।
घूम कर जाय अड़ी। तिल घोट पिली ।।४ ।।
धुन धाम रली। गइ गगन गली ।।५ ।।
पिया सँग खेल रही। सब कर्म दली ।।६ ।।

बस्ती तन छूट गई। खिली कँवल कली ।।७।।
गुन इन्द्री त्याग दई। जड़ काल हिली ।।८।।
राधास्वामी ध्यान धरी।
बिसरूँ नहिं एक पली।। ९ ।।

।। छठा शब्द।।

चल अब सजनी पिया के देश।
मिल अब गुरु से कर आदेश[1]।। १ ।।
लखो फिर घट में पद जाय शेष।
थके जहँ ब्रह्मा विष्णु महेश।। २ ।।
गई नहिं उनकी वहाँ कुछ पेश।
हार कर बैठे गौर गणेश।। ३ ।।
काल ने मारा गहि कर केश।
संत बिन किया न घट परवेश।। ४ ।।
रहे सब क़ैदी माया देश।
बचे नहिं भोगें काल कलेश।। ५ ।।
मिलें जो सतगुरु कहें संदेश।
मिटे फिर काल कर्म का लेश।। ६ ।।
धरा अब सूरत हंसा भेष।
काल के तोड़ दिये सब नेश[2]।। ७ ।।

१ - प्रणाम। २ - डंक।

हुआ मैं राधास्वामी दर[1] दरवेश[2]।
हुए अब राधास्वामी मेरे ख़ेश[3]।। ८ ।।

।। सातवाँ शब्द।।

सखी चल देख बहार पिया की।
चढ़ो घट सेज सँवार पिया की।। १ ।।
सुनो धुन गगना पार पिया की।
निरख छबि देखी सार पिया की।। २ ।।
अमी रस आई धार पिया की।
सुर्त होगइ प्यारी नार पिया की।। ३ ।।
मैं होगइ जग को जार पिया की।
गुरु कीन्ही सुरत गलहार पिया की।। ४ ।।
राधास्वामी खिलाई बाड़ पिया की।
अब झाँकी गली अगार पिया की।। ५ ।।

।। आठवाँ शब्द।।

गुरु निरखोरी, हिये नैन खुलें।
गुरु देखो री।।टेक।।
घट के पट खोल चली, दल काल दले।
गुरु पेखो री।। १ ।।

१ - दरवाजा। २ - फक़ीर। ३ - निज।

चित चोर लिया, गुरु चरन अली।
मन नाव चढ़ी, सतगुरु बल्ली।।२ ।।
भौजल के पार पिली, गुरु पदम रली।
धुन ध्यान मिली, सुर्त कँवल खिली।।३ ।।
सब कर्म जली, निःकर्म चली।
घट खोज पिली, चढ़ गगन गली।।४ ।।
विरह बान खली, तब कँवल खिली।
गुरु रूप लखी, पिया पास पली।।५ ।।
अमृत घट धार चली,
निस दिन मैं न्हाऊँ अली।
मेरा भाग उदय, सत शब्द मिली।।६ ।।
काल करम घर आग लगी।
सब पूँजी माया जाल जली।।७ ।।
फिर खोदत खोदत खान खुली।
क्या हीरे मोती लाल बली।।८ ।।
निज काया काल की जात गली।
माया दल मारा दलन दली।।९ ।।
मैं सुमति दुआरा खोल चली।
गुरु चरन पकड़ धुर धाम वली।।१०।।
अब आरत पूरन करत चली।
गुरु प्रेम बढ़ावत घाट घुली।।११ ।।

गुरु चरन पकड़ कहुँ नाहिं टली।
फिर चरन सरन में आन हिली।।१२ ।।
दम दम मेरे चरन अधार कली।
कल नाहिं पिया बिन बे-अकली[1]।।१३ ।।
कोइ परखत वेदन[2] होत वली।
नहिं जानत वेद कतेब तली[3]।।१४ ।।
राधास्वामी चरन पकड़ हेली।
तन मन से सूरत अधर चली।।१५ ।।

।। नवाँ शब्द।।

घुड़ दौड़ करूँ मैं घट में।
मुझे मिले सिपाही संत री।। १ ।।
मैं चेत चली अब तट में।
घट आदि अनादी अंत री।। २ ।।
सूरत की मूरत निरत चली।
पिया पाये सरोवर तंत री।। ३ ।।
मन तोड़त तन अकुलाना।
क्या वर्ण बताऊँ जंतरी।। ४ ।।
मेरे कँवल दलन पर भँवरा।
क्या करूँ गुनावन कंत री।। ५ ।।

१ - व्याकुल। २ - तकलीफ़। ३ - नीचे।

अब परसूँ पिया पद आज।
पढ़ूँ गुरु मंत री।। ६ ।।
मेरे भाग बढ़े क्या भाखूँ।
शशि सूर अनेकन दंत री।। ७ ।।
तारागन गगन घुमाये।
गुरु महिमा करूँ बे-अंत री।। ८ ।।
मैदान उलट घट झाँकी।
धर मारे काल गजंत री।। ९ ।।
मेरे सतगुरु सूरे पूरे।
दल मारें काल अनंत री।। १०।।
रस वेद राज रजधानी।
गुरु बैठे आज मसंद री।। ११ ।।
मेरे गुरु का दरस कोइ देखे।
हो जावे हूर परंद री।। १२ ।।
धुन शब्द सुनी जहाँ नाद री।
जहाँ हारे कृष्ण और नंद री।। १३ ।।
यह भेद मिला मोहिं अब की।
घट कीन्हा आदि मथंत री।। १४ ।।
मैं पकड़े चरन गुरू के।
नहिं बिछड़ूँ कोटि जुगंत री।। १५ ।।

क्या शेष महेश न जाने।
मेरी महिमा कहत कहंत री।।१६ ।।
हरि द्वारे अटके सबही।
सतगुरु पद जानें न पंथ री।।१७ ।।
यह अगम भेद रस भारी।
कोइ पावे प्रेम मनंत री।।१८ ।।
मैं किंकर दासन दासा।
क्या बरनूँ शोभा अंत री।।१९ ।।
गुरु मिले दयाल गुसाईं।
मैं पहुँची धुर घर कंत री।। २०।।
कोटिन रवि रोम बिराजत।
क्या शोभा बरनूँ संत री।।२१ ।।
राधास्वामी दीन दयाला।
यह भाखें बचन पुखंत री।।२२ ।।

।। दसवाँ शब्द।।

सुरत रत घोर सुनावत भारी।
गुरु चरन कँवल मेरे हिये अधारी।। १ ।।
मैं चरन गुरू पर जाऊँ बलिहारी।
जग भोग लगे सब खारी।। २ ।।
मैं मारूँ जगत कुल तारी।
क्यों भूलो भूत अनाड़ी।। ३ ।।

गुरु मंत सुनो अब आ री।
नहिं नर्कन बीच दुखारी।। ४ ।।
गुरु महिमा अगम सुना री।
नहिं जोत निरंजन गा री।। ५ ।।
गति ब्रह्मा विष्णु कहा री।
क्या देवी देव पुकारी।। ६ ।।
सब बहे चौरासी धारी।
गुरु बिन कोइ उतरे न पारी।। ७ ।।
या ते सब पकड़ो गुरु चरना री।
क्यों बहते भौजल धारी।। ८ ।।
गुरु आदि पुरुष जग आये।
सब हंस जीव चेताये।। ९ ।।
कौवों से दूर रहाये।
निज प्रेमी खैंच बुलाये।। १० ।।
तब काल करम मुरझाये।
माया भी सिर धुन रही पछताये।। ११ ।।
गुरु अगम देश अब दीन्हा।
मैं कहाँ लग बरनूँ महिमा।। १२ ।।
मुझे लगे गुरू अति प्यारे।
ज्यों चन्द्र चकोर निहारे।। १३ ।।

गुरु रूप दीप[1] उजियारे।
मैं पतँग समान तन जारे।।१४ ।।
चुम्बक लख लोह खिंचा रे।
यों चरन गुरू मैं धारे।।१५ ।।
मैं जिऊँ अधार गुरु प्यारे।
मैं बंधन तोड़ तरा[2] रे।।१६ ।।
अब चढ़ूँ गगन घट पारे।
वहाँ से सतपुर पग धारे।।१७ ।।
लख अलख अगम उजियारे।
राधास्वामी धाम समा रे।।१८ ।।
यह आरत करूँ सदा रे।
राधास्वामी फेर बुला रे।।१९ ।।

।। ग्यारहवाँ शब्द।।

गुरू सँग जागन का फल भारी।।टेक।।
सेवा मिले दरस पुनि पावे।
बचन सुनत गुलज़ारी।। १ ।।
रोम रोम हर्खत चित मंदर।
अन्दर खिलत कियारी।। २ ।।
शोभा अधिक सुगन्धित बनबन।
भँवर चक्र फुलवारी।। ३ ।।

१ - दीपक। २ - तर गया।

इन्द्री द्वार कँवल दल न्यारी।
सूरत अग्र[1] चितारी।। ४ ।।
नैन बैन सतगुरु सुन निरखत।
कँवल खिलत उजियारी।। ५ ।।
मारग छेक[2] झकत माया मन।
निरत होत सुखियारी।। ६ ।।
सागर तोल बुन्द गति सिन्धा।
अधर चढ़त पिउ प्यारी।। ७ ।।
कोमल धाम कँवल रवि भूमी।
भावन भार निकारी।। ८ ।।
श्यामा सरस नील गिर सारी।
धारी धरन उठा री।। ९ ।।
गुरु पद नाम अगम गम प्यारी।
को कह सकत पुकारी।। १०।।
सूरत चढ़ी अधर पद डंडा।
अंडा फोड़ निहारी।। ११ ।।
मैं तो अजान मर्म नहिं जाना।
राधास्वामी कीन्ह दया री।।१२ ।।

* * * * *

१ - आगे। २ - रोक।

।। बारहवाँ शब्द ।।

निरखो री कोई उठ कर पिछली रतियाँ।।टेक।।

माया छलन तरँग मन रोकन।
घट में कँवल खिलतियाँ।। १ ।।
सीतल सागर मीन मर्म जस।
न्हावत मल मल गतियाँ।। २ ।।
सिला उठाय कँवल दल फोड़त।
तोड़त द्वार सुनत जहाँ बतियाँ।। ३ ।।
चमक जोत धारा धुन झकियाँ।
मन माया कूटत जहाँ छतियाँ।। ४ ।।
हरख हरख धावत पद उत्तम।
तम संसार सकल बिनसतियाँ।। ५ ।।

कड़ी १ — पिछली चार घड़ी पहले सूरज के निकलने से सुबह तक रात के वक़्त अभ्यास करने से माया को छलने और मन की तरंग रोकने की किसी क़दर ताक़त आवेगी और घट में कँवल का भी दर्शन होगा।

कड़ी २ — तब सुरत मछली की तरह सीतल सागर में अश्नान करके सफ़ाई हासिल करेगी।

कड़ी ३ — पहले परदे को उठा कर और श्याम कँवल का दल फोड़ कर यानी तीसरे तिल के अन्दर सुरत ने धस कर शब्द की आवाज़ सुनी।

कड़ी ४ — जोत की चमक और वहाँ की धुन की धार मालूम हुई और मन और माया वहाँ पर छाती कूटने लगे कि यह अभ्यासी सुरत हमारी हद्द से निकल गई।

कड़ी ५ — और ख़ुश होकर सुरत वहाँ से आगे को बढ़ती चली और संसार यानी त्रिलोकी की माया का अँधेरा दूर हुआ।

मौज निहार पुरुष घर पावत।
धावत सुरत निरतियाँ।। ६ ।।
पीवत अमी झकोल कँवल पद।
केल करत सत मतियाँ।। ७ ।।
को कह सके नाम की महिमा।
संत बतावत जो गति पतियाँ।। ८ ।।
राधास्वामी कहत सुनाई।
मूल मिलो चढ़ हटियाँ।। ९ ।।

।। तेरहवाँ शब्द।।

सोधत सुरत शब्द धुन अंतर।
घटत तिमिर नभ बासी।। १ ।।
चमकत चाँप धनुष गति न्यारी।
कंज जोत छिटकत उजियासी।। २ ।।

कड़ी ६ — राधास्वामी दयाल की मौज के अनुसार सुरत और निरत सत्तलोक की तरफ़ को दौड़ने लगीं।

कड़ी ७ — सुरत ऊपर को चढ़ कर और दसवें द्वार में अमी का रस लेती हुई और वहाँ से आगे बढ़कर सत्त शब्द के साथ बिलास करती हुई चलती है।

कड़ी ८ — संतों के नाम की महिमा कोई नहीं कर सकता है। वे आप ही उसकी गत और पत वर्णन करते हैं।

कड़ी ९ — राधास्वामी दयाल समझा कर फरमाते हैं कि मूल पद से मिलना चाहिये, रास्ते के मुक़ामात तै करके।

कड़ी १ — अभ्यासी सुरत, शब्द धुन छाँट कर पकड़ती हुई नभ में पहुँची और नीचे के अन्धकार से न्यारी हो गई।

कड़ी २ — इस तौर से तीर की भाल के मुवाफ़िक़ चमकती हुई

गगन गंग धारा उठ धावत।
होत जहाँ निर्मल गति स्वाँसी।। ३ ।।
जमुना तीर श्याम खुल खेलत।
गोप गूजरी करत बिलासी।। ४ ।।
जसुदानंद कंस रिपु सुन्दर।
धमक सुनत तज आसी।। ५ ।।
धूमत अधिक धधक धुन धावत।
पावत काल तरासी।। ६ ।।
बिमल नगर जहाँ घोर अखाड़ा।
खोजत रही नाम गति पासी।। ७ ।।

तीसरे तिल से जो कि धनुष स्थान है पार होकर जोत का प्रकाश देखने लगी।(धनुष स्थान इस सबब से कहा कि दोनों आँखों से धारें कमान के मुवाफ़िक़ मिलती हैं)

कड़ी ३ – अब वहाँ से (अर्थात् सहसदल कँवल से) सुरत की धार जो कि गंगा की धार है, गगन की तरफ़ को दौड़ी जहाँ पहुँच कर प्राण निर्मल होते हैं।

कड़ी ४ – और रास्ते में जमुना के किनारे (अर्थात बाईं तरफ़) मन खुल कर सैर करता जाता है और सुरत भी उसके बिलास को देखती जाती है (गोपी रूप गूजरी अर्थात सुरत जो इन्द्रियों से न्यारी हो गई है।)

कड़ी ५ – और वही मन जो कि कृष्ण है ऊपर की आवाज़ सुन कर जगत की आस छोड़ कर,

कड़ी ६ – निहायत धूम धाम के साथ धुन की धधकार पकड़ कर ऊपर को दौड़ता है और काल मुरझाता जाता है।

कड़ी ७ – चढ़ते चढ़ते सुरत बिमल नगर (अर्थात सुन्न) में जहाँ हंसों के अखाड़े जमा हैं, पहुँची और नाम की गति वहाँ खोज कर अच्छी तरह से पहचानी।

मीन मानसर भँवर कंज पर।
भृंगी होत समझ गुन तासी।। ८ ।।
राधास्वामी उठत धाम धुन।
बैठ मगन अविनासी।। ९ ।।

।। चौदहवाँ शब्द।।

मेल करो निज नाम गुसइयाँ।
मेल करो निज नाम।।टेक।।
गुरु के चरन धार रहुँ हिय में।
खुले सेत और श्याम।। १ ।।
दुक्ख हटावन खेद मिटावन।
टारन काल और जाम।। २ ।।
ऐसे गुरु का ध्यान सम्हारन।
पहुँच तिरकुटी धाम।। ३ ।।
मन और सुरत मान मद त्यागे।
खोज लिया सतनाम।। ४ ।।
उल्टी घाटी चढ़ कर झाँकी।
सीतल हुई छुटी कलि धाम।। ५ ।।

कड़ी ८ – फिर सुरत मछली की तरह मानसरोवर में और भँवर की तरह गुफा में सैर करती हुई सत्तलोक में पहुँच कर भृंगी अर्थात सतगुरू स्वरूप की गति को प्राप्त हुई।

कड़ी ९ – और वहाँ से राधास्वामी धाम में राधास्वामी धुन सुनती हुई पहुँच कर मगन हो गई और अविनाशी रूप होकर वहाँ विश्राम किया।

मैं चकोर चंदा धुन पाई।
छूट गई दिश बाम[1]।। ६ ।।
काल नगर की हद्द छुड़ानी।
दयाल गुरू दीन्हा आराम।। ७ ।।
सुरत समानी शब्द ठिकानी।
पाया सुन्न गिराम[2]।। ८ ।।
आरत करूँ प्रेम रस भीनी।
सतगुरु चरन मिला विश्राम।। ९ ।।
राधास्वामी नाम अनामी।
भेद दिया अब मूल मुक़ाम।। १०।।

।। पंद्रहवाँ शब्द।।

भरमी मन को लाओ ठिकाने।
प्रीति लगे गुरु चरन समाने।। १ ।।
दुबिधा छूटे मति बदलाने।
सुमिरन टेक तुम्हारी आने।। २ ।।
तुम बिन भर्म भुलाना भारी।
जहाँ तहाँ की अटक सम्हारी।। ३ ।।
बिन सतसंग बूझ नहिं आवे।
भाग बिना सतसंग न पावे।। ४ ।।

१ - बाईं। २ - गाँव।

क्यों कर कहूँ व्योंत नहिं कोई।
तुम दयाल कुछ कहो बिलोई।। ५ ।।
चरनामृत परशादी देना।
और उपाव नहीं क्या कहना।। ६ ।।
इतना काम सदा तुम करना।
तो कारज उसका भी सरना।। ७ ।।
उसकी तरफ़ से आरत करो।
प्रीत प्रतीत चित्त में धरो।। ८ ।।
तब कुछ फल पावेगा थोड़ा।
तो मन मत जावे चित मोड़ा।। ९ ।।
राधास्वामी कहें समझाई।
करो आरती प्रीति लगाई।। १० ।।

।। सोलहवाँ शब्द ।।

सुर्त बन्नी गुरु पाया बन्ना।
देख दरस छिन छिन मन भिन्ना।। १ ।।
तुरिया घोड़ी सहज सिंगारी।
धीरज पाखर ता पर डारी।। २ ।।

कड़ी १ — प्रेमी सुरत को जब सतगुरु प्रीतम मिले, तब उनका दर्शन करके मन छिन छिन मगन हुआ।

कड़ी २ — तुरिया यानी चैतन्य आत्मा की धार को घोड़ी बनाकर उस पर धीरज की पाखर डाली, यानी धीरज के साथ उस पर सतगुरु सवार हुए।

चाँद सुरज दोउ करी रकाबें।
गगन ज़ीन ता पीठ धरावें।। ३ ।।
बिजली पवन चाल चली घोड़ी।
फेर लगाम एड़ दे मोड़ी।। ४ ।।
हीरे लाल झालरें मोती।
माणिक पन्ना वारूँ जोती।। ५ ।।
ता पर बन्ना करी असवारी।
बिजली चाल पवन धधकारी।। ६ ।।

कड़ी ३ – चाँद सूरज यानी इड़ा और पिंगला की रकाबें बनाईं और गगन यानी चैतन्य आकाश रूपी ज़ीन उस पर धरी।

कड़ी ४ – इस तरह सतगुरु उस तुरिया की घोड़ी यानी चैतन्य धार पर सवार होकर बिजली और पवन की चाल के मुवाफ़िक चले और लगाम यानी मुख उस धार का घर की तरफ मोड़ कर ऊपर चढ़ने के वास्ते ज़ोर दिया यानी एड़ लगाई।

कड़ी ५ – ऐसे सतगुरु के ऊपर हीरे लाल और मोती की झालरें और माणिक पन्ना और जोत स्वरुप को (जो मुराद शब्दों की धुन और स्थानों के स्वरूप से है) वार दूँ। असल में जैसे कि सुरत चढ़ती जाती है, सब रास्ते के स्थान और वहाँ की रचना सब सतगुरु पर अपने आपे को वारते हैं यानी नीचे पड़ते चले जाते है।

कड़ी ६ – ऐसी चैतन्य धार की घोड़ी पर सतगुरु बन्ने सवार हुए, और वह धार बिजली और पवन की चाल और ज़ोर शोर के साथ चली और चढ़ी।

चल बरात पहुँची गगना पुर।
बन्नी बन्ना मिले शिष्य गुरु।। ७ ।।
ब्याह हुआ और फेरे डाले।
बन्नी ले बन्ना घर चाले।। ८ ।।
घर में धसे मात पितु हरखे।
प्रेम मगन मानो बादल बरखे।। ९ ।।
मोती हीरे लाल जवाहिर।
बुआ बहिन मिल किये निछावर।। १० ।।
करें आरत हँस बन्ना बन्नी।
हंस पुकारें धन्ना धन्नी।। ११ ।।

कड़ी ७ — चलते चलते सतगुरु और प्रेमी सुरत और बरात यानी सतसंगी और सतसंगिनों की सुरतें त्रिकुटी में पहुँचीं और वहाँ सतगुरु और सेवक का मेला हुआ।

कड़ी ८ — और प्रेमी सुरत सतगुरु की परिक्रमा करके उनके साथ घर को चली।

कड़ी ९ — जब सत्तलोक में पहुँचे तब सत्तपुरुष (जो कि कुल रचना के माता पिता हैं) देख कर मगन हुए। जैसे कि बादल की वर्षा होती है, इसी तरह प्रेम और आनन्द की वर्षा होने लगी।

कड़ी १०— मोती हीरे लाल और जवाहिर, बुआ और बहिन यानी हंस और हंसनियों ने न्योछावर किये यानी सत्त शब्द की धुनों की जो हर एक हीरा मोती और लाल रूप है, सतगुरु और प्रेमी सुरत पर वर्षा होने लगी।

कड़ी ११— फिर सतगुरु और प्रेमी सुरत ने मगन होकर उमंग सहित सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की आरत उतारी, और चारों तरफ़ से हंस धन्य धन्य पुकारने लगे।

राधास्वामी रलियाँ मन्नी।
मगन हुए भैया और बहिनी।।१२ ।।

।। सत्रहवाँ शब्द।।

धुन धुन धुन डालूँ अब मन को।
मैं धुनिया सतगुरु चरनन को।। १ ।।
मन कपास सूरत कर रूई।
काम बिनौले डाले खोई।। २ ।।
हुई साफ़ धुन की सुधि पाई।
नाम धुना ले गगन चढ़ाई।। ३ ।।
गाली मनसा गाले कर्मा।
चरख़ा चला कते सब भर्मा।। ४ ।।
सूत सुरत बारीक निकासा।
कुकड़ी कर किया शब्द निवासा।। ५ ।।
चित्त अटेरन टेर सुनाई।
फेर फेर कँवलन पर लाई।। ६ ।।
कँवल कँवल लीला कहा गाऊँ।
सुन सुन धुन निज मन समझाऊँ।। ७ ।।
सुरत रँगी करे शब्द बिलासा।
तजी बासना बेची आसा।। ८ ।।

कड़ी १२— यह कैफ़ियत देखकर राधास्वामी दयाल मगन और प्रसन्न हुए और हंस हंसनी भी इस बिलास में शामिल होकर आनन्द को प्राप्त हुए।

निकर पिंड सुन पैंठ समाई।
सौदा पूरा किया बनाई।। ९ ।।
राधास्वामी हुए दयाला।
नफ़ा लिया खोला घट ताला।। १०।।

।। अट्ठारहवाँ शब्द।।

ठुमरी अब करी है बखानी।
सुरत चली ठुम ठुम अगवानी।। १ ।।
मिल गया प्यारा झँझरी झाँकी।
कहूँ कहा शोभा अब वहाँ की।। २ ।।
किंगरी धुन अजब बजाई।
सारंगी धुन वहाँ रही छाई।। ३ ।।
यह ठुमरी कोइ साध विचारी।
जोगी जती रहे सब हारी।। ४ ।।
राधास्वामी कह कर भाखी।
सेवक देखें खुल खुल आँखी।। ५ ।।

।। उन्नीसवाँ शब्द।।

गुरु अचरज खेल दिखाया।
सुर्त नाम रतन घट पाया।। १ ।।

कड़ी १ – गुरु ने दया करके अचरज रूपी खेल घट में दिखाया, सुरत को नाम रूपी रतन यानी दसवें द्वार का शब्द प्राप्त हुआ।

बकरी ने हाथी मारा।
गाउ कीन्हा सिंह अहारा।। २ ।।
चींटी चढ़ गगन समाई।
पिंगला चढ़ पर्वत आई।। ३ ।।
गूँगा सब राग सुनावे।
अंधा सब रूप निहारे।। ४ ।।
मक्खी ने मकड़ी खाई।
भुनगे ने धरन तुलाई।। ५ ।।
धरती चढ़ वृक्षा बैठी।
पक्षी ने पवन चुगाई।। ६ ।।

कड़ी २ — सुरत ने मन को जीता और फिर सुरत ने काल को मारा।

कड़ी ३ — सुरत चढ़ कर गगन में पहुँची। जो मन कि दौड़ना यानी चंचलता छोड़ कर निश्चल हो गया वही पर्वत पर चढ़ गया यानी त्रिकुटी में पहुँचा।

कड़ी ४ — जो शख़्स कि दुनिया की तरफ़ और अन्तर में बोलने से चुप हुआ वही शब्द की धुनें सुनने लगा, और जिस किसी ने बाहर से अपनी दृष्टि बन्द की वही अन्तर में रूप देखने लगा।

कड़ी ५ — मक्खी नाम सुरत का है जो मकड़ी यानी माया के घर में जब तक थी उसका ख़ाजा हो रही थी और जब कि दसवें द्वार की तरफ़ उलट कर पहुँची तब माया को निगल गई - भुनगे यानी जीव या सुरत ने सूक्ष्म शरीर को समेट कर आकाश में उठा लिया।

कड़ी ६ — सुरत चढ़कर त्रिकुटी में पहुँची - मन जो सैलानी था जब चढ़ कर त्रिकुटी में पहुँचा तब प्राण पवन को निगलता चला गया।

जंगल में बस्ती ब्याई।
बस्ती सब ख़िलक़त खाई।। ७ ।।
मूसे से बिल्ली भागी।
पानी में अग्नी लागी।। ८ ।।
कउआ धुन मधुरी बोले।
मेंडक अब सागर तोले।। ९ ।।
मूरख से चतुरा हारा।
धरती में गगन पुकारा।। १० ।।

कड़ी ७ — बस्ती यानी रचना (और रचना करने वाली नाम सुरत का है) सो उसने पिंड रूपी जंगल में उतर कर रचना की और फिर जब उलट कर त्रिकुटी या दसवें द्वार में पहुँची तब पिंड और ब्रह्मांड की रचना को निगल गई यानी समेट गई।

कड़ी ८ — चढ़ने वाली सुरत को देख कर माया हट गई। अमी की धार जो कि सहसदल कँवल के मुक़ाम पर आई, वही जोति स्वरूप होकर रोशन हो रही है और वही माया का स्वरूप है और वही अग्नि है।

कड़ी ९ — जो मन कि पहले कड़ुआ वाक्य बोलता था और अपने मतलब के लिये औरों को दुख देता था, वही त्रिकुटी में चढ़ कर मीठी बोली के साथ राग रागनी सुनाता है - पिंड में नीचे का मन जो मेंढक के मुवाफिक़ थोड़ी ही हद में उछलता कूदता था, त्रिकुटी में चढ़ कर भौसागर की तौल और नाप करता है।

कड़ी १०— मन जो कि पिंड में बैठ कर मूरखता से भोगों में फँस रहा था जब गुरु कृपा से घट में चढ़ कर त्रिकुटी में पहुँचा तब काल जिसने चतुराई करके जाल बिछाया था, उससे हार गया और फिर धरती यानी पिंड में त्रिकुटी के शब्द की धुनें फैलीं।।

राधास्वामी उल्टी गाई।
उल्लू को सूर दिखाई।। ११ ।।

।। बीसवाँ शब्द।।

अंत हुआ जग माहिं।
आदि घर अपना भूली।। १ ।।
मध्य गही पुनि आय।
अंत को फिर ले तोली।। २ ।।
आदि अंत मध छोड़।
गही जा अपनी मूली।। ३ ।।
जीवन पदवी मिले।
चढ़े जो अब के सूली।। ४ ।।

कड़ी ११— राधास्वामी ने सुरत और मन के उलटने का यह हाल वर्णन किया और जो जीव कि उल्लू के मुवाफ़िक ब्रह्मरूपी सूरज का दर्शन नहीं कर सकते थे उनको त्रिकुटी में चढ़ा कर ब्रह्म का दर्शन कराया।

कड़ी १ — सुरत भोगों में फँस कर जड़ खान में उतर गई और संतों के दसवें द्वार को जो तीन लोक की रचना का आदि है और जहाँ से सुरत पिंड में उतरी थी, भूल गई।

कड़ी २ — और फिर मध्य यानी मृत्यु लोक में नर देही पा कर तिरलोकी के अन्त पद की जो कि वही दसवाँ द्वार है, सुरत ने ख़बर ली।

कड़ी ३ — और फिर इन तीनों स्थान यानी दसवाँ द्वार और मृत्यु लोक और जड़ खान को छोड़कर अपने मूल पद यानी सत्तपुरुष राधास्वामी देश में पहुँची, या उसका निशाना और इष्ट बाँध कर उस तरफ़ को चलने लगी।

कड़ी ४ — सूली मतलब उस धार से है जो सहस दल कँवल से

ससे मारिया सिंह।
कौन यह समझे बोली।। ५ ।।
मात पिता दोउ जने।
पूत ने बैठ खटोली।। ६ ।।
मछली चढ़ी अकाश।
धरन कर डारी पोली।। ७ ।।
चाँद सूर पाताल से।
निकले पट खोली।। ८ ।।

गुदा चक्र तक आई है सो जो कोई उस धार को पकड़ कर ऊपर को चढ़े, वही छठे चक्र के पार जाकर मौत को जीत लेगा और फिर सत्तलोक में पहुँच कर अमर हो जावेगा।

कड़ी ५ – और फिर वही सुरत जो कि मुवाफ़िक़ खरगोश के, पिंड में ग़रीब और निबल थी, दसवें द्वार में पहुँच कर सिंह यानी काल को मार लेगी।

कड़ी ६ – जब सुरत गर्भ में यानी खट चक्र के देश में आई तब पहिले उसने ब्रह्मांड और पिंड की रचना करी, यानी माया और ब्रह्म के पद उसी से प्रकट हुए, और जब सुरत जन्मी यानी जीव गर्भ से बाहर आया तब वही जीव पिंड में उतर कर बैठने से माया और ब्रह्म का पुत्र हो गया।

कड़ी ७ – और जब सुरत मछली की तरह शब्द की धार को पकड़ कर उल्टी यानी ऊपर को चढ़ी तब वह धरन यानी पिंड को पोला या ख़ाली कर गई।

कड़ी ८ – और जब चढ़ते चढ़ते दसवें द्वार के परे गई तब सूरज और चाँद यानी त्रिकुटी और सुन्न स्थान दोनों पाताल यानी नीचे नज़राई दिये।

चोरन पकड़ा साह।
साह ने पहिरी चोली।। ९ ।।
अमृत पी पी मरें।
ज़हर की गाँठी खोली।। १०।।
राधास्वामी गाइया।
यह भेद अमोली।। ११ ।।
संत बिना को बूझि है।
यह मर्म अतोली।।१२ ।।
अजा मारिया भेड़िया।
ले मिरगन टोली।।१३ ।।

कड़ी ९ — जब सुरत यानी जीव का उतार हुआ तब काल और करम और काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार वगैरा चोरों ने इस को घेर कर बन्द यानी चोले में गिरफ़्तार कर लिया।

कड़ी १०— और जब वही जीव यानी सुरत उलट कर अपने घर की तरफ़ को चली और ब्रह्मांड के परे चढ़ गई और अमी की धारा बहाने लगी तब वही सब चोर अमृत पी कर मर गये और उनकी ज़हर की गाँठ खुल कर भस्म हो गई।

कड़ी ११- राधास्वामी ने यह अमोल पद का अमोल भेद गाया।

कड़ी १२— और इसको बिना संत के कोई नहीं समझ सकता है।

कड़ी १३ — अजा बकरी को कहते हैं सो यह सूरत सुरत की पिंड में थी यानी काल भेड़िये का खाजा हो रही थी, सो जब सतगुरु की कृपा से उलट कर ब्रह्मांड और उसके परे पहुँची तो मन और इन्द्रियों को संग लेकर काल भेड़िये पर चढ़ आई और उसको मार लिया।

सुरत शब्द मेला भया।
ले अनरस घोली।।१४ ।।

।। इक्कीसवाँ शब्द।।

गुरु उल्टी बात बताई।
मूरखता ख़ूब सिखाई।। १ ।।
सोते ने जमा कमाई।
जगते ने माल गँवाई।। २ ।।
बैठे ने रस्ता काटा।
चलते ने बाट न पाई।। ३ ।।

कड़ी १४ — और तब सुरत का शब्द के साथ मेला हो गया यानी अमृत का भंडार खोल दिया।

कड़ी १ — गुरु ने यह उल्टी बात बताई कि संसार में मूर्ख होकर के बरत यानी चतुराई छोड़ दे, तो तेरा कोई दामन नहीं पकड़ सकेगा और दूसरे यह कि मूर यानी मूल पद की रक्षा और सम्हाल रख यानी इस तरफ़ से उलट कर राधास्वामी के चरनों को दृढ़ करके पकड़।

कड़ी २ — जिस किसी ने संसार की तरफ़ से उदास होकर इसके कारोबार में दख़ल देना छोड़ दिया यानी इस तरफ़ से सो गया और परमार्थ में लग गया उसी ने जमा हासिल की, यानी परमार्थ की कमाई करके प्रेम की दौलत पाई, और जो संसार की तरफ़ मुतवज्जह रहा और बहुत होशियारी और शौक़ से उसके कारोबार करता रहा, उसी ने परमार्थ की दौलत खोई, और अपनी चैतन्यता मुफ़्त गँवा दी।

कड़ी ३ — जो मन कि निश्चल होकर घट में बैठा वही ऊँचे की तरफ़ चढ़ने लगा और परमार्थ का रास्ता तै करता हुआ

धरती चढ़ गगना आई।
सुन्नी पाताल समाई।। ४ ।।
चोरी से ख़ाविंद रीझा।
सच्चे को मार खपाई।। ५ ।।
अग्नी को जाड़ा लागा।
वर्षा से सूखी साखा।। ६ ।।

घर की तरफ चला और जो मन कि चंचल रहा और इधर उधर संसार में दौड़ता रहा उसको घर का रास्ता नहीं मिला और न उस तरफ़ को चला।

कड़ी ४ — जो सुरत कि अभ्यास करके ब्रह्मांड में और उसके परे पहुँची उसके संग धरती यानी माया भी जिसका आदि निकास त्रिकुटी से हुआ है उलट कर अपने असल में जा मिली और जो सुरत कि संसार में लिपट रही वह माया के साथ नीचे से नीचे के मुक़ाम तक उतरती चली गई।

कड़ी ५ — जो शख़्स कि अपने परमार्थ की कमाई और तरक़्क़ी को जगत से छिपाये हुए चला उससे मालिक प्रसन्न हुआ और जिस किसी ने कि सचौटी के साथ अपने परमार्थ का भेद और कमाई का हाल जगत के जीवों से खोलकर कहा उसी को अनेक तरह के विघ्नों से मुक़ाबला करना पड़ा और सख़्त तकलीफ़ उठानी पड़ी और उसके परमार्थ में घाटा हुआ।

कड़ी ६— जब सुरत गगन की तरफ़ को चढ़ने लगी, तब अग्नि यानी माया (जो सुरत की मदद से चैतन्य थी) काँपने लगी यानी उसकी चैतन्यता खिंच गई और जब अमृत की वर्षा अन्तर में चढ़ने वाली सुरत पर होने लगी, तब ब-सबब खिंचाव और सिमटाव सुरत के जो उसकी धारें नीचे की तरफ़ जारी थीं वह सूखने लगीं और सिमटती चलीं।

रोटी नित भूखी तरसे।
पानी अब प्यासा तड़पे।। ७ ।।
सोते पर खाट बिछाई।
जगते को सुषपति आई।। ८ ।।
बंझा नित जनती हारी।
जनती पुनि बाँझ कहाई।। ९ ।।
घोड़े पर पृथ्वी दौड़ी।
ऊँटन चढ़ गगना फोड़ी।। १० ।।

कड़ी ७— और तब रोटी यानी माया और उसके पदार्थ जो सुरत की धार से चैतन्य थे अब उस चैतन्यता के लिए भूखे तड़पते हैं और इसी तरह पानी यानी मन सुरत की चैतन्य धार के वास्ते प्यासा तड़पने लगा।

कड़ी ८ — जो परमार्थ की तरफ़ से ग़ाफिल यानी सोता रहा वह माया के तले यानी षट चक्र में दबा और फँसा रहा और जो परमार्थ की कमाई चेत कर और होशियारी के साथ करने लगा वह पिंड और संसार की तरफ़ से बे-ख़बर होता गया।

कड़ी ९ — बंझा यानी माया से (जब कि सुरत उसके घेर में उतर कर आई) अनेक प्रकार की रचना और अनेक पदार्थ पैदा हुए, और जब सुरत यानी जनती और असल करता उलट कर पिंड और ब्रह्मांड के परे पहुँची, तब सब रचना सिमट गई, और वह अकेली अपने घर की तरफ़ सिधारी।

कड़ी १० — जब कि सुरत जो पिंड में फँस कर देह यानी पृथ्वी रूप हो रही थी उलट कर ब्रह्मांड की तरफ़ चली तो वह मन रूपी घोड़े पर सवार होकर दौड़ी, और तब ही ऊँट यानी स्वाँसा अथवा प्राण उलट कर और गगन को फोड़ कर चढ़ गई।

राधास्वामी मौज दिखाई।
सूरत अब शब्द लगाई।। ११ ।।

।। बाईसवाँ शब्द।।

सुन री सखी इक मर्म जनाऊँ।
नई बात अब तोहि सुनाऊँ।। १ ।।
दिन बिच नाचत चंद दिखाऊँ।
रैन उदय दिन कर दरसाऊँ।। २ ।।
अग्नि पूतरी जल से सिंचाऊँ।
जल की रंभा अग्नि नचाऊँ।। ३ ।।
गगन माहिं पृथ्वी चलवाऊँ।
पृथ्वी मध्य गगन लखवाऊँ।। ४ ।।

कड़ी ११ — ख़ुलासा इस शब्द का यह है कि राधास्वामी ने अपनी मेहर और मौज से सुरत को चढ़ा कर शब्द से मिला दिया।

कड़ी १ — हे सखी तुझको एक भेद जनाता हूँ और नई बात सुनाता हूँ।

कड़ी २ — सुन्न में जहाँ कि सदा रोशनी रहती है यानी दिन रहता है चन्द्र स्वरूप नज़र आता है, और त्रिकुटी के मुक़ाम पर जहाँ से कि माया यानी अन्धेरा और रात शुरू हुई सूरज रूप रोशनी देता है।

कड़ी ३ — सहस दल कँवल में जोत स्वरूप अमृत की जल धार से (जो ऊँचे से आती है) रोशन है, और अमृत धार के संग जो धुन सहसदल कँवल से नीचे उतरी, वह अग्नि यानी माया के घेर में केल कर रही है।

कड़ी ४ — आकाश में पृथ्वी यानी देह की बासी सुरत को चढ़ाऊँ

व्योम चलाय पवन थमवाऊँ।
सिंह मार और स्यार जिताऊँ।। ५ ।।
दुर्बल से बलवान गिराऊँ।
त्रिकुटी चढ़ यह धूम मचाऊँ।। ६ ।।
कागन झुंड हंस करवाऊँ।
लूकन को अब सूर दिखाऊँ।। ७ ।।
उलटी बात सभी कह गाऊँ।
ऐसे समरथ राधास्वामी पाऊँ।। ८ ।।

और पृथ्वी यानी देह में गगन यानी आकाश का लखाव करूँ।

कड़ी ५ – व्योम यानी मन-आकाश जब सुरत की चढ़ाई के वक़्त ऊपर को सिमटे तब प्राण यानी पवन धीमी होकर ठहर जाती है, स्यार जो जीव से मुराद है वह गगन में चढ़ कर सिंह यानी काल को जीत लेता है।

कड़ी ६ – दुर्बल वही जीव या सुरत से मतलब है जो पिंड में उतर कर निहायत बे-ताक़त हो जाती है, और त्रिकुटी में चढ़ कर काल बली को पछाड़ कर ज़ेर कर लेती है।

कड़ी ७ – अनेक जीवों को जो पिंड में निपट काग यानी मन रूप हो कर बर्त रहे हैं दसवें द्वार में पहुँचा कर हंस स्वरूप बनाऊँ, और निपट संसारी जो उल्लू के मुवाफ़िक़ मालिक की तरफ़ से अन्धे और अजान हो रहे हैं उनको त्रिकुटी में पहुँचाकर सूरज ब्रह्म का दर्शन कराऊँ।

कड़ी ८ – यह सब उलटी बातें समर्थ सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया से सही करके दिखाई जा सकती हैं।

।। तेईसवाँ शब्द ।।

गूँगे ने गुड़ खाइया।
वह कैसे कहे बनाय।। १ ।।
बहिरे ने धुन पाइया।
वह क्योंकर कहे सुनाय।। २ ।।
अंधे मोती पो लिया।
वह किसे दिखावन जाय।। ३ ।।
लूले ने नभ थामिया।
यह अचरज कहा न जाय।। ४ ।।

कड़ी १ — जिसने कि अपने घट में शब्द का गहरा रस पाया, वह उसको क्यों कर बयान कर सकता है। उसका हाल वही होगा जैसा कि गूँगे का जो गुड़ खाकर उसके स्वाद का बयान करने से लाचार है। और यह कि जिस किसी को गहरा रस अंतर में आया वही उसके प्रकट करने में आम लोगों के सामने गूँगा हो गया।

कड़ी २ — जिसने कि दुनिया की तरफ़ से अपने कान बंद किये उसी को अंतर में शब्द खुला, फिर वह उस शब्द और आनंद के भेद को आम लोगों को कैसे जतावे या सुनावे?

कड़ी ३ — जिसने कि अपनी नज़र दुनिया की तरफ़ से खींच ली यानी आँखें बन्द करली, उसी ने अपनी सुरत की धार को दसवें द्वार में पहुँचाया यानी मोती पो लिया। फिर वह इस कैफ़ियत को अवाम को कैसे दिखा सकता है?

कड़ी ४ — जो मन कि दुनिया में दौड़ने से रह गया यानी जिसने चंचलता छोड़ दी, उसी ने चढ़ कर नभ यानी आकाश को थाम लिया और यही अचरज की बात है।

पिंगला पर्वत चढ़ गया।
कोइ साधू जाने ताय।। ५ ।।
रोगी सद जीवित रहे।
बिन रोगहि मर मर जाय।। ६ ।।
सोगी नित हरखत रहे।
बिन सोग चौरासी जाय।। ७ ।।
चिन्ता में जो नित रहे।
सो मिले अचिन्ते आय।। ८ ।।

कड़ी ५ – जो मन कि निश्चल हो गया, वही पिंगला है और वही सतगुरु की दया से सुमेर पर्वत यानी त्रिकुटी पर चढ़ गया। इस हाल को कोई अभ्यासी यानी साधू समझता है।

कड़ी ६ – जो कोई मालिक के चरनों के इश्क़ यानी प्रेम का बीमार हुआ और जिस किसी ने अपने मन को बीमार जान कर सतगुरु से उसका इलाज कराना शुरू किया, वही एक दिन अमर पद में पहुँच कर अमर हो जावेगा और जिस किसी को प्रेम की बीमारी नहीं लगी या जिसने अपने मन की बीमारी की ख़बर न ली यानी अपने को निर्मल और चंगा समझा, वह बारम्बार जन्मेगा और मरेगा।

कड़ी ७ – जो अपने प्रीतम सच्चे मालिक के वियोग की विरह में उदास और ग़मगीन रहता है, वह दिन २ अन्तर में चरण रस पाकर मगन होता जावेगा, और जिस किसी के हिरदे में मालिक के चरनों की विरह और प्रेम नहीं है, वही मनुष्य चौरासी जोनि में भरमता रहेगा।

कड़ी ८ – जो कोई अपने मालिक के मिलने और अपने जीव का सच्चा उद्धार और कल्याण करने की चिन्ता में रहता है, वही एक दिन अचिन्त पुरुष यानी सच्चे मालिक से

वैरागी भरमत फिरे।
रागी मुक्ति समाय।। ९ ।।
सतगुरु यह परचा दिया।
कोइ बिरले खोज कराय।। १०।।
अंतरमुख जो शब्द में।
लेंगे बूझ बुझाय।। ११ ।।
राधास्वामी कह दिया।
तुम लेना शब्द कमाय।।१२ ।।

* * * * *

मिलकर निश्चिंत हो जावेगा।

कड़ी ९ — जिस किसी ने संसार से वैराग किया यानी घर बार छोड़ कर भेष लिया और मालिक के चरनों का प्रेम और प्यार उसके मन में नहीं आया, तो वह हमेशा चारों खानों में भरमता रहेगा, और जिस किसी के मन में मालिक के चरनों का राग और प्रेम समाया वही एक दिन मुक्ति पद में पहुँच जावेगा।

कड़ी १०— सतगुरु ने इस तरह से सच्चे प्रेमियों को उनके घट में परचे दिये सो इस बात को सुन कर कोई बिरले जीव उसके खोज और तलाश में लगेंगे।

कड़ी ११— और जो अपने अन्तर में शब्द का अभ्यास करेंगे, वही इस कैफ़ियत को समझेंगे और अपने घट में निरख और परख कर बूझेंगे।

कड़ी १२ — इस वास्ते सतगुरु राधास्वामी दयाल सब जीवों को पुकार कर कहते हैं कि हे भाइयों! शब्द की कमाई करो और अपने घट में रस और आनन्द लो और दया और मेहर के परचे देखो।

।। चौबीसवाँ शब्द ।।

मन सींचो प्रेम कियारी।
सतगुरु अस हेला मारी।। १ ।।
घट पौद खिली अब भारी।
भक्ती की लग रही बाड़ी।। २ ।।
जल अमृत वर्ष बहा री।
संतन सँग देख बहारी।। ३ ।।
गुरु शब्द लगा सुर्त तारी।
सुखमन रस पी ले प्यारी।। ४ ।।
कँवल कमोदनी चन्द्र निहारी।
खिली सुरत और प्यार बढ़ा री।। ५ ।।
मन भँवरा गुंजार लगा री।
सूरजमुखी कँवल निरखा री।। ६ ।।
मरुवा मोगर मन मोहा री।
चाह चमेली मेल मिला री।। ७ ।।
चम्पा चाँप चढ़ा धनुवा री।
सुरत बान से काल गिरा री।। ८ ।।
मौरसली नृत मोर रसा री।
नरगिस नैन देख उजियारी।। ९ ।।

* * * * *

।। बचन बयालीसवाँ ।।

।। सेवा बानी ।।

।। पहला शब्द ।।

स्वामी उठे और बैठे भजन में।
कर कर ध्यान मगन हुए मन में।। १ ।।
फिर भर हुक्का धर दिया आगे।
सतसंगी आय दर्शन लागे।। २ ।।
किया चरनामृत लई परसादी।
हार चढ़ा कर बँदगी साधी।। ३ ।।
लोटे धरे तब गये दिशा को।
फिर आये जब टाल बला को।। ४ ।।
चौकी बिछा मैंने गद्दी बिछाई।
स्वामी बिठा और हाथ धुलाई।। ५ ।।
दाँतन कर मंजन करवाई।
मुख किया शुद्ध और दाँत सफ़ाई।। ६ ।।
कुल्ली दई स्वामी कुल मेरा उधरा।
जन्म सुफल और तन मन सुधरा।। ७ ।।
बटना तन मल मैल गँवाई।
बाट खुली और सुरत चढ़ाई।। ८ ।।

तेल मला और चमक बढ़ाई।
शोभा राधास्वामी अधिक सुहाई।। ९ ।।
मानसरोवर जल भर लाई।
तब राधास्वामी अश्नान कराई।। १० ।।
कर अश्नान पोंछ अँग लीन्हा।
मगन हुई मैं जस जल मीना।। ११ ।।
कंघा किया स्वामी बाल सुधारे।
गया जंजाल[1] मोह मद हारे।। १२ ।।
धोती बदली पहिने बस्तर।
सतसंगी सब अब हुए इस्थिर।। १३ ।।
हुक्का भर फिर दासी लाई।
राधास्वामी ढिंग बैठ पिलाई।। १४ ।।
हुक्का हक़ हक़ बोली बोला।
चिलम अलम[2] खोय सुखदर खोला।। १५ ।।
कली कली मन चित्त खिलानी।
नइ नइ शोभा आन समानी।। १६ ।।
सतसँग में आय किया उपदेशा।
बचन कहे दिया अगाम सँदेशा।। १७ ।।

१ - दुख। २ - दुख, रंज।

फिर भोजन कर बीड़ी खाई।
बाँटी बीड़ी कन्हैया भाई।।१८ ।।
सीत प्रसाद सभी मिल लीन्हा।
जन्म जन्म के पातक छीना।।१९ ।।
माँज कमंडल जल भर लाई।
और स्वामी को दिया पिलाई।। २०।।
सेज बिछाई स्वामी पौढ़े।
चरनन सेवा में चित जोड़े।।२१ ।।
चरनन सेवा करी बनाई।
दुर्लभ सेवा यह हम पाई।।२२ ।।
जागे स्वामी दर्शन पाई।
भाग आपना लिया जगाई।।३३ ।।
सेवा का वर्णन सब कीन्हा।
गावे सुने होय मन लीना।।२४ ।।
जो गावे यह सेवा बानी।
सो पावे सतलोक निशानी।।२५ ।।
राधास्वामी सेवा गाई।
सुरत शब्द मारग तब पाई।।२६ ।।
बड़ भागी जो सेवा करते।
प्रीत सहित स्वामी सँग रहते।।२७ ।।

* * * * *

।। दूसरा शब्द ।।

चौका बरतन किया अचंभी।
सफ़ा किया मन अपना हम भी।। १ ।।
नूर पुरुष का अद्भुत जागा।
तेज प्रचंड तिमिर सब भागा।। २ ।।
चौका कीन्हा दसवें द्वारा।
पाँचों बासन माँज सँवारा।। ३ ।।
चूल्हा धोया श्याम कंज में।
जोत जगाई सहसकँवल में।। ४ ।।
तीन गुनन का पोता मारा।
करम भरम का कूड़ा टारा।। ५ ।।
हुई सफ़ाई अचरज भारी।
सतगुरु ने अब मोहिं सम्हारी।। ६ ।।
सतगुरु सेवा में रहुँ लागी।
छिन छिन चरन कँवल में पागी।। ७ ।।

।। तीसरा शब्द ।।

रात जगूँ मैं सुन कर खड़का।
उठत सुवामी मन मेरा फड़का।। १ ।।

हाथ धुलाऊँ देउँ अँगोछा।
इस सेवा पर मन मेरा लोचा[1]।। २ ।।
भाव भक्ति से बिंजन करती।
थाल परोस स्वामी ढिंग धरती।। ३ ।।
जब राधास्वामी ने भोग लगाया।
मगन हुआ मन अति सुख पाया।। ४ ।।
ग्रास दिया परशादी का जबही।
घट के परदे खुल गये तबही।। ५ ।।
राधास्वामी २ छिन छिन गाया।
फिर सतसंगी सब मिल पाया।। ६ ।।
बटी परशादी सुख भया भारी।
फिर पानी की भर लाई झारी।। ७ ।।
करमंडल ले जल अचवाया।
पलँग बिछा स्वामी पौढ़ाया।। ८ ।।
चरन पखारूँ जागूँ रैना।
फिर उठें स्वामी तब पाउँ चैना।। ९ ।।
उठ कर दर्शन छिन छिन करती।
चरनामृत परशादी लेती।। १०।।

* * * * *

१ - लुभायमान हुआ।

।। चौथा शब्द ।।

भोग धरे राधास्वामी आगे।
लीन्हे बिंजन अमी रस पागे।। १ ।।
गगन शिखर पर बजा है नगारा।
भोग लगाया राधास्वामी सारा।। २ ।।
काल करम को खा गये छिन में।
जंगी नाम धराया पल में।। ३ ।।
ऐसा भोग लगा नहिं कबही।
राधास्वामी खा गये सबको अबही।। ४ ।।

* * * * * * * * *
* * * * * * *
* * * * *
* * *
*

राधास्वामी मत की
पुस्तकों का सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

१) सार बचन छंद बंद, पहला भाग
२) सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग
३) प्रेमबानी, पहला भाग
४) प्रेमबानी, दूसरा भाग
५) प्रेमबानी, तीसरा भाग
६) प्रेमबानी, चौथा भाग
७) संत संग्रह, पहला भाग
८) संत संग्रह, दूसरा भाग
९) प्रेम प्रकाश
१०) बिनती प्रार्थना
११) नियमावली

गद्य (हिन्दी)

१२) सार बचन बार्तिक
१३) आख़री बचन स्वामीजी महाराज
१४) प्रेमपत्र, पहला भाग
१५) प्रेमपत्र, दूसरा भाग
१६) प्रेमपत्र, तीसरा भाग
१७) प्रेमपत्र, चौथा भाग
१८) प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग
१९) प्रेमपत्र, छठा भाग

२०) जुगत प्रकाश
२१) सार उपदेश
२२) प्रेम उपदेश
२३) राधास्वामी मत संदेश
२४) राधास्वामी मत उपदेश
२५) निज उपदेश
२६) प्रश्नोत्तर सन्त मत
२७) छाँटे हुये बचन महात्माओं के
२८) गुरु उपदेश
२९) बचन महाराज साहब
३०) बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग
३१) बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग
३२) बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग
३३) बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग
३४) जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज
३५) जीवन चरित्र, हुज़ूर महाराज
३६) जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज
३७) शब्द कोश संत मत बानी
३८) लोक-परलोक हितकारी
३९) मौलाना रूम के दृष्टान्त और
औलियाओं की कथाएँ
४०) समाध पुस्तिका

Books In English

४१) राधास्वामी मत प्रकाश
Radhasoami Mat Prakash

४२) डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ
Discourse On Radhasoami Faith

४३) फेलप्स साहब के नोट्स
Phelp's Notes

४४) ए सोलेस टू सतसंगीज़
A Solace to Satsangis